जौनपुर नगर में आवासीय पर्यावरण

(HOUSEHOLD ENVIRONMENT IN JAUNPUR CITY)
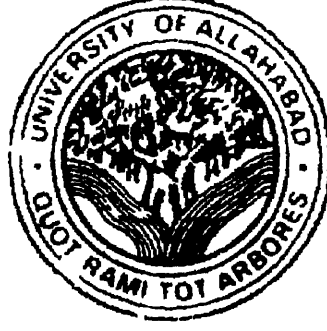
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (उ०प्र०)

के

भूगोल विषय

में

डी० फिल्० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

2002

निर्देशक

प्रो० सविन्द्र सिह

अध्यक्ष, भूगोल विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद

शोधकर्त्री

कु० अमृता श्रीवास्तव

नामाकन सख्या 98AU/1191

प्राक्कथन

मनुष्य के जीवन को प्राथमिक रूप से उनके घरो का पर्यावरण ही प्रभावित करता है। विश्व के अनेक नगरो के आवासीय पर्यावरण पर शोध कार्य किये जा चुके है परन्तु भारत मे इस दिशा मे बहुत कम ध्यान दिया गया है। विशेष रूप से छोटे–छोटे शहरो के आवासीय पर्यावरण पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है क्योकि सम्पूर्ण जनसख्या का लगभग एक तिहाई भाग नगरो या उपनगरो मे निवास करता है। यदि छोट–छोटे सभी नगरो के आवासीय पर्यावरण पर शोध कार्य किया जाय तो सम्पूर्ण भारत की एक तस्वीर उभर कर सामने आयेगी और समस्याओ के निराकरण की दिशा मे योजनाबद्ध तरीके से ठोस कदम उठाये जा सकते है। इसी उद्देश्य को ध्यान मे रख कर जौनपुर नगर के आवासीय पर्यावरण पर मैने शोध–प्रबन्ध प्रस्तुत किया है जौनपुर नगर मेरी जन्म भूमि है एव मेरी सम्पूर्ण शिक्षा यही पर हुयी है उपरावत शोध कार्य के लिए के लिए इस नगर का चयन मेरे लिये हर दृष्टि से उपयुक्त समझकर निर्देशक महोदय द्वारा किया गया क्योकि किसी दूसरे अनजान नगर मे घर–घर जाकर व्यक्तिगत सर्वेक्षण कर के आकडे एकत्रित करना किसी महिला के लिए अपेक्षाकृत कठिन कार्य होता। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध मे विभिन्न आय वर्गो के लोगो के आवास का व्यक्गित सर्वेक्षण कर के आकडे एकत्रित किये गये है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध तीन भागो एव पाच अध्यायो मे आबद्ध है। भाग एक मे सभी वर्गो का सामान्य विवरण एव चयनित आवासो के सम्बन्ध मे उल्लेख किया गया है यह सब अध्याय एक मे समाहित है इस अध्याय मे प्रत्येक वार्ड की जनसख्या, परिवार के औसत सदस्यो की सख्या, एक मकान मे औसत परिवारो की सख्या, साक्षरता स्तर एव आय का विवरण। भाग दो मे जौनपुर शहर के मकानो की

पर्यावरणीय स्थिति का विवरण है। यह भाग द्वितीय तृतीय, चतुर्थ एव पचम चार अध्याओ मे विभक्त है। द्वितीय अध्याय मे जौनपुर नगर के घरो की पर्यावरणीय स्थिति का वर्णन हे। तृतीय अध्याय मे जौनपुर नगर मे जलापूर्ति एव अपवाह की स्थिति का वर्णन हे। चतुर्थ अध्याय मे जौनपुर नगर मे स्थित आवासो मे ठोस अपशिष्ट एव अनुपयोगी वस्तुओ के विसर्जन एव खाद्य पदार्थो के रख–रखाव की स्थिति का वर्णन है। अध्याय पाच मे जौनपुर नगर के घरो मे वायु प्रदुषण एव ध्वनि प्रदुषण की स्थिति का वर्णन है। भाग तीन मे जौनपुर नगर का पर्यावरण व स्वास्थ्य का सम्बन्ध तथा निष्कर्ष एव सुझाव दिया गया है।

आभारोक्ति

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए मै सर्वप्रथम अपने निर्देशक आदरणीय प्रो0 सविन्द्र सिह के प्रति विशेष आभार प्रकट करती हू जिन्होने मेरी मातृभूमि जौनपुर नगर को ही मेरी सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए चयनित किया और समय–समय पर कुशलतापूर्वक इस कार्य को सम्पन्न करने मे मार्गदशन किया। जौनपुर नगर जैसे मुस्लिम बहुल क्षेत्र वाले मुहल्लो मे शोध से सम्बन्धित सर्वेक्षण कार्य के लिए घर–घर मे जाकर जानकारी प्राप्त करना एक महिला के लिए अत्यन्त जटिल कार्य है, जिसे सुचारू रूप से सम्पन्न कराने मे मेरे पिताजी का बहुमूल्य योगदान रहा जो सर्वेक्षण कार्य मे सदैव मेरे साथ गये। उनके सहयोग के बिना मेरे लिये यह कार्य सम्पन्न कर पाना सभव नही था। इसके लिये मै अपने पूज्य पिताजी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हू।

मै नगर परिषद जौनपुर की तत्कालीन अध्यक्ष श्रीमती सध्यारानी श्रीवास्तव की आभारी हू जिन्होने अपने कर्मचारियो के माध्यम से जौनपुर नगर से सम्बन्धित जानकारी को उपलब्ध कराया तथा अभिलेखीय विवरण प्राप्त करने मे सहयोग प्रदान किया। तत्कालीन जिलाधिकारी श्री नवनीत सहगल (आई ए एस) ने अपने प्रभाव का उपयोग करके सचिवालय लखनऊ से जौनपुर नगर के वार्डो के विभाजन युक्त मानचित्र की फोटो कापी दिलाने मे सहयोग प्रदान किया इसके लिए मै उनकी आभारी हू मै अपरजिलाधिकारी वित्त एव राजस्व श्री भास्कर उपाध्याय के प्रति भी आभार प्रकट करती हू जिन्होने जौनपुर नगर के सभी वार्डो के मतदाता सूची की जानकारी प्राप्त करने मे सहयोग प्रदान किया।

मै तिलकधारी महाविद्यालय के भूगोल विभाग मे रीडर परम पूज्य डॉ0 देवी

प्रसाद उपाध्याय जी के प्रति विशेष रूप से आभारी हू जिन्होने शोध कार्य मे आने वाली समस्याओ का निराकरण किया एव बहुमूल्य सुझाव प्रदान किया।

प्रस्तुत शोध कार्य को सम्पन्न करने मे जिन ग्रन्थो से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहायता मिली है उनके रचनाकारो के प्रति मै अपना विनम्र आभार प्रकट करती हू साथ ही सेन्ट्रल लाइब्रेरी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में कार्यरत पदाधिकारी व कर्मचारियो के प्रति भी आभारी हू जिन्होने सम्बन्धित पुस्तको को पढने का अवसर प्रदान किया।

अन्त मे मै अपनी पूज्य माता जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हू जिन्होने शोध कार्य के लिए सदैव मेरा उत्साह वर्धन किया और अविस्मरणीय सहयोग प्रदान किया।

दिनाक– 25 12 2002

अमृता श्रीवास्तव
अमृता श्रीवास्तव

विषय सूची

पृष्ठ सख्या

प्राक्कथन	(i)
अभारोक्ति	(iii)
सारणी सूची	(v-ix)
प्लेट्स की सूची	(x-ixv)
प्रस्तावना	1 – 21

भाग एक

सामान्य विवरण

अध्याय एक

वार्डो का सामान्य अध्ययन एव

चयनित मकानो का सामान्य अध्ययन 24 – 49

1 1 वार्डो का सामान्य अध्ययन

नगर के वार्डो मे जनसख्या वितरण 24

नगर के वार्डो मे एक मकान मे औसत परिवार की सख्या का वितरण 27

1 2 चयनित घरो की सामान्य विशेषताये 29

उत्तर दाताओ की सागान्य विशेपताये 29

परिवार की मूल विशेषताये 33

पारिवारिक स्थिति 37

चर्यानत घरा का शैक्षिक व्यावसायिक व स्थानान्तरण का स्तर 42

भाग दो

जौनपुर नगर मे घरो की पर्यावरणीय स्थिति

अध्याय दो

जौनपुर नगर मे घरो के स्नान गृह एव सफाई की स्थिति 52 – 81

2 1 आवासीय स्थिति 52

घर का स्तर 54

घर का प्रयोग 56

मकान के प्रकार 58

मकान के फर्श का क्षेत्रफल 61

घर म कुल कमरो की सख्या 62

कमरो का क्षेत्रफल 64

शयन कक्ष मे प्रति व्यक्ति को मिलने वाला स्थान 65

घर मे वातायान की स्थिति 67

2 2 स्नानगृह एव सफाई की स्थिति 68

स्नानगृह एव शौचालय की सुविधा 71

शोचालय के प्रकार 73

व्यक्तिगत शौचालय के प्रकार 75

वहावदार शौचालय के प्रकार 76

शौच को उठा कर विसर्जित किये जाने के तरीके 77

एक शोचालय का प्रयोग करने वाले लोगो की संख्या 79

अध्याय तीन

जौनपुर नगर मे पेय जलापूर्ति एव अफवाह की स्थिति

83 — 117

3 1 घरो मे पेयजल आपूर्ति 86

जल आपूर्ति का स्रोत 88

जलापूर्ति की स्थिति 89

जल आपूर्ति की गुणवत्ता 90

जल आपूर्ति की मात्रा 92

जल सग्रह का तरीका 93

3 1 पानी के अपवाह की स्थिति 101

घरो के त्याज्य जल विसर्जन 109

घर के चारो तरफ नालियो की स्थिति 110

नालियो के प्रकार 114

घर के चारा तरफ जल जमाव की स्थिति 115

जल जमाव के प्रकार 116

अध्याय चार

जौनपुर नगर मे स्थित आवासो मे ठोस अपशिष्ट व अनुपयोगी वस्तुओ के विसर्जन एव खाद्य पदार्थो के रख रखाव की स्थित

119 — 159

4 1 घरो के ठोस अपशिष्ट एव अनुपयोगी वरतुओ का विसर्जन 120

कूडा करकट को रखने का तरीका 123

घरो से कूडा विसर्जन का स्थान 124

	मुहल्ले मे कूडे की उपस्थिति	126
	मुहल्ले मे औद्योगि उपस्थिति	130
	नगर परिषद द्वारा कूडा करकट का उठाया जाना	132
	कूडा करकट उठाये जाने की बारम्बारता	134
4 2	घरो मे मक्खी मच्छर का प्रकोप	136
	चयनित घरो मे कीडे मकीडे एव मक्खी मच्छर	139
	रोशनदान एव खिडकी का प्रयोग	142
	मक्खी मच्छर कीडे मकीडे से बचाव के लिए अपनाये गये उपाय	143
	रसोई घर एव कमरो मे दवाओ का छिडकाव	146
4 3	भोजन का रख–रखाव एव प्रदूषण	148
	भोजन पकने के बाद इसे ग्रहण करने का समय	151
	भोजन रखने का तरीका	152
	भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त माध्यम	153
	त्वरित खाये जाने वाले भोज्य पदार्थो की खरीदारी	156

अध्याय पाच

जौनपुर नगर मे घर के भीतर वायु प्रदूषण एव ध्वनि प्रदूषण की स्थिति

		161 – 190
5 1	धर के अन्दर होने वाला वायु प्रदूषण	162
	भोजन पकाने का स्थान	166
	भोजन पकाने के लिये प्रयुक्त ईधन	169
	घर मे धुम्रपान	174
	प्रतिदिन प्रयोग की जाने वाली सिगरेट बीडी की संख्या	175
	बाहर से घर मे धूआ आने का स्रोत	176

घरो से धूआ बाहर निकलने की स्थिति 178

5 2 धर मे ध्वनि प्रदूषण। 181

मुहल्ले मे ध्वनि प्रदूषण 184

ध्वनि प्रदूषण के स्रोत एव तीव्रता 186

भाग तीन

जौनपुर नगर मे आवासीय पर्यावरण व स्वास्थ्य एव निष्कर्ष

192 – 210

सदर्भ सूची 212 – 222

परिशिष्ट 1 223 – 228

परिशिष्ट 2 229

परिशिष्ट 3 230 - 233

सारणी - सूची

पृष्ठ सख्या

1 आय के आधार पर मकानो का वर्गीकरण 8

2 जोनपुर नगर का भूमि प्रयोग क्षेत्रफल हेक्टेयर मे 11

1 1 जोनपुर नगर के वार्डो मे जनसख्या का वितरण 24

1 2 जोनपुर नगर के वार्डो का वर्गीकरण जनसख्या के आधार पर 25

1 3 जोनपुर नगर के प्रत्येक वार्ड मे मकानो की सख्या परिवारो एव ओसत परिवारो की सख्या 27

1 4 जोनपुर नगर के उत्तरदाताओ मे स्त्री पुरूष का वर्गीकरण 29

1 5 जो पुर नगर के उत्तर दाताओ की आयु का वर्गीकरण 31

1 6 जोनपुर नगर के उत्तरदाताओ मे धर्म का वर्गीकरण 32

1 7 चयनित घरो का आय के अनुसार वर्गीकरण 32

1 8 जोनपुर नगर के चयनित घरो मे मुखिया का वर्गीकरण 33

1 9 जोनपुर नगर के चयनित घरो के एक मकान मे निवास करने वाल परिवारो की सख्या 35

1 10 जौनपुर नगर के चयनित घरो के एक मकान मे निवास करने सदस्यो की सख्या 36

1 11 जोनपुर नगर के चयनित घरो मे उपयोग मे आने वाले उपकरणो का विवरण 37

1 12 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे वाहनो का स्वामित्व 40

1 13 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे शिक्षा का स्तर 42

1 14 शिक्षित लोगो का विभाजन 42

1 15	जौनपुर नगर के चयनित घरो के व्यवसाय	45
1 16	जौनपुर नगर के चयनित घरो का प्रवजन पर आधारित वितरण	47
2 1	जौनपुर नगर के चयनित घरो के स्तर का वर्गीकरण	54
2 2	जौनपुर नगर के चयनित घरो का प्रयोग	57
2 3	जौनपुर नगर चयनित मकानो के प्रकार	60
2 4	जौनपुर नगर के चयनित घरो के फर्श का क्षेत्रफल	61
2 5	जौनपुर नगर के चयनित घरो मे कमरो की सख्या का वर्गीकरण	62
2 6	जौनपुर नगर के चयनित घरो के कमरो के क्षेत्रफल का वर्गीकरण	64
2 7	जौनपुर नगर के चयनित घरो मे रहने वाले प्रति व्यक्ति को शयन कक्ष मे मिलने वाला औसत स्थान	66
2 8	जौनपुर नगर के चयनित घरो मे वातायन की व्यवस्था	67
2 9	जौनपुर नगर के चयनित घरो मे स्नानागृह एव प्रसाधन की सुविधा	71
2 10	जौनपुर नगर के चयनित घरो मे प्रयोग मे आने वाले शौचालय के प्रकार	74
2 11	चयनित घरो मे निजी तौर पर प्रयोग मे लाये जाने वाले शौचालयो के प्रकार	75
2 12	जौनपुर नगर के चयनित घरो मे बहावदार शौचालय के प्रकार	77
2 13	जौनपुर नगर के चयनित घरो मे उठाकर शौच को विसर्जित किये जाने वाले शौच का स्थान की दृष्टि से वर्गीकरण	78
2 14	जौनपुर नगर के उठाकर विसर्जित किये जाने वाले शोच का स्थान की दृष्टि से वर्गीकरण	79
2 15	जौनपुर नगर के चयनित घरो मे एक शौचालय को प्रयोग करने वाले लोगो की सख्या	80

3 1	जोनपुर नगर के कुल चयनित घरो मे जलापूर्ति	86
3 2	जानपुर नगर क चर्यानत घरो मे जलापूर्ति का स्रोत्र	89
3 3	जोनपुर नगर के चयनित घरो मे जलापूर्ति	90
3 4	जोनपुर नगर के चयनित घरो मे जलापूर्ति की गुणवत्ता	91
3 5	जो ापुर नगर के चयनित घरो गे जलापूर्ति की मात्रा	92
3 6	जौनपुर नगर के चयनित घरो मे जल सग्रह का तरीका	93
3 7	जोनपुर नगर के कुल चयनित घरो के पानी के अपवाह की स्थिति का विवरण	108
3 8	जोनपुर नगर के चयनित घरो के त्याज्य जल के विसर्जन का तरीका	110
3 9	जोनपुर नगर के चयनित घरो के चारा तरफ जल निकासी के लिये वनी नालियो की स्थिति	111
3 10	जौनपुर नगर के चयनित घरो की नालियो के प्रकार	114
3 11	जौनपुर नगर के चयनित घरो के बाहर जल जमाव की स्थिति	115
3 12	जोनपुर नगर के चयनित घरो के बाहर जल जमाव के प्रकार	117
4 1	जौनपुर नगर के कुल चयनित घरो के कूडा करकट एव अनुपयोगी ठो अपशिष्ट	121
4 2	जोनपुर नगर के चयनित घरो मे ठोस अपशिष्ट एव कृडे के एकत्रित करके रखने का तरीका	123
4 3	जोनपुर नगर के चयनित घरो के कूडा विसर्जन का स्थान	124
4 4	जौनपुर नगर के चयनित घरो के बाहर कूडे की उपस्थिति एव अनुपस्थिति	126

4 5 जोनपुर नगर के चयनित घरो के वाहर उनके मुहल्ला मे आद्योगिक अपशिष्ट का विखराव 130

4 6 जोनपुर नगर क चयनित घरा क वाहर स सिटी वार्ड द्वारा कूडा करकट उठाय जाने के आधार पर वर्गीकरण 134

4 7 जोनपुर नगर के चयनित घरो से कूडा करकट उठाय जान की बारम्बारता 134

4 8 जौनपुर नगर के सम्पूर्ण चयनित घरो मे कीडे मकोडे एव मक्खी मच्छर का प्रकोप 137

4 9 जौनपुर नगर के चयनित घरो का मक्खी मच्छर के प्रकोप की दृष्टि से वर्गीकरण 141

4 10 जौनपुर नगर के चयनित घरो का उपयुक्त रोशनदान की दृष्टि से वर्गीकरण 143

4 11 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे मक्खी मच्छर कीट आदि से वचाव हेतु प्रयोग मे लाये जाने वाले उपकरण 145

4 12 जौनपुर नगर के चयनित घरो के कमरो मे रसोई मे मशीन रो छिडकाव 147

4 13 सम्पूर्ण चयनित घरो मे भोजन का रख रखाव एव प्रदूषण की स्थिति 149

4 14 जौनपुर नगर के घरो के सदस्यो का भोजन पकने के बाद भोजन करने का समय 151

4 15 जौनपुर नगर के चयनित घरो के भोजन का रखने के स्थान की दृष्टि से वर्गीकरण 152

4 16 जौनपुर नगर के चयनित घरो का भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त तेल के आधार पर वर्गीकरण 155

4 17 जोनपुर नगर के चयनित घरो का तुरन्त खाय जान वाल भाजन पदार्थो को खरीदने की दृष्टि से वर्गीकरण 158

5 1 जोनपुर नगर के कुल चयनित घरो के अन्दर वायु प्रदूषण की स्थिति 164

5 2 जोनपुर नगर के चयनित घरो का भोजन पकाने के स्थान की दृष्टि से वर्गीकरण 169

5 3 जोनपुर नगर के चयनित घरो का भोजन पकाने के लिये प्रयोग मे आने वाले ईधन की दृष्टि से वर्गीकरण 172

5 4 जौनपुर नगर के चयनित घरो का का धुम्रपान से होने वाले प्रदूषण के आधार पर वर्गीकरण 174

5 5 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे एक दिन मे प्रयोग की जाने वाली सिगरेट अथवा बीडी की सख्या 175

5 6 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे बाहर से धूआ आता अथवा नही आता है एव उसके स्रोत 177

5 7 जोनपुर नगर के चयनित घरो का धूआ बाहर निकलने की स्थिति के आधार पर वर्गीकरण 180

5 8 जौनपुर नगर के सम्पूर्ण चयनित घरो मे ध्वनि प्रदूषण की स्थिति 182

5 9 जौनपुर नगर के चयनित घरो का ध्वनि प्रदूषण के आधार पर वर्गीकरण 184

5 10 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे ध्वनि प्रदूषण के स्रोत 187

5 11 जोनपुर नगर के चयनित घरो का ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता के आधार पर वर्गीकरण 190

प्लोट्स की सूची

पृष्ठ सख्या

प्लेट	1	अध्ययन क्षेत्र की अवस्थिति	10
प्लेट	2	जौनपुर नगर के वार्डो का विभाजन	18
प्लेट	11	जौनपुर नगर के वार्डो मे जनसख्या का वितरण	26
प्लेट	12	उत्तरदाताओ की सामान्य विशेषताये	30
प्लेट	13	चयनित घरो की सामान्य विशेषताये	34
प्लेट	14	पारिवारिक स्वामित्व उपकरणो के स्वामी	39
प्लेट	15	वाहनो का स्वामित्व	41
प्लेट	16	चयनित घरो का शैक्षिक स्तर	43
प्लेट	17	चयनित घरो के व्यवसाय	46
प्लेट	18	प्रवजन स्तर	48
प्लेट	21	विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो के प्रकार व आवासीय स्थिति	53
प्लेट	22	विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो की आवासीय स्थिति	55
प्लेट	23	मुहल्ला ताडतला मे आवासीय औद्योगिक एव व्यावसायिक उपयोग मे आने वाले मकान दृश्य	58
प्लेट	24	मुहल्ला सुन्दर नगर मे स्थित उच्च आय वर्ग के ईट व कक्रीट के बने मकान	59
प्लेट	25	मुहल्ला चितरसारी मे निम्न आय वर्ग का मिट्टी की दिवार पर बना फूस का मकान	59

प्लेट	2 6	गुलरचक मुहल्ले मे स्थित निम्न आय वर्ग की झुग्गी झापडी	63
प्लेट	2 7	हरईपुर मुहल्ले मे मिट्टी के बने छोटे से मकान मे बड परिवार का दृष्य	63
प्लेट	2 8	विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे स्नानगृह एव प्रसाधन की सुविधा	69
प्लेट	2 9	चयनित घरो मे प्रसाधन की व्यवस्था	70
प्लेट	2 10	मुहल्ला रूहट्टा मे कम आय वर्ग के घरो मे स्नानगृह न होने के कारण सडक के किनारे सार्वजनिक चापाकल पर लोग स्नान करते है।	72
प्लेट	2 11	फिरोशेपुर मुहल्ले मे मकान के सामने खुली नाली मे बच्चे शौच करते अक्सर देखे जा सकते है।	72
प्लेट	2 12	मीरमस्त मुहल्ले मे उठौआ शौचालय का दृश्य	77
प्लेट	3 1	सम्पूर्ण चयनित घरो मे जलापूर्ति	85
प्लेट	3 2	विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे जलापूर्ति	87
प्लेट	3 4	फिरोशेपुर मे स्थित विशाल गडढा जिसमे आस पास के मुहल्लो का पानी वर्ष भर एकत्रित रहता है	104
प्लेट	3 5	फिरोशेपुर मे स्थित गडढे का पानी विशाल नाले से गोमती नदी मे जाता है।	104
प्लेट	3 6	खासनपुर मे अग्रेजो के समय का बना नाला जिसे वर्ष 2001 मे खुदाई करके चालू किया गया	105
प्लेट	3 7	सम्पूर्ण चयनित घरो के अपवाह की स्थिति	107

प्लट	3 8	विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो के अपवाह की स्थिति	112
प्लट	3 9	मुहल्ला रूहट्टा (उमरपुर) मे खुली नाली का दृश्य जहा उच्च एव मध्यम वर्ग के लोग आस–पास निवास करते है	113
प्लेट	3 10	मुल्ला परमानतपुर मे घर के बाहर जल जमाव का दृश्य	113
प्लेट	4 1	सम्पूर्ण चयनित घरो मे अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट	122
प्लेट	4 2	विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो के अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट	127
प्लेट	4 3	मुहल्ला अहमद खा मण्डी मे आवास निर्माण के लिये छोडा गया स्थल कूडा फेकने का स्थल बन गया है	128
प्लेट	4 4	सब्जी मण्डी विक्रेताओ द्वारा एकत्रित किया गया विशाल कूडे का ढेर जिसे सिटी बोर्ड द्वारा नियमित नही उठाया जाता है	128
प्लेट	4 5	विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो के अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट	131
प्लेट	4 6	मुहल्ला वाजिदपुर निवासी निम्न आय वर्ग के लोगो द्वारा सडक के किनारे कही भी कूडा विसर्जन का दृश्य	133
प्लेट	4 7	परमानतपुर के पूर्वी भाग मे बाइपास सडक के निकट पानी निकासी के लिये बने नाले मे अनाधिकृति रूप से बिना नक्शा पास कराये हो रहे मकान निर्माण का दृश्य	133

प्लेट	4 8	सम्पूर्ण चयनित घरो मे कीटाणु व मक्खी मच्छर का प्रभाव	138
प्लेट	4 9	विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे कीटाणु व मक्खी मच्छर का प्रभाव	140
प्लेट	4 10	मुहल्ला वाजिदपुर मे उच्च आय वर्ग का हवादार आवास	144
प्लेट	4 11	मुहल्ला परमानतपुर मे कम आय वर्ग का एक कमरे का मकान जिसमे कोई खिडकी व रोशनदान नही है	144
प्लेट	4 12	सम्पूर्ण चयनित घरो मे भोजन का रख रखाव	150
प्लेट	4 13	विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे भोजन का रखरखाव	154
प्लेट	4 14	निम्न आय वर्ग के लोग ठेले पर बिकने वाले त्वरित उपभोग मे आने वाले खाद्य पदार्थ का सेवन करते हुये (मुहल्ला मखदूम शाह अढन)	157
प्लेट	4 15	नगर मे ठेले पर बिकने वाला गन्ने का रस जिसे लोग सामान्यता प्रयोग करते हुये देखे जा सकते है	157
प्लेट	5 1	सम्पूर्ण चयनित घरो मे वायु प्रदूषण की स्थिति	165
प्लेट	5 2	विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे वायु प्रदूषण की स्थिति	167
प्लेट	5 3	विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे वायु प्रदूषण की स्थिति	168

प्लेट 5 4 निम्न आय वर्ग के झोपडी मे लकडी के ईधन से खाना पकाने का दृश्य 170

प्लट 5 5 उच्च आय वर्ग क घर ग खाना पकाने का दृश्य 170

प्लेट 5 6 निम्न आय वर्ग की आवासीय झोपडी जिसमे ईधन के रूप मे लकडी व गोबर की उपली का प्रयोग होता है 171

प्लेट 5 7 मुहल्ला अहमद खा मण्डी मे ईधन के रूप मे प्रयोग करने के लिये बनायी गयी गोबर की उपली का दृश्य 173

प्लेट 5 8 गूलरचक मुहल्ले के निम्न आय वर्ग के लोग ईघन के रूप मे सूखी लकडी को जगह–जगह से एकत्रित करके लाते हुये 173

प्लेट 5 9 कूडा करकट जलाये जाने से भी उत्पन्न धूआ आस–पास के घरो मे प्रवेश करता है। 179

प्लेट 5 10 ओलन्दगज से कचहरी जाने वाली अति व्यस्त सडक के किनारे खुले आम मछली विक्रेताओ द्वारा मछली विक्रय करने से उस क्षेत्र मे सदैव दुर्गन्ध बनी रहती है 179

प्लेट 5 11 सम्पूर्ण चयनित घरो मे ध्वनि प्रदूषण की स्थिति 183

प्लेट 5 12 चयनित घरो मे ध्वनि प्रदूषण 185

प्लेट 5 13 गोमती नदी पर स्थित शाही पुल पर अत्यधिक वाहनो के दिन रात आवागमन से उत्पन्न ध्वनि प्रदूषण की स्थिति 188

प्लेट 5 14 नगर मे ध्वनि प्रदूषण के स्रोत मस्जिद पर लगे ध्वनि विस्तारक यत्र जो इस नगर के सभी मस्जिदो पर लगे है 188

प्लेट 5 15 नगर के मध्य क्षेत्र मे बाहर से आने वाले वाहनो की भीड जो ध्वनि एव वायु प्रदूषण के कारक है बदलापुर पडाव 189

प्रस्तावना
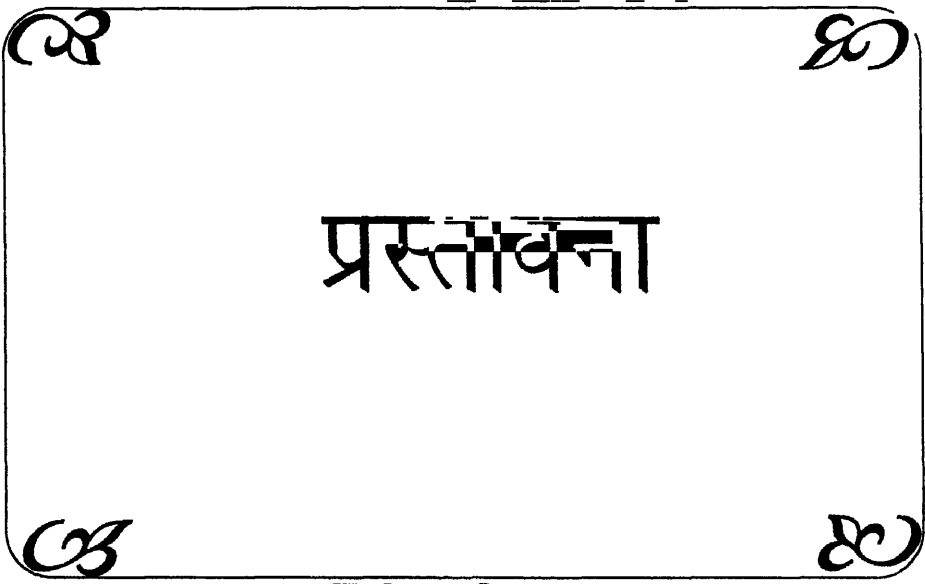
पर्यावरण शब्द का शब्दकोषीय अर्थ होता है आस–पास या पास पडास मानव जन्तुआ या पौधो की वृद्धि एव विकास को प्रभावित करने वाली वाह्य दशाय, कार्य प्रणाली तथा जीवन यापन की दशाये आदि। किसी स्थान विशेष मे मनुष्य के आस–पास भौतिक वस्तुआ (स्थल जल, मृदा वायु) का आवरण जिसक द्वारा मनुष्य घिरा होता ह, को पर्यावरण कहा जा सकता है। पर्यावरण को प्रभावित करने मे मनुष्य एक महत्वपूर्ण कारक है। पर्यावरण की परिभाषा हमारे हित अभिरूचि एव प्राथमिकताओ द्वारा निश्चित होते है। हमारा हित, स्थानो–जिस पर हम रहते है वायु जिससे हम सास लेते है आहार जिसे हम खाते हे जल जिसे हम पीते हे तथा ससाधन जिस हम अपनी अर्थव्यवस्था को पुष्ट बनाने के लिए पर्यावरण से प्राप्त करत है, की गुणवत्ता मे है।

आजकल विश्व स्तर पर पर्यावरणीय ह्रास एक गभीर चिन्ता का विषय बना हुआ है, किन्तु मनुष्य अपने घरो की पर्यावरणीय समस्याओ के प्रति चिन्तित नही है। विश्व स्तर पर पर्यावरणीय ह्रास, ओजोन क्षरण, एसिड वर्षा आदि विषयो पर तो बहुत चर्चा होती रहती है परन्तु लोग इन बातो पर कम ध्यान देते है कि यह उनके घरो का पर्यावरण ही हे जो मनुष्य के जीवन को प्राथमिक रूप से प्रभावित करता है और अन्तत सम्मिलित पर्यावरण को जन्म देता है।

हमारे भारत देश मे लोग लगभग सोलह घण्टे अपने घरो मे ही समय व्यतीत करते है। यदि घरो मे हवादार कमरो का अभाव हो पानी की निकासी का समुचित साधन नही है, घर से निकलने वाले कूडे कचरे को घर से दूर उचित स्थान पर विसर्जित करने की सुविधा नही है, स्वच्छ पीने का पानी और उपयुक्त सफाई की व्यवस्था नही है, खाने पीने की चीजो को सुरक्षित ढग से रखने की व्यवस्था नही है तो मनुष्य का जीवन वैश्विक पर्यावरणीय ह्रास की तुलना मे इनसे ही अधिक प्रभावित होता है। इसलिए घरो के और उसके आसपास के पर्यावरण के सम्बन्ध मे अध्ययन एव उसमे सुधार किये जाने की आवश्यकता है, और इस सम्बन्ध मे लोगो को जागरूक किये जाने की आवश्यकता है। यद्यपि भारत गावो का देश है सम्पूर्ण जनसख्या का लगभग 27 प्रतिशत भाग नगरो या उपनगरो मे निवास करता है। ग्राम्याचलो से हटकर बडी तेजी से लोग नगरो एव उपनगरो मे निवास के लिए आने लगे है

जिससे नगरो मे आबादी का दबाव दिनोदिन बढता जा रहा है। बढती हुई आबादी भी नगरो एव उपनगरो मे पर्यावरणीय समस्या का कारण बनती जा रही है। प्रत्येक वर्ष लगभग 18 मिलियन लोग गावो से शहर की ओर रोजगार की तलाश मे या अन्य कई कारणो से आते है। इस बढी हुयी अतिरिक्त जनसख्या का दबाव नगरीय ससाधनो पर पडता है जो पर्यावरण प्रदूषण को बढाता है। प्रदूषण, विशेष रूप से घरो का, इसलिए प्रभावित होता है क्योकि स्वच्छ जल की आपूर्ति, आवागमन के साधन व आवश्यकतानुसार विद्युत आपूर्ति का अभाव हो जाता है। आबादी का 1/8 भाग झुग्गी झोपडी मे रहने के लिए विवश है। आबादी के लगभग आधे भाग के लोगो को 20 वर्ग मीटर से कम आवासीय स्थल उपलब्ध है। आबादी का 1/3 भाग अस्वच्छ स्थानो पर रहने के लिए विवश है और लगभग इतने ही लोग स्वच्छ पेयजल भी नही प्राप्त कर पाते है।

इस प्रकार नगरो मे रहने वाले करोडो लोगो के समक्ष स्वच्छ पेयजल एव स्वच्छ आवास की समस्या है। आर्थिक दृष्टि से पिछडे गरीब व्यक्तियो के पडोस मे निवास करने के कारण भी समृद्ध व्यक्ति का जीवन प्रभावित होता है, कारण गरीब व्यक्ति स्वय सफाई से नही रह पाता और उनके परिवार से चेचक मलेरिया डिफ्थीरिया आदि सक्रामक रोग फैलते रहते है। ऐसी स्थिति मे आवासीय पर्यावरण का अध्ययन और उसमे सुधार के उपयो का महत्व बढ जाता है। प्रस्तुत प्रयास विभिन्न आय वर्गों के व्यक्तियो के आवासीय पर्यावरण के अध्ययन एव उनमे अपेक्षित सुधार को ध्यान मे रखकर व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर किया गया है। यह अति आवश्यक हो गया है कि नगरो मे घर–घर जाकर सर्वेक्षण करके घरो के पर्यावरणीय समस्या पर शोध कार्य किया जाय और जनमानस मे उन समस्याओ के निराकरण के लिए जागरूकता पैदा की जाय। घरो–घरो मे जाकर किये गये सर्वेक्षण से पर्यावरणीय समस्याओ के निराकरण के न केवल विभिन्न उपाय एव रास्ते सामने आयेगे बल्कि जनसामान्य हेतु गृहो के पर्यावरणीय समस्या के प्रति जागरूकता पैदा करने का मार्ग प्रशस्त होगा।

विश्व के विभिन्न क्षेत्रो मे आवासीय पर्यावरणीय समस्या पर उल्लेखनीय अध्ययन किये गये है जिनमे Mc Granahan, (1991), Kin IK Ki (1991), Hardoy et al (1992), Songsore (1992), Songsore and Mc Granahan (1993),

Izeougu (1989), Cairnerves (1990), Benneh et al (1993) के कार्य महत्वपूर्ण है।

Songsore (1992) ने घाना के महानगर अक्रा के आवासीय पर्यावरण पर शोध कार्य किया था जिसमे उपरोक्त नगर के पेयजल सफाई वायुप्रदूषण घर के अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट अपशिष्ट के विसर्जन, घरो मे कीटाणु, मच्छर आदि के प्रकोप सम्बन्धी पर्यावरणीय समस्या का अध्ययन किया था। इन्होने पाया कि इस तरह की समस्याय सभी आय वर्ग के परिवारो मे पायी जा सकती है विशेषकर निम्न आय वर्ग के व्यक्तियो के आवासो मे व उसके आसपास निवास करने वाले पडोसियो के आवासो मे ऐसी समस्या प्रबल रूप से पायी जाती है। गरीबी पर्यावरणीय समस्या का विशेष कारक होती है। बाद मे 1993 मे Songsore ओर Mc Grahanan ने ग्रेटर महानगर अक्रा के आवासीय पर्यावरण पर शोध कार्य किया जिसमे घरो के जल के अपवाह सफाई, आवासीय समस्या, घरो मे कीटाणु व मक्खी मच्छर का प्रभाव, घर के अन्दर उत्पन्न होने वाले वायु प्रदूषण भोज्य पदार्थों के रख रखाव आदि से सम्बन्धित पर्यावरणीय समस्या और उसके स्वास्थ्य से सम्बन्ध का अध्ययन किया था। इनका शोध कार्य स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि घरो मे निवास करने वाले लोगो के स्वास्थ्य मे सुधार लाना स्थायी रूप से तभी सभव हो सकेगा जब उनके आवासो की पर्यावरणीय समस्या मे सुधार लाया जाय।

हाल ही मे अलीगढ नगर के आवासीय पर्यावरण पर श्री अतुकुर रहमान द्वारा 1995 मे शोध कार्य किया गया। वर्तमान मे इलाहाबाद नगर के आवासीय पर्यावरणीय समस्या पर श्री अनुपम पाण्डेय द्वारा शोध कार्य किया जा रहा है।

उद्देश्य -

प्रस्तुत शोध कार्य मे जौनपुर शहर के आवासीय पर्यावरणीय समस्या पर अध्ययन का प्रयास किया गया है। यह शहर पर्यावरणीय समस्या के शोध कार्य के लिए इसलिए चुना गया क्योकि पूर्व मे बडे–बडे महानगरो मे प्रदूषण के विभिन्न आयामो पर शोध कार्य किये जा चुके है परन्तु छोटे–छोटे शहरो पर इस दिशा मे होने वाले शोध कार्य पर कम ध्यान दिया

गया है। शहरो मे रहने वाली कुल आबादी का 70 प्रतिशत भाग छोटे शहरो मे निवास करता है। छोटे शहरो मे रहने वाले लोग बडे शहरो मे रहने वाले लागो की अपेक्षा पर्यावरणीय समस्या से ज्यादा प्रभावित रहते है। वर्तमान अध्ययन मे विशेष रूप से निम्नलिखित बातो पर ध्यान दिया गया है–

(1) जौनपुर नगर के २६ वार्डों का एव उनमे सम्मिलित मुहल्लो का सामान्य अध्ययन–

जनसख्या का घनत्व प्रत्यक घरा म निवास करन वाल औसत व्यक्तियो की सख्या प्रत्येक मकान मे रहने वाले औसत परिवारो की सख्या, शैक्षिक स्तर, एव आय।

(2) चयनित मकानो का सामान्य अध्ययन–

आय की दृष्टि से वर्गीकरण, पारिवारिक स्तर शैक्षिक व्यवसायिक एव प्रवजन का अध्ययन।

(3) घरो व घरो के स्नान घर प्रसाधन एव उनकी सफाई की स्थिति का आकलन–

मकान के प्रथम तल के प्रयाग मे आने वाल क्षेत्र का अध्ययन, कमरा की कुल सख्या और उनका क्षेत्रफल प्रतिव्यक्ति औसत प्रयोग मे आने वाला विभाग वातायन की स्थिति स्नान घर एव शौचालय की सुविधा, शौचालयो के प्रकार, घरा मे कूडो के एकत्रित करन एव उन्हे विसर्जित करने के तौर तरीके, एक शौचालय को प्रयोग मे लाने वाले व्यक्तियो की सख्या।

(4) घरो मे पेयजल आपूर्ति का स्रोत पानी की निकासी का उपाय–

पेयजल आपूर्ति की गुणवत्ता, जलापूर्ति की मात्रा, पानी सग्रह के तरीके अनुपयोगी पानी के विसर्जन का तरीका, मकान के चारो ओर पानी निकासी के लिए बनी नालियो की स्थिति नालियो के प्रकार आदि।

(5) घरो के कूडा करकट, अनुपयोगी ठोस पदार्थ एव जूठन के विसर्जन के तरीके एव भोज्य पदार्थ के रख-रखाव के तरीको का अध्ययन–

कूडा करकट, एकत्रित करने वाले स्थान से उसे हटाये जाने की बारम्बारता,

मकान मे कीडे मकोडे एव मक्खी मच्छर एव उनसे बचाव के लिए अपनाये गये तरीके भोजन ग्रहण करने का समय एव उन्हे रखने के तरीके भोजन पकाने के लिए प्रयोग म लाने वाले ससाधन।

(6) घरो मे ध्वनि प्रदूषण एव वायु प्रदूषण का आकलन-

भोजन बनाने का स्थान प्रयोग म आने वाला ईधन घर म बाहर से आने वाले धूए तथा घर के अन्दर से निकलने वाले धूये की स्थिति ध्वनि प्रदूषण का स्रोत एव तीव्रता।

(7) घरो की आय से स्वास्थ्य एव पर्यावरण मे सम्बन्ध का परीक्षण-

विभिन्न आय वर्गों के चयनित घरो मे रोगग्रस्त व्यक्तियो की स्थिति घरो मे सफाई पेयजलापूर्ति की गुणवत्ता और हैजा पेचिश से प्रभावित परिवार के सदस्य घरो के अन्दर वायु प्रदूषण की स्थिति एव उससे होने वाली बीमारिया, घरो के कूडा करकट के कारण एव पानी की समुचित निकासी न होने के कारण मलेरिया से प्रभावित लोग गन्दे पानी के प्रयोग से होने वाला पीलिया रोग से प्रभावित घर के सदस्य।

(8) चयनित घरो के विभिन्न आय वर्गों वाले गृह स्वामियो से घरो के पर्यावरण को ठीक रखने के लिए सुझाये गये उपायो का अध्ययन।

आकडों का आधार -

प्रस्तुत शोध कार्य मे आकडो का सग्रह प्राथमिक एव द्वितीयक दोना आधार पर किया गया है। यह शोध कार्य मुख्य रूप से घर घर जाकर किये गये व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर अर्थात प्राथमिक आकडो पर आधारित है। उदाहरण स्वरूप-

1- नगर का सर्वेक्षण

2- गृहस्वामियो से लिये गये साक्षात्कार

3– सरकारी अधिकारिया एव विभिन्न मुहल्ल म रहन वाल गृहस्वामिया क साथ बातचीत का आधार।

ठीक–ठीक जानकारी प्राप्त करने के लिए वार्डो मे बार–बार भ्रमण करके जनसम्पर्क किया गया। शोधकर्त्री द्वारा नगर के सर्वेक्षण का कार्य वर्ष 1999 2000 एव 2001 मे किया गया। जानकारी प्राप्त करने हेतु मुख्य रूप से महिलाओ को चुना गया क्योकि घरो मे प्राय वही उपलब्ध रहती है और अपने घरा के अन्दर की सारी परिस्थितिया स अपक्षाकृत ठीक ढग से अवगत कराने मे सक्षम रहती है।

आकडों के द्वितीयक स्रोत के आधार -

1– सिटी बोर्ड कार्यालय जौनपुर

2– जिला सूचना कार्यालय कचहरी जोनपुर

3– जल निगम कार्यालय

4– आवास विकास कार्यालय जौनपुर

शोध कार्य की विधि -

वर्तमान शोध कार्य मे निम्नलिखित तरीके अपनाये गये है। प्राथमिक आकडे घरो की स्थिति, उसमे स्नानघर एव शौचालय की सुविधा घरो मे जलापूर्ति जल की निकासी की व्यवस्था, कूडे करकट के विसर्जन की स्थिति, भोज्य पदार्थ के रखने की व्यवस्था, घर के अन्दर वायु एव ध्वनि प्रदूषण की स्थिति आदि बातो की जानकारी प्रश्नोत्तरी के माध्यम से प्राप्त किये गये। (प्रश्नोत्तरी का प्रारूप शोध–प्रबन्ध के अन्त मे दिया गया है) एक गृह का तात्पर्य उसमे रहने वाले व्यक्तियो की सख्या और उनके द्वारा प्रयुक्त होने वाली आवश्यक आवश्यकताओ की पूर्ति हेतु सग्रहित ससाधन एव मनोरजन के लिए प्रयुक्त होने वाले उपकरण है।

प्रस्तुत शोध कार्य मे प्रत्येक वार्ड से 20 से लेकर 113 चयनित मकानो का सर्वेक्षण किया गया। चयनित मकानो मे अन्तर वार्डों मे मकानो की सख्या के आधार पर किया गया है। घरो का चयन इस बात को ध्यान मे रखकर किया गया है कि वार्डों के अन्तर्गत अत्यन्त

गरीब न्यूनतम आय वाले व्यक्तियो के घरो की पर्यावरणीय स्थिति क्या है? इसी प्रकार मध्यम आय वर्ग वाल उच्च आय वर्ग वाले एव अति उच्च आय वर्ग वाल व्यक्तियो के घरो की पर्यावरणीय स्थिति कैसी हे इस प्रकार शोधकर्त्री द्वारा कुल 1580 मकानो का चयन किया गया (8 53 प्रतिशत मकान अध्ययन क क्षत्र बन)। आय की दृष्टि स चयनित मकानो को पाच वर्गों मे विभक्त किया गया हे जिसे नीचे लिखित तालिका म दर्शाया गया है।

सारणी 1 आय के आधार पर मकानों का वर्गीकरण

आय समूह	आय प्रतिमाह रू0 मे	चयनित मकानो की सख्या	प्रतिशत
अत्यतिधक कम	< 1,500 रू0	318	20 13
कम	1,500 – 2 999	283	17 91
मध्यम	3 000 – 4 999	412	26 07
उच्च	5,000 – 9,000	365	23 10
अति उच्च	> 9,000	202	12 79
कुल		1580	100 00

परीक्षण का आधार -

इस शोध कार्य मे निम्नलिखित बिन्दुओ पर परीक्षण किया गया है।

1– गरीबी प्रदूषण का सबसे बडा कारण है।

2– घरो का वातावरण घर की स्थिति, स्नानघर एव शौचालय की स्थिति, घरो मे पेयजल की आपूर्ति, घरो से पानी की निकासी एव घरो मे नाली की स्थिति, घरो के अन्दर कूडे करकट एव अनुपयोगी ठोस पदार्थो के एकत्रित करने एव विसर्जित करने की स्थिति, भोज्य पदार्थों के रख–रखाव की स्थिति एव घरो के अन्दर वायु एव ध्वनि प्रदूषण जो मनुष्य के जीवन एव उसके स्वास्थ्य को अत्यधिक प्रभावित करते है।

3– घरो मे रहने वाले व्यक्तियो के स्वास्थ्य का सम्बन्ध उनकी आय एव घर के पर्यावरण पर आधारित रहता है।

4– अत्यधिक न्यून आय वर्ग के गरीब व्यक्ति के घरो मे रहने वाल सदस्या मे निम्नलिखित प्रकार की बीमारी पायी गयी– पेचिश अतिसार पीलिया चेचक निमोनिया विभिन्न प्रकार के चर्मरोग टाइफाइड, तपेदिक एव खासी जुकाम। उच्च आय वर्ग के व्यक्तियो के घरो मे अपेक्षाकृत पर्यावरणीय स्थिति अच्छी है और उनके परिवार के सदस्यो मे गरीब परिवार के सदस्या को होने वाली बीमारिया आम तौर पर नही होती है। उच्च आय वर्ग क सदस्यो मे मानसिक तनाव हृदय रोग रक्त चाप एव मधुमेह जैसी बीमारिया पायी गयी।

अध्ययन का क्षेत्र -

जौनपुर शहर उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल मे स्थित है। यह वाराणसी से सुल्तानपुर लखनऊ एव वाराणसी फैजाबाद लखनऊ रेलवे लाइनो के मध्य मे है। जौनपुर वाराणसी से 58 किमी उत्तर पश्चिम एव इलाहाबाद से 98 से उत्तर पूर्व लखनऊ से 261 किमी दक्षिण पूर्व एव गोरखपुर से 178 किलोमीटर दक्षिण मे स्थित है। जौनपुर वाराणसी मण्डल मे आता है। इसका भूभाग 25^0 45 उत्तरी अक्षाश और 82^0 41′ पूर्वी देशान्तीर रेखाओ पर स्थित है। यह समुद्र सतह से 261–290 फीट की ऊँचाई पर बसा हुआ है। जोनपुर शहर जनपद जौनपुर के लगभग मध्य मे स्थित है। यह शहर जनपद जौनपुर का मुख्यालय है। जौनपुर का न्युनतम तापक्रम 5 8 से0ग्रेड तथा उच्चतम तापमान 46 5 से0ग्रेड के मध्य रहता है। शिक्षा की दृष्टि से उत्तर प्रदेश के जिलो मे इसका उल्लेखनीय स्थान हे।

जौनपुर नगर का भौतिक पर्यावरण -

जोनपुर शहर गोमती नदी के किनारे उत्तम प्राकृतिक सुरक्षा की दृष्टि से बसा है। प्रशासनिक एव विकास की दृष्टि से जौनपुर को 26 वार्डो मे विभक्त किया गया है। वर्तमान मे नगर पालिका का क्षेत्रफल 1667 75 हेक्टेयर है जिसका 27 04 प्रतिशत विकसित क्षेत्र है तथा 14 66 प्रतिशत भाग आवासीय क्षेत्र के रूप मे है। जौनपुर नगर को तीन भागो मे विभाजित किया गया है।

1– नगर का केन्द्रीय क्षेत्र
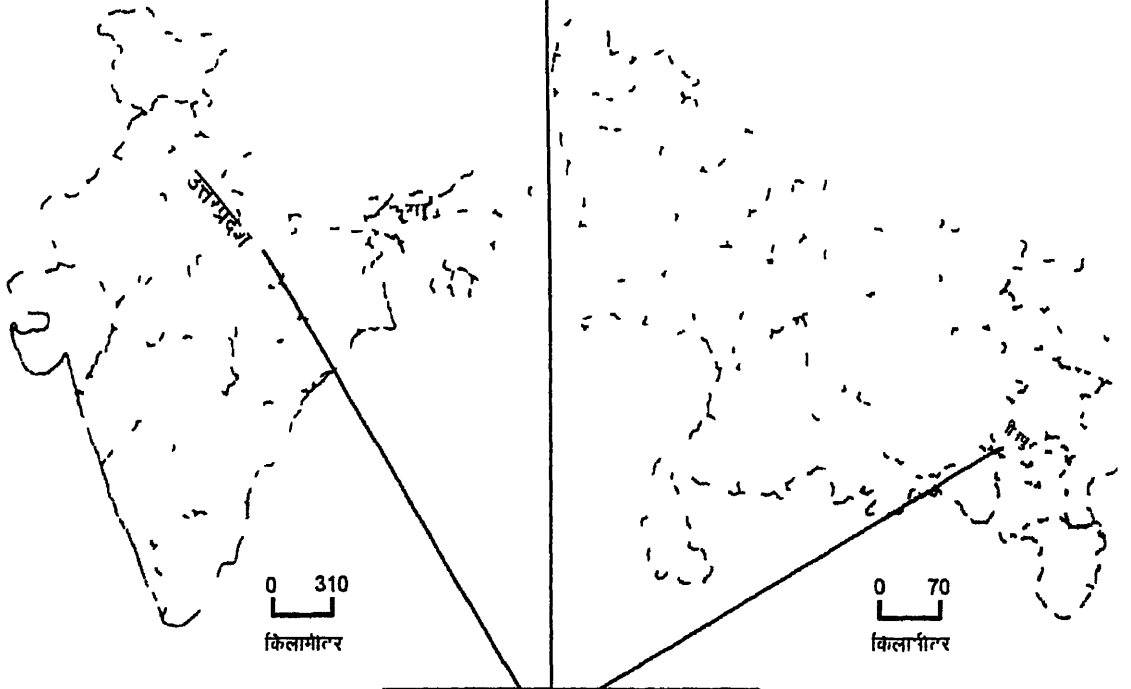
भारत
उत्तरप्रदेश
उत्तरप्रदेश
0 310
किलोमीटर
0 70
किलोमीटर
अध्ययन क्षेत्र
जौनपुर नगर
2
3
7
10
19
20
23
26
24
18
15
11
17
16
14
4
12
3
6
8
5
1
0 1
किलोमीटर
प्लेट 1

2– मध्य नगरीय क्षेत्र

3– वाह्य नगरीय क्षेत्र

1– केन्द्रीय क्षेत्र राबसे सघन जनसख्या के घनत्व वाला है इरा क्षेत्र का लगभग 88 12 प्रतिशत भाग विकरित है। 90 प्रतिशत वाणिज्य एव व्यापार इरी क्षत्र मे कन्द्रित है। इसी जान क आवासीय क्षेत्र मे 70 प्रतिशत से 80 प्रतिशत घरेलू कुटीर उद्योग है।

2– नगर का मध्य क्षेत्र केन्द्रीय जोन के चारो तरफ फैला है। इसी जोन मे 40 40 प्रतिशत भूमि कृषि प्रयाग मे आती है।

3– वाह्य क्षत्र म अनेका गाव बस है इसी कारण इस जोन की 71 24 प्रतिशत भूमि कृषि क अन्तर्गत आती है। जोनपुर नगर का भूमि प्रयोग क्षेत्रफल हेक्टेयर मे निम्नलिखित सारणी मे दर्शाया गया है।

सारणी - 2

क्रम	भूमि प्रयोग	क्षेत्रफल	प्रतिशत	विकसित क्षेत्र	
				क्षेत्रफल	प्रतिशत
1	आवासीय	244 43	14 66	244 43	54 22
2	वाणिज्य	14 97	0 90	14 97	3 32
3	औद्योगिक	7 28	0 44	7 38	1 61
4	सार्वजनिक सुविधाए	64 95	3 89	64 95	14 41
5	सरकारी प्रशासन	24 28	1 46	24 28	5 38
6	पार्क, खेल का मैदान	7 69	0 46	9 69	1 72
7	परिवहन	87 17	5 23	87 77	19 34
8	जलक्षेत्र	93 89	5 63	—	—
9	कृषि	903 31	54 16	—	—
10	विपणि उद्यान	128 89	7 12	—	—
11	बाग	90 89	6 05	—	—
योग		1667 75	100 00	453 47	100 00

भूमि उपयोग सर्वेक्षण जौनपुर सर्वेक्षण खण्ड से प्राप्त आकडा

जौनपुर नगर का सम्पूर्ण भूमाग प्राय समतल है, केवल नदी की घाटी का

भूभाग असमतल है। खनिज पदार्थों का अभाव हे। खुदाई करने पर कही–कही ककड उपलब्ध होता हे जिस जलाकर चूना बनाया जाता है। बालू एव ककड से प्राप्त चूना भवन निर्माण के काम मे आता हे। जौनपुर जनपद का न्यूनतम तापक्रम 5 8 एव उच्चतम तापक्रम 46 5 से0 ग्रेड के मध्य रहता है। औसत सामान्य वर्षा 987 मि मी है। जनपद का आर्थिक विकास मुख्य रूप से कृषि पर आधारित हे। इसका मुख्य कारण जनपद मे भारी उद्योग का न होना है। वर्तमान मे वाराणसी जौनपुर मार्ग पर कई उद्योग खुल रहे हे। प्रशासनिक दृष्टिकोण से जनपद की कानून व्यवस्था बनाये रखने तथा विकास कार्यों को ठीक ढग से लागू करने के लिए जनपद को छह तहसीलो सदर मडियाहू, मछलीशहर केराकत शाहगज तथा बदलापुर मे बाटा गया है।

जौनपुर नगर की कुल भूमि का 27 प्रतिशत भाग विकसित है जो विभिन्न भूप्रयोगो के अन्तर्गत आता है। अनेक दिशाओ मे नगर विकास को प्रतिबन्धित करने वाली नगर मे भौतिक रूकावटे भी है। विकास के लिए उपयुक्त भूमि पूर्व से पश्चिम उत्तर से दक्षिण यातायात के मुख्य भागो के साथ उपलब्ध है। जहा भविष्य मे नियोजित विकास सम्भव है। जौनपुर जनपद का सबसे बडा नगर है। नगर की जनसख्या 1981 की जनगणनानुसार 80,737 थी। नगर पालिका के आकडो के विश्लेषण से पाया गया कि चिकित्सा सुविधा मे विकास के कारण मृत्युदर मे ह्रास तथा परिवार नियोजन पद्धति आदि से जन्मदर धीरे–धीरे कम हो रही है तथापि जौनपुर नगर मे जनसख्या की प्रवित्ति 1921 से निरन्तर वृद्धि पर रही है। नगर मे कार्यकर्ताओ के अनुपात मे कमी के साथ–साथ कार्य रहित लोगोमे समानुपालिक वृद्धि हुयी जिसके परिणाम स्वरूप यहा की आर्थिक उन्नति के लिए समुचित रोजगार अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है। शहरी क्षेत्र के अन्तर्गत स्त्रियो का आर्थिक क्रिया कलापो मे बहुत अल्प भाग लेना ही नगर की जनसख्या मे कार्यरत लोगो के अनुपात मे कमी का मुख्य कारण है। श्रम शक्ति पर आश्रित सदस्यो के अनुपात का दबाव अधिक है। जिसका प्रभाव नगर के भावी विकास पर पडना स्वाभाविक है।

जौनपुर नगर के व्यावसायिक ढाचे को तीन प्रमुख श्रेणी मे बाटा गया है। 1– कृषि, 2– घरेलू उद्योग धन्धे निर्माण तथा 3 वाणिज्य, व्यापार, यातायात, सचार साधन तथा

अन्य सेवाये। प्रथम श्रेणी मे श्रम शक्ति का प्रतिशत अधिक है। जौनपुर नगर का औद्योगिक आधार सुदृढ नही है निर्माण क्रियाओ मे लोगा का इतना कम प्रतिशत यहा की विकास–रहित अर्थव्यवस्था का द्योतक है। जोनपुर नगर के आर्थिक विकास म वाणिज्य तथा व्यापार म लग लोगो का प्रतिशत उच्च है। जौनपुर नगर की आय सम्पूर्ण कमान वल सदस्या तथा पारिवारिक कर्ताओ की आमदनी को मिलाकर एक सामूहिक आय है। प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 28 800 है। जौनपुर नगर क 10 व्यक्तियो म से 8 स भी अधिक लोगो का स्तर निर्धनता क स्तर स भी निम्न है। जौनपुर नगर एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र ह। जोनपुर नगर क विकसित क्षेत्रफल का 3 32 प्रतिशत (14 91 हेक्टेयर) वाणिज्य एव व्यापार भूप्रयोग मे है। नगर मे 2000 से अधिक पजीकृत एव अपजीकृत थोक व फूटकर दुकाने है। केवल 0 22 प्रतिष्ठानो मे थोक व्यापार होता है तथा 99 4 प्रतिशत दुकाने फुटकर एव 0 4 प्रतिशत फुटकर एव थोक मिश्रित व्यापार करती है। नगर का थोक व्यापार केन्द्र स्टेशन रोड पर स्थित सुतहटटी मे है। यहा की मुख्य थोक व्यापार की वस्तुए अनाज एव सब्जी है। 1– कचहरी वाणिज्य केन्द्र 2– लाइन बाजार वाणिज्य केन्द्र, 3– मिर्जापुर मार्ग चौराहा वाणिज्य केन्द्र, 4– नईगज वाणिज्य केन्द्र, 5– खण्ड वाणिज्य केन्द्र सम्पूर्ण सर्वेक्षित दुकानदारो मे से अधिकतम 67 6 प्रतिशत दुकानदार 1000 रू से 4999 रू प्रति वर्ष आय समूह के अन्तर्गत आते है।। नगर की दुकाने अत्यधिक छोटे स्तर की हे तथा इनमे क्रय विक्रय बहुत कम मात्रा मे प्रतीत होता है। सम्पूर्ण सर्वेक्षित दुकानो मे 75 प्रतिशत दुकानो पर 1 से 2 कार्यकर्ता ही कार्य करते है। सम्पूर्ण सर्वेक्षित दुकानो मे केवल 24 प्रतिशत का स्वामित्व स्वय दुकानदारो का है। शेष दुकाने किराये की है।। नगर मे वाणिज्य इकाइयो का विकास मुख्यतया मुख्य मार्गो के किनारे हुआ है। नगर मे थोक वाणिज्य केन्द्रो की मुख्य समस्या समान उतारने एव चढाने के लिए स्थान की कमी तथा आधुनिक सग्रहागारो और गोदामो के अभाव की है। नगर मे नियोजित एव व्यवस्थित वाणिज्य केन्द्र के अभाव के कारण दुकाने आवासीय क्षेत्रो मे ही मुख्य सडको के दोनो ओर विकसित हो रही है।

जौनपुर नगर औद्योगिक दृष्टिकोण से पिछडा हुआ नगर है। जौनपुर मे केवल 7 28 हेक्टेयर भूमि उद्योग के अन्तर्गत है। जो नगर की कुल भूमि का केवल 0 44 प्रतिशत है। नगर का वर्तमान औद्योगिक स्वरूप असगठित एव तितर बितर है। प्राय सभी इकाइयो का

स्वामित्व व्यक्तिगत है। जौनपुर नगर म उद्योगो मे कार्यरत श्रमिको का प्रतिशत 23 15 प्रतिशत है जो उत्तर प्रदेश (नगरीय) औसत (26 13) की तुलना मे कम है। नगर के उद्योगो म पूजी की लागत की मात्रा बहुत कम है जो कि 8 4 लाख तथा 8 013 रू प्रति श्रमिक है। उद्योगो के विस्तार के लिए जौनपुर मे पर्याप्त भूमि उपलब्ध है। नगर के लघु स्तर के उद्योगो की क्षेत्रीय स्थिति उपयुक्त होने के बावजूद उद्योग विकसित नही हो सके है। नगर मे कुटीर उद्योगो के अन्तर्गत खाद्य एव पेय पदार्थो का उत्पादन प्रधान है।

नगर में आवासीय स्थिति -

जौनपुर नगर मे आवासीय समस्याये बहुत जटिल है। नगर मे 244 43 हेक्टेयर भूमि जो कि सम्पूर्ण नगर पालिका सीमा का 14 66 प्रतिशत है और सम्पूर्ण विकसित क्षेत्र का 54 22 प्रतिशत आवासीय प्रयोग मे है। नगर मे सामान्यत बहुसख्यक परिवार अधिक है। जौनपुर नगर का स्वरूप अभी भी ग्रामीण तथा सयुक्त परिवार प्रकृति का है। नगर मे आवासीय भवनो की बहुत कमी है। 11 6 प्रतिशत परिवार किराये के भवनो मे रहते है। पिछले दशको मे जौनपुर नगर मे भवनो के निर्माण की गति तीव्र हुई है। 1981–91 की अवधि मे नगर की जनसख्या मे लगभग 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है तथा भवनो की सख्या मे 16 प्रतिशत की वृद्धि हुयी है। प्रति व्यक्ति उच्चतम आवासीय क्षेत्र 101 वर्गफीट तथा न्यूनतम 53 वर्गफीट है। सम्पूर्ण नगर के भवनो मे 9 प्रतिशत कमरे 401 वर्गफीट या उससे अधिक क्षेत्रफल के है तथा 47 प्रतिशत कमरे 100 वर्गफीट के है जौनपुर नगर मे प्रत्येक वार्ड के लगभग 50 प्रतिशत परिवारो की आय 500 रू0 प्रतिमाह से कम है। यह आय इस नगर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने से विकास के मार्ग मे बाधा कही जा सकती है। नगर के वर्तमान आवासीय क्षेत्र मे जल तथा मल निष्कासन की व्यवस्था उपयुक्त नही है। इसी से इस नगर मे प्रदूषण किस सीमा तक व्याप्त है इसकी परिकल्पना सहज ही की जा सकती है। जल निकासी, शौचालय की सुविधा न होने के कारण नगर का अधिकाश भाग मलिन बस्ती के रूप मे परिणत हो गया है। नगर मे सम्पूर्ण भवनो का 89 प्रतिशत आवासीय प्रयोग तथा 8 प्रतिशत आवासीय व व्यापारिक दोनो प्रयोग मे है। जौनपुर नगर के अधिकाश वार्डो मे जलापूर्ति विद्युत, विशुद्ध वायु एव प्रकाश, रसोईघर,

शौचालय स्नानगृह तथा एकान्तता आदि की सुविधाये न्यूनतम है। नगर के 58 प्रतिशत परिवार नल द्वारा पेयजल प्राप्त करते है तथा 41 7 प्रतिशत परिवार हेण्डपम्प कुए एव नदी द्वारा जल लेते है। 43 7 परिवार विद्युत का उपयोग करते है। शष परिवार मिटटी का तल जलाते हं। नगर के लगभग 50 प्रतिशत परिवारा म निजी शौचालय नही ह इसके लिए व खुले भूभाग का शौचालय क काम मे लाते है। जौनपुर नगर के 55 5 प्रतिशत परिवारो मे पृथक रसोईगृह नही है। 808 प्रतिशत परिवार मे पृथक स्नानगृह उपलब्ध नही है। सम्पूर्ण जोनपुर नगर मे जल निस्तारण प्रणाली असतोषजनक है। नगर मे 32 3 भवनो मे रोशनदान नही है। जोनपुर नगर मे गन्दे वातावरण से 45 5 प्रतिशत परिवार कुप्रभावित है। नगर म लगभग 10 प्रतिशत भवन पूर्णतया आवासीय योग्य नही है। नगर मे अधिकाश भवन एक मजिल के है। नगर के 37 प्रतिशत भवन ईंट से बने है जो काफी पुराने है। नगर के लगभग 54 प्रतिशत भवन निवास के लिए उपयुक्त है।

जौनपुर नगर में प्रदूषण का मुख्य कारण -

जौनपुर नगर मे भूमिगत मल–प्रवाह प्रणाली नही है। अग्रेजो के शासनकाल मे मात्र रेलवे स्टेशन की ओर से एक भूमिगत मल प्रवाह प्रणाली बनी थी जो स्वतत्रता के पूर्व से ही बेकार होकर वन्ध थी जो 2002 मे साफ करायी गयी। उचित जल निकासी की सुविधा के अभाव के कारण सम्पूर्ण नगर का वातावरण दूषित जल तथा कूडाकरकट की गन्दगी से गधयुक्त बना रहता है। मात्र 56 8 प्रतिशत परिवारो मे जल निकासी की सुविधा प्राप्त है। शेष के लिए कोई प्रावधान नही है। सम्पूर्ण शहर मे खुली नाली सडक के दोनो किनारो पर देखने को मिलती है। कही कही गन्दा पानी वर्षभर टिका रहता है और वर्षाकाल मे सम्पूर्ण क्षेत्र गन्दे पानी की दुर्गन्ध से भर उठता है। वर्ष 1997–98 मे जिलाधिकारी नवनीत सहगल ने नगर मे सुलभ शौचालयो का निर्माण तथा जिन क्षेत्रो मे पानी निकासी हेतु नालिया बिलकुल नही थी नालिया बनवाकर उस क्षेत्र को प्रदूषण से थोडा बहुत छुटकारा दिलाने मे सहयोग प्रदान किया। वर्ष 1998 से गोमती एक्शन प्लान के तहत सीवर लाइन बनाने के लिए राज्य सरकार की स्वीकृति मिली हे और इस दिशा मे कार्य किया जा रहा है। नगर मे पेयजल समस्या का समाध

ान मात्र नगर की 50 प्रतिशत आवश्यकता के लिए नगर पालिका द्वारा उपलब्ध ह शेष 50 प्रतिशत निजी हैण्डपम्प से बाहर से कूप द्वारा तथा नदी द्वारा सीधे पानी लेत है।

सामुदायिक सुविधाएँ -

जौनपुर नगर मे विभिन्न स्तर की 66 शिक्षण सस्थाये है जिनमे 20 000 से अधिक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते है। नगर मे शिक्षण सस्थाओ का वितरण असन्तोषजनक है। अधिकाश विद्यालयो के भवन शिक्षण कार्य के योग्य नही है। 66 शिक्षण सस्थाओ मे से सर्वेक्षित 46 सस्थाओ मे लगभग 50 प्रतिशत किराये के भवनो मे स्थित है जिनमे 33 भवन पक्के है। सर्वेक्षित विद्यालयो के भवनो मे से 20 भवन उपयुक्त है बाकी 26 भवन अनुपयुक्त है।। नगर के 96 4 प्रतिशत परिवारो के लिए प्राइमरी स्कूल की दूरी 0 8 किमी की परिधि मे हे। प्राइमरी स्कूल की दूरी के सम्बन्ध मे स्थिति सतोषप्रद हे। जौनपुर नगर मे 15 चिकित्सालय है। इन चिकित्सालयो मे एलोपैथिक पद्धति से चिकित्सा होती है इन अस्पतालो मे प्रतिदिन 1000 के लगभग रोगी चिकित्सा हेतु आते है। ऑपरेशन की सुविधा जनपद अस्पताल महिला अस्पताल, टी वी अस्पताल तथा आख के अस्पताल मे उपलब्ध है।

जौनपुर नगर की सेवा के लिए 8 डाक व तारघर है। डाकघरो का वितरण नगर मे सतोषप्रद है। नगर मे टेलीफोन की स्थानीय तथा ट्रककाल की सुविधा उपलब्ध है। नगर मे कई थाने है। पुलिस विभाग द्वारा ही नगर मे यातायात का नियत्रण किया जाता है। नगर मे मनोरजन स्थलो की अत्यधिक कमी है। नगर मे केवल एक पार्क सुतहट्टी बाजार के समीप स्टेशन रोड पर है। जौनपुर नगर तथा इसके आसपास बहुत से प्राकृतिक सौदर्य स्थल है परन्तु कोई भी स्थल विकसित नही किया गया है। नगर मे 7 क्लब तथा 3 पुस्तकालय है। नगर की जनसख्या के अनुपात मे पुस्तकालय की सख्या अति न्यून है। नगर मे 7 सिनेमा हाल है। नगर मे 2 महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल—मैहर देवी का मदिर हिन्दुओ के लिए महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है, मुसलमानो के लिए लाल दरवाजा मस्जिद स्थित इमामबाडा महत्वपूर्ण है। उपरोक्त के अतिरिक्त नगर मे अन्य स्थल भी है जो धार्मिक एव सामाजिक महत्व के है।

नगर में सार्वजनिक उपयोगितायें तथा सेवायें -

जौनपुर नगर गोमती नदी के दोना किनारे पर स्थित होन क कारण पर्याप्त जलपूर्ति करने की दिशाम उपयुक्त है। नगर के वाह्य क्षत्रा म जलपूर्ति की कमी ह। गामती क किनार स्थित पम्पिग स्टशन स प्रतिवर्ष 234 कराड लीटर पानी पम्प किया जाता ह। वर्तमान जलापूर्ति व्यवस्था नगर पालिका के लगभग 50 प्रतिशत भाग मे ही उपलब्ध है। नगर की जलापूर्ति असन्तोषप्रद हे।

यातायात एव परिवहन -

जौनपुर नगर प्रान्तीय राजमार्गों द्वारा प्रदेश के महत्वपूर्ण नगरो से जुडा है। नगर के बाहरी भागो मे स्थित बस्तिया कच्ची सडको द्वारा जुडी हुयी है जिनकी दशा बडी ही दयनीय है। जौनपुर नगर के कुल क्षेत्र का केवल 2 23 प्रतिशत भाग ही यातायात एव परिवहन के अन्तर्गत प्रयोग मे आता है। बस सेवा का लाभ मुख्य मार्गों तक ही सीमित है क्योकि सडको की चौडाई अपर्याप्त है। नगर मे रिक्शा ही यातायात के सामान्य साधन है तथा साइकिल यात्रा का प्रमुख साधन है। मोटर साइकिल तथा स्कूटर अन्य भारी वाहनो की तुलना मे अधिक है। जौनपुर मे अधिकाश बस सेवा उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन निगम द्वारा सचालित होती है। जौनपुर मे क्षेत्रीय स्तर पर यात्रा की सुविधाये राजकीय बसो, टेम्पो तथा टैक्सी द्वारा उपलब्ध है। नगर मे आने वाली वस्तुओ की तुलना मे जाने वाली वस्तुओ की मात्रा अत्यन्त कम है। सडको पर वाहनो की वृद्धि, अनियोजित चौराहो अपर्याप्त चौडे मार्ग एव अतिक्रमण के फलस्वरूप दुर्घटनाये होती है। जौनपुर उत्तर रेलवे के फैजाबाद वाराणसी सभाग पर स्थित है। जोनपुर स्टेशन उत्तरी भारत के महत्वपूर्ण नगरो से सुसम्बद्ध है जौनपुर जक्शन तथा कचहरी रेलवे स्टेश ही ऐसे स्टेशन है जो नगर पालिका सीमान्तर्गत आते है। जौनपुर जक्शन स्टेशन पर प्रतिदिन अधिकतम यात्रियो का आवागमन होता है। वर्तमान मे सडको तथा रेलवे के विकास के बाद नदी यातायात का महत्व नगण्य हो गया है। नदी यातायात की सेवाये मियापुर तथा पानदरीबा मे उपलब्ध है। जौनपुर नगर मे मुख्य रूप से यातायात की समस्याओ के निम्नलिखित कारण है।– 1– तीव्र एव मदगामी वाहनो की सख्या मे वृद्धि। 2– सामान उतारने एव चढाने

जौनपुर नगर के वार्डो का विभाजन
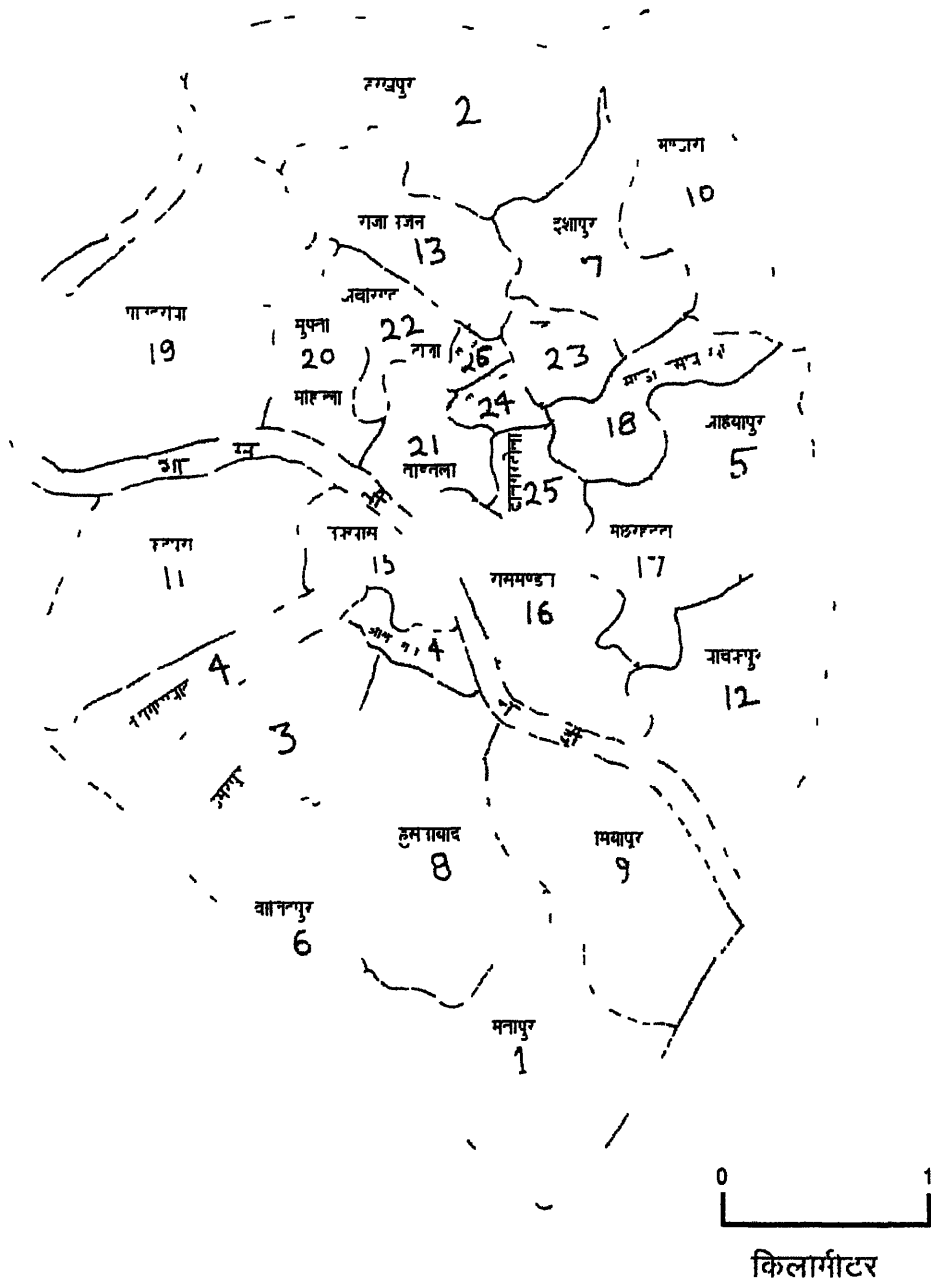
स्रोत - कार्यालय नगर परिषद् जौनपुर

के लिए अपर्याप्त स्थान, 3– अनाधिकृत रूप स वाहन खडा करना 4 सडको की कम चोडाई 5- जटिल एव दयनीय चौराहा का विकास, 6– बाढ 7– मिश्रित वाहन 8– क्षत्रीय यातायात 9–अतिक्रमण, 10– अनुपयुक्त मार्गों की प्रणाली का विकास 11 पार्किंग सुविधा का पूर्णतया अभाव।

जौनपुर नगर का सास्कृतिक पर्यावरण -

नगर का इतिहास -

अपने अतीत एव विद्या वैभव के लिए सुविख्यात जौनपुर अपना एक विशिष्ट ऐतिहासिक सामाजिक एव राजनैतिक अस्तित्व रखता है। पौराणिक कथानको शिलालेखो ध्वासावशेषो एव अन्य उपलब्ध तथ्यो के आधार पर अतीत का अध्ययन करने पर जौनपुर का वास्तविक स्वरूप किसी न किसी रूप मे उत्तर वैदिक काल तक दिखायी पडता है। आदि गगा गोमती नगर का गौरव एव इसका शातिमय तट तपस्वी ऋषियो एव महाऋषियो के चिन्तन मनन का एक प्रमुख पुण्य स्थल था जहा से वेदमत्रो के स्वर प्रस्फुटित होते थे। आज भी गोमती नगर के तटवर्ती मदिरो से देववाणिया गूज रही है।

शिक्षा के क्षेत्र मे इस जनपद का महत्वपूर्ण स्थान रहा है यहॉ दूसरे देशो से अरबी व फारसी की शिक्षा ग्रहण करने के लिए छात्र आते रहे है। शेरशाह सूरी की शिक्षा दीक्षा भी यहा हुई थी यही पर सूफीमत भी पल्लवित और पुष्पित हुआ। शर्की काल मे हिन्दू–मुस्लिम साम्प्रदायिक सद्भाव का अनूठा दिग्दर्शन रहा और जो विरासत मे आज भी विद्यमान है।

1194 ई0 मे कुतुबुद्दीन एबक ने मनदेय (वर्तमान मे जफराबाद) पर आक्रमण कर दिया तत्कालीन राजा उदयपाल को पराजित किया और दीवानजीत सिह को सत्ता सौप कर बनारस की ओर चल दिया। 1389 ई0 मे फिरोजशाह का पुत्र महमूद शाह गद्दी पर बैठा। उसने मलिक सरवर को मत्री बनाया और बाद मे 1393 मे मलिक उस शर्क की उपाधि देकर कन्नौज से बिहार तक का क्षेत्र उसे सौप दिया। मलिक उसशर्क ने जौनपुर को राजधानी बनाया और अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। शर्की वश के सस्थापक मलिक उसशर्क

की मृत्यु 1396 ई0 म हा गयी। जौनपुर की गद्दी पर उसका दत्तक पुत्र सैयद मुबारकशाह बैठा उसके बाद उसका छोटा भाई इब्राहिम शाह गद्दी पर बैठा। इब्राहिम शाह निपुण व कुशल शासक रहा। उसने हिन्दुओ क साथ सद्भाव की नीति पर कार्य किया। शर्कीकाल म जौनपुर मे अनको भव्य भवनो, मस्जिदो व मकबरो का निर्माण हुआ। फिरोजशाह न 1393 ई मे अटाला मस्जिद की नीव डाली थी, लेकिन 1408 मे इसे इब्राहिम शाह ने पूरा किया इब्राहिम शाह ने जामा मस्जिद एव बडी मस्जिद का निर्माण प्रारम्भ कराया इसे हुसेनशाह ने पूरा किया। शिक्षा सस्कृति, सगीतकाल और साहित्य के क्षेत्र ने अपना महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले जनपद जौनपुर मे हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायिक सद्भाव का जो अनूठा स्वरूप शर्कीकाल मे विद्यमान रहा है, उसकी गध आज भी विद्यमान है।

शोध का विवरण -

वर्तमान शोध कार्य तीन भागो एव पाच अध्यायो मे विभाजित है। भाग एक मे सभी वार्डों का सामान्य विवरण एव चयनित आवासो के सम्बन्ध मे उल्लेख किया गया है। यह सब अध्याय एक मे समाहित है। इस अध्याय मे वार्डों का सामान्य विवरण, प्रत्येक वार्ड की जनसख्या प्रत्येक परिवार मे औसत सदस्यो की सख्या, प्रत्येक मकान मे औसत परिवारो की सख्या साक्षरता स्तर एव आय का विवरण आदि बातो का अध्ययन कर उसका उल्लेख करने का प्रयास किया गया है चयनित मकानो की सामान्य विशेषताये– जैसे उत्तरदाता की सामान्य विशेषता आय के आधार पर वर्गीकरण परिवारो की मौलिक स्थिति, परिवार का शैक्षिक व्यावसायिक एव स्थानान्तरण करने की स्थिति का वर्णन किया गया है। भाग दो मे जौनपुर शहर मे स्थित मकानो की पर्यावरणीय स्थिति का विवरण है। यह भाग क्रमश द्वितीय तृतीय चतुर्थ एव पचम, चार अध्यायो मे विभक्त है। द्वितीय अध्याय मे मकानो का स्नानगृह एव सफाई की स्थिति, मकानो की श्रेणी, मकान के फर्श का आकार, मकान मे कमरो की सख्या, कमरो का औसत आकार, शयनकक्ष मे प्रतिव्यक्ति के लिए फर्श पर मिलने वाला हिस्सा, कमरो मे वातायन की सुविधा, शौचालय की सुविधा, शौचालय का प्रकार जैसे निजी (मकान के अन्दर) अथवा बाहर खुले स्थान मे, अनुपयोगी वस्तुओ को एकत्रित करने एव उसे विसर्जित करने की स्थिति,

बाहर खुल स्थान म अनुपयागी वस्तुआ का एकत्रित करन एव उस विगर्जित करन की स्थिति एव एक शौचालय का उपयोग मे लाने वाल व्यक्तिया की सख्या आदि का उल्लेख किया गया है। तृतीय अध्याय मे मकानो म जलापूर्ति का विवरण जल निकासी की स्थिति जलापूर्ति का स्रात पयजल की गुणपवत्ता जलापूर्ति की मात्रा, पयजल क सग्रह का तरीका, मकाना के अ ुपयोगी जल की ि कासी मका ा के धारा आर ाली की स्थिति ालिया क प्रकार जल जमाव की स्थिति एव प्रकार का वर्णन है।

चोथे अध्याय मे मकानो मे कूडा करकट रखने एव विसर्जन की स्थिति घरो मे भाज्य पदार्थो का रखन की स्थिति औद्योगिक अपशिष्ट कूडे क ढर का सिटी बार्ड द्वारा उठाने की बारम्बारता मकान मे कीडे मकोडे एव कीटाणु के होने की स्थिति आदि का विवरण है। अध्याय पाच म जोनपुर नगर के घरो म वायु प्रदूषण एव ध्वनि प्रदूषण की स्थिति का वर्णन है। भाग तीन मे जौनपुर नगर का पर्यावरण व स्वास्थ्य का सम्बन्ध तथा निष्कर्ष एव सूझाव दिया गया है।

भाग - एक

सामान्य विवरण
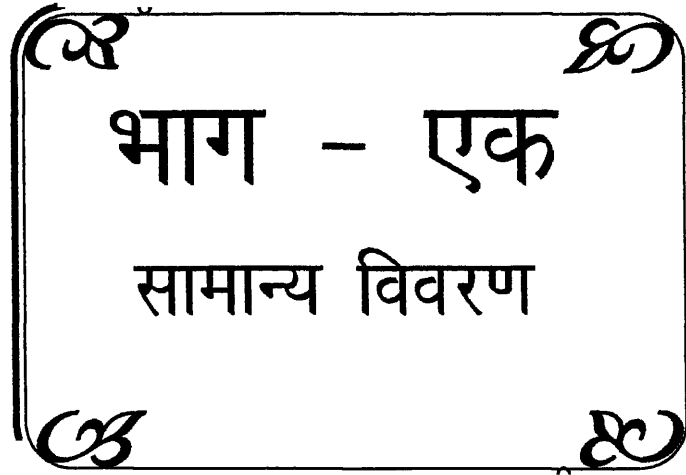
अध्याय - एक

वार्डों का सामान्य अध्ययन एवं चयनित मकानों का सामान्य अध्ययन

जोनपुर नगर की जनसख्या मे दिनादिन हो रही वृद्धि का कारण ग्राम्याचलो से शहरा म निवास करन का फेशन बराजगारी क कारण छाट–माट कारोबार क सिलसिल मे नगर मे रहने की विवशता एव अच्छी शिक्षा दिलान के लिए अभिभावको द्वारा नगर म स्थायी निवास बना लेने की योजना हे। जौनपुर नगर की जनसख्या 1961 म 61 851 थी जो 1971 मे बढकर 80,737 हो गयी 1981 मे जनसख्या बढकर 1 05,140 हो गयी व 1991 मे जनसख्या बढकर 1 36 062 हो गयी है। सर्वेक्षण से यह पता चला है कि शहर की आबादी मुख्य रूप स गॉव से शहर म आकर बसने वाले लोगो के कारण ही बढी। 30 वर्ष पूर्व नगर की जनसख्या 80,737 थी जो वर्तमान मे लगभग दोगुनी हो चुकी है नगर की आबादी मे प्रत्येक वर्ष 1,500 व्यक्ति, अतिरिक्त खाने की आवश्यकता कपडे व मकान की आवश्यकता, यातायात साफ–सफाई व स्वास्थ्य सुविधाओ की आवश्यकता को लेकर जुड रहे है।

सारणी 1 1 जौनपुर नगर के वार्डों मे जनसख्या का वितरण (1999)

वार्ड न0	वार्ड का नाम	जनसख्या	श्रेणी
1	मतापुर	3000	26
2	हरखपुर	7210	2
3	उमरपुर	3878	22
4	जहॉगीराबाद	5894	10
5	अहियापुर	3000	25
6	वाजिदपुर	6936	3
7	ईशापुर	5288	13
8	हुसेनाबाद	7882	1
9	मियॉपुर	5903	9
10	भण्डारी	5000	17
11	कटघरा	4227	21
12	चाचकपुर	5294	12
13	रौजाअर्जन	5940	8
14	ओलन्दगज	3058	24
15	नखास	5322	11

16	रासमण्डल	5246	14
17	मछरहटटा	6171	5
18	मण्डी नसीब खॉ	5159	15
19	पानदरीबा	4819	18
20	मुफ्तीमुहल्ला	4717	20
21	ताडतला	6131	6
22	अबीरगढटोला	6845	4
23	उर्दू	6015	7
24	ख्वाजीगी टोला	4744	19
25	ढालगर टोला	5133	16
26	मीरमस्त	3250	23

स्रोत – कार्यालय नगर परिषद् जोनपुर

सारणी 1 1 जौनपुर नगर के वार्डो मे जनसख्या वितरण (1999) को दर्शाती है। सारणी के अनुसार वार्ड न0 8 हुसेनाबाद की जनसख्या सबसे अधिक है यह वार्ड वह स्थान है जहा पहले अधिवास विकसित हुआ। यह वार्ड नगर का सबसे पुराना भाग है इस वार्ड के कुछ भाग को लेकार नया वार्ड मतापुर बना। वार्ड न0 1 की जनसख्या सबसे कम है। यह वार्ड नया विकसित भूभाग है।

सारणी 1 2 जौनपुर नगर के वार्डो का वर्गीकरण जनसख्या के आधार पर

जनसख्या वितरण	वार्ड नम्बर	कुल वार्ड
3000 – 4000	1,5, 3, 14 26	5
4000 – 5000	11, 19 20, 24	4
5000 – 6000	4, 7, 9, 10, 12, 13, 15 16,18, 25	10
6000 – 7000	6, 17, 21 22, 23,	5
> 7000	2, 8	2

जौनपुर नगर के वार्डो मे जनसख्या वितरण
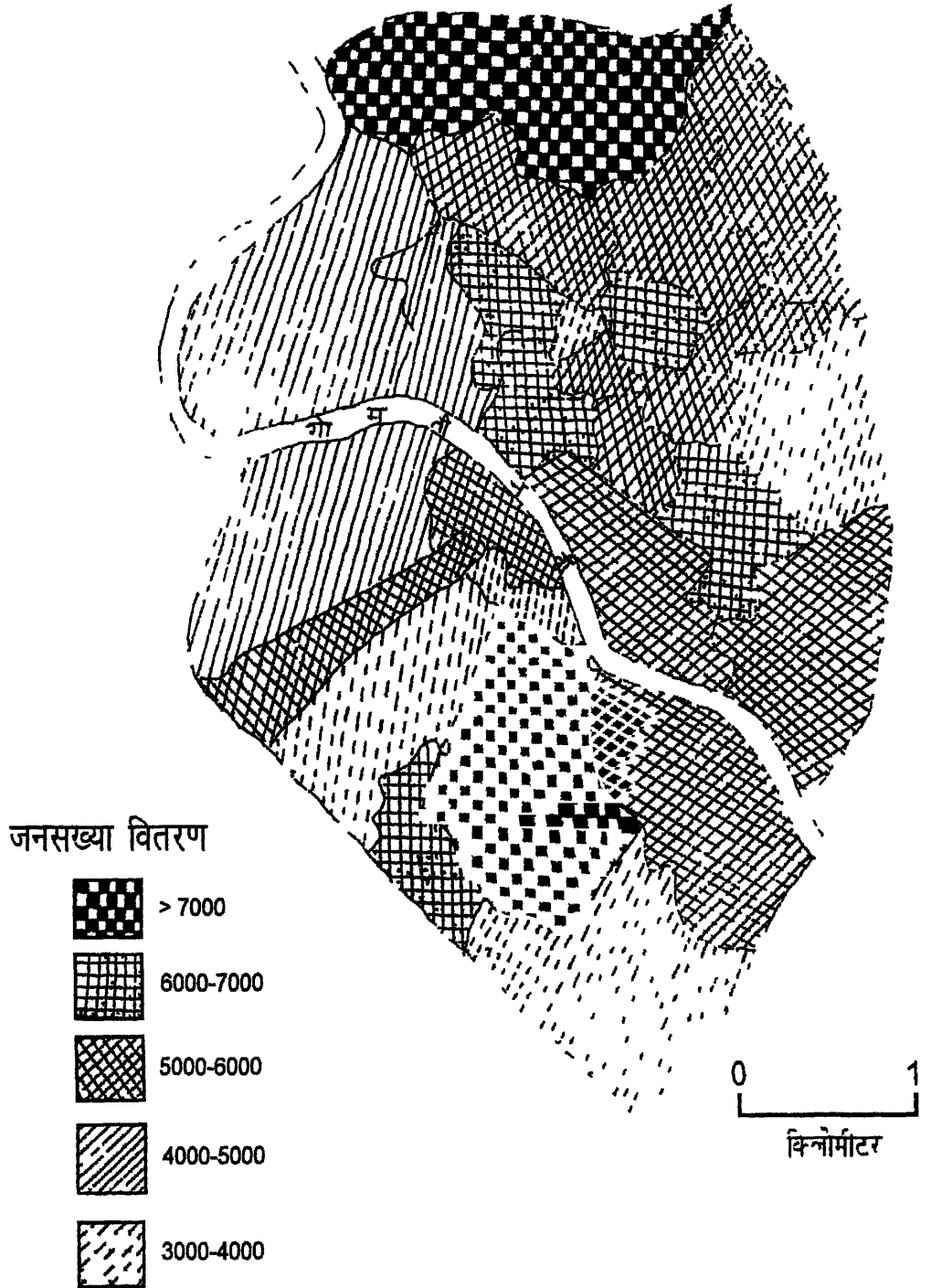
प्लेट 11

सारणी 1 2 और प्लट 1 1 म प्रत्यक वार्ड म जनसख्या का वितरण पॉच विभागो मे, सबसे कम 3000–4000 तथा सबसे अधिक 7000 से अधिक जनसख्या के आधार पर दर्शाया गया हे। कुल पॉच वार्ड एस है जहा जनसख्या का वितरण 3000–4000 तक है। य वार्ड है मतापुर अहियापुर उमरपुर ओलन्दगज व मीरमस्त। इनमे से मतापुर मीरमस्त व अहियापुर नये विकसित क्षेत्र हे इन वार्डो मे हिन्दु धर्मावाल्मबी परिवार ही अधिक ही रहते है। चार वार्ड ऐस हे जहा 4000–5000 व्यक्ति निवास करते है ये वार्ड है कटघरा पानदरीबा, मुफ्ती मुहल्ला व ख्वाजगी टोला, इन वार्डो मे हिन्दू, मुसलमान की मिली–जुली आबादी है। यहॉ मध्यम जनसख्या का घनत्व पाया जाता हे क्योकि बडे परिवार की मुसलमान आबादी हिन्दू और सिक्ख आबादी से समायोजन कर लेती है। कुल दस वार्ड ऐसे है जहॉ जनसख्या 5000–6000 के बीच है इनमे अधिकतर मुस्लिम बाहुल्य आबादी वाले वार्ड है जैसे मियॉपुर, रौजाअर्जन मण्डी नसीब खॉ, ढालगर टोला आदि इनमे से अधिकाश वार्ड नगर के मध्य भाग मे घने आबाद है दो वार्ड ऐसे है जहॉ की जनसख्या 7000 से भी अधिक है ये वार्ड है हुसेनाबाद और हरखपुर। इनमे हिन्दू और मुसलमान मिश्रित जनसख्या पाई जाती है। हुसेनाबाद नगर के मध्य भाग मे है जबकि हरखपुर नगर के बाहरी सीमा पर अवस्थित है।

सारणी 1 3 जौनपुर नगर के प्रत्येक वार्ड मे मकानो की सख्या, परिवारो की सख्या एव औसत परिवारो की सख्या का विवरण

वार्ड न0	मकानो की सख्या	परिवारो की सख्या	प्रतिमकान औसत परिवार
1	425	637	1 49
2	1001	1033	1 03
3	902	951	1 05
4	772	844	1 09
5	400	300	0 75
6	1322	1384	1 04
7	722	778	1 00
8	1031	1006	0 97

9	821	865	1 05
10	960	969	1 00
11	606	623	1 02
12	699	743	1 06
13	707	738	1 04
14	416	436	1 04
15	778	786	1 01
16	752	782	1 03
17	809	823	1 01
18	489	600	1 22
19	602	658	1 09
20	498	504	1 01
21	834	863	1 03
22	581	491	0 84
23	771	773	1 00
24	625	638	1 02
25	687	695	1 01
26	300	400	1 33

स्रोत – कार्यालय नगर परिषद् जौनपुर

मकान मे रहने वाले परिवारो की सख्या, मकान मे जनसख्या घन्तव के साथ लोगो के जीवन यापन के स्तर को भी दर्शाती है। जौनपुर नगर मे कुल 18 510 मकानो मे 19,320 परिवार निवास करते है। प्रति मकान 1 04 औसत परिवार निवास करते है।

चयनित घरो की सामान्य विशेषताये -

अध्याय का यह भाग मुख्यत व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित ह।कुल चयनित 1 580 घरा की सामान्य विशषताआ म आयु लिग व धर्म का वर्गीकरण किया गया व आय समूहा का वर्गीकरण किया गया सामान्य परिवार की विशषताआ म परिवार का मुखिया तथा परिवार क कुल सदस्यो की सख्या परिवार का स्तर वाहना व सुविधाओ के स्वामित्व, शैक्षिक व्यावसायिक स्तर व स्थानान्तरण आदि के बारे मे सर्वेक्षण किया गया। अध्याय का यह भाग मुख्यत सर्वेक्षण पर आधारित ह। आकडे प्रश्नावली के आधार पर बनाये गय है जो जोनपुर नगर क 26 वार्डो क 1580 मकानो के सर्वेक्षण पर आधारित हे। प्रत्येक मकान मे एक घर है एक घर का मुखिया है और अगर परिवार क लोग अलग रहना चाहत ह ता उनक पास कम से कम एक कमरे का फ्लैट हे, ऐसे फ्लेट की भी गणना एक मकान के रूप मे की गयी हे। जौनपुर नगर के कुल 18 510 मकानो मे से 1,580 मकान (8 53 प्रतिशत) इस अध्ययन के लिए चुने गये।

उत्तरदाताओं की सामान्य विशेषताये -

उत्तरदाताओ का चयन करने मे इस बात को ध्यान मे रखा गया कि महिलाओ का ही चयन किया जाय क्योकि महिलाये अधिकतर घरो मे उपलब्ध रहती है और घर की व्यवस्था के बारे मे अधिक जानती हे। महिलाये अपना 16 घण्टे से अधिक समय घर के काम मे व्यतीत करती है।

सारणी 1 4 जौनपुर नगर के उत्तरदाताओ मे स्त्री पुरूष का वर्गीकरण (1999)

लिग	लोगो की सख्या	प्रतिशत	श्रेणी
स्त्री	988	62 53	1
पुरूष	592	37 47	2
योग	1580	100 00	
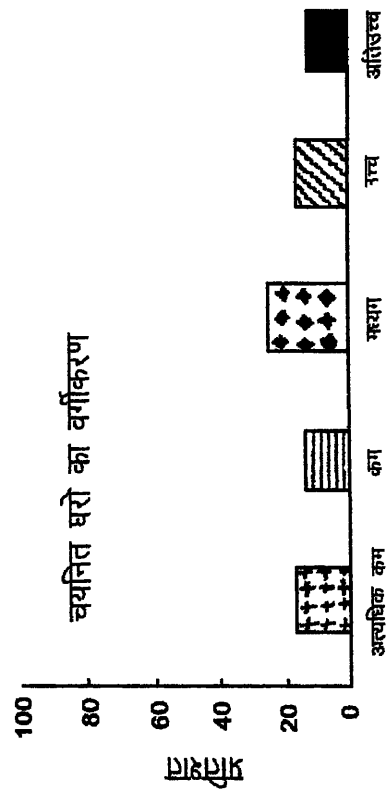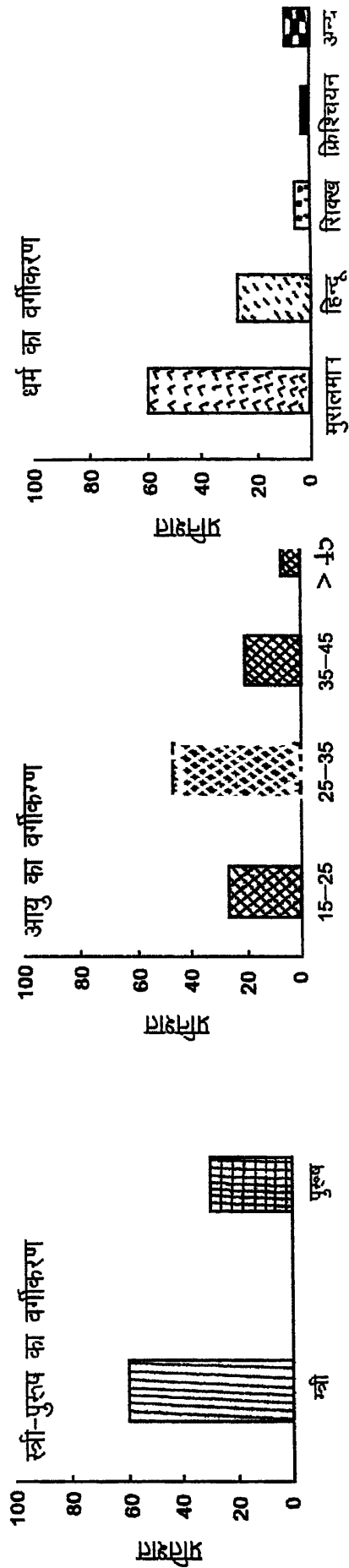
स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 1 4 और प्लेट 1 2 उत्तरदाताओ को स्त्री पुरूष मे वर्गीकृत करके दिखाता हे। लगभग 62 53 प्रतिशत उत्तरदाता महिलाये थी और 37 47 प्रतिशत उत्तरदाता पुरूष थे। महिलाओ की अधिक सख्या उन आकडो के सत्यापन मे सार्थक थी जिन्हे सर्वेक्षण के दौरान एकत्रित किया गया क्योकि महिलाये अधिक समय घरो मे व्यतीत करती हे।

सारणी 1 5 जौनपुर नगर के उत्तरदाताओ की आयु का वर्गीकरण (1999)

आयु समूह	लोगो की सख्या	प्रतिशत	श्रेणी
15–25	382	24 18	2
25–35	697	44 11	1
35–45	345	21 84	3
45 से ऊपर	156	9 87	4
योग	1580	100 00	

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

उत्तरदाताओ का आयु समूहो मे वर्गीकरण सारणी 1 5 और प्लेट 1 2 मे दिखाया गया है। यह पाया गया कि कुल 1580 उत्तरदाताओ मे से लगभग आधे (44 11 प्रतिशत) 25 से 35 वर्ष के बीच मे थे और बहुत कम उत्तरदाता (9 87 प्रतिशत) 45 वर्ष से ऊपर थे। यह दिखाता है कि जिन परिवारो मे सर्वेक्षण किया गया वे अधिकतर युवा थे। सारणी 1 6 और प्लेट 1 2 उत्तरदाताओ के धर्म का वर्गीकरण दिखाता है। घर के अन्दर की एव बाहर की हालत का अदाजा धर्म के आधार पर भी लगाया जा सकता है। यदि घर की व्यवस्था ठीक नही है एव सम्बन्धित मुहल्ला कूडा करकट एव पानी की निकासी न होने के कारण गन्दा है तो यह पाया गया कि इन क्षेत्रो मे अधिकतर मुसलमान रहते है। यदि कोई क्षेत्र या मुहल्ला अपेक्षाकृत साफ पाया गया है तो वे हिन्दुओ से सम्बन्धित है। भारत के लगभग सभी शहरो मे यह स्थिति देखी जा सकती है। सर्वेक्षण करते समय इस बात को ध्यान मे रखा गया कि सभी धर्मों से लोग लिये जाये। इसलिए विभिन्न धर्मों से सम्बन्धित मकान ही चयनित किये गये। यह पाया गया कि 60 38 प्रतिशत उत्तरदाता मुसलमान है और 28 17 प्रतिशत हिन्दू है। 2 48 प्रतिशत सिख, 0 89

प्रतिशत क्रिश्चियन पाये गये हे एव 8 16 प्रतिशत अन्य धर्मा से जेसे बाद्ध जेन एव पारसी से सम्बन्धित हे।

सारणी 1 6 जौनपुर नगर के उत्तरदाताओ मे धर्म का वर्गीकरण (1999)

धर्म	लोगो की सख्या	प्रतिशत	श्रेणी
मुसलमान	954	60 38	1
हिन्दू	445	28 17	2
सिक्ख	38	2 40	4
क्रिश्चियन	14	0 89	5
अन्य	129	8 16	3
योग	1580	100 00	

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

सारणी 1 7 चयनित घरो का आय के अनुसार वर्गीकरण (1999)

आय समूह	आय प्रतिमाह रू0 मे	चयनित मकानो की सख्या	प्रतिशत
अत्यधिक कम	< 1500	318	20 13
कम	1500 – 2999	283	17 91
मध्यम	3000 – 4999	412	26 07
उच्च	5000 – 9000	365	23 10
अति उच्च	> 9000	202	12 79
	योग	1580	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

जैसा कि सारणी 1 7 और प्लेट 1 2 मे दर्शाया गया है 26 07 प्रतिशत घर मध्यम आय वर्ग समूह के अन्तर्गत आते है, 23 10 प्रतिशत घर उच्च आय वर्ग समूह के अन्तर्गत और 12 79 प्रतिशत

अत्यधिक उच्च आय वर्ग समूह के अन्तर्गत आते है। उत्तरदाताओ से उनके मासिक आय के बारे मे पूछा गया था और इस अध्ययन के लिए पाच विभाग बनाये गये। कुछ घरो मे उत्तरदाताओ ने अपनी आय के बारे मे ठीक–ठीक जानकारी नही दी। इन लोगो ने उससे कम आय बतायी जितना कि वे कमाते है। ये लोग आयकर से बचने के लिए अपनी आय छुपाते है। ऐसे उदाहरणो मे इन घरो मे पायी जाने वाली सुविधाओ से वाहनो आदि का स्वामित्व देखकर आय का अनुमान लगा लिया गया।

परिवार की मूल विशेषताये -

परिवार की मूल विशेषताओ मे इस बात पर विचार किया गया कि परिवार के मुखिया को लिया जाय एक मकान मे कितने परिवार रहते है, एक परिवार मे कितने सदस्य है आदि का सर्वेक्षण किया गया।

सारणी 1 8 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे मुखिया का वर्गीकरण (1999)

आय समूह	पिता	माता	पुरूष कमाने वाला सदस्य	अन्य	योग
अत्यधिक कम	55 66	18 24	18 55	7 55	100 00
कम	50 89	28 27	14 13	6 71	100 00
मध्यम	47 81	20 87	26 95	4 37	100 00
उच्च	30 42	17 80	45 20	6 58	100 00
अति उच्च	28 71	17 82	46 04	7.43	100 00
योग	42 70	20 60	30 17	6 53	100 00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 1 8 और प्लेट 1 3 चयनित घरो मे मुखिया का वर्गीकरण दर्शा रहा है। लगभग 60 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग समूह मे एव 51 प्रतिशत कम आय वर्ग समूह मे, 47 प्रतिशत

जौनपुर नगर

चयनित घरो की सामान्य विशेषताये 1999
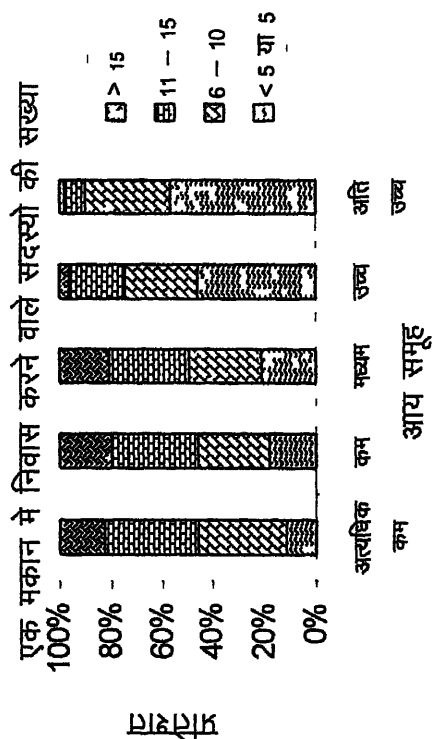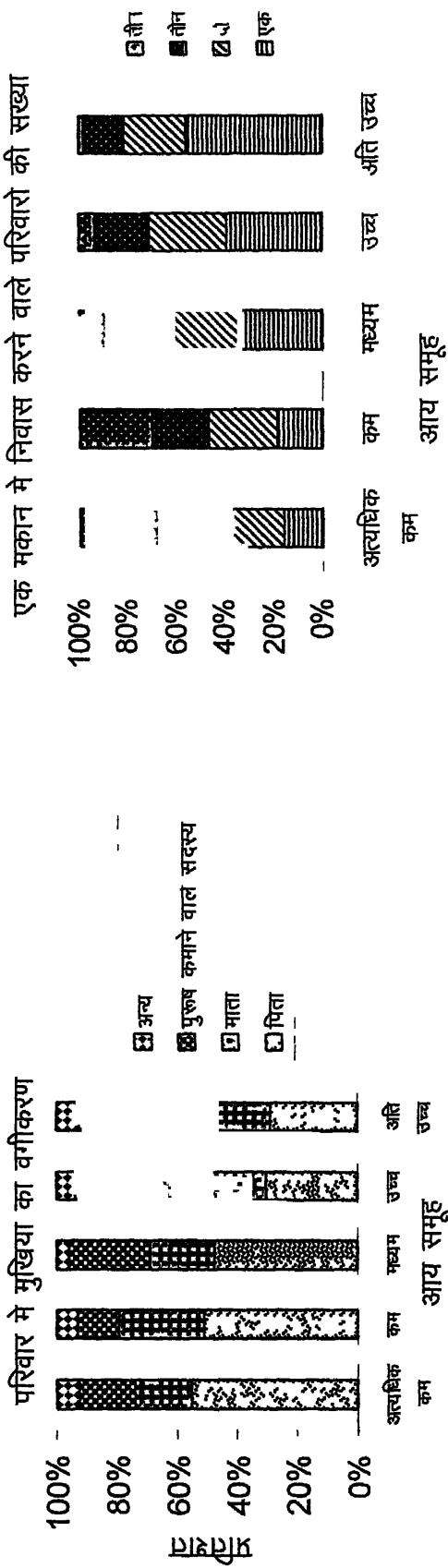
स्रोत — व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 13

मध्यम आय वर्ग समूह मे परिवार का मुखिया पिता है ऐसा इसलिए हे क्योकि य अपक्षाकृत निम्न आय वर्ग के परिवार है जो जीवन के पारम्परिक रास्ते को अपनाते हे जहा पिता ही परिवार का मुखिया हो सकता है और वह ही परिवार के सभी निर्णय लेता है जबकि उच्च आय वर्ग समूह मे 45 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग समूह मे 46 प्रतिशत अन्य पुरूष कमाने वाला सदस्य परिवार का मुखिया है। अधिकतर उदाहरणो मे वह मुखिया परिवार का बडा पुत्र होता है या साक्षात्कार किये जाने वाल परिवार का बडा सदस्य।

लगभग 19 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग समूहो मे एक 28 प्रतिशत कम आय वर्ग समूह मे परिवार मे महिलाये मुखिया है क्योकि इन परिवारो मे पुरूष सदस्य कमाते नही है। इन परिवारो के पुरूष सदस्य घर पर ही रहते है। सारा दिन, और इनकी महिलाये दूसरे घरो मे सहायक या नोकरानी का काम कुछ रूपयो के लिए करती है क्योकि परिवार चलता रहे। एक बडी सख्या मे परिवार मे अन्य सदस्य मुखिया के रूप मे पाये गये जैसे चाचा ससुर, चचेरा, ममेरा भाई।

सारणी 1 9 जौनपुर नगर के चयनित घरो के एक मकान मे निवास करने वाले परिवारो की सख्या (प्रतिशत मे)

आय समूह	एक	दो	तीन	> तीन	योग
अत्यधिक कम	15 72	22 01	29 88	32 39	100 00
कम	18 73	27 91	23 68	29 68	100 00
मध्यम	34 22	26 22	28 16	11 40	100 00
उच्च	38 90	31 78	22 74	6 58	100 00
अति उच्च	56 44	24 75	16 83	1 98	100 00
योग	32 80	26 54	24 26	16 40	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 1 9 और प्लेट 1 3 चयनित घरो के एक मकान मे निवास करने वाले परिवारो की सख्या को दिखा रहा है। यहा सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि 32 प्रतिशत अत्यधिक कम आय

वर्ग समूहो मे 29 प्रतिशत कम आय वर्ग सनूह मे एव लगभग 12 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग समूहो मे एक मकान मे तीन से अधिक परिवार निवास करते है। उनके घर छोटे एव पुराने है। इनके घरो मे अधिक सदस्य होने के कारण सभी व्यवस्थाये गडबड पायी जाती है एव प्रति सदस्य को घर मे कम स्थान मिलता है भोजन पर दबाव पडता है एव साफ–सफाई भी ठीक नही रहती है। लेकिन अत्यधिक उच्च आय वर्ग मे सदस्य अधिक भी हाते है तो व्यवस्था ठीक ही रहती है। लगभग 39 प्रतिशत उच्च आय वर्ग मे एव 56 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के परिवार मे केवल एक परिवार ही निवास करता है। इनके घर बडे भी है एव वैभवशाली भी है इसलिए इन मकानो मे सभी व्यवस्थाये ठीक पायी जाती है।

सारणी 1 10 जौनपुर नगर के चयनित घरो के एक मकान मे निवास करने वाले सदस्यो की सख्या (प्रतिशत मे)

आय समूह	< 5 या 5	6 – 10	11 – 15	> 15	योग
अत्यधिक कम	12 27	33 96	36 16	17 61	100 00
कम	18 38	27 92	33 21	20 49	100 00
मध्यम	21 12	28 64	31 31	18 93	100 00
उच्च	45 48	29 05	21 37	4 10	100 00
अति उच्च	56 93	32 67	8 91	1 49	100 00
योग	30 83	30 45	26 20	12 52	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 1 10 ओर प्लेट 1 3 चयनित घरो के एक मकान मे निवास करने वाले सदस्यो की सख्या को दिखा रहा है। यह देखा गया कि अधिकतर अत्यधिक न्यून आय वर्ग के (36 प्रतिशत मे) परिवारो मे एव 33 प्रतिशत कम आय वर्ग व 31 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के परिवारो मे एक मकान मे 11 से 15 सदस्य रहते है। जबकि उच्च (45 परिवारो मे) एव अति उच्च (57 प्रतिशत परिवारो मे) आय वर्ग के घरो मे 5 से कम सदस्य या पाच सदस्य निवास करते है। उच्च आय वर्ग के बहुत कम परिवार ऐसे है जहा 15 सदस्य तक निवास करते है आकडा

दिखाता है कि कम आय वर्ग के परिवारा म अधिक स अधिक सदस्य रहत ह इसका परिणाम यह होता ह कि घर मे भीड सी लगी रहती है व स्नान घर व शौचालय गन्दे रहते है। अधिक सदस्यो के होने से घर के बाहर कूडा करकट भी अधिक मात्रा मे एकत्रित हाता है जो प्रदूषण का मुख्य कारण बनता हे। इन लागो को अतिरिक्त ईंधन की आवश्यकता भाजन पकान क लिए पडती हे जो घरा म बढ हुए वायु प्रदूषण का कारण बनता हे।

पारिवारिक स्थिति -

घरो की स्थिति का अदाजा आय या धन से लगाया जा सकता हे ओर सभी उदाहरणो मे पर्यावरणीय स्थिति भी इसी पर निर्भर रहती है। पारिवारिक स्थिति का पता ससाध नो का स्वामित्व जैसे पखा, प्रेस रसोई गैस, फ्रिज, वीसीआर, वीसीपी, जनरेटर, धुलाई की मशीन, वातानुकूलित कमरे एव वाहनो जैसे साइकिल, मोपेड, मोटर साइकिल और कार, जीप आदि को देखकर लगाया जा सकता है।

सारणी 1 11 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे उपयोग मे आने वाले उपकरणो का विवरण (प्रतिशत मे)

आय समूह	पखा	प्रेस	गैस	फ्रीज	श्याम श्वेत टी वी	कूलर	रगीन टी वी
अत्यधिक कम	28 62	9 89	—	—	19 78	—	—
कम	69 61	61 92	8 12	—	80 20	9 13	1.01
मध्यम	90 53	97 05	58 71	32 17	41 01	21 98	45 84
उच्च	100 00	100 00	90 13	88 50	56 98	70 13	68 76
अति उच्च	100 00	100 00	100 00	100 00	14 35	95 54	78 71

आय समूह	फोन	VCR/VCP	जनरेटर	वाशिगमशीन	गीजर	एयरकडीशनर	कुछ नही
अत्यधिक कम	--		--	--	---	- -	71 38
कम	—	—	—	—	—	—	30 39
मध्यम	—	11 52	—	—	—	—	9 47
उच्च	40 54	50 13	32 60	15 61	7 67	—	—
अति उच्च	99 00	72 27	75 24	75 24	52 47	13 36	—

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

नगर मे वाहनो के स्वामित्व मे विभिन्न आय वर्ग मे वेभिन्य हे। जैसा कि सारणी 1 11 और प्लेट 1 4 मे दिखाया गया है कि पखा उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सभी परिवारो मे है जबकि अत्यधिक कम आय वर्ग के 28 प्रतिशत परिवारो मे ही पखा पाया गया। एयर कडीशनर जैसी महगी सुविधा केवल अति उच्च आय वर्ग के 13 प्रतिशत घरो मे ही पायी गयी। अन्य बिजली से चलने वाले उपकरण जैसे रगीन टेलीविजन, वीसीआर वीसीपी, फ्रिज, गीजर और धुलाई की मशीन धनी परिवारो मे ही देखे गये। घरो मे आमतौर पर कम देखे जाने वाले उपकरण जैसे टेलीफोन जनरेटर वातानुकूलित कमरे आदि महगे उपकरण अत्यधिक उच्च आय वर्ग मे ही देखे गये। उच्च आय वर्ग मे लगभग सभी उपकरण देखे गये। उच्च आय वर्ग मे केवल 14 प्रतिशत परिवारो मे श्याम श्वेत टेलीविजन पाया गया जबकि अधिकतर के पास रगी टेलीविजन भी था। श्याम श्वेत टेलीविजन उनके घर के बच्चो के शयनकक्ष मे रहते हे। दूसरी तरफ अत्यधिक कम और कम आय वर्ग मे पखा, प्रेस जैसे उपकरण ही अधिकतम पाये गये। अत्यधिक कम आय वर्ग एव कम आय वर्ग म लोकल कम्पनी का बना हुआ छोटा वाला श्याम श्वेत टेलीविजन ही देखा गया जो बाजार मे बहुत सस्ता मिल जाता है।

यह पाया गया कि रिक्शा खीचकर जीवन निर्वाह करने वाले लोगो के घरो मे भी छोटा वाला टेलीविजन पाया जाता है। क्योकि इन निम्न आय वर्ग मे भी यह चलन है कि घर मे टेलीविजन हो। दूसरी तरफ 71 प्रतिशत अधिक कम आय वर्ग के, 30 26 प्रतिशत कम

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 14
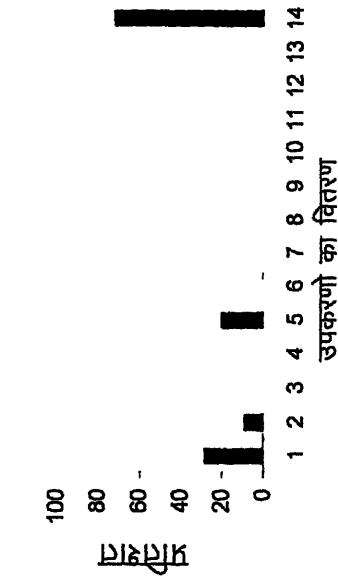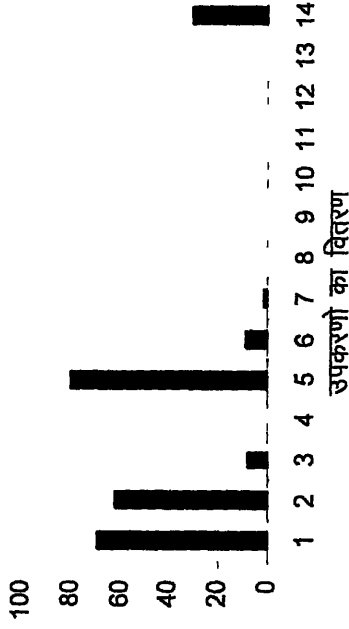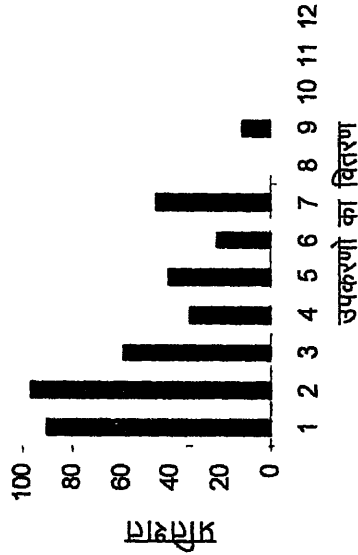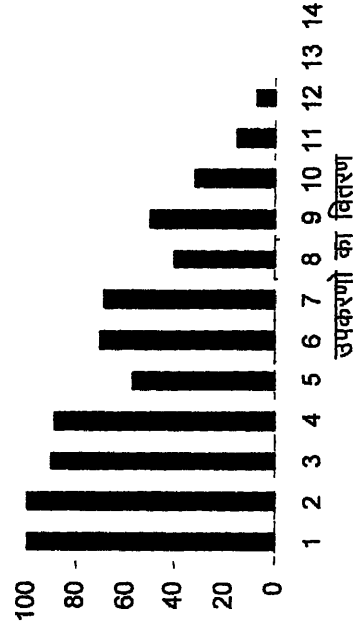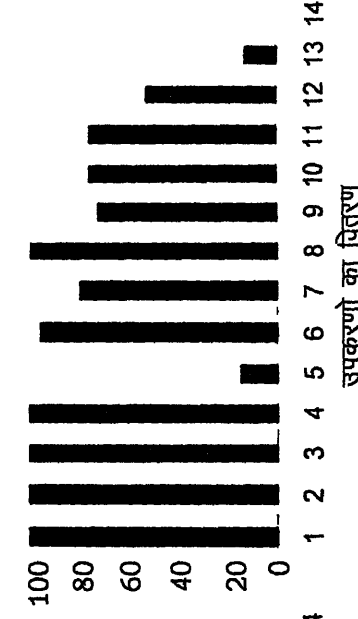
आय वर्ग मे व 9 42 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग क परिवारा म कोई भी उपकरण नही पाया क्याकि यो लाग उपकरणा व ससाधना पर पैसे खर्च करना फिजूल खर्च मानत ह।

सारणी 1 12 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे वाहनो का स्वामित्व (प्रतिशत मे)

आय समूह	साइकिल	मोपेड	मोटर साइकिल	कार/जीप	कुछ नही
अत्यधिक कम	69 50	5 42	2 26	—	30 50
कम	80 57	11 40	5 26	—	19 43
मध्यम	94 17	32 47	12 11	—	5 83
उच्च	48 21	65 00	75 61	32 05	—
अति उच्च	28 71	23 26	80 20	60 69	—

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

वाहनो का स्वामित्व सारणी 1 12 व प्लेट 1 5 मे दर्शाया गया है। यहा यह देखा गया कि वाहनो के स्वामित्व मे विभिन्न आय वर्ग मे बहुत वैभिन्य पाया जाता है। लगभग 66 प्रतिशत परिवारो के पास अपनी साइकिल है। अत्यधिक कम आय वर्ग कम व मध्यम आय वर्ग के अधिकतर परिवारो मे कही आने–जाने के लिए साइकिल का प्रयोग करते है। कुछ एक उदाहरणो मे मोपेड व मोटर साइकिल का भी प्रयोग होता है। उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के लगभग तीन चौथाई परिवारो के पास मोटर साइकिल है और 32 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के पास एव 60 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग क पास अपनी कार या जीप है। कुछ परिवारो के पास अत्यन्त महगी कार है व कुछ के पास एक से अधिक कार है। चार पहिये वाले वाहन अमीर या उच्च आय वर्ग के पास ही है।

जौनपुर नगर

वाहनो का स्वामित्व 1999
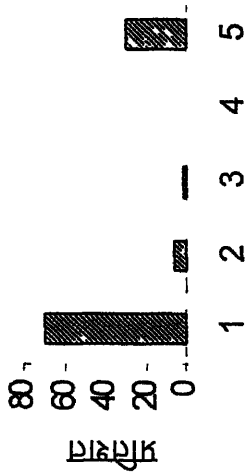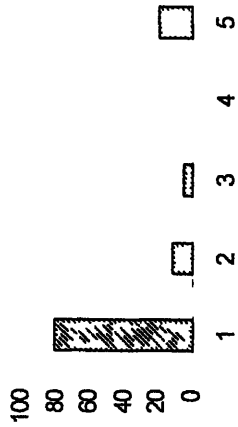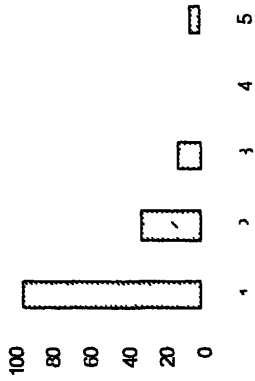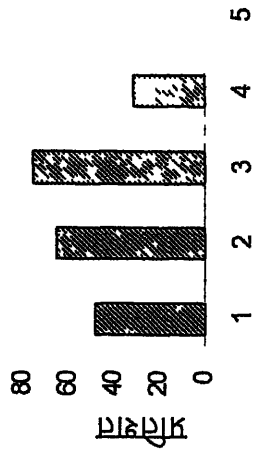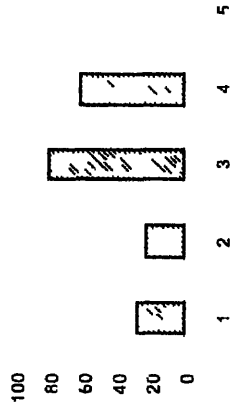
स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 15

चयनित घरो का शैक्षिक व्यावसायिक व स्थानान्तरण का स्तर -

अध्याय के इस भाग मे शैक्षिक व्यावसायिक व स्थानान्तरण के स्तर पर विस्तृत वर्णन किया गया है।

सारणी 1 13 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे शिक्षा का स्तर (1999) (प्रतिशत म)

आय समूह	शिक्षित	अशिक्षित	प्रतिशत
अत्यधिक कम	22 24	77 76	100 00
कम	33 84	66 16	100 00
मध्यम	62 30	37 70	100 00
उच्च	85 44	14 56	100 00
अति उच्च	95 18	4 82	100 00
योग	59 8	40 20	100 00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 1 14 शिक्षित लोगो का विभाजन (प्रतिशत मे)

आय समूह	प्राइमरी	हास्कूल/इन्टर	स्नातक	स्नातकोत्तर	डाक्टरेक्ट	अन्य
अत्यधिक कम	13 84	4 57	—	—	—	3 83
कम	15 55	12 63	—	—	—	5 66
मध्यम	16 48	21 00	10 28	5 37	2 07	7 10
उच्च	7 51	20 53	26 23	18 28	7 13	5 76
अति उच्च	5 93	7 93	34 72	35 28	8 32	3 00
योग	11 86	13 33	14 24	11 79	3 50	5 07

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

जौनपुर नगर

चयनित घरो का शैक्षिक स्तर 1999
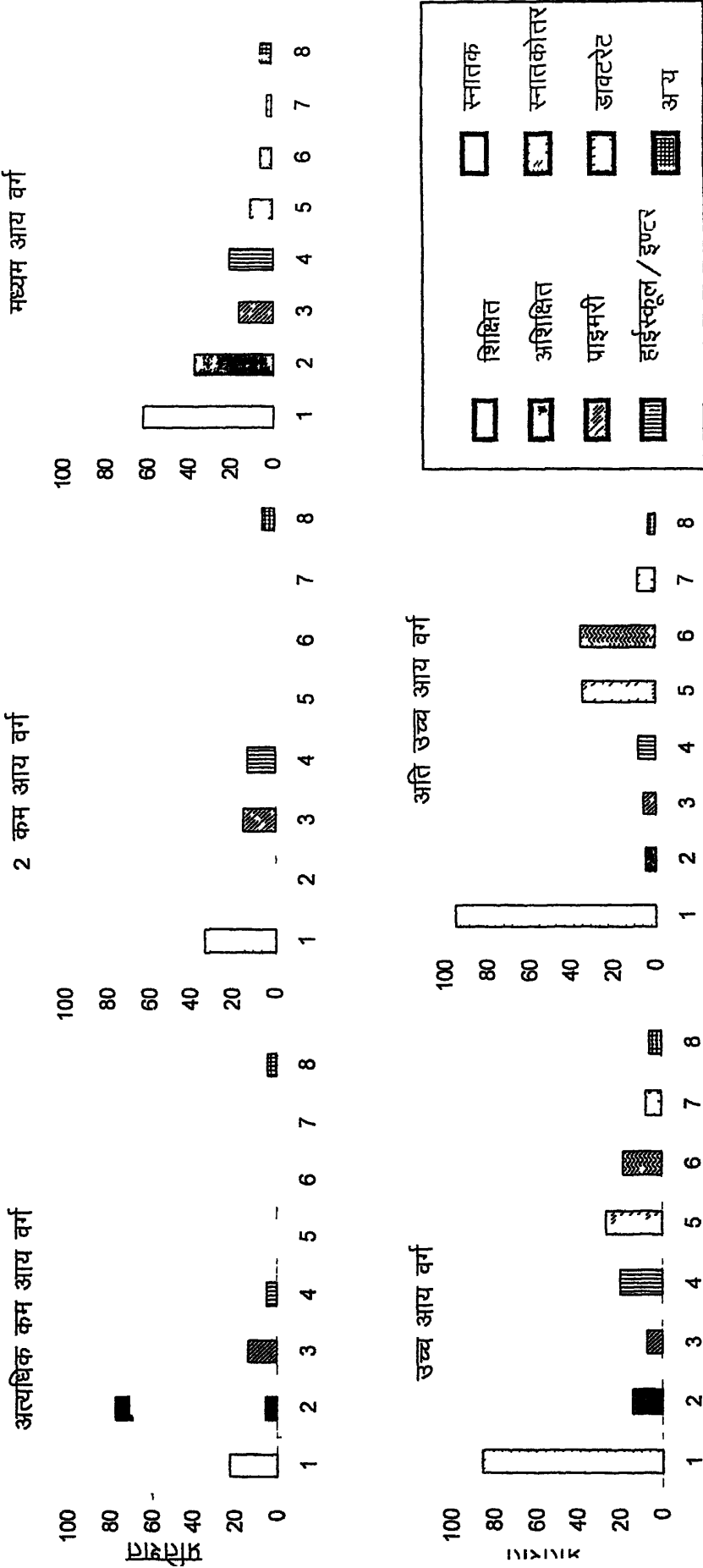
स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 6

सारणी 1 13 व 1 14 और प्लेट 1 6 म चयनित घरो क शैक्षिक स्तर का दिखाया गया है। चयनित घरो के कुल लगभग 60 प्रतिशत व्यक्ति शिक्षित हे बाकी अशिक्षित है। यह देखा गया 77 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 66 प्रतिशत कम आय वर्ग के व 37 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग पूर्णत अशिक्षित हे। इसका मुख्य कारण उनकी अधिक कम आय हे। बचपन से ही ये लोग स्कूल जाने की बजाय छोटी–मोटी फेक्ट्री मे या चाय की दुकान व होटलो मे अपने घर की आवश्यकता की पूर्ति के लिए कुछ ही रूपयो के लिए काम करते हे। उच्च आय वर्ग मे 14 प्रतिशत व अति उच्च आय वर्ग मे 4 प्रतिशत लोग भी अशिक्षित है। इनमे सर्वेक्षित परिवार के दादा–दादी या नाना–नानी या अन्य बूढे सदस्य ही सम्मिलित हे। अधिक सख्या मे स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध उपाधि धारक अत्यधिक उच्च आय वर्ग के परिवारो मे ही पाये गये। यह भी देखा गया कि कम व मध्यम आय वर्ग मे लोगो के पढाई छोडने का समय हाईस्कूल या इण्टर पास करने के बाद और निम्न आय वर्ग मे कक्षा पाच या आठ पास करने तक है। इसका मुख्य कारण इनके बडे परिवार आकार है। ये लोग उच्च शिक्षा मे लगने वाली फीस का भार वहन नही कर सकते इसलिए इन परिवारो के बच्चे छोटे–मोटे काम मे लगना बेहतर समझते है जहा से ये लोग प्रतिमाह मुश्किल से 100 या 200 रूपये पात है।

व्यवसाय लोगो के पारिवारिक वातावरण पर असर डालते है। यदि कोई व्यक्ति मैकेनिक है, मजदूर है या किसी फैक्ट्री मे काम करता है तो उसका काम करने का वातावरण प्रदूषण से भरा होगा उसका स्वास्थ्य और व्यवहार उन लोगो से पूर्णत भिन्न होता है जो सरकारी नौकरी करते या अधिकारी है। इसलिए हम कह सकते है कि घर के वातावरण की स्थिति मे व्यवसाय की बहुत मुख्य भूमिका होती है चयनित घरो के बहुत से परिवारो के पास मकान निचले हिस्से मे छोटा मोटा कारोबार (उद्योग या दुकान) खुला हुआ है और ये लोग मकान के पहले मजिल या दूसरे मजिल पर रहते है।

सारणी 1 15 जौनपुर नगर के चयनित घरो के व्यवसाय (1999) प्रतिशत मे

आय समूह	मजदूर	व्यापारी	छात्र	लिपिक	इन्जीनियर	विद्यालय अध्यापक	डाक्टर	अन्य
अत्यधिक कम	55 06	—	7 47	15 87	—	—	—	21 6
कम	40 00	5 58	8 46	17 50	—	—	—	28 46
मध्यम	4 32	18 67	29 89	14 40	3 60	16 90	2 16	10 06
उच्च	—	30 90	10 20	7 41	22 42	8 45	13 43	7 19
अति उच्च	—	32 50	14 18	—	23 82	12 92	14 93	1 65
योग	19 88	17 53	14 04	11 03	9 97	7 65	6 10	13 80

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

सारणी 1 15 और प्लेट 1 7 के अनुसार अत्यधिक कम व कम आय वर्ग के लोग अधिकाश मैकेनिक मजदूर है या फैक्टरी और दुकान, गैरेज मे काम करते हे। ये लोग इस तरह का और काम भी करते हे जैसे सिलाई करना, मिठाई बनाना, रिक्शा खीचना, नाईगीरी या चपरासी का काम। मध्यम आय वर्ग मुख्यत व्यापार करने के व्यवसाय मे (18 प्रतिशत) या विद्यालय से सम्बन्धित किसी पद पर (16 प्रतिशत) है। जबकि उच्च एव अति उच्च आय वर्ग को लोगो मे अधिकतर इजीनियर , डाक्टर डिग्री कालेज अध्यापक है या उनका वृहद स्तर का कोई व्यवसाय है।

घरो की पर्यावरणीय समस्या जिसे नगर के निवासी झेलते है वह ग्रामीण निवासियो से पूर्णत भिन्न होती है। किन्हीं उदाहरणो मे यह देखा जाता है कि ग्रामीण लोग शहर मे बस कर समस्या को और बढाते है क्योकि ये लोग शहरी वातावरण मे ढल नही पाते है और शहर मे भी गाव की तरह का ही रहन सहन रखते है।

जौनपुर नगर
चयनित घरो के व्यवसाय 1999
प्रतिशत
अत्यधिक कम आय वर्ग
कम आय वर्ग
मध्यम आय वर्ग
उच्च आय वर्ग
अति उच्च आय वर्ग
100
80
60
40
20
0
मिस्तरी मजदूर
छात्र
व्यापारी
लिपिक
इन्जीनियर
विद्यालय अध्यापक
डाक्टर
अन्य
स्रोत व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 17
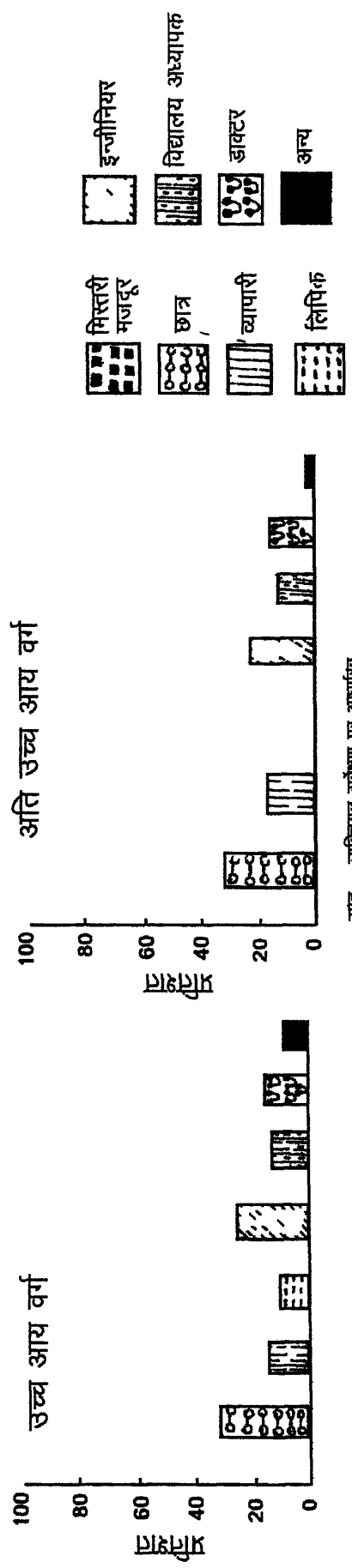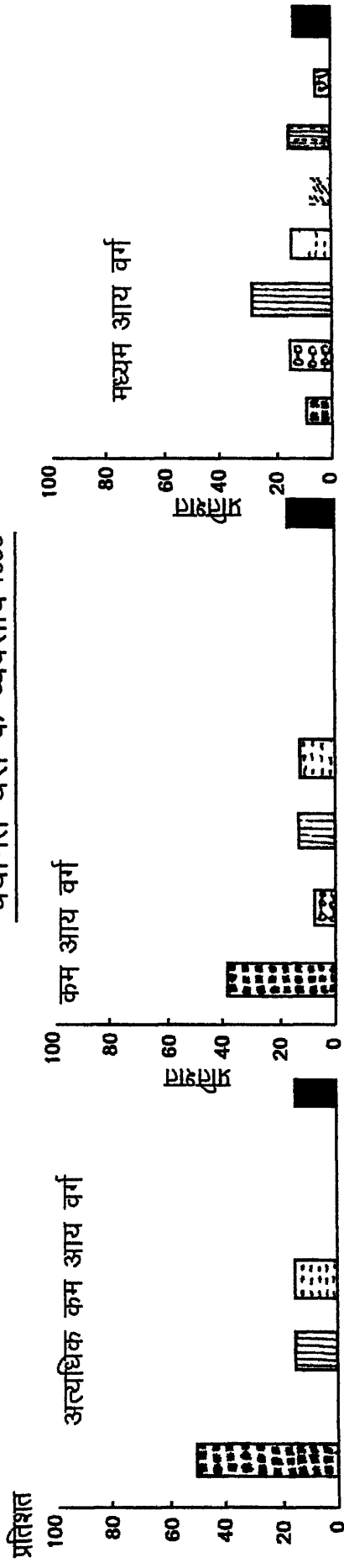
सारणी 1 16 जौनपुर नगर के चयनित घरो का प्रवजन पर आधारित विवरण (1999)

प्रतिशत मे

स्थानान्तरण का स्तर			स्थानान्तरण के कारण				
आय समूह	स्थानान्तरण करते है	स्थानान्तरण नही करते	अच्छे आवास हेतु	अच्छे पर्यावरण हेतु	रोजगार हेतु	धार्मिक कारण	अन्य कारण
अत्यधिक कम	30 19	69 81	—	—	52 08	4 17	43.75
कम	38 16	61 84	—	—	64 81	5 56	29 63
मध्यम	45 39	54 61	10 16	14 97	42 76	15 00	17 11
उच्च	60 82	39 18	41 44	19 37	12 62	17 57	9 00
अति उच्च	72 27	27 73	49 32	31 50	6 17	9 59	3 42
योग	49 34	50 66	20 19	13 16	35 69	10 38	20 58

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

सारणी 1 16 और प्लेट 1 8 मे नगर के लोगो के स्थानान्तरण का स्तर दिखाया गया है। जैसा कि सारणी मे दिखाया गया हं चयनित घरो के लगभग आधे किसी न किसी कारण से स्थानन्तरण करते है बाकी लोग अपना निवास कभी नही छोडते। लगभग 69 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 61 प्रतिशत कम आय वर्ग व 54 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग स्थानन्तरण नही करते है क्योकि उनके काम करने का स्थान घर से अधिक दूरी पर नही होता। इस प्रकार की स्थिति मुख्यत नगर के पुराने भाग मे देखी गयी। लगभग 30 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 38 प्रतिशत कम आय वर्ग के व 45 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग रोजगार हेतु नगर से स्थानान्तरण कर चुके है। अत्यधिक कम आय वर्ग के घरो मे अधिकतर रिक्शा खीचने वाले है जो सुदूर ग्रामीण क्षेत्रो से आते है या दूसरे जिले से आते है। ये लोग नगर मे केवल दो या तीन महीनो के लिए काम पर आते है उसके बाद कुछ दिनो के लिए अपने आवास पर चले जाते है लेकिन कुछ लो ग नगर मे ही हमेशा के लिए कोई नौकरी करना चाहते है और घूम फिर कर नगर मे ही रहते है। ये लोग नगर मे अतिरिक्त भार के रूप मे रहते है व ससाधनो पर अधिक दबाव डालते है। दूसरी तरफ 60 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के व 72 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोग नगर मे बाहरी छोर तक स्थानान्तरण करते
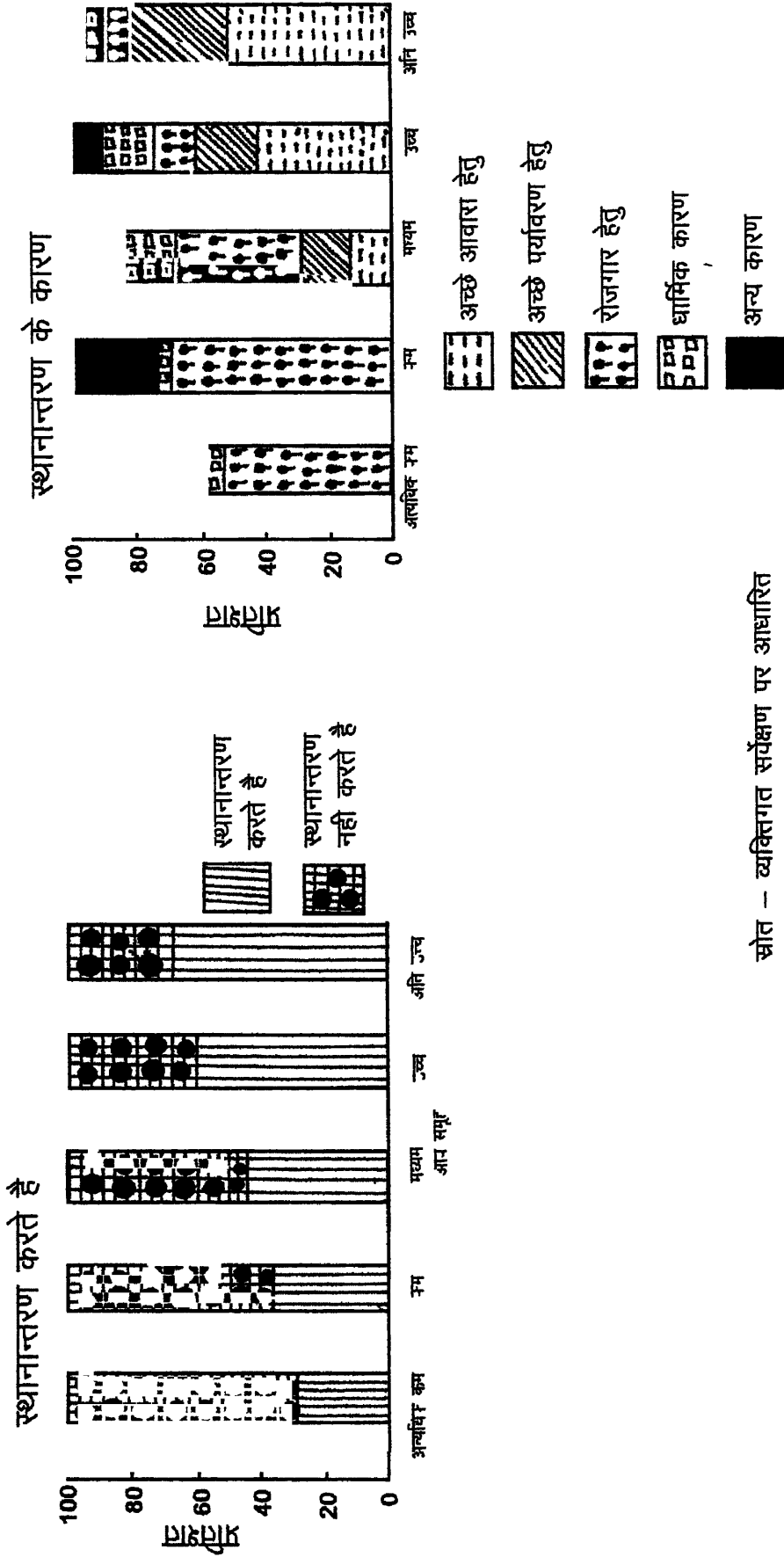
है। इनके पास दो–दो तीन–तीन आवास रखने हेतु पर्याप्त धन होता है।

सारणी 1 16 और प्लेट 1 8 मे नगर क लागो क स्थानान्तरण (एक मुहल्ल से दूसरे मुहल्ल मे) के विभिन्न कारण दिखाय गये हे परिवारो ने स्थानान्तरण मुख्य रूप से बेहतर आवास की तलाश मे राजगार हेतु धार्मिक कारण से व अन्य कारण से जेसे विवाह, साम्प्रदायिक दगे आदि के कारण किये गये। यह देखा गया कि 52 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 64 प्रतिशत कम आय वर्ग के ओर 42 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग रोजगार के लिए उस क्षेत्र के लिए स्थानान्तरण कर जाते है जहॉ वे मजदूर के रूप मे काम करते है विभिन्न फैक्ट्री मे काम करते है जेसे मकान बनाने के सामान की फेक्ट्री, मशीन के पुर्जे की फैक्ट्री आदि। कुछ निम्न आय वर्ग के लोग साम्प्रदायिक दगो के भय स भी स्थानान्तरित हो जाते है जो अधिकतर मुसलमानी क्षेत्रो मे होते है। लगभग 41 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 49 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोग केवल बेहतर आवास के कारण स्थानान्तरण कर गये। एक बडी सख्या मे उच्च आय वर्ग के लोग बेहतर पडोस, पर्यावरण हेतु भी स्थानान्तरण करते है। लगभग 15 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के 17 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के लोग धार्मिक कारणो से स्थानान्तरित होते है। प्राचीन समय से ही जौनपुर नगर मे मुसलमान अधिक सख्या मे रहते है। उन क्षेत्रो मे जहॉ मुसलमान व हिन्दू दोनो रहते है कभी–कभी दगे भडक जाते है। इसलिए अधिकाश मुसलमान मुस्लिम बहुल क्षेत्र मे व हिन्दू हिन्दू बहुल क्षेत्र मे ही जाकर बसना चाहते है।

भाग - दो

जौनपुर नगर में घरों की पर्यावरणीय स्थिति
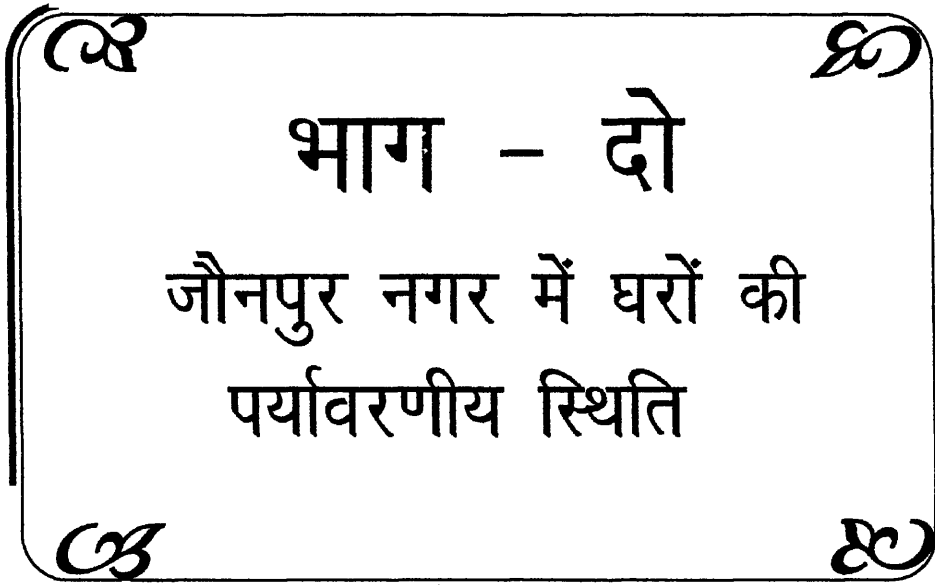
अध्याय - दो

जौनपुर नगर में घरों के स्नानगृह एवं सफाई की स्थिति

इस अध्याय म नगर की पर्यावरणीय स्थिति का वर्णन नगर क कुल 1580 मकानो क सर्वेक्षण क आधार पर किया गया हे एव इसक आधार पर सम्पूर्ण नगर क घरा क स्नानगृह एव साफ–सफाई की स्थिति का पता लगाया गया मुख्य रूप स यही घरा क पर्यावरण का समझने क भाग ह।

पिछल अध्याय म यह बताया गया कि कुल उत्तरदाताओ म 62 53 प्रतिशत स्त्रिया थी एव 37 47 प्रतिशत पुरूष थे। लगभग 25 प्रतिशत उत्तरदाता 15 स 25 वर्ष के बीच थ ओर कवल 9 प्रतिशत उत्तरदाता 45 वर्ष क उपर क थ। यहा पर लगभग 60 प्रतिशत मुसलमान उत्तरदाता थ, 28 प्रतिशत हिन्दू उत्तरदाता 2 प्रतिशत सिक्ख 1 प्रतिशत क्रिश्चियन और 8 प्रतिशत अन्य धर्मो के थे। कुल चयनित घरो क लगभग 20 प्रतिशत परिवार अत्यधिक कम आय वर्ग के (आय 1500 रू से कम प्रतिमाह), 17 प्रतिशत परिवार कम आय वर्ग के (1500 से 2999 रू0 प्रतिमाह) 26 प्रतिशत परिवार मध्यम आय वर्ग के (3000 से 4999 रू0 प्रतिमाह) 23 प्रतिशत परिवार उच्च आय वर्ग के (5000 से 9000 रू0 प्रतिमाह) और 13 प्रतिशत परिवार अति उच्च आय वर्ग (9000 से अधिक प्रतिमाह) के पाये गये है। यह दिखाता है कि चयनित घरो मे आय के पर्याप्त विभिन्नता रही है।

इस अध्याय म नगर के घरो के स्नानगृह एव साफ सफाई की स्थिति का वर्णन चयनित घरो के सर्वेक्षण के आधार पर करने का प्रयास किया गया है। आकड, क्षेत्र का व्यक्तिगत सर्वेक्षण करके एकत्रित किय गये।

आवासीय स्थिति –

पर्यावरणीय स्थित को समझने मे आवास मुख्य भूमिका निभाते है। उचित और ठीक आवासीय व्यवस्था स्वस्थ जीवन के लए आवश्यक है क्योकि यह निवासियो के कार्य छमता एव कुशलता मे वृद्धि करता है, जिसके आधार पर उनका आर्थिक विकास हाता है। उत्तरदाता के आवासीय स्थितियो का अध्ययन करते सयम निम्नलिखित तथ्यो पर विचार किया गया कि घर अपना है या किराये का है घर का प्रयोग किस रूप मे होता है (केवल आवास के

जौनपुर नगर

विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों के प्रकार व आवासीय स्थिति 1999

प्लेट 21
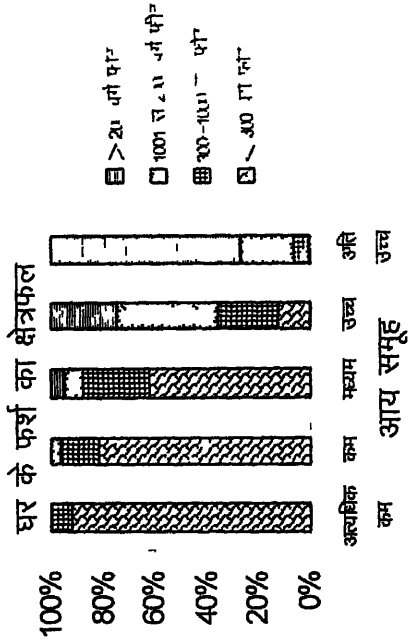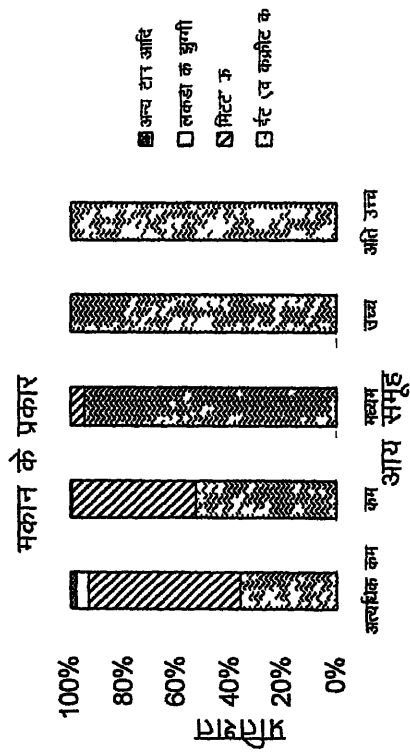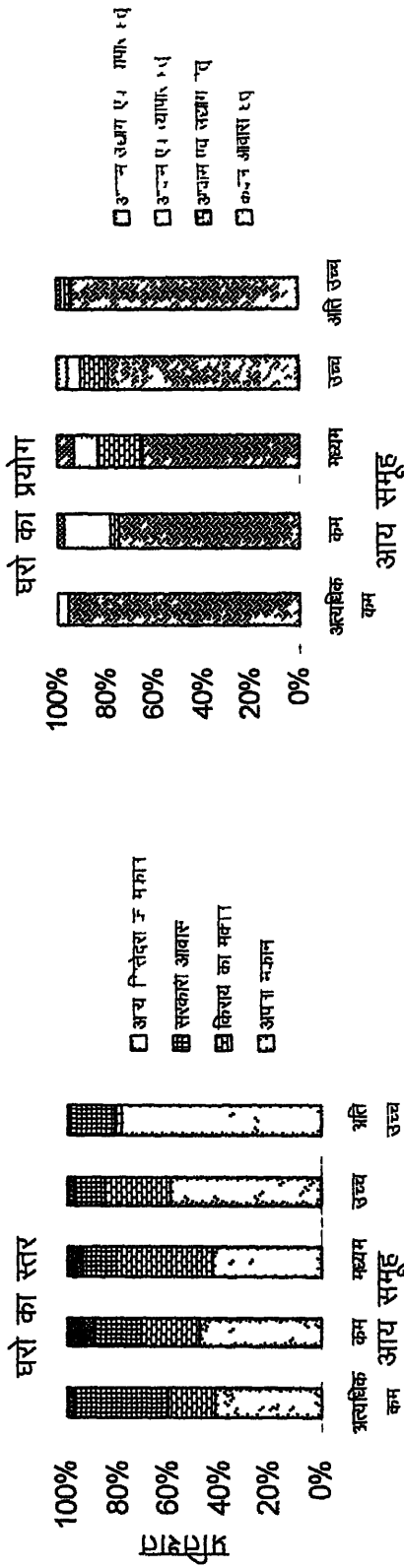
रूप मे उद्योग के रूप मे व्यापार के रूप मे) आवास निर्माण किस प्रकार का हे (कक्रीट का बना है, मिटटी का बना हे लकडी का है झुग्गी है या टीन का है) मकान का जमीनी क्षेत्र कितना है (300 वर्ग फीट से कम है या 2000 वर्ग फीट हे), मकान मे कितन कमरे है (एक है या 2,3,4 5) कमरो का ओसत क्षेत्रफल कितना है (100 वर्ग फीट से कम हे या 200 या 300 वर्ग फीट है) घर का घनत्व (जेसे 10 20 या 30 वर्ग फीट प्रति सदस्य हे), कितना है। वातायन की स्थिति कैसी है आदि।

घर का स्तर -

सारणी 2 1 और प्लेट 2 1 चयनित घरो के स्तर का वर्गीकरण दिखाता है।

सारणी 2 1 जौनपुर नगर के चयनित घरो के स्तर का वर्गीकरण (1999)(प्रतिशत मे)

आय समूह	अपना मकान	किराये का मकान	सरकारी आवास	अन्य रिश्तेदार के मकान	योग
अत्यधिक कम	41 50	19 20	37 10	2 20	100 00
कम	48 05	22 27	19.43	10 25	100 00
मध्यम	42 72	37.63	13 10	6 55	100 00
उच्च	59 45	25 48	12 33	2 74	100 00
अति उत्च	78 71	2.47	17 82	1 00	100 00
योग	54 08	21 42	19 95	4 55	100 00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा यह देखा गया कि 41 प्रतिशत के लगभग अत्यधिक कम आय वर्ग के 48 प्रतिशत कम आय वर्ग के लोगो के पास किसी न किसी प्रकार का अपना मकान है लेकिन इन घरो मे केवल एक कमरा है और वह भी बहुत पुराना है। ये लोग अब भी उसी मे रहते है क्योकि उनके पास और कोई विकल्प नही ही है ओर उनके काम करने स्थान भी पास ही है। लगभग 37 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के एव 19 प्रतिशत कम आय वर्ग के के लोग

जौनपुर नगर
विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो की आवासीय स्थिति
प्रतिशत
घरो मे कुल कमरो की सख्या
100
80
60
40
20
0
अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च
1
2 3
4 5
> 5
कमरो का क्षेत्रफल
प्रतिशत
< 100 वग फीट
100 200
200 300
अत्यधिक कम
कम
उच्च
अति उच्च
प्रति व्यक्ति को शयनकक्ष मे मिलने वाला स्थान
प्रतिशत
0 वग फीट
10–20 वर्ग फीट
30 वग फीट
> 30 वग फीट
अत्यधिक कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च
घर मे वातायन की स्थिति
प्रतिशत
अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च
प्लेट 22
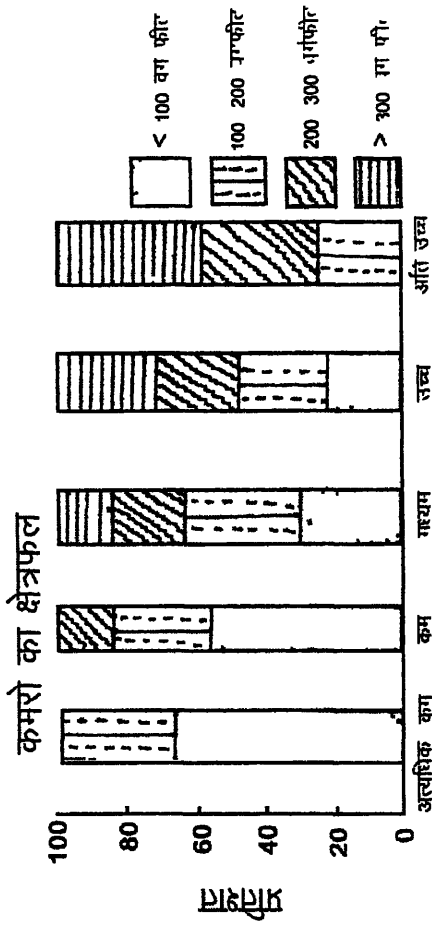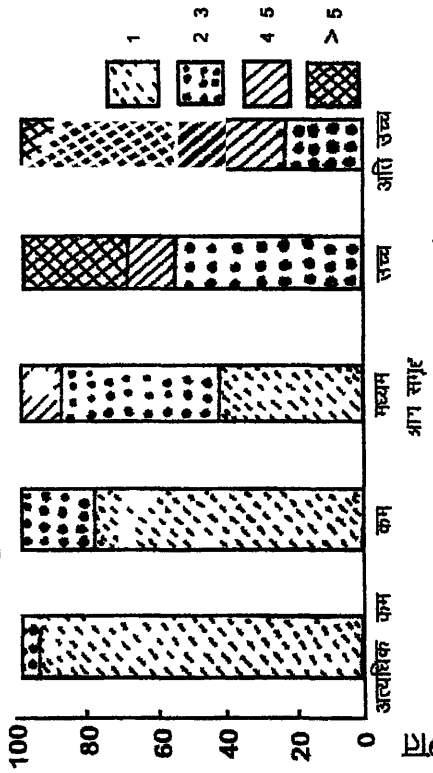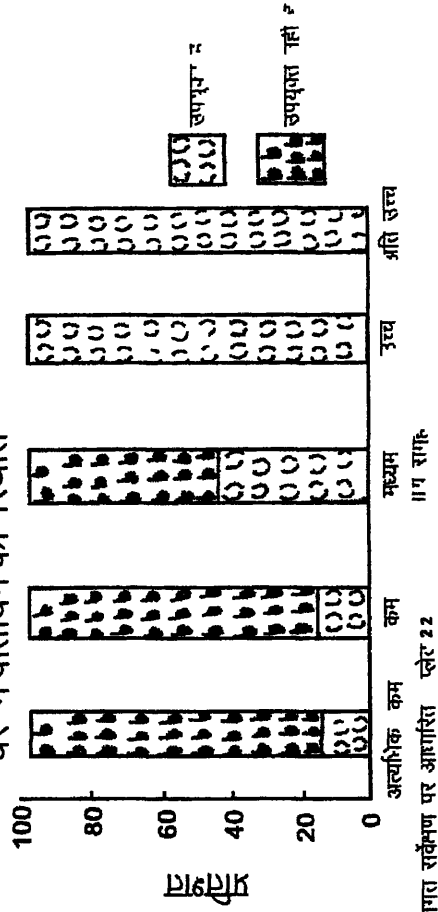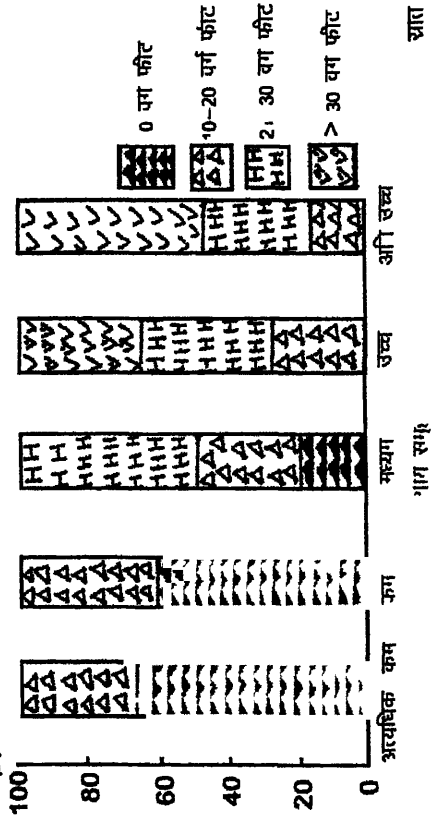
सरकारी आवास मे रहते हे इनम क्लर्क (लिपिक) तकनीशियन (तकनीकी जानकार) मजदूर चपरासी एव सफाई कर्मी आत है। यहा लगभग 47 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग क लोग अपने मकान म रहत हे जबकि 37 प्रतिशत किराय क मकान मे रहत ह वही दूसरी तरफ उच्च आय वर्ग 60 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग क 78 प्रतिशत लागा क पास अपना मकान है। उच्च आय वर्ग के भी लगभग 25 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग क 2 प्रतिशत लोग किराये के मकान मे रहते है। इनमे अधिकाश विद्यालय के अध्यापक है। मकानो का मूल्याकन सामान्य तौर पर इस आधार पर किया जाता हे कि यदि उसे किराये पर उठाया जाय तो उससे कितनी आय हो सकती है। कुछ पुरान मकान मे कमरे अपेक्षाकृत सस्ते किराये पर मिलते हे। सम्भ्रान्त आवासीय क्षेत्र मे किराये पर मिलने वाले कमरे 1000 रूपये प्रतिमाह की दर मिलते हे वही पर पिछडे व गरीब तबके के लोगो के निवास क्षेत्र मे उसी तरह के कमरे 200 रूपये प्रतिमाह की दर से किराये पर मिल जाते है । किराय पर रहने के इच्छुक सरकारी कर्मचारी सरकारी आवास मे रहना इसलिए पसद करते ह क्योकि वेतन का लगभग 10 प्रतिशत भाग आवास भत्ते के रूप मे मिल जाता है और उतने मे ही उन्हे सरकारी अच्छा आवास मिल जाता है। इनमे से कुछ मकान बहुत पुराने निर्धारित किराये के है जो बहुत ही सस्ते है। लगभग 12 प्रतिशत उच्च और 17 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोग भी सरकारी आवास मे ही रहते है। इनमे उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी है या विश्वविद्यालय के अध्यापक है। कुछ अत्यधिक कम आय वर्ग के, कम या मध्यम आय वर्ग के लोग अपन किसी रिश्तेदार के मकान मे रहते है जहॉ वे कोई किराया नही देते है।

घर का प्रयोग -

सारणी 2 2 और प्लेट 2 1 चयनित घरो के प्रयोग के वर्गीकरण को दिखाता है कि मकान का प्रयोग केवल आवास के रूप मे होता है या आवास एव उद्योग दोनो रूप मे और आवास व व्यवासाय दोनो रूप मे होता या आवास उद्योग व्यापार तीनो रूप मे होता है।

सारणी 2 2 जौनपुर नगर के चयनित घरो का प्रयोग (1999) प्रतिशत मे

आय समूह	केवल आवास हेतु	आवास एव उद्योग हेतु	आवास एव व्यापार हेतु	आवास उद्योग एव व्यापार हेतु	योग
अत्यधिक कम	95 28	—	4 72	—	100 00
कम	74 56	3 53	19 43	2 48	100 00
मध्यम	64 32	18 68	10 20	6 80	100 00
उच्च	73 15	14 53	7 12	5 20	100 00
अति उच्च	93 57	3 46	1 48	1 48	100 00
योग	80 17	8 04	8 60	3 19	100 00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा यह देखा गया कि 95 प्रतिशत से अधिक अत्यधिक कम आय वर्ग, 74 प्रतिशत कम आय वर्ग के लोग अपने मकान को केवल आवास के रूप मे प्रयोग करते है। जबकि 4 प्रतिशत अत्यधिक कम और 19 प्रतिशत कम आय वर्ग के परिवार अपने मकान आवास व व्यापार दोनो हेतु प्रयोग करते हे ये लोग अपने घरो मे ही सटे कमरे मे कोई दुकान खोले है जे बहुत छोटी है। मध्यम आय वर्ग के मामले मे 64 प्रतिशत परिवार अपने मकान का केवल आवास के रूप मे प्रयोग करते हे जबकि 19 प्रतिशत, मकान का प्रयोग आवास व उद्योग दोनो रूप मे करते है और 10 प्रतिशत लोग आवास व व्यापार दोनो का प्रयोग अपने मकान मे करते है। मकान का विभिन्न रूप मे उपयोग करने से लोगो का जीवन–स्तर प्रभावित होता है। 73 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 93 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोग अपने मकान का प्रयोग केवल आवास के रूप मे करते है। यह प्रदर्शित करता है कि उच्च आय वर्गीय लोग अपने घरो मे ध्वनि प्रदूषण पसन्द नही करते इसलिए उनके औद्योगिक व व्यापारिक कार्य घर से दूर होते है। शहर के बीच मे स्थित मकानो का प्रयोग आवास एव व्यवसाय दोनो हेतु होता है। 7 प्रतिशत

प्लेट 2 3 मुहल्ला ताडतला मे आवासीय, औद्योगिक एव व्यवसायिक उपयोग मे आने वाले मकान का दृश्य।

प्रतिशत लोग अपने आवास का प्रयोग आवास व व्यापार के रूप मे करते है और 5 प्रतिशत लोग मकान का प्रयोग आवास, उद्योग व व्यापार तीनो के रूप मे करते है। ऐसा इसलिए है कि ये आवास नगर मे बहुत पुराने आबाद है जैसे मुफ्ती मुहल्ला, ताडतला के कुछ मुहल्ले, उर्दू व ओलन्दगज। ये मुहल्ले अधिकतर मुसलमान बहुल है इनके पास प्राय बीडी उद्योग या सिवई उद्योग और सिलाई का कारोबार है। कुछ लोग मास बेचने का व्यवास करते हैं। मकान के निचले हिस्से मे उद्योग या व्यापार होता है जबकि ऊपर लोग रहते हैं। ये मुहल्ले काफी घने और शोरगुल से भरे है लेकिन ये लोग यहा रहने के अभ्यस्त एव आदी है। उच्च आय वर्ग के अधिकतर लोग यहा से स्थानान्तरण कर गये है।

मकान के प्रकार :-

उच्च व मध्यम आय वर्ग के लोग निम्न आय वर्ग के समाज के साथ नही रहना चाहते है। ये लोग सम्भ्रान्त समाज मे ही रहना चाहते है भले ही उन्हे 200 वर्ग फुट का क्षेत्र ही निवास के लिए मिले। इसके पीछे लोगो की यही भावना रहती है कि इन निम्न आय वर्ग को अलग झुग्गी झोपडी, मिट्टी के मकान मे ही रहना चाहिए। इन निम्न आय वर्ग के लोगो का यहा रहना अवैधानिक भी होता है जहा से इन्हे कभी भी निकाला जा सकता है।

प्लेट 24 मुहल्ला सुन्दर नगर मे स्थित उच्च आय वर्ग के ईंट व कक्रीट के बने मकान का दृश्य (उमरपुर)

प्लेट 25 मुहल्ला चितरसारी मे निम्न आय वर्ग का मिट्‌टी की दीवार पर फूस के छाजन का मकान

सारणी 2 3 जौनपुर नगर के चयनित मकानो के प्रकार (1999) प्रतिशत मे

आय समूह	ईट एव कक्रीट के	मिट्टी के	लकडी के झुग्गी /झोपडी	अन्य टीन आदि के	योग
अत्यधिक कम	36 17	56 28	5 35	2 20	100 00
कम	52 30	47 35	0 35	—	100 00
मध्यम	94 42	5 58	—	—	100 00
उच्च	100 00	—	—	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	—	—	100 00
योग	76 58	21 84	1 14	0 44	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 2 3 और प्लेट 2 1 जौनपुर नगर के चयनित घरो के प्रकार को दिखा रहा है। नगर मे विभिन्न प्रकार के मकान देखे गये। मकान या तो ईंट एव कक्रीट के बने है या मिटटी के बने है या लकडी के झुग्गी झोपडी हे। कुछ अलग तरह के मकान भी देखे गये जिनके उपर टीन से ढका था या बास से बने थे लेकिन इस तरह के मकान कम ही है। मकान को बनाने मे स्थानीय उपलब्ध सामानो का ही प्रयोग किया जाता है जो सस्ते होते हे। शहर के आसपास 20 ईंट के भट्ठे हे जो जरूरतमद लोगो को ईंट का वितरण करते है। अधिकतर अत्यधिक कम आय वर्ग के (56 प्रतिशत) और कम आय वर्ग के (47 प्रतिशत) मकान मिट्टी के है या वे झोपडी मे रहते है। ये मकान बहुत पुराने है और अस्त–व्यस्त अवस्था मे रहते है। बरसात के मौसम मे इनमे पानी चूता है और घर के बाहर पानी के निकलने की भी व्यवस्था नही है पानी घर के अगल–बगल इकट्ठा रहता है। इन घरो मे केवल एक द्वार है और खिडकिया एक भी नही है। अत्यधिक कम आय वर्ग के 5 35 प्रतिशत व कम आय वर्ग के 0 35 प्रतिशत लोग लकडी के मकान मे रहते है ये मकान तीन तरफ से घिरे हुए रहते है जबकि इसकी छत खुली ही रहती है। लगभग दो प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के मकान टीन के है। इन मकानो की दीवारे लकडी की है एव उनके ऊपर टीन रखा रहता है। दूसरी तरफ 94 प्रतिशत मध्यम

आय वर्ग क आर सभी उच्च आय वर्ग के मकान ईट एव कक्रीट के बने हे।। मध्यम आय वर्ग एव उच्च आय वर्ग के मकान मे यह अन्तर हे कि मध्यम आय वर्ग के मकानो के फर्श सीमेण्ट के बने है, या कुछ कक्रीट के बने हे जबकि उच्च आय वर्ग के मकानो के फर्श सगमरमर के है उन पर टाइल्स लगी ह या मुजेक लगा हुआ ह।

मकान के फर्श का क्षेत्रफल -

घर की स्थिति का वर्णन करने मे घर के फर्श का क्षेत्रफल कितना हे इसकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। फर्श का क्षेत्रफल की गणना करने मे रसोई घर व स्नानगृह को भी जोडा गया हे लेकिन घर के बाहर के लान या पीछे छूटी जगह को नही जोडा गया है। सारणी 24 और प्लेट 21 चयनित घरो के फर्श के क्षेत्रफल को दिखाता है। यहा यह देखा गया कि 92 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग क 80 प्रतिशत कम आय वर्ग क और 62 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के मकान के फर्श 300 वर्ग फीट से कम के है। क्योकि ये लोग आर्थिक रूप से गरीब है और निवास के लिए अधिक जमीन नही खरीद सकते इसलिए ये लोग अपने छोटे मकान मे ही रहने को विवश रहते है।

सारणी 24 जौनपुर नगर के चयनित घरो के फर्श का क्षेत्रफल (प्रतिशत मे)

आय समूह	< 300 वर्ग फीट	300–1000 वर्ग फीट	1001 से 2000 वर्ग फीट	> 2000 वर्ग फीट	योग
अत्यधिक कम	92.45	7 55	—	—	100 00
कम	80 92	15 54	3 54	—	100 00
मध्यम	62 14	25 48	7 04	5 34	100 00
उच्च	12.32	22 74	39 18	25 76	100 00
अति उच्च	—	6 44	20 30	73 26	100 00
योग	49 56	15 55	14 01	20 88	100 00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

यहा यह भी दखा गया कि 25 प्रतिशत उच्च आय वर्ग क एव 73 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो के लोग 2000 वर्ग फीट से अधिक के जमीनी क्षेत्रफल वाले मकान मे रहते है। इन घरो म घर के बाहर (लान) मेदान म रहते हे ओर घर क पीछे कुछ जमीन छुटी रहती हे जिसमे व फूल पोध ओर सब्जिया उगात ह जा घर क अन्दर स्वस्थ वातावरण की भूमिका निभाता है। ये बडे–बडे मकान अधिकतर हिन्दू बहुल ओर कुछ मुसलमानी क्षेत्र मे भी पाये जाते हे। इस तरह के मकान देखे गये है। उमरपुर मे वाजिदपुर मे व हुसेनाबाद जहागीराबाद व मीयापुर मे। इस तरह के महगे घर नगर के पुराने आबाद भाग म भी दखे गये।

घर मे कुल कमरो की सख्या -

नगर के चयनित घरो मे कुल कमरो की सख्या का वर्गीकरण सारणी 2 5 और प्लेट 2 2 मे दिखाया गया हे।

सारणी 2 5 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे कमरो की सख्या का वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत मे)

	कमरो की सख्या				
आय समूह	1	2–3	4–5	> 5	योग
अत्यधिक कम	92 77	7 23	—	—	100 00
कम	78 44	21 56	—	—	100 00
मध्यम	41 74	46 12	12 14	—	100 00
उच्च	—	51 23	17 80	30 97	100 00
अति उच्च	—	22 78	31 68	45 54	100 00
योग	42 59	29 78	12 33	15 30	100 00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

ा देखा गया है कि कमरो की मख्या मे बहुत विभिन्नता पायी जाती है। घरा म एक कमर लेकर पाच या अधिक कमरे पाय गय (रसोई घर व शोचालय को नही जोडा गया है) लगभग प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 78 प्रतिशत कम आय वर्ग के ओर 41 प्रतिशत यम आय वर्ग के लाग कम आर्थिक आय के कारण कवल एक कमर क मकान म रहत ह। ा एक कमरे म ही 10 व्यक्तियो से अधिक सदस्य भी रहते हे जिससे घर मे शोर, कोलहल भीडभाड रहती है। अत्यधिक भीडभाड का घर के वातावरण पर बहुत असर पडता है। इस बहुत से अध्ययन बताते हे कि घर मे अधिक भीडभाड का स्वास्थ्य पर बहुत खराब असर डता है। अत्यधिक कम आय वर्ग के इन घरो के कमरे बहुत पुराने है एव इसकी व्यवस्था बहुत राब है। दीवारे सीलन से भरी पडी है एव बरसात के समय चूती भी है।

दूसरी तरफ 46 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के एव 51 प्रतिशत उच्च ाय वर्ग के घरो मे 2 या 3 कमर पाये गये और 31 प्रतिशत उच्च आय के व 45 प्रतिशत अति च्च आय वर्ग के लोगो के घरो म पाच से अधिक कमरे है। सर्वेक्षण के दोरान यह पाया गया क इन घनी घरो के कमरे आकार मे बडे है एव ठीक से बने है और कमरो से सटे स्नानगृह शौचालय भी है। परिवार के लगभग सभी सदस्य अलग–अलग कमरे मे रहते हे। इस बात ा यहा के लोगो के स्वास्थ्य पर अच्छा असर पडता है।

कमरों का क्षेत्रफल –

सारणी 2 6 ओर प्लेट 2 2 चयनित घरो मे कमरो का क्षेत्रफल दर्शाता है।

सारणी 2 6 जौनपुर नगर के चयनित घरो के कमरो के क्षेत्रफल का वर्गीकरण (1999) प्रतिशत मे)

आय समूह	< 100 वर्ग फीट	100–200 वर्ग फीट	201–300 वर्ग फीट	> 300 वर्ग फीट	योग
अत्यधिक कम	65 72	34 28	—	—	100 00
कम	58 30	25 80	15 90	—	100 00
मध्यम	33 00	34 47	19 18	13 35	100 00
उच्च	22 47	29 59	23 01	24 93	100 00
अति उच्च	—	22 78	35 14	42 08	100 00
योग	35 89	29 38	18 66	16 07	100 00

यहा यह दखा गया ह कि अधिकतर अत्यधिक कम आय वर्ग क 65 प्रतिशत, कम आय वर्ग के 58 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 32 प्रतिशत लाग ऐसे कमरे मे रहते है जा 100 वर्गफीट से भी कम क्षेत्रफल के ह। प्रत्यक कमर क औसत क्षेत्रफल का पता सभी कमरो के कुल क्षेत्रफल एव कमरो की सख्या के विभाजन से लगाया गया है। लगभग 32 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लाग भी 100 वर्ग फीट स कम क्षेत्रफल क कमर म रहते ह लगभग 34 प्रतिशत 100 से 200 वर्गफीट के क्षेत्रफल वाले कमरे मे रहते है केवल 13 प्रतिशत लोग 300 वर्ग फीट स अधिक क्षेत्रफल वाले कमरे मे रहते है। लेकिन उच्च आय वर्ग क 25 प्रतिशत एव अति उच्च आय के 42 प्रतिशत लोग एसे कमरो मे रहते है जिसका क्षेत्रफल 300 वर्गफीट से अधिक है। निर्धन घरो के परिवार आकार बडे है फिर भी उन सभी की व्यवस्था एक कमरे के घर मे ही करनी पडती है। इसलिए वे दुर्व्यवस्था के शिकार होते है। ये लोग अपने सभी कार्य जैसे खाना बनाना सोना यहा तक कि स्नान भी एक ही कमरे मे करते है। एक बिस्तर पर तीन बच्चे तक सोते है। अधिकाश घरो मे बिस्तर भी नही है और वे जमीन पर ही सोते है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भीडभाड का लोगो के स्वास्थ्य पर असर पडता ही है।

शयनकक्ष मे प्रति व्यक्ति को मिलने वाला स्थान -

भीडभाड से भरे घर मे जैसा कि ऊपर उल्लिखित है किस प्रकार एक ही कमरे मे अधिक से अधिक सख्या मे लोग रहते है। इस कारण प्रति सदस्य के लिए शयनकक्ष मे जमीनी क्षेत्रफल कितना है इसका घर की व्यवस्था पर बहुत प्रभाव पडता है।

सारणी 2 7 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे रहने वाले प्रति व्यक्ति को शयन कक्ष मे मिलने वाला औसत स्थान (प्रतिशत मे) (1999)

आय समूह	< 10वर्गफीट	10–20 वर्ग फीट	21–30 वर्ग फीट	> 30 वर्ग फीट	योग
अत्यधिक कम	64 78	35 22	—	—	100 00
कम	60 42	39 58	—	—	100 00
मध्यम	19 66	32 52	47 82	—	100 00
उच्च	—	28 50	35.34	36 16	100 00
अति उच्च	—	15. 84	32 18	51 98	100 00
योग	28 97	30 33	23 07	17 67	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

सारणी 2 7 और प्लेट 2 2 चयनित घरो मे रहने वाले प्रति व्यक्ति को शयन कक्ष मे मिलने वाले स्थान को दिखाता हे। प्रति सदस्य को मिलने वाले जमीनी क्षेत्रफल का पता कुल कमरो के क्षेत्रफल एव कुल परिवार के सदस्यो की सख्या के विभाजन से लगाया गया है। यहा यह सर्वेक्षण किया गया कि 64 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 60 प्रतिशत कम आय वर्ग के और 19 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो मे प्रति सदस्य को शयनकक्ष मे 10 वर्ग फीट से भी कम स्थान मिलता है। जबकि धनी घरो म 47 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के 35 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 32 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के परिवारो मे प्रति सदस्य को शयन कक्ष मे 21 से 30 वर्ग फीट का स्थान मिलता है। यद्यपि 36 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 51

प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के मकानो मे प्रति सदस्य को शयनकक्ष मे 30 वर्ग फीट से अधिक का स्थान मिलता है क्योकि इनके पास बडे कमरे है। गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोग जिनके पास प्रति सदस्य औसतन 10 वर्ग फीट से भी कम भूमि उपलब्ध हो पाती है। उनके लिये शुद्ध हवा मे सास लेने की भी समस्या होती है इन परिवारो के बच्चे बीमारी से (स्वास

सम्बन्धी बीमारी से) अधिक ग्रसित पाये गये अपेक्षाकृत उन परिवारो के जा खुल स स्थानो म रहते हे।

घर मे वातायन की स्थिति -

घर मे उपयुक्त वातायन की स्थिति निवासियो के स्वस्थ जीवन क लिए अति आवश्यक हे। मकान बनवाते समय वायु की उपयुक्त निकासी पर ध्यान देना आवश्यक होता है क्योकि बद–बद से घर मे रहना बहुत दुष्कर होता हे। स्वतत्र और स्वस्थ जीवन के लिए घर मे उपयुक्त वायु निकासी तत्र का होना अति आवश्यक है। क्योकि यदि घर मे वायु प्रदूषण हो भी तो शीघ्र निकल जाता है। सारणी 28 और प्लेट 22 मे नगर के चयनित घरो मे वातायन की स्थिति का विवरण दिखाया गया है।

सारणी 28 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे वातायन की व्यवस्था (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	उपयुक्त है	उपयुक्त नही है	योग
अत्यधिक कम	8 49	91 51	100 00
कम	15 54	84 46	100 00
मध्यम	45 63	54 37	100 00
उच्च	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	100 00
योग	53 93	46 07	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण प॰ आधारित (1999)

यह देखा गया कि अधिकाश अत्यधिक कम आय वर्ग के (91 प्रतिशत) एव 84 प्रतिशत कम आय वर्ग के व 54 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो मे उपयुक्त वातायन की स्थिति नही है। ऐसा इसलिए है कि इनके घर बहुत छोटे एव भीडभाड से भरे हे जिनमे कुछ कमरे हे या एक ही द्वार है और एक भी खिडकी नही है। एक तो इन घरो मे उपयुक्त वातायन की स्थिति

नही आर उपर स य लाग या ता लकडी मे खाना पकात है या कायल स या गाबर की उपली से और सूखी पत्तिया से। य सभी उपकरण या ईंधन बडी मात्रा म धूआ उत्पन्न करत ह आर ठीक वातायन न होन से धूआ घर मे ही उमसता रहता है जो तीव्र स्वास सम्बन्धी बीमारी का कारण बनता ह। कवल 8 प्रतिशत अत्यधिक कम आय क एव 15 प्रतिशत कम आय लाग उपयुक्त वातायन का आनन्द उठाते हे क्योकि ये लोग धनी आय वर्ग के घरो के बाहरी हिस्स मे ही रहते हे विशेषकर कचहरी सडक पर और वाजिदपुर मे व नगर के नये बसे क्षेत्रो मे। ये लोग रातमे चौकीदार का काम करते है और दिन मे रिक्शा खीचते है। यहा पर उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सभी घरो म उपयुक्त वातायन की स्थिति पायी गयी एव इनके मकान पूर्व नियोजन करके बनाये गये है। इनके पास धूआ बाहर निकालने वाले पखे रसाईघर मे लगे हैं व स्नानगृह व शाचालय मे भी अति उच्च आय वर्ग मे इस प्रकार के पखे लगे है।

इस प्रकार चयनित घरो का पूरा अनुमान विभिन्न आय वर्ग के आधार पर लगाया गया है। यह दिखाता है कि अनि उच्च एव उच्च आय वर्ग के परिवार अपने बडे वैभवशाली मकानो मे जो ईंट एव कक्रीट के बने है, मे रहते है। इन घरो मे कई महगे और उपयुक्त वातायन के कमरे है। लगभग परिवार के सभी सदस्यो के पास अलग कमरा है। ये लोग अपने घर को कवल निवास के लिए ही प्रयोग करते है। लगभग 45 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोगो के पास अपना मकान है परन्तु उनके घर अपेक्षाकृत छोटे है। जिनमे कुछ ही कमरे है। यद्यपि 41 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के व 48 प्रतिशत कम आय वर्ग के लोग भी अपने मकान मे रहने है परन्तु ये घर अनाधिकृत रूप से खुली जगहो पर है जैसे सडक के किनारे या रेलवे लाइन के आसपास। इस प्रकार के अनाधिकृत घर गन्दी बस्ती और झुग्गी झोपडी के विकास मे सहायक हे। इन झुग्गी झोपडी मे भी सर्वेक्षण के दौरान परिवार मे सदस्यो की अधिक से अधिक सख्या दखी गयी।

स्नानगृह और सफाई की स्थिति :-

पुराने समय मे घर मे सफाई रखने का अर्थ शौच को बाहर निकासी से ही लगाया जाता था। यहा तक कि आज भी बहुत से लोग सफाई का मतलब घर मे शौचालय होने से लगाते है। वास्तव मे सफाई इस पूरे तत्र को कहते है कि जिसमे सभी त्याज्य पदार्थों की
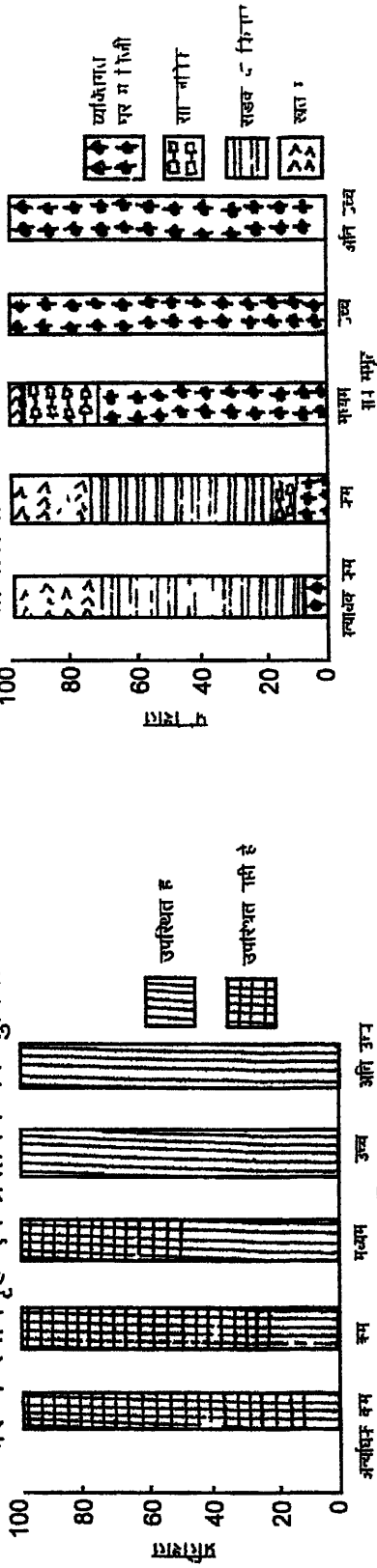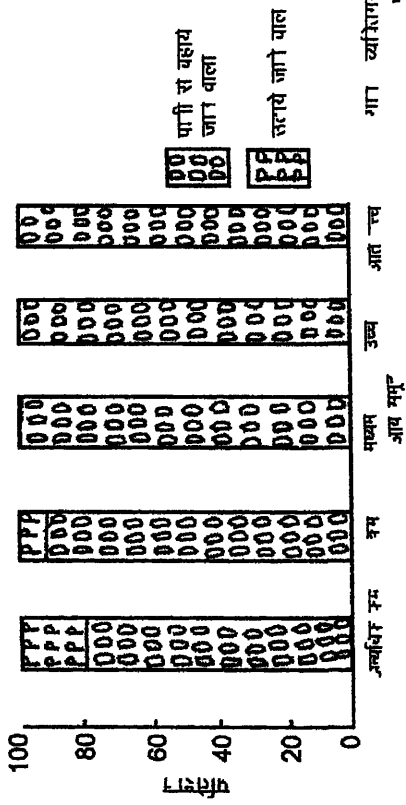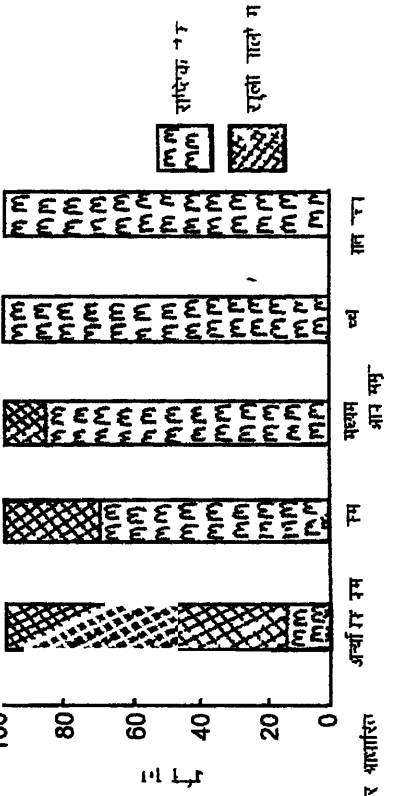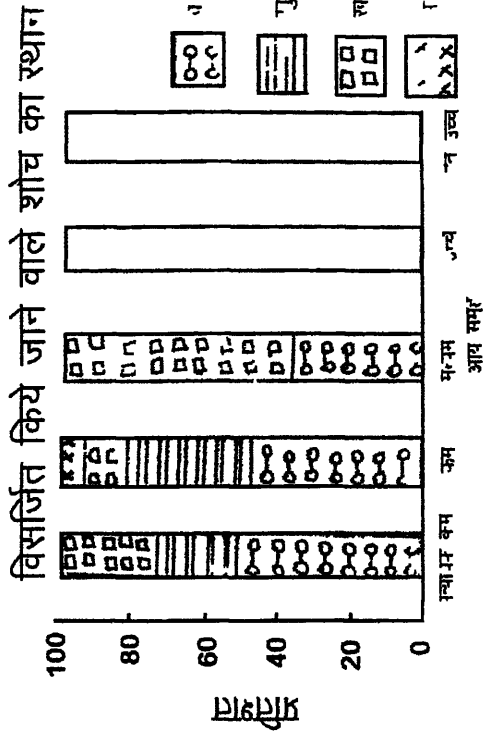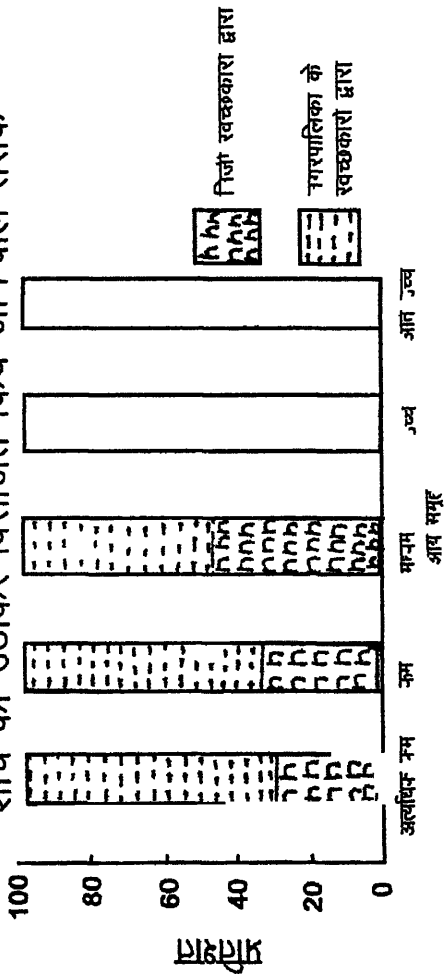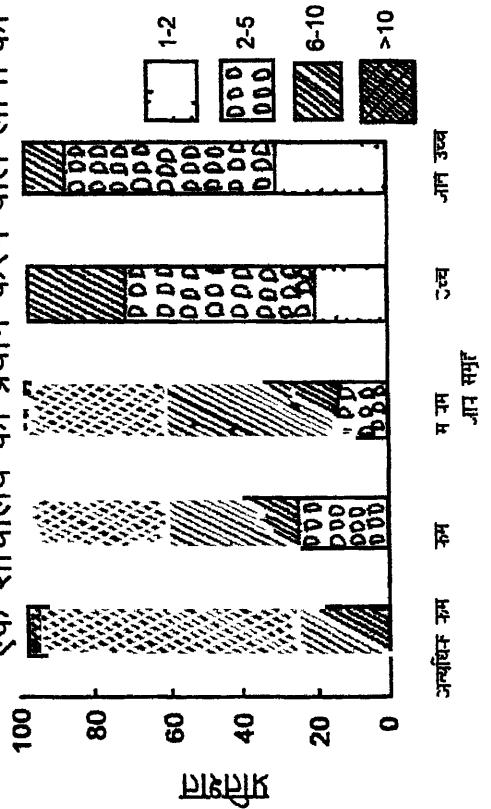
बाहर निकासी पानी की उपयुक्त आपूर्ति एव निकासी पर्यावरण प्रदूषण स बचाव आदि सम्मिलित ह। यह उस पूरे क्षत्र को घेरता हे जिसमे पर्यावरण प्रदूषण मुक्त हा रागा स बचाव हो ओर स्वास्थ्य का बेहतर करन वाली दशाये हो। पुराने घरो मे अलग से स्नानगृह नही बना हुआ हाता हे। घर क किसी कोन का स्नान क लिए प्रयुक्त करते हे जबकि नय बन घरा म स्नानगृह एव शौचालय एक मे ही शयनकक्ष के बगल मे ही बने हुए होते है। ऐसा प्राय उच्च आय वर्ग के घरो मे पाया जाता हे। ये लोग पश्चिमी सभ्यता के रहन–सहन को अपनाते हे।

अध्याय क इस भाग म स्नानगृह एव सफाई क विभिन्न भागो का लिया गया है जैसे घर मे स्नानगृह एव शौचालय है अथवा नही हे, शौचालय व्यक्तिगत है या सार्वजनिक, शौचालय पानी से साफ करने वाला है या हाथ से उठाने वाला है शौचालय सेप्टिक टैक से जुडे है या शोच बाहर खुली नालियो मे बहता है। शोचालय को साफ करने का तरीका व्यक्तिगत है या नगर पालिका द्वारा सफाई होती हे। हाथ से उठाने वाले शौच कूडे के साथ फेके जाते है या बाहर खेत मे फेके जाते है। एक शौचालय को कितने लोग प्रयोग मे लाते हे (एक से पाच या 6 से 10 या 10 से अधिक) इस प्रकार के आकडे इस नगर के व्यक्तिगत क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा एकत्र किये गये है।

स्नानगृह और शौचालय की सुविधा -

सारणी 29 और प्लेट 28 मे चयनित घरो के स्नानगृह एव शौचालय की सुविधा को दिखाया गया है।

सारणी 29 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे स्नानगृह एव प्रसाधन की सुविधा (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	उपस्थित है	उपस्थित नही है	योग
अत्यधिक कम	9 44	90 56	100 00
कम	21 91	78 09	100 00
मध्यम	48 54	51 46	100 00
उच्च	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	100 00
योग	55 98	44 02	100 00

प्लेट 2.10 मुहल्ला रूहट्टा मे कम आय वर्ग के घरो मे स्नानगृह न होने के कारण सडक के किनारे सार्वजनिक चापाकल पर लोग स्नान करते हैं। (उमरपुर)

प्लेट 2.11 फिरोशेपुर मुहल्ले मे मकान के सामने खुली नाली मे बच्चे शौच करते समय अक्सर देखे जा सकते हैं।

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण' पर आधारित

यहा सर्वेक्षण के दोरान यह देखा गया कि अधिकतर अत्यधिक कम आय वर्ग के, (90 प्रनिशत म) कम आय वर्ग के (78 C5 प्रतिशत) एव मध्यम आय वर्ग के (51 46 प्रतिशत) घरा म जो निम्न आय वर्ग के हे स्नानगृह एव शोचालय की सुविधा नही हे। किन्ही जगहो पर स्नानगृह एव शाचालय का प्रयाग घर के पीछे बरामदे हाते म खुल स्थान म ही करत हे। कभी–कभी स्नान की जगह को घर मे ही बदलते रहत हे। आज भी ग्रामीण घरो मे काई भी शौचालय या स्नानगृह अधिकाश उदाहरणो मे नही होते ह। पुरूष ओर महिलाये दोनो शौच के लिए खेतो म जाते हे आर स्नान के लिए घर क पीछे बरामदे या होत का प्रयोग करते है महिलाये एक या दो तरफ से परदा लगा लेती है। कुछ घरो मे पुरूष लोग सडक के किनारे सार्वजनिक–चापाकल पर स्नान करते है या सडक के किनारे सरकारी पाइप के पानी से नहाते है और महिलाये उसी कमरे मे नहा लेती है जिसमे शयन होता है या खाना पकता हे। इन ग्रामीण धनी परिवारो मे भी शौचालय नही होता हे क्योकि इनमे यह धारणा होती है कि इसको बनवाना जमीन का उचित प्रयोग नही है वह फालतू है। इन लोगो की यह धारणा परम्परा के रूप मे होती है जिसे कडाई से बदला जाना चाहिए। परन्तु शहरो मे जगह की कमी के कारण व धन की कमी के कारण और पानी की कमी के कारण घरो मे शौचालय कुछ घरो मे नही होते। जबकि उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सौ प्रतिशत घरो मे स्नानगृह एव शौचालय होता है।

शौचालय के प्रकार –

सारणी 2 10 और प्लेट 2 8 मे नगर के चयनित घरो के शौचालय के प्रकार को दिखाया गया है।

सारणी 2 10 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे प्रयोग म आने वाले शौचालया के प्रकार (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	व्यक्तिगत घर मे निजी	सार्वजनिक	सडक के किनारे	खेत मे	योग
अत्यधिक कम	10 38	—	62 58	27 04	100 00
कम	14 50	4 24	59 00	22 26	100 00
मध्यम	74 27	19 18	1 21	5 34	100 00
उच्च	100 00	—	—	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	—	—	100 00
योग	59 83	4 69	24 49	10 93	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 2 9 मे यह बताया जा चुका है कि लगभग 90 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 78 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 51 प्रतिशित मध्यम आय वर्ग के घरो मे शौचालय नही है। कम आय वर्ग के बहुत कम घरो मे शौचालय पाया गया। ये लोग सडक के किनारे ही शौच करते है। क्योकि खुले खेत कम ही पाये जाते है। जमीन जो मकान बनवाने के लिए छूटी रहती है का प्रयोग भी शौच के लिए होता है। ये लोग सडक के किनारे बनी नाली का प्रयोग भी शौच के लिए करते है। सारणी 2 10 एव प्लेट 2 8 मे यह दिखाया गया है कि लगभग19 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग सार्वजनिक शौचालयो (जो सरकार द्वारा बनवाय गये होते है) मे जात है जो अत्यधिक भीड होने से बहुत गन्दे होते है। इन लोगो के पास शौचालय बनवाने के लिए घर मे जगह नही होती और न ही धन। इनके परिवार आकार बडे होते है इसलिए कुछ लोग सडक के किनारे या खेत मे भी जाते है कुछ सार्वजनिक शौचालय भी उचित व्यवस्था न होने के कारण खुले गटर मे बहते रहते है। दुर्व्यवस्था के कारण इन शौचालयो से दुर्गन्ध भी आती रहती है। इन कारणा से नागरिको को असुविधा होती है। इन घरो के बच्चे अक्सर सडक के

किनार ही शौच करते है जबकि बड भी सूर्यास्त क बाद एव सूर्योदय क पहल सडक क किनार शौच करते है। दूसरी तरफ उच्च एव अति उच्च आय वर्ग क सभी घरा म शाचालय उपस्थित है।

व्यक्तिगत शौचालय के प्रकार -

सारणी 2 11 एव प्लेट 2 8 मे चयनित घरो मे पाये जाने वाले व्यक्तिगत शौचालयो के प्रकार का दिखाया गया है।

सारणी 2 11 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे निजी तौर पर प्रयोग मे लाये जाने वाले शौचालयो के प्रकार (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	निजी शौचालय	पानी से बहाये जाने वाला	हाथ से उठाये जाने वाला	योग
अत्यधिक कम	10 38	78 79	21 21	100 00
कम	14 50	87 80	12 20	100 00
मध्यम	74 27	98 04	1 96	100 00
उच्च	100 00	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	100 00	—	100 00
योग	59 83	92 93	7.07	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा पर व्यक्तिगत शौचालय मुख्य रूप से दो तरह के देखे गये है पानी स बहाये जाने वाले हाथ रा उठाये जाने वाले। अत्यधिक कम आय वर्ग के केवल 10 प्रतिशत घरो मे व कम आय वर्ग के 14 प्रतिशत घरो मे ही निजी शौचालय है। इनम से कुछ हाथ से उठाये जाने वाले है। उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के घरो के शौचालय पानी से साफ किये जाने वाले है मध्यम आय वर्ग मे भी कुछ शौचालय हाश से उठाये जाने वाले है। हाथ स उठाये जाने वाले

शोचालय अस्वस्थ वातावरण का न केवल घर मे बल्कि मुहल्ले मे भी जन्म दत हे। इन क्षेत्रा से गुजरते समय तीव्र गध देखी गयी। इस प्रकार की स्थिति मुसलमानी क्षेत्र म अधिक दखी गयी जिनके पास हाथ से शौच उठाने वाले शौचालय है जेसे उर्दू मुहल्ले मीरमस्त व ताडतला मुहल्ल क कुछ क्षत्रा म। इनम स कुछ घरा म जहा हाथ स मल उठाय जान वाल शौचालय ह शौचालय पर कोई दरवाजा नही होता केवल कोई परदा जूट का या कपड का पडा रहता है।

बहावदार शौचालय के प्रकार -

सारणी 2 12 एव प्लेट 2 8 मे चयनित घरो मे पाये जाने वाले बहावदार शौचालय के प्रकार को दिखाया गया है। शौचालय या तो सेप्टिक टेक से जुडे हुए ह या खुली नाली से। पिछली तालिका मे दिखाया गया हे कि अत्यधिक कम आय वर्ग के 78 प्रतिशत कम आय वर्ग के 84 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 98 प्रतिशत घरा मे पानी से बहाये जाने वाले शौचालय पाय गये है। जबकि उच्च व अति उच्च वर्ग के घरो के सो प्रतिशत शौचालय पानी से साफ किये जाने वाले हे। इसमे से कम आय वर्ग के 68 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 82 प्रतिशत शौचालय सेप्टिक टैक से जुडे हुए है। इनमे बाकी शौचालय खुली नाली से जुडे हुए है। यह दिखाता है कि जो शौचालय खुली नाली से जुडे हुए है बहुत अस्वस्थ वातावरण का जन्म देते है। उन लोगो के लिये जो आसपास रहते है। क्योकि ये नालिया सकरी है जो बरसात के समय भरकर सडक पर बहने लगती है। विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि मुहल्ला केरारकोट, बाजारभुआ, मुल्ला टोला, मुफ्ती मुहल्ला, ख्वाजगी टोला, मखदूम शाह बडे, ताडतला, पुरानी कटघरा रौजा अर्जन व मीरमस्त मे स्थित अधिकाश घरो मे जो निम्न आय वर्ग के लोग है सभी के पास उठौआ शौचालय था किन्तु शासन के आदेश से मैला ढोने का काम बद हो जाने पर ये लोग घर के अन्दर बने शौचालय को खुली नाली से जोड दिये है जिससे इन मुहल्लो की पर्यावरणीय स्थिति चिताजनक हे। कुछ ही घरो मे उठौआ शौचालय रह गये है जिसे निजी स्वच्छकारो द्वारा साफ कराते है।

प्लेट 2 12 मीरमस्त मुहल्ले मे उठौआ शौचालय (मैनुअल) का दृश्य।

सारणी 2 12 जौनपुर नगर के चयनित घरों मे बहावदार शौचालय के प्रकार (1999)

आय समूह	फ्लश शौचालय	सेप्टिक टैंक	खुली नाली मे	योग
अत्यधिक कम	78.79	15.38	84 62	100 00
कम	87 80	69.44	30.56	100 00
मध्यम	98 04	82 00	17 18	100 00
उच्च	100 00	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	100 00	—	100 00
योग	92.92	73 40	26 50	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

शौच को उठाकर विसर्जित किये जाने वाले तरीके :-

सारणी 2 13 एव प्लेट 2 9 मे चयनित घरो में उठाकर शौच को विसर्जित किये जाने वाले तरीको का वर्णन किया गया हैं शौच को एकत्रित कर के विसर्जित करने की दो प्रकार की सेवाये यहा देखी जाती हैं। 1– निजी स्वच्छकारों द्वारा व्यक्ति विशेष को पैसे

देकर सफाई करवाना। 2– नगर पालिका क स्वच्छकारा द्वारा सफाइ हाना। यहा यह दखा गया कि अत्यधिक कम आय वर्ग क 28 प्रतिशत कम आय वर्ग क 40 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग क 50 प्रतिशत घरो मे निजी स्वच्छकारा द्वारा शोच का उठवाया जाता है। जबकि 71 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग क 60 प्रतिशत कम आय वर्ग क व 50 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो म नगर पालिका के स्वच्छकारो द्वारा सफाई होती है। इनमे मध्यम आय वर्ग के लोग निजी स्वच्छकारा का ही अधिक प्रयाग करत ह क्याकि नगर पालिका क कर्मचारी अधिक दिनो तक नही आते हे। निम्न आय वर्ग मे इन शोचालया मे नगरपालिका के कर्मचारी अधिक दिनो तक नही आने से शोच अधिक दिनो तक पडा ही रहता है। परिणाम स्वरूप विभिन्न प्रकार के कीटाणु जीवाणु, मक्खी व चपडे आस–पास रहते हे। य सब उन लागो क लिए अस्वास्थ कर दशाये उत्पन्न करते हे जा इस प्रकार के शोचालय का प्रयोग करते हे।

सारणी 2 14 व प्लेट 29 मे उठाकर विसर्जित किये जाने वाले शौच का स्थान की दृष्टि से वर्णन किया गया है। शौच को फेकने के तीन प्रकार के स्थान देखे गये। उन्हे या कूडे के साथ फेका जाता है या फिर खुली नालियो या खेतो मे फेका जाता हे।

सारणी 2 13 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे उठाकर शौच को विसर्जित किये जाने वाले तरीके (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	निजी शौचालय	उठाये जाने वाले शौचालय	निजी स्वच्छकारो द्वारा	नगरपालिका के स्वच्छकारो द्वारा	योग
अत्यधिक कम	10.38	21 21	28 57	71 43	100 00
कम	14 50	12.20	40 00	60 00	100 00
मध्यम	74 27	1 96	50 00	50 00	100 00
उच्च	100 00	—	--	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	--	—	100 00
योग	59 83	7 07	36 49	63·51	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा यह पाया गया कि 57 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के एव 40 प्रतिशत कम आय वर्ग के लाग शोच का इन शाचालया से उठाकर कूडे के साथ फकत ह। लगभग 14 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग क एव 20 प्रतिशत कम आय वर्ग क लाग शौच का नाली म फेकते है जिसस नाली कभी–कभी जाम हा जाती ह। कूड क साथ शोच का फकन स कूड स बहुत दुर्गन्ध आती है जो सडक के किनार देखी जा सकती है। लगभग एक चोथाई अत्यधिक कम आय एव कम आय वर्ग क लाग शौच को अपन घर क आसपास बने खेतो म फक दत है। यह त्याज्य पदार्थ अधिक दिनो तक उठाया नही जाता इसलिए अधिक सख्या मे जानवर विशेषकर सूअर इकटठा होते है ये सब मिलकर अस्वस्थ वातावरण को जन्म दत ह। इस गन्दगी से मुहल्ले मे मक्खी मच्छर का बहुत प्रकोप रहता है जिसे यहा पर रहने वाले नागरिका को झलना पडता है।

सारणी 2 14 जौनपुर नगर मे उठाकर विसर्जित किये जाने वाले शौच का स्थान की दृष्टि से वर्णन (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	कूडे के साथ	खुली नाली मे	खेत मे	अज्ञात	योग
अत्यधिक कम	57 14	14·29	28 57	—	100 00
कम	40 00	20 00	20 00	20 00	100 00
मध्यम	—	—	—	- -	—
उच्च	—	—	—	—	—
अति उच्च	- -	-	- -	—	—
योग	48 57	17 14	24 29	10 00	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

एक शौचालय को प्रयोग करने वाले लोगो की सख्या .-

सारणी 2 15 और प्लेट 2 9 म चयनित घरो मे एक शौचालय को प्रयोग करने वाले लोगो की सख्या को दिखाया गया है। एक शोचालय को प्रयोग करने वाले लोगो

की सख्या का पता परिवार के कुल सदस्या की सख्या एव घर म उपस्थित शाचालय की सख्या से लगाया गया ह।

सारणी 2 15 जौनपुर नगर क चयनित घरो मे एक शौचालय को प्रयोग करने वाले लोगो की सख्या (1999) (प्रतिशत म)

आय समूह	1	1 – 5	6 – 10	> 10	योग
अत्यधिक कम	—	--	23 58	76 42	100 00
कम	—	22 97	37.80	39 23	100 00
मध्यम	-	10 43	49 76	39 80	100 00
उच्च	20 00	52 32	27 68	--	100 00
अति उच्च	31 68	58 42	9 90	—	100 00
योग	10 34	28 83	29 74	31 09	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

कम आय वर्ग के घरो मे अधिक से अधिक सख्या मे लोग एक ही शौचालय का प्रयोग करते है। यहा पर अत्यधिक कम आय वर्ग के 76 प्रतिशत कम आय वर्ग के 39 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 39 प्रतिशत घरो मे एक शौचालय को 10 व्यक्ति से अधिक सदस्य प्रयोग मे लाते है। क्योकि उनके परिवार आकार बड है एव घर मे एक ही शौचालय है। मध्यम आय वर्ग क 49 प्रतिशत घरो मे 6 से 10 व्यक्ति एक शौचालय का प्रयोग करते है जबकि उच्च आय वर्ग के 20 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 31 प्रतिशत घरो मे एक शौचालय का प्रयोग एक ही व्यक्ति कर रहा है। इस प्रकार के शौचालय उनके शयनकक्ष के बगल मे ही बने हुए है।

विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे स्नानगृह एव सफाई की स्थिति के सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि सभी उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के घरो मे स्वच्छ स्नानगृह एव बहावदार शौचालय है जो सेप्टिक टैक से जुडे हुए है। मध्यम आय वर्ग के 51 प्रतिशत घरो के पास स्नानगृह एव शौचालय नही पाया गया बाकी के पास उपयुक्त

स्नानगृह एव बहावदार शाचाल्य ह। मध्यम आय वर्ग क भी 1 88 प्रतिशत घरा म शाच उठाय जाने वाले शोचालय है जो नगरपालिका स्वच्छकारो व निजी स्वच्छकारा द्वारा साफ कराय जाते है। यहा पर अत्यधिक कम आय वर्ग के घरा क पास स्नानगृह एव शोचालय नही है। ये लोग शाच के लिए सडक के किनार या खता म जात है।

अध्याय - [illegible]

जौनपुर नगर में पेय जलापूर्ति एवं अपवाह की स्थिति

इस अध्याय मे नगर के चयनित घरो मे जलापूर्ति कूडाकरकट एव जल अपवाह पर भौतिक दृष्टिकोण दर्शाया गया है। वास्तव मे यह भाग अध्याय दो का ही विस्तार है। जिसमे घर की स्थिति, स्नानगृह एव सफाई का वर्णन दिया गया है। पिछले अध्याय मे यह बताया गया है कि सर्वेक्षण के लिए 1580 मकान चयनित किये गये। उनमे से आधे मकान लोगो के अपन थे एव अधिकाश लोग अपने गृह का उपयोग केवल निवास के लिए करते है। ये मकान ईंट एव कक्रीट के बने है। कुल चयनित मकानो मे से आधे मकानो का जमीनी क्षेत्रफल 300 वर्गफीट से कम है। 73 प्रतिशत घरो मे तीन या तीन से कम कमरे है। लगभग 35 प्रतिशत कमरे का क्षेत्रफल 100 वर्गफीट से कम है। 45 प्रतिशत मकानो मे उपयुक्त वातायन की स्थिति नही है और 60 प्रतिशत निवासियो को शयनकक्ष मे 20 वर्ग फीट से भी कम जगह मिलती है। लगभग आधे मकानो मे स्नानगृह एव शौचालय की सुविधा नही है। लगभग 64 प्रतिशत घरो मे व्यक्तिगत (निजी) शौचालय है और 20 प्रतिशत मकानो मे एक ही शौचालय का 10 व्यक्ति से अधिक सदस्य उपयोग करते है।

इस अध्याय को दो भागो मे विभाजित किया गया है। पहले भाग मे नगर मे जलापूर्ति का एव दूसरे भाग मे अपवाह का वर्णन किया गया है।

पर्याप्त मात्रा मे शुद्ध पीने के पानी की आपूर्ति घरो मे रहने वाले लोगो के जीवन की गुणवत्ता के लिए आवश्यक है। सिटी बोर्ड द्वारा पेयजल आपूर्ति की व्यवस्था सुव्यवस्थित एव सुरक्षित ढग से घरो तक न किये जाने के कारण कही–कही पानी की पाइप लाइन मे टूट–फूट होने से गन्दे पानी की मिलावाट हो जाती है जिससे उस पानी को पीने वाले लोग दूषित जल के कारण होने वाले रोगो से ग्रसित हो जाते है। जौनपुर नगर मे अधिकाश निवासी चापाकल अथवा कूप के जल का उपयोग करते है। इसका मुख्य कारण यह है कि सिटी बोर्ड द्वारा पेयजल की आपूर्ति पर्याप्त नही होती। जौनपुर नगर मे नागरिको को पेयजल आपूर्ति के उद्देश्य से 20 ट्यूबवेल लगाये गये है जिनमे से कुल 14 ट्यूबवेल ही पयजलापूर्ति करते है शेष 6 बेकार पडे है। सिटी बोर्ड द्वारा पेय जलापूर्ति सुबह–शाह (दो समय) किये जाने का प्राविधान है किन्तु विद्युत आपूर्ति मे बाधा होने के कारण प्राय एक ही समय पेयजल की आपूर्ति हो पाती है। सिटी बोर्ड के पेयजल आपूर्ति के अभिलेख मे 6 घटे सुबह व 6 घण्टे शाम जल

आपूर्ति किये जाने का प्राविधान हे किन्तु कतिपय कारणो से बारह घटे जलापूर्ति कमी नही होती। सिटी बार्ड पेयजलापूर्ति के अभिलेख क अनुसार प्रति व्यक्ति 93 14 लीटर पानी दिया जाता है। जबकि यह आकडा सर्वेक्षण से गलत पाया गया। पेयजल आपूर्ति के ससाधन टयूबवेल 14, गोमती नदी का स्रोत 1। टयूबवेल द्वारा 9 53 मीट्रिक लीटर एव नदी द्वारा 4 22 मीट्रिक लीटर, कुल 13 75 एम एल डी।

कार्यरत एव बेकार पडे टयूबवेल का विवरण

1– नईगज प्रथम———खराब पडा है

2– नईगज द्वितीय———कार्यरत है।

3–नईगज तृतीय———कार्यरत है।

4– नईगज चतुर्थ———कार्यरत है।

5– खरका कालोनी———कार्यरत है।

6– पुलिस अधीक्षक आवास के पास———कार्यरत है।

7– लाइन बाजार———कार्यरत है।

8– सदर चुगी———कार्यरत है।

9– खासनपुर———कार्यरत है।

10– सिपाह———कार्यरत है।

11– मिसिरपुर———कार्यरत है।

12– बोदकरपुर प्रथम———बद पडा है।

13– बोदकरपुर द्वितीय———कार्यरत है।

14– अहियापुर———बन्द पडा है।

15– पचहटिया———बद पडा है।

16– हिन्दी भवन———कार्यरत है।

17– रसूलाबाद———कार्यरत है।

18– इग्लिश क्लब———कार्यरत है।

19– पी डब्लू डी क्रासिग———बद पडा है।

20– भस गोदाम———बद पड़ा है।

जौनपुर नगर

सम्पूर्ण चयनित घरो मे जलापूर्ति 1999
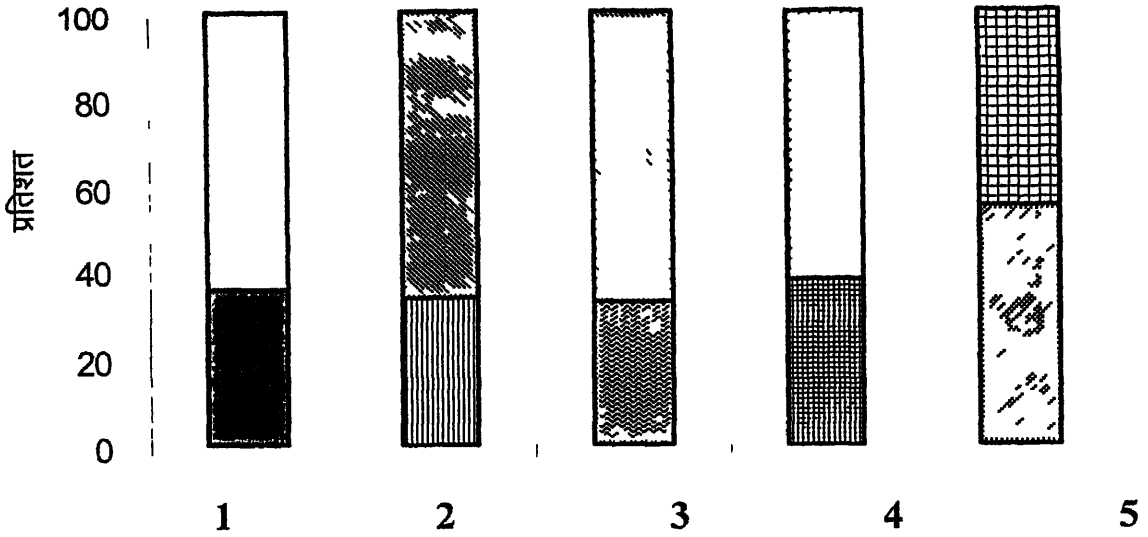
1 जलापूर्ति का स्रोत–	व्यक्तिगत घर मे	
	सार्वजनिक	
2 जलापूर्ति की स्थिति–	नियमित	
	अनियमित	
3 जलापूर्ति की गुणवत्ता–	सतोषजनक	
	असतोषजनक	
4 जलापूर्ति की मात्रा–	पर्याप्त	
	अपर्याप्त	
5 जल सग्रह का तरीका–	खुले बर्तन मे	
	बद बर्तन मे	

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट– 31

पेय जलापूर्ति सीधे नलकूप से तथा नदी क जल का शुद्ध करके रखे गये बडे टैक से किया जाता है। नगर का मध्य भाग सिटी बार्ड के द्वारा बिछायी गयी पाइप लाइन के द्वारा पेयजल प्राप्त करता है शष अन्य भागो के लोग सिटी बोर्ड द्वारा कम जल प्राप्त करते है अधिकाश जलापूर्ति उनक द्वारा निर्जा ससाधना यथा हेण्डपम्प व कूप से हाती है। अल्पमात्रा मे शुद्धपेयजल आपूर्ति होने से नगर वासियो को विवश होकर निजी ससाधन से प्राप्त अशुद्ध जल का प्रयोग करने पर स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक समस्याआ से जूझना पडता है।

घरो मे पेयजल आपूर्ति -

घरा मे पेयजल आपूर्ति का विवरण लेने मे उत्तरदाताओ से इस बारे मे प्रश्न किया गया कि जलापूर्ति रोज होती है या अनियमित? जलापूर्ति का स्रोत क्या है (चापाकल द्वारा, ट्यूबवेल द्वारा सडक के किनार लगे सरकारी चापाकल द्वारा या खुले कूप द्वारा) पानी की गुणवत्ता सतोषजनक है या असतोषजनक। जलापूर्ति की मात्रा पर्याप्त है अथवा अपर्याप्त, पानी को रखने का ढग (खुले बरतन मे अथवा बद बरतन मे) किस प्रकार का हे आदि यह सभी आकडे व्यक्तिगत क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा एकत्र किये गये।

सारणी 3 1 जौनपुर नगर के कुल चयनित घरो मे जलापूर्ति (1999) (प्रतिशत मे)

1	2		3
	जल आपूर्ति का प्रकार		प्रतिशत
जल आपूर्ति का स्रोत	1 व्यक्तिगत	–	64 48
	2 सार्वजनिक	–	35 52
जलापूर्ति	1 नियमित	–	67 15
	2 अनियमित	–	32 85
जलापूर्ति की गुणवत्ता	1 सतोषजनक	–	68 01
	2 असतोषजनक	–	31 99
जलापूर्ति की मात्रा	1 पर्याप्त	–	62 51
	2 अपर्याप्त	–	37.49
घर मे जल सग्रह का तरीका	1 खुले बरतन मे	–	45 38
	2 बन्द बरतन मे	–	54 62

जौनपुर नगर

विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे जलापूर्ति 1999
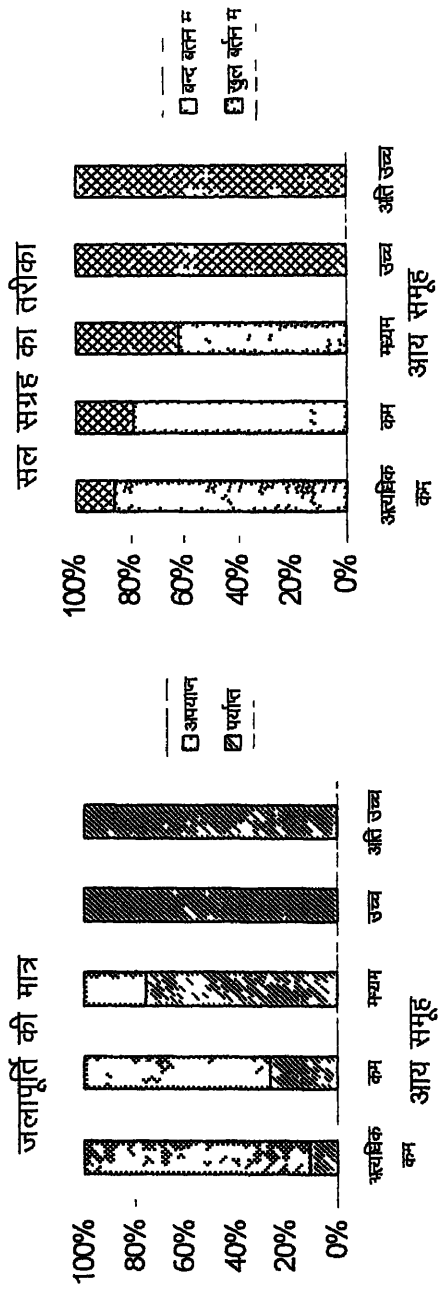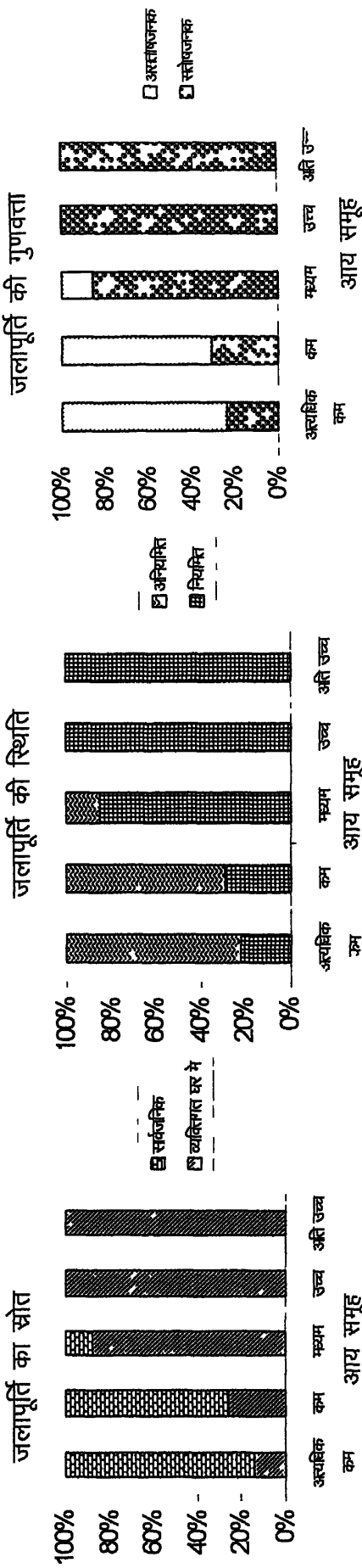
स्रोत— व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 32

सारणी 3 1 म कुल 1580 चयनित घरो मे जलापूर्ति की तस्वीर दिखायी गयी है। यह देखा गया है कि लगभग 35 प्रतिशत लोग सार्वजनिक स्रोतो जैसे सडक के किनारे लगे चापाकल या खुले कूओ से पानी लेते है। कुछ लोग नियमित पानी नही पाते लगभग 31 प्रतिशत लोग असतोषजनक गुणवत्ता वाला पानी प्रयोग मे लाते है। एक तिहाई से अधिक लोग पानी पर्याप्त मात्रा मे नही पाते। कुल चयनित घरो मे से लगभग आधे लोग पानी खुले बरतनो मे ही रखते है क्योकि उनके पास पानी रखने का बद बरतन नही है।

जल आपूर्ति का स्रोत -

सारणी 3 2 एव प्लेट 3 2 मे चयनित घरो मे जलापूर्ति के स्रोत को दिखाया गया है। यहा पर सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि जलापूर्ति के दो मुख्य स्रोत है– 1– व्यक्तिगत और 2– सार्वजनिक। तीन प्रकार के व्यक्तिगत स्रोत देखे गये अपना चापाकल, सिटी बोर्ड द्वारा बिछायी गयी पाइप लाइन के द्वारा जो नदी से पानी शुद्ध करके वितरित किया जाता है व ट्यूबवेल द्वारा। तीन प्रकार के सार्वजनिक पेयजल आपूर्ति के स्रोत भी देखे गये। सडक के किनारे पाइप लाइन से सार्वजनिक उपयोग के लिए लगाया गया नल, सार्वजनिक उपयोग के लिए गया चापाकल सार्वजनिक उपयोग मे आनेवाला कूआ। यह पाया गया कि 85 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 74 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 17 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग पानी सार्वजनिक स्रोत से ही लेते है। सार्वजनिक स्थानो से लिया गया पानी पेयजल के लिए उपयुक्त नही होता है। निम्न आय वर्ग के लोग सामाजिक दृष्टि से पिछडे हुए होते है। ये लोग खुले कूओ से पानी लेते है ये खुले कूए बुरी तरह प्रदूषित हो जाते है क्योकि आसपास रहने वाले लोग अनेक प्रकार के त्याज्य पदार्थ इसी कूए मे फेक देते है। इन घरो के बच्चे कुछ भी जो इनके हाथ मे आता है उठाकर कुए मे फेक देते है। इनमे पानी शुद्ध करने के लिए क्लोरीन भी नही मिलाया जाता है। इन सब कारणो से कम आय वर्ग के लोग गन्दे पानी के प्रयोग से होने वाली बीमारियो जैसे–पीलिया, पेचिस, कालरा से पीडित होते रहते है।

सारणी 3 2 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे जलापूर्ति का स्रोत (प्रतिशत मे)

आय समूह	व्यक्तिगत (घर मे)	सार्वजनिक	योग
अत्यधिक कम	14 46	85 54	100 00
कम	25 44	74 56	100 00
मध्यम	82 53	17 48	100 00
उच्च	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	100 00
योग	64 48	35 52	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

लगभग 82 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के परिवार के पास पानी लेने का निजी साधन है जबकि 17 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के परिवार सार्वजनिक स्रोतो से पानी लेते है क्योकि उनके पास अपना चापाकल नही है या उनके आवास पर सरकारी पानी नही आता है और ये लोग घर के बगल मे लगे सार्वजनिक स्रोत से आसानी से पानी पा जाते है। इनमे से कुछ लोगो के पास गैर कानूनी पानी का कनेक्शन है। दूसरी तरफ उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सभी घरो मे सरकारी पानी के कनेक्शन से पानी आता है। नगर के कुछ सम्पन्न व्यक्ति निजी बोरिग कराके जेड पम्प अपने आवास पर लगाये है। पानी का कनेक्शन और घर की सम्पन्नता मे सम्बन्ध है, जैसे–जैसे आय बढती है जल आपूर्ति का उचित साधन घर मे होता जाता है।

जलापूर्ति की स्थिति –

शुद्ध पीने योग्य जल की नियमित आपूर्ति दैनिक जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओ मे से एक है। सारणी 3 3 और प्लेट 3 2 मे नगर के चयनित घरो मे जलापूर्ति की बारम्बारता को दिखाया गया है।

सारणी 3 3 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे जलापूर्ति (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	नियमित	अनियमित	योग
अत्यधिक कम	22 33	77 67	100 00
कम	28 98	71 02	100 00
मध्यम	84 46	15 54	100 00
उच्च	100 00	--	100 00
अति उच्च	100 00	--	100 00
योग	67 15	32 85	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा पर यह पाया गया कि 77 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 71 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 15 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो मे जल आपूर्ति नियमित नही होती है और ये लोग सार्वजनिक जल के स्रोत से पानी लेते है। इन सार्वजनिक जल के कनेक्शन मे भी पानी नियमित न आनेसे इन निम्न आय वर्ग के लोगो को पानी लेने बहुत दूर तक जाना पडता है। पानी आने की अनियमितता गर्मी के दिनो मे विशेषकर देखी जाती हे क्योकि इन दिनो मे विद्युत आपूर्ति बाधा बहुत आम होती है। कभी–कभी इन सार्वजनिक जल आपूर्ति के स्रोत पर पानी लेने वालो की लम्बी लाइन लगी रहती है और लोगो को पानी लेने के लिए घण्ओ इन्तजार करना पडता है। जबकि सभी उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के घरो मे जल आपूर्ति नियमित होती है क्योकि उनके पास अपना चापाकल है या घर मे जेटपम्प लगा है एव सरकारी पानी भी आता है।

जल आपूर्ति की गुणवत्ता -

सारणी 3 4 और प्लेट 3 2 मे नगर के चयनित घरो मे जल आपूर्ति की गुणवत्ता को दर्शाया गया है जो दो विकल्प गे है। या तो जल आपूर्ति की गुणवत्ता सतोषजनक

है या असतोषजनक।

सारणी 3 4 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे जल आपूर्ति की गुणवत्ता (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	सतोषजनक	असतोषजनक	योग
अत्यधिक कम	23 90	76 10	100 00
कम	30 74	69 26	100 00
मध्यम	85 44	14 56	100 00
उच्च	100 00	-	100 00
अति उच्च	100 00	—	100 00
योग	68 01	31 99	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा यह पाया गया कि 76 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 69 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 14 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घर असतोषजनक गुणवत्ता वाला पानी पाते है, जो साधारणतया पीने योग्य भी नही होता है। इन परिवारो के अनुसार पानी पीले रग का नमकीन खारा आता है जिसमे किसी प्रकार की गध भी रहती है। जबकि लगभग एक चौथाई अत्यधिक कम आय वर्ग एव कम आय वर्ग के घर सतोषजनक गुणवत्ता वाला पानी पाते है। घरो मे पानी को उबाल करके शुद्ध करने का चलन यहा नही है क्योकि लोगो को यह आभास रहता है कि पानी की गुणवत्ता इतनी खराब नही है कि उसे उबाला जाय जो कि गलत है। ये लोग दूषित पानी के प्रयोग से होने वाली समस्याओ से अनभिज्ञ से रहते है। कुछ मध्यम आय वर्ग के घरो मे यह बताया गया कि समय का अभाव एव ईंधन पर आने वाला खर्च भी पानी को शुद्ध करने मे रूकावट का काम करता है। यह भी बताया गया कि जलकल विभाग द्वारा पानी मे क्लोरीन मिलाकर पानी वितरित किया जाता है, लम्बे समय तक क्लोरीन उपयोग का अलग प्रभाव पडता है। पानी वितरित की जाने वाली कुछ पाइप लाइन बहुत पुरानी है जिससे उसमे अन्दर जग

लगा हुआ होता हे और पानी इसमे मैला होकर आता हे।

सभी उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के घरो ने यह बताया कि वे सतोषजनक गुणवत्ता वाला पानी पाते है लेकिन इन घरो मे भी जिनके पास पानी स्टोर करने की बडी टकी है अधिकतर लोग टकी को साफ नही कर पाते जिससे उसमे दीवारो पर व नीचे सतह पर काई की परत जमी देखी गयी जो पानी को प्रदूषित व कीटाणु युक्त कर देती हे। कम आय वर्ग के लोग उचित गुणवत्ता वाला पानी इसलिए नही पा पाते क्योकि ये सार्वजनिक पानी वितरण की जो पाइप बनी होती है उससे पानी लेते है या सडक के किनारे बने सार्वजनिक चापाकल से पानी लेते है। पानी की गुणवत्ता का गहराई से सीधा सम्बन्ध है। जैसे-जैसे पृथ्वी की गहराई बढती है पानी शुद्ध प्राप्त होता है क्योकि पृथ्वी की उपरी परत मे प्रदूषित पानी रहता हे। कम आय वर्ग के अधिकाश लोग प्रदूषित पानी का ही उपयोग कर लेते है इसलिए इन घरो के सदस्य विशेषकर बच्चे पीलिया कालरा पेचिस आदि से पीडित रहते है।

जल आपूर्ति की मात्रा -

सारणी 3 5 और प्लेट 3 2 मे नगर के चयनित घरो मे जल आपूर्ति की मात्रा का विवरण दिखाया गया है।

सारणी 3 5 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे जल आपूर्ति की मात्रा (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	पर्याप्त	अपर्याप्त	योग
अत्यधिक कम	10 70	89 30	100 00
कम	26 86	73 14	100 00
मध्यम	75 00	25 00	100 00
उच्च	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	100 00
योग	62 51	37 49	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यहा यह पाया गया कि 89 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 73

प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 24 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घर पर्याप्त मात्रा मे पानी नही पाते इसका मुख्य कारण सिटी बार्ड द्वारा जल का वितरण कम किया जाना है। जौनपुर नगर मे पानी का वितरण विद्युत आपूर्ति बाधा के कारण बहुत दोषपूर्ण है। गर्मी के दिनो मे पानी का तल नीचे चला जाता है। गर्मी के दिनो मे पानी का वितरण भी कम हो पाता है। दूसरी तरफ सभी उच्च आय वर्ग के परिवार किसी प्रकार की पानी वितरण की समस्या नही झेलते है क्योकि उनके पास पानी सग्रह करके रखने की बडी टकी या ड्रम रहता है। बहुत से उच्च आय वर्ग के घरो मे जेटपम्प व जनरेटर दोनो लगा है जिससे विद्युत आपूर्ति बाधा मे भी वे किसी समस्या से ग्रसित नही होते है। इस प्रकार की सुविधा नगर के पुराने बसे क्षेत्रो मे देखने को मिलती है। गर्मी के दिनो मे सार्वजनिक पाइप मे यदि पानी कई दिनो तक नही आता है तो लोग जलकल विभाग के सामने धरना–प्रदर्शन भी किया करते है। 2001 के गर्मी के महीने मे विद्युत बाधा के कारण पानी न मिलने पर नगर के विशाल अधिवक्ता सघ ने जिलाधिकारी का घेराव किया था।

जल सग्रह का तरीका -

जल आपूर्ति को ठीक प्रकार से सग्रह करना भी एक कला है। सारणी 3 6 एव प्लेट 3 2 मे नगर के चयनित घरो मे जल सग्रह का तरीका दर्शाया गया है।

सारणी 3 6 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे जल सग्रह का तरीका (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	खुले बर्तन मे	बन्द बर्तन मे	योग
अत्यधिक कम	85 85	14 15	100 00
कम	79 15	20 85	100 00
मध्यम	61 89	38 11	100 00
उच्च	—	100 00	100 00
अति उच्च	—	100 00	100 00
योग	45 38	54 62	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यह देखा गया कि 85 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 79 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 61 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के परिवार पानी को खुले बर्तन मे ही सग्रह करते है। ये परिवार पानी को प्रदूषित करने का काम करते है क्योकि खुले हुए पानी मे विभिन्न धूल कण कीट पतगा आदि पड जाते ह जा विभिन्न प्रकार की बीमारिया का कारण बनता है। कम आय वर्ग के घरो मे पानी रखने के लिए बडे पीप का प्रयोग करते है या छोटे–छोटे बर्तन यथा बाल्टी, टब का प्रयोग किया जाता है आम तोर पर बाल्टी गरीब व मध्यम आय वर्ग मे बहुत प्रचलित है।

यह भी दखा गया कि 14 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 20 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 38 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घर प्रतिदिन के प्रयोग मे आने वाले पानी को ढककर रखते हे। सभी उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के घरो मे पानी ढककर रखा जाता है या कुछ घरो मे पानी सग्रह की अधिक आवश्यकता नही होती क्योकि उनके पास बद पानी की टकी है या जेट पम्प चलाकर आवश्यकतानुसार पानी ले लेते है। इस प्रकार की टकी अधिकाश सीमेन्ट की बनी हुयी है। इनके साथ केवल यह समस्या रहती है कि ये टकी को नियमित रूप से साफ नही करते है इसलिए इसमे काई कीट आदि पड जाते हे। सर्वेक्षण के दौरान यह भी देखा गया कि इस टकी के अगल–बगल चूहे, चिडिया, गिलहरी आदि अपना निवास बना लेते है जहा कभी–कभी वे मर भी जाते है। धर के लोग इस बारे मे सचेत नही रहते है अतएव उच्च आय वर्ग मे भी यह बीमारी फैलने का कारण बन सकता है। चयनित घरो मे विभिन्न आय वर्ग के परिवारो मे जलापूर्ति की सारणी से यह पता चलता है कि सभी उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के लोग निजी स्रोत से पानी लेते है जैसे अपने चापाकल से या उनके आवास तक आने वाले सरकारी पानी के कनेक्शन द्वारा लेते है और कुछ के पास जेटपम्प है जो नियमित शुद्ध स्वच्छ पानी देता है। ये उच्च आय वर्ग के लोग दूषित पानी के प्रयोग से होने वाली समस्या से अवगत रहते है इसलिए पानी को ढककर ही रखते है। कुछ उच्च आय वर्ग के घरो मे पानी शुद्ध करने का उपकरण भी है जिसे आसानी से बेसिन या नल मे लगा लिया जाता है। लेकिन यह उपकरण बहुत कम घरो मे देखा गया जो उच्च शिक्षित है दूसरी तरफ अधिकाश कम आय वर्ग के लोग खाना बनाने के लिए कपडे व बरतन धोने के लिये एव नहाने

के लिए सार्वजनिक स्रातो से जेसे सडक के किनारे लगे चापाकल रा या सरकारी पाइप लाइन से पानी लेते है। ये लोग दैनिक आवश्यकतानुसार पानी की मात्रा नही पाते है। विद्युत आपूर्ति बाधा मे तो और भी समस्या हो जाती है। ये लोग असतोषजनक गुणवत्ता वाला पानी उपयोग मे लाते है और उसे खुला भी रखते है। इन सभी बातो से इन कम आय वर्ग के घरो मे पेचिश कालरा टाइफाइड पीलिया जैसी बीमारिया आमतौर पर फैला करती है। इस नगर के कुछ मुहल्लो से लिये गये पेयजल के नमूने का परिक्षण शोधकर्ता द्वारा के जी मेडिकल कालेज लखनऊ से कराया गया, जिसका विवरण इस प्रकार है।

जाच हेतु लिये गये जल का स्थान– जहागीराबाद जौनपुर

विश्लेषण का दिनाक – 8–7–1999

भौतिक लक्षण– पारदर्शी

असयोजित एव लवणीय तिक्ताति भाग (फ्री एण्ड सेलाइन अमोनिया)

प्रति 100,000————————0 001

शिवत्याम तिक्ताति भाग (एल्बूमिनाइड एमोनिया) 100 000——————0 002

37^0 से ग्रे पर 3 घण्टे मे अवशोषित जारक भाग (आक्सीजन एब्जार्ड)

प्रति 100,000——————0 08

सान्द्र विलयन मे समस्त भाग (सालिडस इन सल्यूरान टोटल)

प्रति 100,000——————108

सान्द्र विलयन मे अनुत्पत भाग (सालिड्स इन सल्यूशन फिक्सड)

प्रति 100,000——————76

सान्द्र विलयन मे उत्पत भाग (सालिडस इन सल्यूशन वोलेशन)

प्रति 100,000—————32

प्रज्वलन पर रूप—————नो चारिंग

सम्पूर्ण कठोरता भाग प्रति 100,000——————39 2

स्थानीय कठोरता भाग प्रति 100,000—————24 0

अस्थायी कठोरता भाग प्रति 100,000————15 2

नीरेय भाग (क्लोराइड्स) प्रति 100,000———28 6

नाइट्राटस प्रति 100 000———निल

नाइट्रेटस प्रति 100 000———निल

फ्लोरोन एजफ्लोराइड प्रति 100,000————0 08

रेजीडुअल क्लोरीन————निगेटिव

अभ्युक्ति—————————————कठोर

जाच हेतु लिये गये जल का स्थान– हमाम दरवाजा, जौनपुर

विश्लेषण का दिनाक – 8–7–1999

भौतिक लक्षण– ट्रासपैरेन्ट

असयोजित एव लवणीय तिक्तातित भाग (फ्री एण्ड सेलाइन अमोनिया)

प्रति 100 000————————0 002

शिवत्याम तिक्तातित भाग (एल्बूमिनाइड एमोनिया) 100,000—————0 001

37^0 से ग्रे पर 3 घण्टे मे अवशोषित जारक भाग (आक्सीजन एब्जार्ड)

प्रति 100,000———————0 03

सान्द्र विलयन मे समस्त भाग (सालिडस इन सल्यूरान टोटल)

प्रति 100,000———————56

सान्द्र विलयन मे अनुत्पत भाग (सालिडस इन सल्यूशन फिक्सड)

प्रति 100,000———————37

सान्द्र विलयन मे उत्पत भाग (सालिडस इन सल्यूशन वोलेशन)

प्रति 100,000——————19

प्रज्वलन पर रूप——————नो चारिंग

सम्पूर्ण कठोरता भाग प्रति 100 000———————20 4

स्थायी कठोरता भाग प्रति 100,000——————12 2

अस्थायी कठोरता भाग प्रति 100 000——————8 2

नीरेय भाग (क्लोराइड्स) प्रति 10,0,000—————1 6

नाइट्राट्स प्रति 100,000—————निल

नाइट्रेटस प्रति 100,000—————निल

फ्लोरोन एजफ्लोराइड प्रति 100,000——————0 04

रेजीडुअल क्लोरीन मि ग्राम/लि ———————निगेटिव

अभ्युक्ति–———————————————————पेय योग्य

जाच हेतु लिये गये जल का स्थान– अजमेरी जौनपुर

विश्लेषण का दिनाक – 8–7–1999

भौतिक लक्षण– ट्रान्सपैरेन्ट

असयोजित एव लवणीय तिक्तातिभाग (फ्री एण्ड सेलाइन अमानिया)

प्रति 100 000————–निल

शिवत्याम तिक्तातिभाग (एल्बूमिनाइड एमोनिया) 100 000-- -- --निल

37^0 से ग्रे पर 3 घण्टे मे अवशोषित जारक भाग (आक्सीजन एब्जार्ड)

प्रति 100 000————निल

सान्द्र विलयन मे समस्त भाग (सालिडस इन सल्यूरान टोटल)

प्रति 100,000————68

सान्द्र विलयन मे अनुत्पत भाग (सालिडस इन सल्यूशन फिक्सड)

प्रति 100,000————36

सान्द्र विलयन मे उत्पत भाग (सालिडस इन सल्यूशन वोलेशन)

प्रति 10 000- -------32

प्रज्वलन पर रूप————नो चारिंग

सम्पूर्ण कठोरता भाग प्रति 100,000————24 0

स्थानीय कठोरता भाग प्रति 100,000————10 0

अस्थायी कठोरता भाग प्रति 100,000————14 0

नीरेय भाग (क्लोराइड्स) प्रति 100,000————1 4

नाइट्राट्स प्रति 100,000————निल

नाइट्रेट्स प्रति 100,000————निल

फ्लोरोन एजफ्लोराइड प्रति 100,000————0 03

रेजीडुअल क्लोरीन————0 3 पी पी एम

अभ्युक्ति————————————पीने योग्य

जाच हेतु लिये गये जल का स्थान– रौजा अर्जन जौनपुर

विश्लेषण का दिनाक –   8–7–1999

भौतिक लक्षण– अर्ध ट्रान्सपैरेन्ट

असयोजित एव लवणीय तिक्तांति भाग (फ्री एण्ड सेलाइन अमोनिया)

प्रति 100 000————————0 002

शिवत्याम तिक्तांति भाग (एल्बूमिनाइड एमोनिया) 100 000– – – – 0 001

37^0 से ग्रे पर 3 घण्टे मे अवशोषित जारक भाग (आक्सीजन एब्जार्ड)

प्रति 100,000———————0 03

सान्द्र विलयन मे समस्त भाग (सालिडस इन सल्यूरान टोटल)

प्रति 100 000———————53

सान्द्र विलयन मे अनुत्पत भाग (सालिडस इन सल्यूशन फिक्सड)

प्रति 100,000———————37

सान्द्र विलयन मे उत्पत भाग (सालिडस इन सल्यूशन वोलेशन)

प्रति 100 000—————16

प्रज्वलन पर रूप——————नो चारिग

सम्पूर्ण कठोरता भाग प्रति 100,000———————21 2

स्थानीय कठोरता भाग प्रति 100,000——————11 2

अस्थायी कठोरता भाग प्रति 100,000– – – 10 2

नीरेय भाग (क्लोराइड्स) प्रति 100,000—————1 8

नाइट्राट्स प्रति 100,000—————निल

नाइट्रेट्स प्रति 100,000—————निल

फ्लोरोन एजफ्लोराइड प्रति 100,000——————निगेटिव

रेजीडुअल क्लोरीन———————निगेटिव

अभ्युक्ति————————————————————कठोर

जाच हेतु लिये गये जल का स्थान– रिजवी खा जौनपुर

विश्लेषण का दिनाक – 8–7–1999

भौतिक लक्षण– ट्रान्सपैरेन्ट

असयोजित एव लवणीय तिक्तातित भाग (फ्री एण्ड सेलाइन अमोनिया)

प्रति 100,000————निल

शिवत्याम तिक्तातित भाग (एल्बूमिनाइड एमोनिया) 100 000————निल

37^0 से ग्रे पर 3 घण्टे मे अवशोषित जारक भाग (आक्सीजन एब्जार्ड)

प्रति 100 000————निल

सान्द्र विलयन मे समस्त भाग (सालिडस इन सल्यूरान टोटल)

प्रति 100 000————80

सान्द्र विलयन मे अनुत्पत भाग (सालिड्स इन सल्यूशन फिक्सड)

प्रति 100,000————42

सान्द्र विलयन मे उत्पत भाग (सालिडस इन सल्यूशन वोलेशन)

प्रति 100 000————38

प्रज्वलन पर रूप————नो चारिंग

सम्पूर्ण कठोरता भाग प्रति 100 000————24 6

स्थानीय कठोरता भाग प्रति 100 000————11 2

अस्थायी कठोरता भाग प्रति 100,000————13 4

नीरेय भाग (क्लोराइडस) प्रति 100,000————1 6

नाइट्राट्स प्रति 100,000————निल

नाइट्रेट्स प्रति 100,000————निल

फ्लोरोन एजफ्लोराइड प्रति 100,000————0 03

रेजीडुअल क्लोरीन————0 2 पी पी एम

अभ्युक्ति————————————पेय योग्य

विभिन्न स्थानो के पानी मे क्लोरीन की मात्रा की जाच भी टी डी कालज जौनपुर के रसायन विभाग से करायी गयी जिसके परिणाम निम्नलिखित है–

उर्दू बाजार	0 6 पी पी एम
परमानतपुर	0 2 पी पी एम
मछलीशहर पडाव	0 18 पी पी एम
आलन्दगज	0 2 पी पी एम
हुसेनाबाद	0 12 पी पी एम
हरखपुर	0 41 पी पी एम
अहियापुर	0 24 पी पी एम
भण्डारी	0 31 पी पी एम
चाचकपुर	0 10 पी पी एम

पानी के अपवाह की स्थिति –

चयनित घरो का गन्दा पानी जिसमे रसोईघर स्नानघर व शौचालय का पानी मिला होता है। घर के ‹ाहर नाली के माध्यम से निकलता है। यह पानी प्राय सडक की मुख्य नाली से गुजरता है कही–कही घर के बाहर बने सोख्ता गडढे मे जाता है। उपयोग मे लाये जाने वाले पानी का 60 प्रतिशत भाग इसी प्रकार बाहर निकलता है। घरो के प्रदूषण का अध्ययन करते समय घरो के बाहर गन्दे पानी के लिए बनी निकासी का विशेष महत्व है। क्योकि यह पानी कही–कही खुली नाली से होकर गुजरता है जहा बन्द नाली से होकर गुजरता है वहॉ दुर्गन्ध फैलने की सम्भावना ाही रहती है किन्तु खुली नाली से होकर बहने वाला गन्दा पानी दुर्गन्ध फैलाता है जिससे आसपास का वातावरण प्रदूषित होता रहता है इससे वहा रहने वाले लोग ही नही प्रभावित होते बल्कि उस ओर से गुजरने वाले व्यक्ति भी प्रदूषण से प्रभावित होते है।

जौनपुर नगर के सम्पूर्ण क्षेत्र का पानी सीवर लाइन न होने से पानी के

निकासी के लिए या तो खुली नाली से होकर या व्यक्तिगत रूप से बने सोख्ता गडढे के माध्यम से विसर्जित होता है। यह पानी गोमती नदी मे नाले के माध्यम से चला जाता है। अग्रेजो के समय मे एक सीवर लाइन शोडी दूरी तक भडारी स्टेशन के पाग बनायी गयी थी नगर परिषद के अभिलेख से पता चलता हे कि स्वतत्रता प्राप्ति के बाद यह सीवर लाइन पूरी तरह काम नही कर रही थी इसके सफाई कराने या उसे पुन सचालित करने का प्रयास सन 2002 मे किया गया। फलस्वरूप उस क्षेत्र मे गन्दे पानी के निकासी का माध्यम कुछ दूर तक सीवर लाइन से होकर आगे खासनपुर मे से होकर गुजरता है। सभी नालिया आगे चलकर एक बडे नाले से मिलती हे और यह नाला गोमती नदी मे गन्दे पानी को पहुचाने मे सहायक होता है। शहर के अधिकाश भागो मे जमीन की सतह ढाल पर न होने के कारण पानी की निकासी के लिए बनी नालियो मे गन्दा पानी बहुत धीमी गति से बहता हे और बहाव कम होने से नालियो मे पडा कूडा करकट पानी को और रोक देता है जिससे गन्दा पानी नाली की सीमा को लाघ कर सडक या गली मे फैल जाता है। यह स्थिति सुबह शाम बनी रहती है। प्राकृतिक रूप से आवासीय व्यवस्था उन क्षेत्रो की प्रदूषण से ज्यादा प्रभावित है जहा प्राकृतिक नाला, तालाब नही है और जमीन मे ढाल नही हे। नगर का पानी निकासी का साधन दोषपूर्ण होने के कारण बरसात के दिनो मे शहर का अधिकाश भाग जल भराव से प्रभावित हो जाता है और सडको पर अतिवृष्टि की स्थिति मे कुछ क्षेत्रो मे आवागमन भी रूक जाता है। यह स्थिति लाइन बाजार से कचहरी रोड व बदलापुर पडाव से कटघरा एव उर्दू बाजार मे बरसात के दिनो मे देखी जा सकती है। इस स्थिति से निपटने के लिए सिटी बोर्ड की तरफ से बरसात के पूर्व नालियो की सफाई व नालियो को चौडा करके पानी निकासी को सुगम बनाने का कार्य किया जाता है, किन्तु अतिवृष्टि की स्थिति मे इन प्रयासो का कोई प्रभाव नही रह जाता है। नगर मे व्याज्य जल के निकासी का कही भी उपयुक्त साधन देखने को नही मिलता है। गोमती नदी मे गन्दे पानी को रोककर उसे साफ करके नदी मे पानी विसर्जित करने के लिए प्लाट भी बैठाया गया हे जो खराब पडा है। नदी मे गन्दा पानी नाली और नालो के माध्यम से सीधे आकर मिलता है जिससे नदी का पानी प्रदूषित हो जाता है।

नगर के चयनित घरो के उत्तरदाताओ से पानी के अपवाह के बारे मे

विचार विमर्श करने मे उनसे घरो के अनुपयोगी जल के विसर्जन के तरीके के बारे मे, मकान के बाहर जल निकासी के लिये बनी नालियो के बारे मे, घरो के बाहर जल जमाव की स्थिति के बारे मे जानकारिया ली गयी। जौनपुर नगर के जिन 1580 मकानो को सर्वेक्षण के लिए चुना गया उन मकानो के पानी के अपवाह की तस्वीर सारणी 3 7 एव प्लेट 3 7 मे दर्शायी गयी है। इस नगर मे कई मुहल्लो के गन्दे पानी को एकत्रित करने के लिए दो विशाल गड्ढे प्राकृतिक रूप से बने है जिनमे से एक उर्दू वार्ड के फिरोशेपुर मुहल्ले मे बारीनाथ मदिर के सामने लगभग 5 एकड मे है और दूसरा ख्वाजगीटोला मुहल्ले मे लगभग तीन एकड भूमि मे है। इन दोनो गड्ढो मे पानी हमेशा एकत्रित रहता है। बरसात के दिनो मे ख्वाजगी टोला मुहल्ले मे स्थित गड्ढे का पानी जब काफी भर जाता है और उसका पानी आसपास स्थित घरो मे प्रवेश करने लगता है तो सिटी बोर्ड की तरफ से लम्बी--लम्बी पाइप लगाकर गड्ढे का पानी पम्पिग सेट के माध्यम से गोमती नदी की तरफ जाने वाले नाले मे बहाया जाता है। इस क्षेत्र के निवासियो ने यह बताया कि इन दिनो सिटी बोर्ड के सफाई कर्मी आसपास के मुहल्ले के कूडा करकट को इसी गड्ढे मे गिराकर इसे पाट रहे हैं और इस गड्ढे की पटी भूमि पर सिटी बोर्ड के कुछ कर्मचारियो की मिली भगत से नाजायज तौर पर आवास बनाकर कुछ लोग रह रहे हैं और यह कम जारी है। इस प्रकार इस गड्ढे के आसपास रहने वाले मकानो की पर्यावरणीय स्थिति अत्यन्त सोचनीय है।

प्लेट 3 3 ख्वाजगी टोला मुहल्ले मे स्थित पानी का गड्ढा
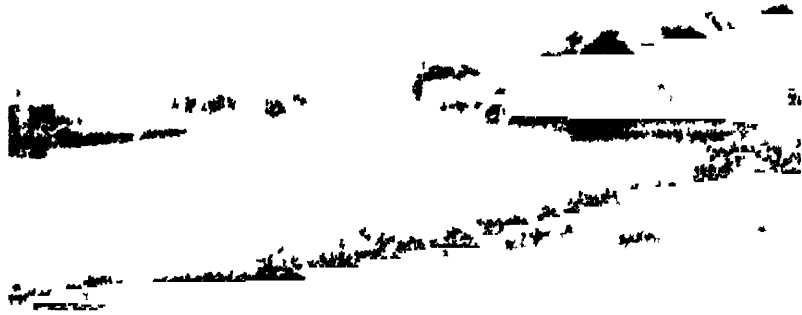
प्लेट 34 फिरोशेपुर मे स्थित विशाल गड्ढा जिसमे आस पास मुहल्लो का गन्दा पानी वर्ष भर एकत्रित रहता है।

प्लेट 35 बरसात के दिनो मे फिरोशेपुर के गड्ढे मे जब पानी अधिक होकर फैलने लगता है तो उसे जमीन के अन्दर कुछ दूर तक बने नाले से बहाये जाने की व्यवस्था है आगे यह नाला खुले नाले के रूप मे जाकर गोमती नदी मे मिल जाता है।

उर्दू वार्ड के फिरोशेपुर मुहल्ले मे स्थित विशाल गड्ढे मे गदा पानी आसपास के मुहल्लो का एकत्रित होता है। बरसात के समय पानी अत्यधिक होने की दशा मे इस गड्ढे से पानी निकासी के लिए जमीन के अन्दर सुरगनुमा पाइपलाइन मीरमस्त मुहल्ले तक बनी है उसके बाद खुले नाले से होकर गोमती मे पानी जाकर गिरता है। सुरगनुमा जो पाइप लाइन बिछी है उसमे से कचरा व कूडा की सफाई के लिए जगह--जगह लगभग 20 चेम्बर बनाये गये है जो ढक्कनदार हैं। बरसात के पूर्व इस विशाल गड्ढे मे बदबूदार पानी के निकासी का कोई जरिया न होने के कारण आसपास स्थित आवासीय क्षेत्र की पर्यावरणीय स्थिति दयनीय है।

प्लेट 36 (A) खासनपुर मे हाल ही मे खुदाई से निकला पुराना नाला जिसे लोगो ने पाटकर खेत बना दिया था वर्तमान मे इस नाले से आस पास के क्षेत्रो का पानी सुचारू रूप से गोमती नदी तक जा रहा है।

इस नगर के सर्वेक्षण मे मुझे यह ज्ञात हुआ कि मुहल्ला नसीब खा मण्डी मे एकमात्र बनी सीवर लाइन अग्रेजो के समय की बनी थी जो खासनपुर मुहल्ले से गुजरती हुई खुले नाले के रूप मे गोमती नदी से जुडती है। इस नाले को खासनपुर क्षेत्र के लोगो ने पाटकर खेत के रूप मे परिणित कर लिया था। तत्कालीन चेयरमैन सध्या रानी श्रीवास्तवा का ध्यान इस ओर सन 2000 मे दिलाया गया तो इन्होने इसे गभीरता से लिया और लगभग तीन किलोमीटर लम्बे नाले की खुदाई करवाया और यह पाया गया कि जमीन के अन्दर छ फीट चौडा और इससे अधिक गहरा नाला वजूद मे है जो ईंट की दीवार से बना हुआ है। क्षेत्रीय बुजुर्गों ने सर्वेक्षण के दौरान यह भी बताया कि वर्तमान नाले के नीचे भी एक नाला है जिसमे जगह–जगह पानी छन कर जाने के लिये जालिया लगी हुयी है किन्तु सिटी बोर्ड की तरफ से नाले की पूरी सफाई आर्थिक कारणो से नही हो सकी है फिर भी जो सफाई की गयी है उससे नसीब खा मुहल्ले मे निर्मित सीवर लाइन का पानी सतोषजनक तरीके से नाले से होकर नदी मे जा रहा है।
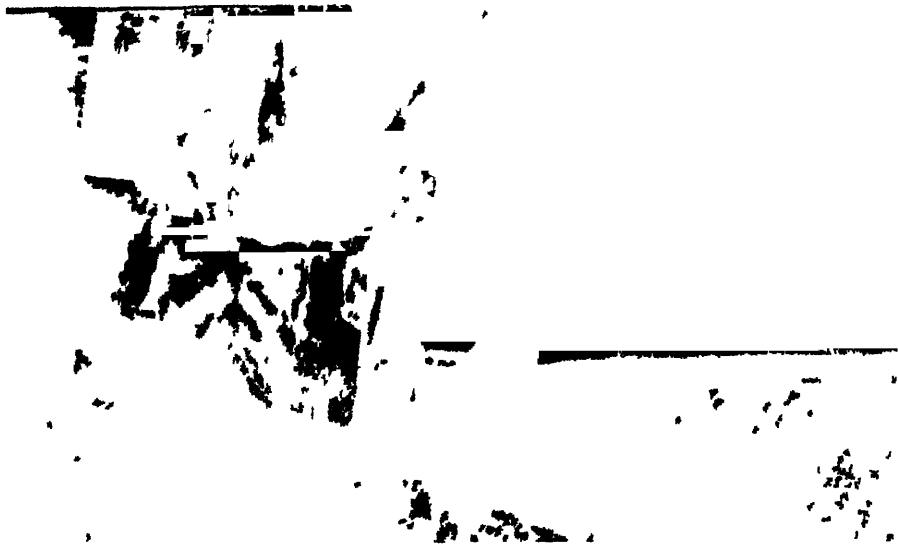
प्लेट 3 6 (B) खासनपुर स्थित नाले के नीचे दूसरी परत मे भी एक नाला है जिससे कूडा–करकट छनकर उपर ही रह जाता है।

जौनपुर नगर

सम्पूर्ण चयनित घरों के अपवाह की स्थिति

1999
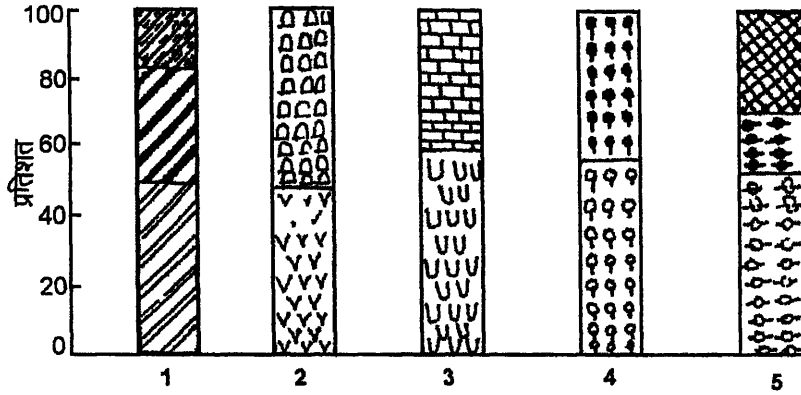
1 घरो के अनुपयोगी जल का विसर्जन — नाली मे; घर के बाहर; घर मे ही

2 मकान के बाहर जल निकासी के लिए बनी नालियो की स्थिति — नाली मे स्थित है; नाली नही स्थित हे

3 नालियो के प्रकार — खुली नाली; बद नाली

4 घर के बाहर जल जमाव की स्थिति — जल एकत्रित रहता हॅ; जल एकत्रित नही रहता हे

5 जल जमाव के प्रकार — बरसात का पानी; घर का अनुपयागी जल मात्र; दोनो

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 37

नगर मे सीवर लाइन का जाल बिछाने के लिए गोमती एक्शन प्लान के अन्तर्गत करोडो रुपये के लागत से नगर के मध्य क्षेत्र मे ओलन्दगज से कचहरी क पास तक सडक के अन्दर छ से सात फीट की गहराई तक व बदलापुर पडाव से ओलन्दगज तक व ताडतला वार्ड से गोमती नदी तक व सिपाह क्षेत्र के मुहल्ले मे इतनी गहराई मे जमीन क नीच लगभग ढाई फीट व्यास की पाइप लाइन बिछायी गयी किन्तु तकनीकी दृष्टि से यह पाइप लाइन उपयुक्त ढग से न बिछाये जाने के कारण इस योजना पर खर्च किया गया सारा पैसा बेकार हो गया। क्षेत्र के नागरिको का यह कहना है कि इस कार्य मे अधिकारी व ठकेदार घन का मनमानी ढग से दुरूपयोग किये। यह भी ज्ञात हुआ कि गोमती एक्शन प्लान का मुख्य कार्यालय सुल्तानपुर मे था और जब इस कार्य को किया जा रहा था (सन 2000–2001) तो सम्बन्धित उच्चाधिकारी इसे देखने तक नही आये। सिटी बोर्ड के अधिकारियो का यह कहना है कि गोमती को प्रदूषण से बचाने के लिए अगर इस योजना की धनराशि को सिटी बोर्ड को दिया गया होता तो इस कार्य को यहा की भौगोलिक स्थिति के अनुरूप निर्माण कराते ओर जो जमीन के अन्दर पाइप लाइन बिछाई गयी उसकी जगह काफी बडे व्यास की पाइपलाइन बिछवाते जिससे सीवर लाइन सुचारू रूप से चल सकती थी। इस सम्बन्ध मे विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि करोडो रूपय खर्च होने के बाद भी यह सीवर लाइन बद पडी है।

सारणी 3 7 जौनपुर नगर के कुल चयनित घरो के पानी के अपवाह की स्थिति का विवरण (1999)

	अपवाह की स्थिति	प्रतिशत
घर के अनुपयोगी जल के विसर्जन का तरीका	1 नाली मे	46 33
	2 घर के बाहर चारो तरफ	35 99
	3 घर मे ही	17 68
मकान के बाहर जल निकासी के लिए नालियॉ	1 स्थित है	46 10
	2 नही स्थित है	53 9
नालियो के प्रकार	1 खुली नाली	56 44
	2 बद नाली	43 56

घर के बाहर जलजमाव	1 एकत्रित रहता है	51 22
	2 जल एकत्रित नही रहता है	48 78
घर के बाहर जलजमाव के प्रकार	1 बरसात का पानी	48 48
	2 घर का अनुपयोगी जल मात्र	19 42
	3 दोनो	32 10

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी के अनुसार कुल चयनित घरो मे से 46 प्रतिशत घर का त्याज्य पानी सीमेट की बनी नालियो मे बाहर जाता है लगभग 36 प्रतिशत घरो का पानी घर के बाहर चारो तरफ लगता है और 17 प्रतिशत घरो का त्याज्य पानी घर म ही एकत्रित होता है। 46 प्रतिशत घरो के मुहल्ले मे नाली नही है। 43 प्रतिशत नालिया ढकी हुयी है और बाकी 56 प्रतिशत नालिया खुली नालिया है। कुछ नालियो मे मिटटी भरी हुयी होती है। लगभग 52 प्रतिशत घरो मे बताया गया कि घर के चारो तरफ पानी जमा होता है इसका मुख्य कारण उच्चावच्च का ठीक न होना है। 48 प्रतिशत घरो के लोगो ने बताया कि घर के सामने केवल बरसात का पानी लगता है। 19 प्रतिशत लोगो के घर के सामने घर का अनुपयोगी जल लगता है एव 32 प्रतिशत घरो के सामने दोनो प्रकार के जल का जमाव होता है। यह सारणी नगर के खराब अपवाह एव घर के बाहर के खराब पर्यावरण की तस्वीर प्रस्तुत करती है।

घरों के त्याज्य जल का विसर्जन –

उचित एव सुरक्षित तरीके से त्याज्य जल का विसर्जन पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाता है। सारणी 3 8 और प्लेट 3 8 मे चयनित घरो के त्याज्य पानी के विसर्जन को दिखाया गया है।

सारणी 3 8 जौनपुर नगर के चयनित घरो के त्याज्य पानी के विसर्जन का तरीका (1999)
(प्रतिशत मे)

आय समूह	नाली मे	घर के बाहर	घर मे ही	योग
अत्यधिक कम	6 60	73 90	19 50	100 00
कम	15 55	47 35	37 10	100 00
मध्यम	25 49	42 72	31 79	100 00
उच्च	85 48	14 52	—	100 00
अति उच्च	98 51	1 49	—	100 00
योग	46 33	35 99	17 68	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

अनुपयोगी जल का विसर्जन मुख्य रूप से अत्यधिक कम आय वर्ग के 73 प्रतिशत, कम आय वर्ग के 47 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 42 प्रतिशत का घर के बाहर खुले मे ही पाया गया। ये खुले नाले घर के बाहर चतुर्दिक देखे गये। कम आय वर्ग के 36 प्रतिशत एव मध्यम आय वर्ग के 31 प्रतिशत घरो के अनुपयोगी जल का विसर्जन उचित जल निकासी न होने के कारण घर मे ही होता है। उच्च आय वर्ग के लगभग 86 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 98 प्रतिशत घरो का पानी सीधे नाली से होकर गुजरता है। जिन घरो मे फ्लश शौचालय है उन घरो मे भी कुल अनुपयोगी जल का 60 प्रतिशत नाली मे से होकर गुजरता है। इस प्रकार यह दिखायी पडता है अपेक्षाकृत गरीब घरो के बाहर, उचित नाली की व्यवस्था नही है जबकि अच्छे घरो से नाली बाहर सडक की मुख्य नाली से आकर मिलती है और सेप्टिक टैक बने हुए है नगर मे बद नालिया बहुत कम देखी गयी।

घर के चारो तरफ नालियो की स्थिति –

रसोई घर एव स्नानघर से निकला हुआ अनुपयोगी पानी का निकास बद

नाली से होकर मुख्य नाली तक उचित तरीके रा होना आवश्यक है। सारणी 3 9 और प्लट 3 8 मे चयनित घरो के चारो तरफ नालियो की स्थिति को दर्शाया गया हे।

सारणी 3 9 जौनपुर नगर के चयनित घरो के चारो तरफ जल निकासी के लिए बनी नालियो की स्थिति (प्रतिशत मे)

आय समूह	नाली स्थित है	नाली नही स्थित है	योग
अत्यधिक कम	6 60	93 40	100 00
कम	16 60	83 40	100 00
मध्यम	25 73	74 27	100 00
उच्च	89.04	10 96	100 00
अति उच्च	92 57	7 43	100 00
योग	46 10	53 90	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सर्वेक्षण के दोरान यह पाया गया कि घरो के आसपास या तो उचित नालिया स्थित है अथवा नालिया नही है। अत्यधिक कम आय वर्ग के 93 प्रतिशत कम आय वर्ग के 83 प्रतिशत एव मध्यम आय वर्ग के 74 प्रतिशत घरो के पास नालिया उचित प्रकार से नही बनी हुई है। यह दिखायी पडता है कि कम आय वर्ग के घरो के सामने विभिन्न मुहल्लो मे नालिया नही स्थित है लेकिन उच्च आय वर्ग के भी 11 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 7 प्रतिशत घरो के पास भी नालिया नही स्थित पायी गयी, ऐसा मुख्य रूप से इसलिए है कि गरीब परिवार के लोग इस स्थिति मे नही रहते कि घर के आसपास नाली बनवाने के खर्च को वहन कर सके जबकि कुछ अमीर उच्च आय वर्ग के घर भी इस ओर ध्यान नही देते कि घर के बाहर उचित पक्की नाली की व्यवस्था होनी ही चाहिए। दूसरी तरफ 88 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 92 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घर मे एव घर के बाहर उचित पक्की नालिया बनी हुयी पायी गयी। वे मुहल्ले जिनमे मुख्य रूप से पक्की नालिया
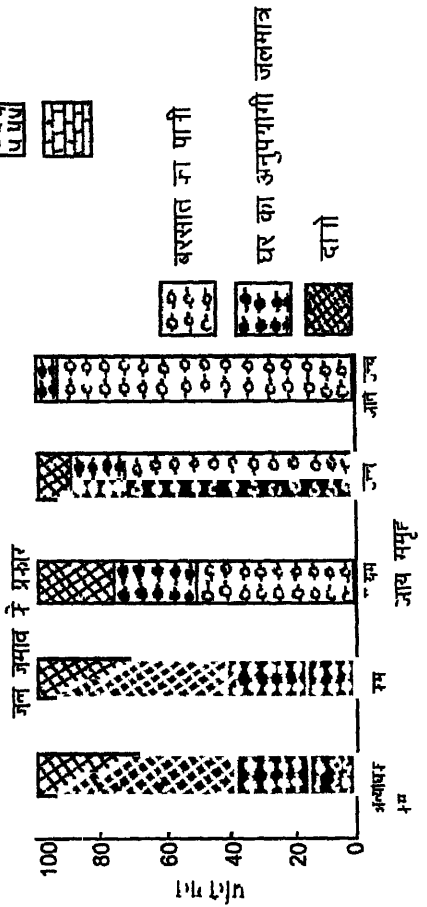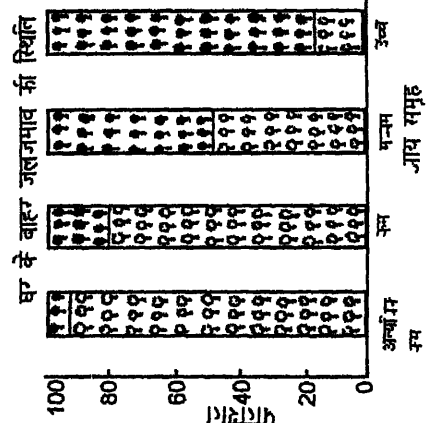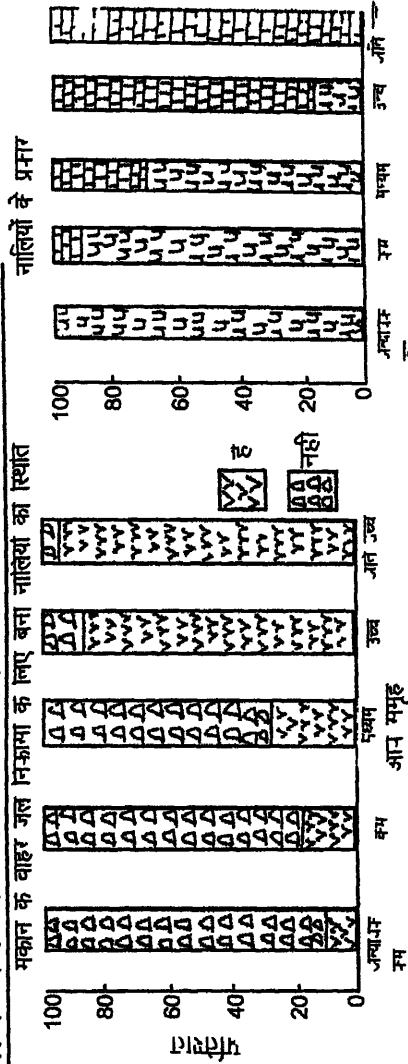
प्लेट 3 9 मुहल्ला रूहट्टा (उमरपुर) मे खुली नाली का दृश्य जहाँ उच्च एव मध्यम आय वर्ग के लोग आस पास निवास करते है।

प्लेट 3 10 मुहल्ला परमानतपुर मे घर के बाहर जलजमाव का दृश्य।

नही पायी गयी है वे है– चितरसारी, अबीपुर, गूलरचक कन्हईपुर क कुछ भाग मे बोदकरपुर व आराजी गुजीरेवानी के कुछ भाग मे प्रेमराजपुर मे।

नालियो के प्रकार -

सारणी 3 10 एव प्लेट 3 8 मे चयनित घरा क बाहर स्थित नालिया के प्रकार को दिखाया गया है। मुख्य रूप से दो प्रकार की नालिया देखन का मिलती हे बद नाली या पूरी तरह से खुली नाली।

सारणी 3 10 जौनपुर नगर के चयनित घरो की नालियो के प्रकार (प्रतिशत मे)

आय समूह	खुली नाली	बद नाली	योग
अत्यधिक कम	100 00	—	100 00
कम	90 46	9.54	100 00
मध्यम	70 87	29 13	100 00
उच्च	15 90	84.10	100 00
अति उच्च	4 95	95 05	100 00
योग	56 44	43 56	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यह देखा गया कि उन मुहल्लो म जहा कम आय वर्ग के लोग रहत है वहा की नालिया पूरी तरह से खुली हुयी है। कम आय वर्ग के 90 प्रतिशत, मध्यम आय वर्ग के 70 प्रतिशत घरो की नालिया खुली हुयी है। जबकि उच्च आय वर्ग के 84 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 95 प्रतिशत घरो की नालिया ढकी हुयी नालिया है। खुली नालिया मिट्टी कागज पालीथीन आदि से जाम हो जाती है जिससे नाली का पानी नाली की सीमा से बाहर सडक पर फैल जाता है या खुले छुटे क्षेत्र पर बिखरा रहता है। खुली नालिया मुख्य रूप से नगर के पुराने बसे क्षेत्र व मुसलमान बहुल क्षेत्र और कचहरी लाइन के कुछ नय बसे क्षेत्रो मे पायी गयी जो क्षेत्र नगर पालिका के अन्तर्गत नही आते है। इसलिए नगर पालिका के कर्मचारी इन नालिया

की सफाई नही करते है। लगभग 16 प्रतिशत उच्च आय वग क एव 4 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो की नालिया भी खुली हुयी देखी गयी थी। एमा इर्सलिए है कि य लोग अमी तो है लेकिन इस ओर ध्यान नही देते कि घर के चारो तरफ बद नालिया ही हानी चाहिए। य लोग शिक्षित नही है एव खुली नालियो स होने वाली समस्याआ से अनभिज्ञ हे। दूसरी तरफ अधिकाश उच्च आय वर्ग के निवासी जब अपना घर बनवात ह ता सीमेट की ढकी हुयी नाली भी बनवाते है जिसस घर का अनुपयोगी जल आसानी स सडक की मुख्य नाली तक आ सके।

घर के चारो तरफ जल जमाव की स्थिति –

नगर मे जल जमाव की स्थिति बहुत आमतोर पर दखी जा सकती ह क्योकि जैसा पहले भी बताया जा चुका है कि इस नगर का उच्चावच्च ठीक नही हे इसलिए नगर का पानी आसानी से नाली मे ही प्रवाहित नही होता हे। सारणी 3 11 और प्लट 3 8 मे इस नगर के चयनित घरो के आसपास जल जमाव की स्थिति को दिखाया गया है।

सारणी 3 11 जौनपुर नगर के चयनित घरो के बाहर जल जमाव की स्थिति (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	जल एकत्रित रहता है	नही रहता है	योग
अत्यधिक कम	95.60	4 40	100 00
कम	83 04	16 96	100 00
मध्यम	52 67	47 33	100 00
उच्च	15.90	84 10	100 00
अति उच्च	8 91	91 09	100 00
योग	51 22	48 78	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यह देखा गया कि 95 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 82 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 52 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घर आसपास निरन्तर जल जमाव की समस्या को झेलते है। इस प्रकार की तीक्ष्ण जल जमाव की समस्या कम आय वर्ग के घर के आसपास मुख्य रूप से देखी गयी क्योकि ये लोग अपेक्षाकृत सस्ते स्थान पर रहना पसद करते है जहा उच्चावच्च भी ठीक नही रहता है। जबकि 47 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग क घरो ने इस प्रकार घर के आसपास जल जमाव की किसी समस्या को नही बताया क्योकि इनके घर उचे स्थानो पर बने है। उच्च आय वर्ग के भी 15 प्रतिशत घरो के एव अति उच्च आय वर्ग के 8 प्रतिशत घरो के पास भी जल जमाव की समस्या उपयुक्त नाली की व्यवस्था न होने के कारण पायी गयी। इन घरो के आसपास भी उच्चावच्च ठीक न होने के कारण पानी लगता है।

जल जमाव के प्रकार -

तीन प्रकार के जल जमाव मुख्य रूप से देखने को मिले, केवल बरसात का पानी लगता है घर का अनुपयोगी पानी जमा होता है या बरसात का पानी और घर का अनुपयोगी पानी दोनो ही जमा होते है। इस नगर के खराब उच्चावच्च के कारण बरसात के दिनो मे पानी जगह जगह लगा ही रहता है। सारणी 3 12 और प्लेट 3 8 मे चयनित घरो के बाहर जल जमाव के प्रकार को दिखाया गया है। 61 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 58 प्रतिशत कम आय वर्ग के और 35 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो से बडी मात्रा म अनुपयोगी जल स्नानघर एव रसोई घर से बाहर आता है एव उचित नाली की व्यवस्था न होने पर पानी घर के आसपास जमा हो जाता है या खेत मे जमा हो जाता है। बरसात के समय मे इस पानी मे बरसात का पानी भी मिल जाता है। नगर पालिका के कर्मचारी भी इस तरह के इकट्ठा पानी को निकासी के लिये नही आते है। और अधिकारी कर्मचारी को उनके कर्तव्य निर्वाह के लिए बाध्य नही कर पाते है। इसलिए इस प्रकार का इकट्ठा पानी महीनो तक बना रहता है।

सारणी 3 12 जौनपुर नगर के चयनित घरो के बाहर जल जमाव के प्रकार प्रतिशत म

आय समूह	केवल बरसात का पानी	घर का अनुपयोगी जलमात्र	दोनो
अत्यधिक कम	13 52	22 96	63 52
कम	13 78	26 50	59 72
मध्यम	45 39	22 82	31 79
उच्च	78 63	15 89	5 48
अति उच्च	91 09	8 91	—
योग	48 48	19 42	32 10

स्रोत— व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

उच्च आय वर्ग के 78 प्रतिशत घरो ने एव अति उच्च आय वर्ग के 91 प्रतिशत घरो ने बताया कि घर के सामने केवल बरसात का पानी ही जमा होता हे इन घरो के पास उपयुक्त नालिया बनी हुयी है जिससे बरसात का पानी कुछ ही घंटो तक जमा रहता है इसके बाद नाली से बह जाता है। बहुत कम ही उच्च आय वर्ग के घर ऐसे पाये गये जिनके घर के पास बरसात का पानी और घर का अनुपयोगी पानी दोनो जमा होता हो। इस प्रकार चयनित घरो के पानी के अपवाह एव नालियो की स्थिति को देखने से पता चलता है कि उच्च आय वर्ग के 89 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 93 प्रतिशत घर अनुपयोगी पानी का सीमेन्ट की बनी नाली मे प्रवाहित करते है। ये नालिया सीमेन्ट से प्लास्टर की हुयी हे और मुख्य नाली से जुडी हुयी है। ये उच्च आय वर्ग के घर आमतौर पर घर के बाहर जल जमाव की समस्या से परेशान नही होते है। लेकिन कम आय वर्ग के घरो के आसपास उचित नाली की व्यवस्था नही है जहा से घरो का पानी ठीक ढग से निकल सके। इनके मुहल्ले मे अधिक दिनो तक जल जमाव की समस्या बनी ही रहती हे। स्थिति और भी खराब तब हो जाती है जब पानी दीवारो को खराब करने लगता है। इकट्ठा पानी आस पडोस मे मक्खी, मच्छर व कीटाणु का जनक हो जाता है जिससे आसपास के लोग विशेषकर बच्चे अक्सर बीमार रहते है।

अध्याय - च।

जौनपुर नगर में स्थित आवासों में ठोस अपशिष्ट व अनुपयोगी वस्तुओं के विसर्जन एवं खाद्य-पदार्थ के रख-रखाव की स्थिति

यह अध्याय तीसर अध्याय से जुडा हुआ है एव उसी का विस्तार है जिसमें जलापूर्ति की मात्रा एव अपवाह का वर्णन किया गया है सिटी वार्ड द्वारा बनाये गये टेक के पानी की गुणवत्ता की जाच से पता चला है कि यह सुरक्षित रूप से पीने योग्य है। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि लगभग 70 प्रतिशत घरो को नियमित रूप से जलापूर्ति उनके निर्जी साधनो से होती है। 70 प्रतिशत घर पानी की गुणवत्ता से सतुष्ट है। लगभग 65 प्रतिशत घर अपने घर मे आने वाले जल की पर्याप्त मात्रा पा जाते है और 55 प्रतिशत लोग घर मे पानी को ठीक ढग से ढक कर रखते है। पानी के अपवाह के बारे मे पाया गया कि 30 प्रतिशत घर अनुपयोगी पानी का जमाव घर के बाहर करते है लगभग 15 प्रतिशत घरो का पानी घर मे ही एकत्रित होता है बाकी 55 प्रतिशत घरो का अनुपयोगी पानी नाली से होकर गुजरता है। लगभग 50 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके मुहल्ले मे उचित नाली नही बनी है। 25 प्रतिशत लोगो ने घर के आसपास खुली नाली का होना बताया। 45 प्रतिशत लोगो ने यह समस्या बतायी कि घर के आसपास जल जमाव बना रहता है।

प्रस्तुत अध्याय चार, तीन भागो मे विभाजित है। प्रथम भाग घर के कूडा करकट अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट से सम्बन्धित है, दूसरे भाग मे घर मे मक्खी मच्छर व कीटाणु का प्रकोप वर्णित किया गया है और तीसरा भाग खाद्य पदार्थों के रख–रखाव से सम्बन्धित है।

घरो का कूडा एव अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट– नगर के घरो से बडी मात्रा मे अनुपयोगी कूडा करकट निकलकर बाहर विसर्जित होने के लिए आते है। मकानो से जो ठोस अपशिष्ट बाहर आते है उनमे विभिन्न प्रकार की लौह, अलौह, धातुए, टीन, कागज, पुराने अखबार पोलिथीन खाद्य पदार्थों मे से बचे जूठन एव टूटे हुए गिलास कप आदि रहते है। इन कूडो को एकत्रित स्थान से उठाकर कही अन्यन्त ले जाया जाना समस्याग्रस्त विषय रहता है। नगर पालिका कर्मचारियो द्वारा नियमित सफाई न किये जाने पर वातावरण पूरी तरह प्रदूषण से भर जाता है। घरो से निकलने वाले ठोस अपशिष्ट जो जगह–जगह एकत्रित रहते है। को देखकर नगर की साफ–सफाई का अदाजा लगाया जा सकता है। इस नगर मे बढते विभिन्न प्रकार के व्यापार एव उद्योग के कारण अनुपयोगी पदार्थों के समायोजन की समस्या तीव्र होती जा रही है। यहा नगर पालिका का मुख्य काम सार्वजनिक गली से कूडा तुरन्त हटाना होता है। परन्तु कर्मचारियो

की कमी व कुछ लापरवाही के कारण कही–कही कूडा महीनो पडा रह जाता है। घर से निकलने वाले त्याज्य पदार्थों को ठीक–ठीक जानकारी उपलब्ध नही हो पायी लेकिन एकत्रित कूडो से यह अनुमान लगाया गया जौनपुर नगर के घरो के प्रत्येक निवासी लगभग 400 से 1000 ग्राम अनुपयोगी पदार्थ प्रतिदिन विसर्जित करते है जिससे लगभग 230 टन कूडा प्रतिदिन एकत्रित हो जाता है। इस विशाल मात्रा मे से 50 प्रतिशत कूडा प्रतिदिन नही उठाया जाता। इतनी विशाल मात्रा मे कूडो को हटाने के लिए परिवहन के लिए एव विसर्जित करने के लिए पर्याप्त उपकरण अपेक्षित है।

उत्तरदाताओ से घर के कूडा करकट एव अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट के बारे मे पूछने पर इन निम्नलिखित बातो का ध्यान रखा गया। घर मे अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट को एकत्रित करके रखने का तरीका क्या है, कूडा विसर्जित करने का स्थान कहा है? (सरकारी कूडा रखने के स्थान पर, अन्य कूडा रखने के स्थान पर या सडक के किनारे अथवा कूडा जलाते है), मुहल्ले मे कूडा बिखरा रहता है या थोडी मात्रा मे रहता है या दिखायी नही देता। नगर पालिका द्वारा कूडा उठाये जाने की बारम्बारता क्या है (नियमित कूडा उठाया जाता है अथवा हफ्ते मे दो बार या महीने मे एक बार उठाया जाता है)। उपर्युक्त बातो से सम्बन्धित सभी आकडे व्यक्तिगत क्षेत्र सर्वेक्षण से एकत्रित किये गये।

सम्पूर्ण 1580 चयनित घरो मे जैसा कि सारणी 4 1 मे एव प्लेट 4 1 मे दर्शाया गया है कि लगभग 40 प्रतिशत घरो के लोग कूडा खुले बर्तन मे ही रखते है। लगभग 53 प्रतिशत लोग कूडे को कूडा रखने के स्थान पर ही रखते है। लगभग 50 प्रतिशत घरो ने उनके मुहल्ले मे व्यापारिक और औद्योगिक अपशिष्ट जमा होने की समस्या बताया है। लगभग 30 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके मुहल्ले से नगर पालिका के कर्मचारियो द्वारा कूडे नही उठाये जाते है। केवल 23 प्रतिशत घरो ने बताया कि कूडा नगर पालिका कर्मचारियो द्वारा नियमित उठाये जाते है जबकि 38 प्रतिशत घरो ने बताया कि कूडा एकत्रित स्थान से महीने मे एक बार उठवाया जाता है।

सारणी 4 1 जौनपुर नगर के कुल चयनित घरो के कूडा करकट एव अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट (1999) (प्रतिशत मे)

	घरो के कूडा एव ठोस अपशिष्ट	प्रतिशत
1 घरो मे अनुपयोगी पदार्थो को एकत्रित करके रखने का तरीका	1 खुले बर्तन मे	39 83
	2 बद बर्तन मे	40 63
	3 एकत्रित नही करते	19 53
2 कूड–करकट को विसर्जित करने	1 कूडा रखने के स्थान पर	53 16
	2 सडक के किनारे	43 42
	3 जलाते है	3 42
3 मुहल्ले मे कूडे की उपस्थिति एव अनुपस्थिति	1 चारो तरफ फेला है	68 70
	2 दिखायी नही देता	31 30
	3 विशाल मात्रा मे है	49 36
	4 थोडी मात्रा मे है	23 12
	5 नगण्य है	27 50
4 मुहल्ले मे औद्योगिक अपशिष्ट	1 है	52 66
	2 नही है	47 34
5 नगरपालिका द्वारा कूडा उठाने की	1 उठाया जाता है	62 00
	2 नही उठाया जाता है	38 00
बारम्बारता	1 नियमित	23 00
	2 हफ्ते मे दो बार	16 50
	3 सप्ताह मे एक बार	22 15

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

जौनपुर नगर

सम्पूर्ण चयनित घरो के अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट

1999
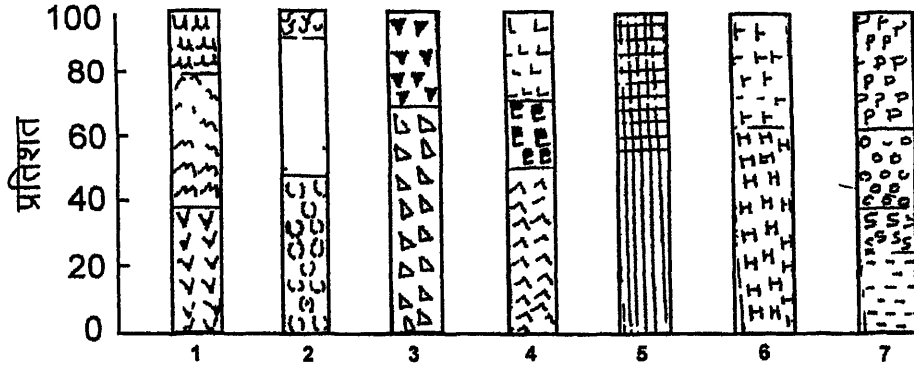
1 घरो मे अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट को रखने का तरीका

- गुल बर्ता म
- बद बता म
- इकट्ठा नही करत

2 कूडा करकट को विसर्जित करनेका स्थान

- कूडा रखनक स्थान पर
- सडक के किनार
- जलाते हैं

3 मुहल्ले मे कूडा करकट

- चारा तरफ फैला ह
- दिखायी नही दता ह

4 कूडा करकट का फैलाव

- विशाल मात्रा म
- थाडी मात्रा म
- नगण्य

5 मुहल्ले मे औद्योगिक अपशिष्ट

- ह
- नही ह

6 7. कूडा उठाने की बारम्बारता

- उठाया जाता है
- नही उठाया जाता है

- प्रतिदिन
- सप्ताह म दो बार
- सप्ताह म एक बार
- महीने म एक बार

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 41

कूडा करकट को रखने का तरीका -

घर के अन्दर रखा कूडा विभिन्न समस्याओ का जनक हो सकता है यदि उसे ठीक प्रकार से ढककर न रखा जाय। सारणी 4 2 और प्लट 4 2 मे विभिन्न चयनित घरो मे कूडे को रखने का तरीका दिखाया गया है।

सारणी 4 2 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे ठोस अपशिष्ट एव कूडे को एकत्रित करके रखने का तरीका (प्रतिशत मे)

आय समूह	खुले बर्तन मे	बद बर्तन मे	इकटठा नही करते	योग
अत्यधिक कम	77 98	3 46	18 56	100 00
कम	85 51	9 19	5 30	100 00
मध्यम	35 68	35 68	28 64	100 00
उच्च	—	65 75	34 28	100 00
अति उच्च	—	89·10	10 90	100 00
योग	39 83	40 63	19 53	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित (1999)

यह पाया गया कि 77 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 85 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 32 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो मे कूडा करकट खुले बर्तन मे ही रखते है। खुले बर्तन मे रखा कूडा मक्खी मच्छर को आकर्षित करता है और इसलिए इन घरो के रसोई घर या खाना बनाने की जगह पर अधिक सख्या मे मक्खी मच्छर पाये जाते है। ये लोग घर मे अधिक सख्या मे चूहे पाये जाने की शिकायत करते है। कीटाणु से फैलने वाली बीमारियो की आशका इन घरो मे उन घरो से बहुत अधिक रहती है जो कूडे को ढककर रखते है। लगभग 35 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घर, 65 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घरो मे एव 88 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो मे कूडा ढककर ही रखा जाता है, क्योकि ये लोग अच्छी तरह शिक्षित है और खुला कूडा रखने से होने वाली समस्याओ से अच्छी तरह

परिचित है, जबकि 28 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के, 34 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 11 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोग कूडा घर मे एकत्रित नही करते है। ये लोग हर रोज का कूडा प्रतिदिन ही पोलिथीन मे रखकर बाहर फेक आते है। इस तरह के जूठन आदि मे जानवर आसपास इकटठा हो जाते है। यह आश्चर्य करने वाला तथ्य सामने आया कि 3 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के घर एव 9 प्रतिशत कम आय वर्ग के घरो मे कूडा अच्छी तरह ढककर रखा जाता है क्योकि ये लोग गन्दगी से होने वाली समस्याओ से परिचित है। उच्च आय वर्ग के अधिकाश घरो ने बताया कि कूडा ढककर ही रखा जाता है। इन घरो मे सफाई से रहने की अच्छी समझ होती है।

घरो से कूडा विसर्जन का स्थान -

घरो से निकलने वाले कूडे का उचित स्थान पर विसर्जन आस–पडोस के पर्यावरण को ध्यान मे रखते हुए ही होना चाहिए। घरो के अनुपयोगी पदार्थों का विसर्जन तीन प्रकार से होता देखा गया, किसी कूडा रखने के स्थान पर विसर्जन, सडक के किनारे कही भी विसर्जन या फिर कूडे को एकत्रित करके जलाया जाता है। सारणी 4 3 और प्लेट 4 2 मे चयनित घरो मे कूडा विसर्जन के स्थान को दर्शाया गया है।

सारणी 4 3 जौनपुर नगर के चयनित घरो के कूडा विसर्जन का स्थान (प्रतिशत मे)

आय समूह	कूडा रखने के स्थान पर-	सडक के किनारे-कही भी-	जलाते है-	योग
अत्यधिक कम	2547	74 53	—	100 00
कम	27 20	72 80	—	100 00
मध्यम	37 37	52 68	9 95	100 00
उच्च	77-26	15 62	7 12	100 00
अति उच्च	98 51	1 49	—	100 00
योग	53 16	43 42	3 42	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यह देखा गया कि आमतौर पर कम आय वर्ग के सभी घरो से कूडा सडक पर आता है, लेकिन 77 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के व 98 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोग किसी निर्धारित कूडा रखने के स्थान पर ही कूडा विसर्जित करते है जेसे खेत मे, मकान बनाने के लिए छूटी जमीन मे या मुहल्ले के किसी कोने मे। सरकारी कूडा रखने क स्थान नही होने पर घरो के निवासी कूडे को किसी भी स्थान पर रखना शुरू कर देते है और कुछ दिनो बाद वही स्थान सभी स्थानो से कूडा एकत्रित होने का स्थान बन जाता है। बहुत कम घरो के लोग, 10 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के एव 7 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घर, कूडे को एकत्र करके जलाते है। घर के आस पास कूडे को जलाना कूडा समाप्त करने का सुरक्षित तरीका नही होता है क्योकि इससे होने वाले धूए से कई घरो का पर्यावरण प्रदूषित होता है।

महानगरो मे महानगरपालिका की ओर से कूडा करकट रखने के लिए सडक के किनारे लोहे के बने या सीमेन्ट अथवा प्लास्टिक के बने बडे पात्र (कन्टेनर) जगह–जगह कुछ दूरी पर रखे रहते है। जिसमे उस क्षेत्र के निवासी कूडा विसर्जित करते है जिससे कूडा सडक पर नही फैलता है और जानवर उसे बिखेरते नही है। जौनपुर नगर मे इस तरह की कोई व्यवस्था सिटी बोर्ड की तरफ से नही की गयी है। व्यक्तिगत सर्वेक्षण मे यह पाया गया कि कूडा विसर्जन के लिए सीमेन्ट का बना बरतन कही–कही रखा था जो टूटकरके अपना अस्तित्व करीब–करीब खो चुका है और विकृत रूप मे पडा है। प्राय यह भी देखने को मिला कि कुछ मुहल्लो से कूडा करकट प्रतिदिन उठाकर स्वच्छकार उसे अधिक दूर न ले जाकर शहर के अन्दर ही किसी एक स्थान पर उस मुहल्ले के समस्त कूडे को एकत्रित करते है जहा से सिटी बोर्ड का वाहन लोडर के साथ लगभग पन्द्रह दिन मे एक बार ही कूडा उठाने आता है ऐसी परिस्थिति मे एकत्रित कई दिनो के कूडे से दुर्गन्ध फैलती है जिससे आसपास रहने वाले सभी आय वर्ग के घर बुरी तरह से प्रभावित होते है। ऐसे एकत्रित कूडे के ढेर को पशु और भी फैला देते है एव वर्षाकाल मे इस तरह के स्थल से बहने वाला पानी काफी दूर तक दुर्गन्ध के साथ कीचड के रूप मे फैल जाता है। शोधकर्ता ने इस सम्बन्ध मे सिटी बोर्ड के अध्यक्ष से कूडा रखने के पात्र की व्यवस्था रखने का सुझाव दिया तो उन्होने धन की कमी होने के कारण असमर्थता व्यक्त की।

मुहल्ले मे कूडे की उपस्थिति –

सारणी 4 4 और प्लेट 4 2 मे कूडा करकट की उपस्थिति और अनुपस्थिति की मात्रा को दर्शाया गया है। मुहल्ले मे यदि कूडा किसी स्थान पर विशाल मात्रा को दर्शाया गया है। मुहल्ले मे यदि कूडा किसी स्थान पर विशाल मात्रा मे पाया जाता ह ता किसी स्थान पर थोडी मात्रा मे या नगण्य होता है।

सारणी 4 4 जौनपुर नगर के चयनित घरो के बाहर कूडे की उपस्थिति एव अनुपस्थिति (1999) (प्रतिशत मे)

	मुहल्ले मे कूडा करकट		कूडा करकट का फैलाव		
आय समूह	चारो तरफ फैला है	दिखायी नही देता है	विशाल मात्रा मे	थोडी मात्रा मे	नगण्य
अत्यधिक कम	93 71	6.29	85 53	14 46	—
कम	90 82	9 18	82.68	17 32	—
मध्यम	82 76	17 23	72 57	22 57	4 85
उच्च	53 97	46 02	6.03	42 47	51.50
अति उच्च	22 27	77 73	—	18 81	81 19
योग	68 70	31 30	49 36	23 12	27 50

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी से पता चलता है कि 93 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 90 प्रतिशत कम आय वर्ग के घर एव 82 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो के मुहल्ले मे कूडा चारो तरफ बिखरा हुआ देखा जा सकता है क्योकि ये कम आय वर्ग के घरो के लोग कूड को कही भी जहा चाहते है फेक देते है ये इन बातो पर ध्यान नही देते कि कूडे को उचित स्थानो पर जैसे कूडेदान मे ही फेकना चाहिए। जबकि 53 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के व 22 अति उच्च आय वर्ग के मुहल्लो मे भी कूडा करकट बिखरा हुआ पाया गया। क्योकि ये लोग पुराने और घने बसे क्षेत्रो मे रहते है जहा जनसख्या का घनत्व बहुत अधिक है इस कारण से

जौनपुर नगर
विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों के अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट 1999
घर मे अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट को रखने का तरीका
100%
80%
60%
40%
20%
0%
इकटठा नही करत
बद बर्तन मे
खुले बर्तन मे
अत्यधिक कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च
आय समूह
कूडा करकट को विसर्जित करने का स्थान
अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च
आय समूह
कूडा रखन क स्थान पर
मुहल्ले मे कूडा–करकट
दिखायी नहीं दता
अत्यधिक कम
कम
उच्च
अति उच्च
आय समूह
कूडा करकट का फैलाव
अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
आय समूह
स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित
प्लेट 42

प्लेट 43 मुहल्ला अहमद खाँ मण्डी (उमरपुर) मे आवास निर्माण के लिए छोडा गया स्थल कूडा फेकने का स्थल बन गया है नगर मे ऐसी छूटी भूमि की यही स्थिति है।

प्लेट 44 सब्जी मण्डी सब्जी विक्रेताओ द्वारा एकत्रित किया गया विशाल कूडे का ढेर जिसे सिटी बोर्ड द्वारा नियमित नहीं उठाया जाता है।

भी कूडा बिखरा हुआ देखा जाता है। दूसरी तरफ लगभग 46 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 77 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो के मुहल्ले मे कूडा फैला हुआ दिखायी नही देता है। कुछ कम आय वर्ग के घरो के पास भी कूडा बिखरा हुआ नही पाया जाता है क्योकि ये लोग उच्च सम्भ्रान्त एव सुसज्जित क्षेत्रो मे रहते है यद्यपि उनमे से कुछ रिक्शा खीचने वाले भी है लेकिन ये कालोनी को सुसज्जित रखने का पूरा प्रयास करते है। ये कम आय वर्ग के लोग धनी घरो के पीछे की तरफ किराये पर रहते है। ये रिक्शा खीचने वाले लोग ऐसे क्षेत्रो मे इसलिए रहते है क्योकि इन घरो से सवारी आसानी से मिल जाती है और इन क्षेत्रो मे इनकी सुरक्षा भी बनी रहती है। ये लोग रात मे धनी घरो की रखवाली पहरेदारी भी करते है और पर्याप्त आय के लिये दिन मे रिक्शा भी खीचते है। ये लोग खाना बाहर खा लेते है। इसलिए इनके घरो से कूडा अधिक मात्रा मे निकलता ही नही है। ऐसी स्थिति नगर के बाहरी हिस्से मे अधिकाश देखने को मिलती है।

सारणी 4 4 और प्लेट 4 2 मे चयनित घरो के बाहर कूडे की उपस्थिति एव अनुपस्थिति की मात्रा को दर्शाया गया है या तो यह बिखरा हुआ पाया जाता है या नगण्य मात्रा मे पाया जाता है। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि 85 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 82 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 72 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो के मुहल्ले मे कूडा सर्वत्र बिखरा हुआ, विशाल मात्रा मे है। इसका कारण यह है कि ये कम आय वर्ग के घर अधिक मात्रा मे कूडा निकालते है और उसे सडक पर या किसी खुले स्थान पर फेक देते है जिससे इनके मुहल्ले मे कूडा करकट हमेशा फैला ही रहता है। सडक के दोनो ओर विशाल मात्रा मे कूडा एकत्रित रहता है। इन कूडे के ढेर मे मल भी विसर्जित किये जाने से इनसे तीव्र दुर्गन्ध आती है। नगर पालिका के कर्मचारी यदि हडताल पर चले गये हो या कूडा अधिक दिनो तक पडा रह गया तो वातावरण बहुत प्रभावित होता है और बीमारिया फैलनेकी सम्भावना प्रबल हो जाती है। लेकिन 51 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 81 प्रतिशत अतिउच्च आय वर्ग के घरो के मुहल्लो मे कूडा नगण्य मात्रा मे दिखायी पडा क्योकि ये लोग कूडे को सुरक्षित स्थानो पर (कूडा विसर्जित करने के स्थान पर) विसर्जित करते है।

मुहल्ले मे औद्योगिक अपशिष्ट -

सारणी 4 5 ओर प्लेट 4 5 म चयनित घरा क बाहर औद्यागिक अपशिष्ट क बिखराव को दर्शाया गया है।

सारणी 4 5 जौनपुर नगर के चयनित घरो के बाहर उनके मुहल्ला मे औद्योगिक अपशिष्ट का बिखराव (1999)

आय समूह	है	नही है	योग
अत्यधिक कम	90 88	9 12	100 00
कम	81 62	18 38	100 00
मध्यम	62 62	37 38	100 00
उच्च	22 74	77 26	100 00
अति उच्च	5 44	94 56	100 00
योग	52 66	47 34	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यह देखा गया कि औद्योगिक अपशिष्ट सभी आय वर्ग के घरो के पास पाया जाता है, लेकिन यह अधिक मात्रा मे कम आय वर्ग के घरो के पास पाया जाता है। जैसे कि 90 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 81 प्रतिशत कम आय वर्ग के घरो के पास और 62 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो के आसपास औद्योगिक व्यापारिक अपशिष्ट पाया जाता है क्योकि ये घर नगर के पुराने बसे क्षेत्रो मे है और लगभग नगर के लगभग मध्य भाग मे है जहा कई प्रकार के छोटे उद्योग है। इन उद्योगो मे तेल बनाने का उद्योग, बीडी उद्योग, प्लास्टिक उद्योग, तम्बाकू बनाने का उद्योग, मछली पालन पोलीथीन बनाने का उद्योग, जडी बूडी का उद्योग (आयुर्वेद उद्योग) प्रमुख है। ये सभी उद्योग विशाल मात्रा मे अपशिष्ट विसर्जित करते है। मछली पालन व कपडे सिलने का काम यहा पर मुसलमान ही करते है।

जौनपुर नगर

विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों के अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट 1999
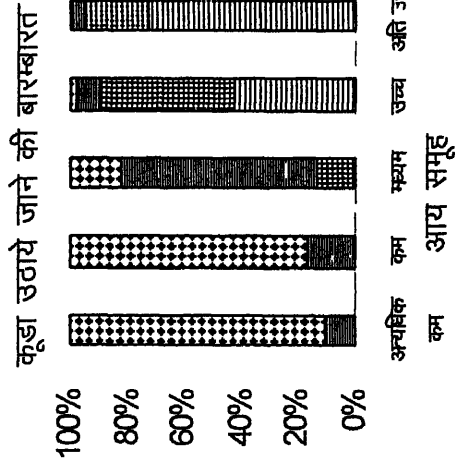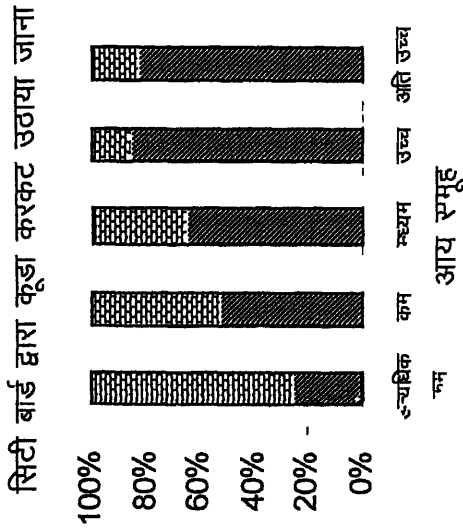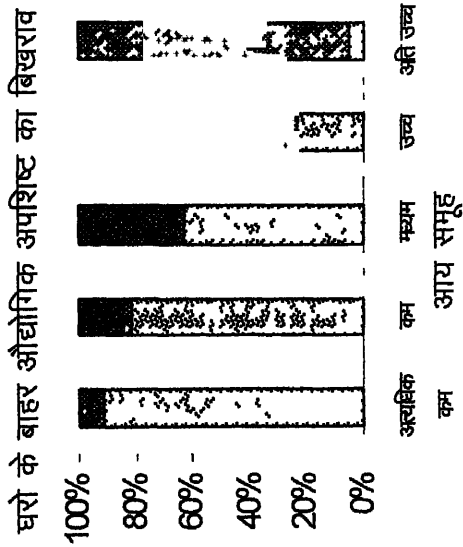
स्रोत— व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 45

इन उद्योगो के कर्मचारी औद्योगिक गन्दगी के बावजूद भी आसपास ही निवास करते है। 22 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 5 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के लोगो ने भी घर के पास औद्योगिक व्यापारिक अपशिष्ट के जमा होने के बारे मे बताया क्योकि उनके पास स्वय के उद्योग या व्यापार है। ये लोग उद्योग या व्यापार घर के प्रथम तल पर लगाते है और स्वय निवास दूसरे या तीसरे तल पर करते है। लगभग 78 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 94 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि उनके घरो के आसपास औद्योगिक व्यापारिक अपशिष्ट नही पाया जाता है क्योकि ये लोग इन क्षेत्रो से दूर नगर के बाहरी क्षेत्र मे रहते है। ये लोग बाजारी क्षेत्र एव अति व्यस्त क्षेत्रो मे रहना पसद नही करते है।

नगर पालिका द्वारा कूडा करकट का उठाया जाना -

नगर पालिका का यह मुख्य कर्तव्य है कि घरो से कूडे जो सार्वजनिक गलियो मे फेक दिये जाते है उन्हे निरन्तर हटाया जाय। लेकिन नगर पालिका के कर्मचारियो की अनियमितता के कारण कुछ धनी घरो के लोग निजी व्यक्तिगत मजदूरो से सफाई करवाते रहते है जिससे मुहल्ला साफ सुथरा बना रह सके। लेकिन ये व्यक्तिगत मजदूर भी नियमित नही आते है। सारणी 4 6 और प्लेट 4 5 मे नगर पालिका द्वारा चयनित घरो से कूडे उठाने की स्थिति को दर्शाया गया है। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि 74 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 47 प्रतिशत कम आय वर्ग के घरो एव 35 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो से कूडा नगर पालिका द्वारा नही उठाया जाता है। इसके कई कारण है जैसे कर्मचारियो का कम सख्या मे होना उनके पास कोई वाहन का न होना और अपने कर्तव्य के प्रति रूचि का न होना भी है। जबकि 64 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के 84 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 82 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि कूडा नगर पालिकाके कर्मचारियो द्वारा उठाया जाता है। कूडा कर्मचारियो द्वारा दो चरण मे फेका जाता है। पहले चरण मे घरो से कूडे उठाये जाते है और सडक पर जहा कूडा एकत्रित होता है वहा फेके जाते है। द्वितीय चरण मे नगर पालिका के कर्मचारी सडक के कूडे के ढेर को खेतो तक ले जाते है। इस प्रकार नगर पालिका के कर्मचारी कुछ समय के अन्तराल पर आकर सडक साफ करते है एव नाली साफ करते है।

प्लेट 4 6 मुहल्ला वाजिदपुर निवासी निम्न आय वर्ग के लोगो द्वारा सडक के किनारे कहीं भी कूडा विसर्जन का दृश्य।

प्लेट 4 7 परमानतपुर के पूर्वी भाग मे वाई पास सडक के निकट पानी निकासी के लिए बने नाले मे अनाधिकृत रूप से बिना नक्शा पास कराये हो रहे मकान निर्माण का दृश्य।

सारणी 4 6 जौनपुर नगर के चयनित घरो का बाहर से सिटी वार्ड द्वारा कूडा करकट उठाये जाने के आधार पर वर्गीकरण (प्रतिशत मे)

आय समूह	उठाया जाता है	नही उठाया जाता है	योग
अत्यधिक कम	25 79	74 21	100 00
कम	52 30	47 70	100 00
मध्यम	64 56	35 44	100 00
उच्च	84 66	15 34	100 00
अति उच्च	82 67	17 33	100 00
योग	62 00	38·00	100 00

स्रोत—व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

कूडे के ढेर को सिटी बोर्ड के कर्मचारी ठेले पर लादते हे ओर दो भेस इसे खीचते हे। कुछ सुसज्जित सम्भ्रान्त मुहल्लो मे व्यक्तिगत कूडा उठाने वाले ढल या गाडी हाती ह जिससे नियमित सफाई करवाई जाती है।

कूडा करकट उठाये जाने की बारम्बारता -

सारणी 4 7 और प्लेट 4 5 मे चयनित घरा स कूडा करकट उठाये जान की बारम्बारता को दिखाया गया है।

सारणी 4 7 जोनपुर नगर के चयनित घरो से कूडा करकट उठाये जाने की बारम्बारता (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	प्रतिदिन	सप्ताह मे दो बार	सप्ताह मे एक बार	महीने मे एक बार	योग
अत्यधिक कम	—	—	10 06	89 94	100 00
कम	—	—	17 31	82 69	100 00
मध्यम	—	12 87	69 41	17 72	100 00
उच्च	42 73	46 84	9 04	1 39	100 00
अति उच्च	72 27	22 77	4 96	--	100 00
योग	23 00	16 50	22 15	38 34	100 00

सारणी के अनुसार 89 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 82 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 17 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो से कूडा उठाये जाने की बारम्बारता महीने मे एक बार है या कभी–कभी उससे भी अधिक समय हो जाता है। कर्मचारियो के आ[illegible] की बारम्बारता कम [illegible] के दो मुख्य कारण [illegible] प्रथम [illegible]चारियो की [illegible] का [illegible] होना, दूसरा कर्मचारियो का कर्तव्य निर्वाह के प्रति रूचि का न होना है। ऐसी स्थिति मुख्य रूप से नगर के पुराने बसे क्षेत्रो मे देखी गयी जहा अधिकतर मुस्लिम लोग रहते है जेसे उर्दू बाजार ताडतला एव मुफ्ती मुहल्ला आदि मे। ये सभी मुहल्ले मुसलमान बहुल है। सिटी बोर्ड के कर्मचारी जहा सफाई के लिए जाते हे वहा के निवासियो से अलग से सफाई के पेस लेते हं जबकि सरकारी आय भी उन्हे मिलती है। कहा जा सकता है कि ये लोग सरकारी तनख्वाह से अधिक निजी तौर पर जाकर सफाई करके रूपये एकत्रित कर लेते हे। नियमित कूडा उटाये जाने की बात 42 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 72 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के द्वारा ने बताया। मध्यम आय वर्ग के 70 प्रतिशत घरो ने बताया कि कूडा सप्ताह मे एक बार उठाया जाता है। घरो से कूडा यदि सप्ताह से अधिक समय तक उठाया न जाय तो स्वास्थ्य सम्बन्धी बीमारिया फैलने का जोखिम रहता हे। घरो के बाहर फेकं अधिक दिनो तक इकटठा कूडे के ढेर जानवरो जैसे सूअर, गाय, कुत्तो, भेसो को आकर्षित करते हे ये जानवर और भी गन्दगी फैलाते है जिससे इन मुहल्लो का पर्यावरण और भी बदतर हो जाता है।

चयनित घरो के कूडा करकट रखने के ढग मे देखा गया कि 77 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 85 प्रतिशत कम आय वर्ग के और 32 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घर कूडे को घर के अन्दर खुले बर्तन मे रखते है ओर ये कूडे मुख्य रूप से सडक के किनारे ही फेके जाते है, इनके कारण इन आस–पास के घरो मे रसोई कक्ष एव शयन कक्ष मे मक्खी मच्छरो का प्रकोप अधिक बना रहता है। जबकि दूसरी तरफ 65 प्रतिशत उच्च आय वर्ग घर एव 89 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घर कूडे को बद बर्तन मे ही रखते हे एव उनका विसर्जन सुरक्षित कूडा रखने के स्थान पर करते है। अत्यधिक कम आय वर्ग के 85 प्रतिशत कम आय वर्ग के 82 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 72 प्रतिशत घरो के मुहल्ले मे कूडा सर्वत्र बिखरा हुआ, विशाला मात्रा मे पाया गया। इन कम आय वर्ग के घरो के आसपास औद्योगिक

व्यापारिक अपशिष्ट भी पाया गया। बहुत कम ही उच्च आय वर्ग क घरा न आसपास ओद्यागिक व्यापारिक अपशिष्ट हाने की बात बतायी। यह आमतार पर दखा गया कि कम आय वर्ग के घरा से कूडा उठाये जाने की बारम्बारता महीन मे एक बार हे जबकि उच्च आय वर्ग के घरा क मुहल्ले से कूडा सिटी बार्ड कर्मचारिया द्वारा निर्जी कर्मचारिया द्वारा प्रतिदिन उठवा लिया जाता है। उपर्युक्त वर्णन यह दिखाता है कि कम आय वर्ग के घरो के लोग गन्दे मुहल्ला मे रहत है।

घरो मे मक्खी मच्छर का प्रकोप -

पर्यावरण का प्रदूषित करन मे मक्खी मच्छर की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती हे और ये आसानी से बीमारिया को फैलाने के जनक होते हे। नगर के लोग अपन स्वास्थ्य को इन मक्खी मच्छरो व कीटाणुओ से बचाने के लिए विभिन्न उपाय अपनात हे क्योकि इस नगर मे मक्खी मच्छर के पनपन की सर्वाधिक उपयुक्त दशाये पायी जाती हे जेसे घरो के बाहर खुले कूडा करकट खुले नाले व अवरोधित जाम नालिया अधिक दिनो से एकत्रित सडक के किनारे के कूडे जिसमे मल भी फेके जाते हे। घर के बाहर जल जमाव आदि। मच्छरो से फेलने वाली बीमारियो मे मलेरिया से पीडित लोग बहुत आमतोर पर देखे जा सकते है जबकि चूहे चपडे, खटमल मक्खी भी विभिन्न स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या खडी करते है। इन कीटाणुओ मक्खी मच्छरो से बचने के लिए लोगो को विभिन्न उपाय अपनाने चाहिए परन्तु ये उपाय महगे होने के कारण उच्च आय वर्ग ही इन्हे अपनाता है। मच्छर भगाने वाली अगरबत्ती एव चूहा मारने वाले ७ाष्ट का उपयोग कम आय वर्ग के लोग भी करते है। कुछ लोग इ ारो बचा के लिए शरीर पर विशेष प्रकार का साबुन या क्रीम भी लगाते है।

जैसा कि ।पर बताया गया है कि मच्छर मक्खी विभिन्न प्रकार से पर्यावरण को प्रदूषित करते है नगर मे प नी का जमाव मच्छरो को और भी फैलाता है। कुछ समय पहले नगर मे तथा नगर के आसपास डेगू ज्वर बहुत तीव्रता से फैला हुआ था। यह ज्वर विशेष प्रकार के मच्छरो के काटने से फैलता है। ये मच्छर जहा खुला पानी रखा हो वहा उत्पन्न होते है इस प्रकार इस नगर मे जगह–जगह पानी एकत्र होने से इन मच्छरो के उत्पन्न होने की उपयुक्त दशाये पायी जाती है। घर के आसपास के नाले तालाब से इन मच्छरो से फैलने वाली बीमारी

का जोखिम बना रहता हे। पिछले समय जब यहा डेगू ज्वर फैला था ता एक महीन म इस नगर मे 60 व्यक्ति मर गय थ। महामारी फैलान क जनक इन मच्छरा क दुष्प्रभाव स बचन क लिए सभी घरो के लोग भाजन और घर का पर्यावरण उचित बनाने क लिए विभिन्न प्रकार क उपाय अपनाते है। घरा म कीटाणुओ क दुष्प्रभाव के बार म जानकारी लत समय निम्न बाता का ध्यान मे रखा गया--घर मे कीडे मकोडे, मक्खी मच्छर, चूहे, चपड सभी पाये जाते हे अथवा नही पाये जाते है, घर मे उपयुक्त रोशनदान हे अथवा नही है कीडे मकोडे मच्छरो स बचाव के लिए कोन से उपकरण प्रयोग मे लाये जाते हे (पम्पकैन मच्छरदानी, मच्छर भगाने वाली अगरबत्ती सरकार की तरफ से दिये जाने वाले कुछ उपाय प्रयुक्त होते है अथवा इनमे से किसी का भी प्रयोग नही होता।) कमरो व रसोई घर मे दवाओ का छिडकाव होता है अथवा नही। इस प्रकार के सभी आकडे व्यक्तिगत क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा एकत्र किये गये।

सारणी 4 8 जौनपुर नगर के सम्पूर्ण चयनित घरो मे कीडे मकोडे एव मक्खी मच्छर का प्रकोप (1999) (प्रतिशत मे)

	घर मे कीट पतग व मक्खी मच्छर	प्रतिशत
1 घर मे कीट पतग एव मक्खी मच्छर	1 मक्खी केवल	7 52
	2 मच्छर	10 21
	3 चूहे/चुहियॉ	7 15
	4 चपडे	7 03
	5 सभी	35 70
	6 कुछ भी नही	32 39
2 घर मे रोशन दान	1 है	34 34
	2 नही है	65.66
3 इन कीट पतग मक्खी मच्छर स बचने के उपयोग मे लाये जाने वाले उपाय	1 पम्प कैन	7 18
	2 हाथ से दवाओ का छिडकाव	7 81
	3 मच्छर रोधी अगरबत्ती का प्रयोग	8 54
	4 मच्छरदानी	10 99
	5 अन्य व्यक्तिगत उपाय	5 05
	6 सरकार द्वारा किये गये उपाय	8 78
	7 कुछ भी नही	51 65
4 कमरो एव रसोई मे मशीन से दवाओ छिडकाव	1 होता है	33 25
	2 नही होता है	66 75

स्रोत-- व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

जौनपु नगर

सम्पूर्ण चयनित घरो मे कीटाणु व मक्खी मच्छर का प्रभाव 1999

100 %
80 %
60 %
40 %
20 %
0 %

1 2 3 4
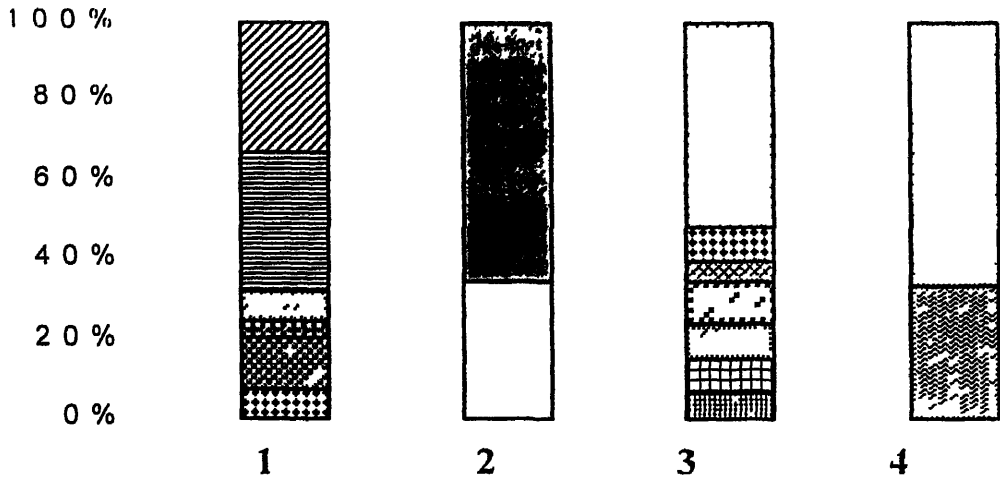
1 घर म कीटाणु मक्खी मच्छर की उपस्थिति

- मक्खी
- मच्छर
- चूहे / चुहियॉ
- चपडे
- सभी
- कुछ भी नही

2 घर मे खिडकी एव राशनदान

- ह
- नही

3 मक्खी मच्छर कीट आदि से बचार हेतु प्रयोग मे लाये जाने वाले उपकरण

- कुछ भी नही

4 कमरो एव रसोई घर म मशीन से छिडकाव

- छीडकाव होता हे
- छीडकाव नही हाता हे

स्रोत— व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट— 48

सम्पूर्ण 1580 चयनित घरो मे से अधिकाश घरो म चूहे मक्खी मच्छर कीडे मकडे चपडे सभी पाये जात ह। सारणी 4 8 और प्लट 4 8 म दर्शाया गया ह कि लगभग 34 प्रतिशत घरो मे मक्खी, मच्छर चूह चपडे सदेव ही रहते हे। लेकिन लगभग 32 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनक घर म इनमे स कुछ भी नही पाया जाता हे। वस पूर्णत ऐसा होना लगभग नामुमकिन है। लगभग 65 प्रतिशत घरो मे किसी प्रकार का राशनदान नही है। कुल चयनित घरो म से आधे घरो ने बताया कि मक्खी मच्छरो व कीट से बचने क लिए वे किसी भी प्रकार के उपकरण का प्रयोग नही करते है तथा रसोई घर व कमरो मे दवाओ का छिडकाव नही करते है। जबकि अन्य लोग किसी न किसी प्रकार का व्यक्तिगत उपाय अपनाते हे।

चयनित घरो मे कीडे मकोडे एव मक्खी मच्छर -

सभी प्रकार के कीट, मक्खी मच्छर चूहे, चुहिया, चपडे सभी घरो मे पाय जाते है लेकिन उच्च आय वर्ग के कुछ घरो ने बताया कि उनके घर मे इनकी मात्रा नगण्य है। सारणी 4 9 और प्लेट 4 9 मे विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे कीडे मकोडे मक्खी मच्छर की उपस्थिति तथा अनुपस्थिति को दिखाया गया है। यह पाया गया कि 62 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 55 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 50 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो मे सभी प्रकार के कीडे मकोडे, मक्खी मच्छर बडी सख्या मे पाये जाते हे। इसका कारण घर के आसपास का खराब पानी का अपवाह, कूडा खुले रूप मे रखना, तथा जगह–जगह जाम नालिया है जिनमे मच्छर उत्पन्न होते है। और पनपते है। आमतौर पर लोग मच्छरो की कल्पना बरसात के दिनो मे करते है लेकिन इस नगर मे खराब पानी के अपवाह तत्र के कारण व खुली जाम नालियो के कारण मच्छर वर्षभर लगने है और न केवल गरीब परिवार मे अपितु धनी घरो मे भी सभी उपाय के बावजूद मच्छर लगते है। उपयुक्त सफाई की व्यवस्था न होने पर (विशेषकर शौचालय की) मक्खी भी बहुत आम तौर पर देखी जाती है जो रसोई के आसपास घूमती रहती है। मक्खिया मुख्यत धनी घरो मे कम पायी जाती है। मक्खिया विभिन्न प्रकार के रसायन परिवहित करती है और खाने–पीने की चीजो पर बैठकर उन्हे सक्रमित कर देती है ये भोजन करके मनुष्य सीधे पेट सम्बन्धी बीमारियो से पीडित हो जाता है।

जौनपुर नगर

विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे कीटाणु व मक्खी एव रोशनदान 1999
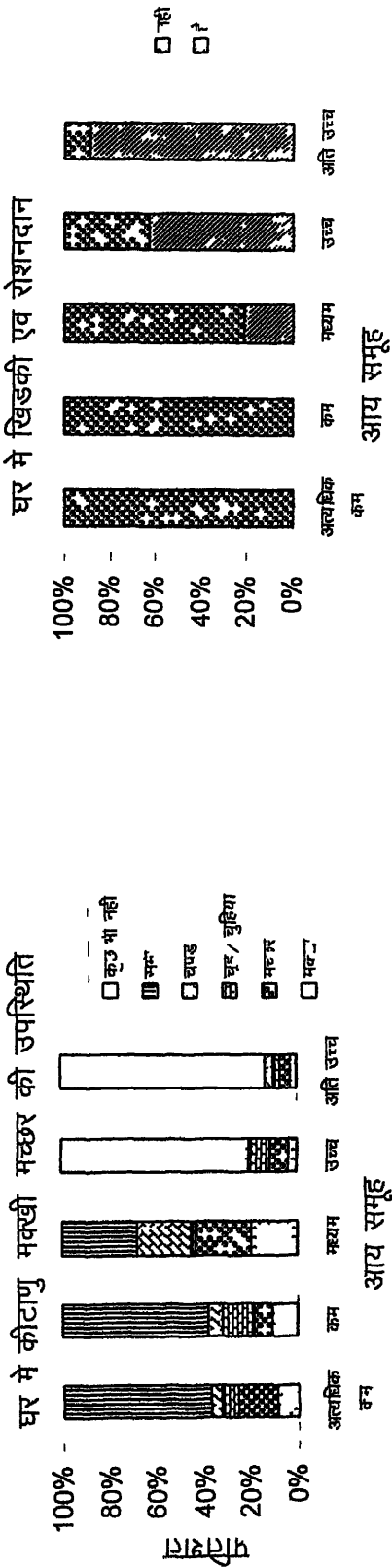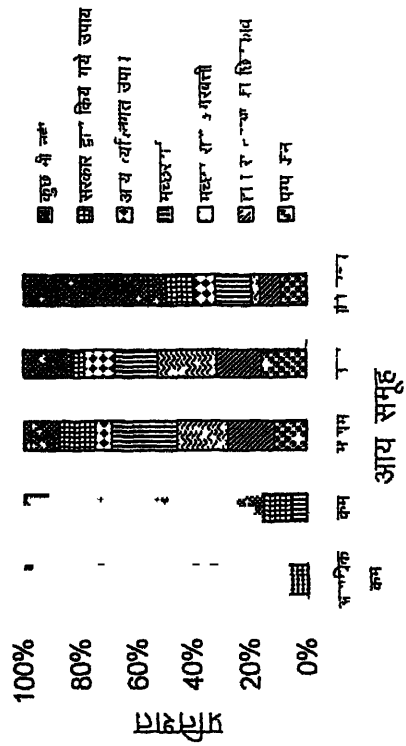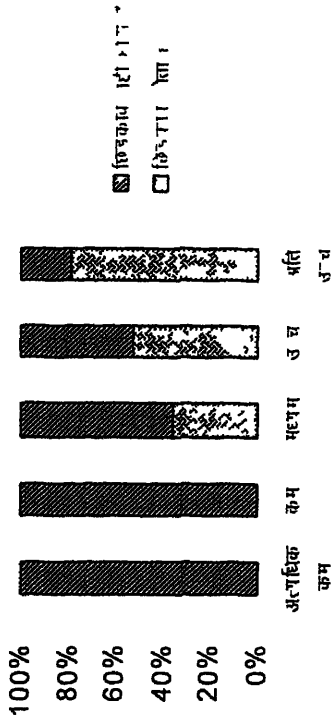
कम आय वर्ग एव उच्च आय वर्ग क घरो मे यह मुख्य अन्तर देखा जा सकता है कि कम आय वर्ग के शाचालय एव रसाईघर म बहुत मक्खिया पायी जाती ह। जबकि उच्च आय वर्ग मे सफाई के कारण ये कम पायी जाती है या नही पायी जाती। जोनपुर नगर मे मच्छर अधिक सख्या म कचहरी सडक पर पाय जाते हे क्योकि यहा पर कूडा खुला ढेर म सडक के किनारे पडा रहता है एव इस क्षेत्र मे जल जमाव भी निरन्तर बना रहता है। सब्जी मण्डी ओलन्दगज मछरहट्टा मे भी गन्दगी से मक्खी मच्छर विशाल मात्रा मे पाये जाते है। लेकिन नगर के पुराने बसे आवास जो अपेक्षाकृत ऊची भूमि पर बन हे वहा जल जमाव की समस्या नही होती है अत वहा पर मच्छर बहुत कम पाये जाते है परन्तु मक्खिया वहा पर भी आम है।

सारणी 4 9 जौनपुर नगर के चयनित घरो का मक्खी मच्छर के प्रकोप की दृष्टि से वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	मक्खी	मच्छर	चूहे/चुहिया	चपडे	सभी	कुछ भी नही	योग
अत्यधिक कम	8.80	16 98	6 60	5 03	62 59	---	100 00
कम	9 89	6 71	12 36	5 65	65 38	---	100 00
मध्यम	12 62	15 53	5 83	15 53	50 49	---	100 00
उच्च	3 83	7 39	7.95	5 48	---	75 36	100 00
अति उच्च	2 48	4 45	2 98	3 46	–	86 63	100 00
योग	7 52	10 21	7 15	7 03	35 70	32 39	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

जौनपुर नगर मे मलेरिया फैलाने वाले एनाफिलीज मच्छर बडी सख्या मे पाये जाते है। ये स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न समस्याओ को उपस्थित करते है। मलेरिया खराब पानी के अपवाह के कारण घर के आसपास जल जमाव मे पनपे मच्छर के कारण होता है। घरो मे भी पानी यदि खुला रखा जाता है तो पीत ज्वर, डेगू आदि का कारण बनता है। चुहिया/चूहे चपडे, झीगुर अधिकतर अत्यधिक कम आय वर्ग व कम आय वर्ग के घरो मे अधिक सख्या मे

पाये जाते हे। ये लोग अधिकतर झुग्गी झोपडी मे रहते है। इन कीड मकाडो के कारण कम आय वर्ग के अधिकतर सदस्य किसी न किसी बीमारी से ग्रसित रहते है। चूहे चुहिया 6 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, व 12 प्रतिशत कम आय वर्ग के घरो मे बडी सख्या मे पाया जाना बताया गया। नगर के वातावरण म चूहे अच्छी प्रकार से समायोजन कर लेत हे और कम अधिक मात्रा मे सभी घरो मे पाये जाते हे। परन्तु इस नगर मे चूहे पुराने बसे आवास तथा बाहरी छोरो पर अधिक सख्या मे पाये जाते है। ये चूह अधिक मात्रा मे अनाज खा जाते है, दीवारो मे छिद्र बना देते है भोजन सक्रमित कर देते है। ओर लम्बे समय तक घर मे बने रहने के कारण भयकर बीमारी फैलाते है चूहे खतरनाक बीमारी प्लेग के जनक होते है। कुछ साल पहले गुजरात के सूरत शहर मे प्लेग महामारी के रूप मे फैला था तो एक ही दिन मे लगभग 500 लोग काल कवलित हो गये थे। चपडे व झीगुर भी विभिन्न प्रकार के रसायन परिवहित करते है इनसे भी विभिन्न प्रकार के रोगो को बढावा मिलता है। खाना बनाने वाले स्थान मे चपडे घूमते रहते है और खाद्य सामग्री के सम्पर्क मे आने से रोग के कीटाणु आसानी से जनजीवन को प्रभावित करते रहते है। इस प्रकार मनुष्य चपडो के कारण भी पेचिश, डायरिया, अतिसार आदि भयानक रोगो से ग्रसित हो जाते है। चपडो का पाया जाना मध्यम आय वर्ग के घरो मे अधिक बताया गया (15 प्रतिशत)। चपडे व झीगुर ध्वनि प्रदूषण भी करते है और दुर्गन्ध भी फैलाते है।

रोशनदान एव खिडकी का प्रयोग -

रोशनदान और खिडकिया मच्छरो मक्खियो के प्रकोप से बचाने मे सहायक होते है। सारणी 4 10 और प्लेट 4 9 मे जौनपुर नगर के चयनित घरो मे रोशनदान एव खिडकी की उपस्थिति एव अनुपस्थिति को दिखाया गया है। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि अत्यधिक कम आय वर्ग व कम आय वर्ग के घरो मे कोई भी रोशनदान एव खिडकी नही पायी जाती है। इसका कारण इनकी खराब आर्थिक स्थिति है इनके पास एक ही कमरे का घर होता है। और कुछ घरो मे दरवाजा भी नही लगा हुआ है इसलिए इनके घर मे रोशनदान और खिडकी होने का सवाल ही नही होता है। मध्यम आय वर्ग के 79 प्रतिशत, उच्च आय वर्ग के 37

प्रतिशत व अति उच्च आय वर्ग के 11 प्रतिशत घरो मे भी रोशनदान एव खिडकी नही पाये गये क्योकि इनके घर बहुत पुराने बन हुए है और नक्शो से नही बने है इनम एसी भी व्यवस्था नही होती कि रोशनदान खिडकी बनायी जा सके। जबकि दूसरी तरफ 20 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के, 62 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के व 88 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग क घर बहुत अच्छी तरह म बने हुए है व नये है जिनमे पर्याप्त रोशनदान व खिडकिया बनी हुयी है।

सारणी 4 10 जोनपुर नगर के चयनित घरो का उपयुक्त रोशनदान की दृष्टि से वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	है	नही है	योग
अत्यधिक कम	—	100 00	100 00
कम	—	100 00	100 00
मध्यम	20 87	79 13	100 00
उच्च	62 74	37 26	100 00
अति उच्च	88 12	11 88	100 00
योग	34 34	65 66	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

ये घर ठीक प्रकार से पूर्व नियोजन करके बनाये गये लगते है अत इनमे दरवाजे खिडकी, रोशनदार सर्वाधिक उचित तरीके से बने हुए होते है।

मक्खी, मच्छर, कीडे–मकोडे से बचाव के लिए अपनाये गये उपाय -

चयनित घरो के उत्तरदाता मक्खी मच्छर कीडे–मकोडे से होने वाली समस्याओ पर अधिक ध्यान नही देते। सरकार की तरफ से भी इस नगर मे पर्यावरण स्वच्छ रखने के लिए पर्याप्त उपाय नही किये जाते है। विशेषकर मच्छरो से बचने के लिए सभी घरो मे कुछ न कुछ उपाय किये जाते है। सम्पन्न घरो मे व कम आय वर्ग के घरो मे इनसे बचने के लिए अपनाये गये उपाय भिन्न होते है।
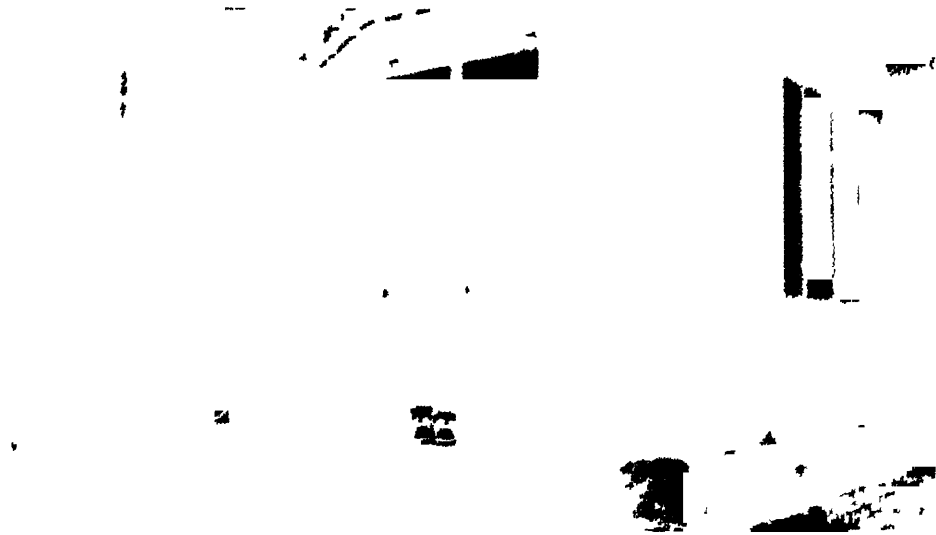
प्लेट 4 10 मुहल्ला वाजिदपुर मे उच्च आय वर्ग का हवादार आवास।

प्लेट 4 11 मुहल्ला परमानतपुर मे कम आय वर्ग का एक कमरे का मकान जिसमें कोई खिडकी व रोशनदान नहीं है।

सारणी 4 11 जोनपुर नगर के चयनित घरो मे मक्खी मच्छर कीट आदि के बचाव हेतु प्रयोग मे लाये जाने वाले उपकरण (प्रतिशत मे)

आय समूह	पम्प कैन	हाथ से दवाओ का छिडकाव	मच्छर रोधी अगरबत्ती	मच्छरदानी	अन्य उपाय	सरकारी प्रयास	कुछ भी नही
अत्यधिक कम	--	--	--	--	--	7 55	92 45
कम	—	—	—	4 94	—	9 89	85 16
मध्यम	11 40	15 77	18 44	22 82	6 32	12 87	12 38
उच्च	15 62	15 89	20 83	14 79	11 50	4 10	17 27
अति उच्च	8 92	7 42	3 46	12 38	7 43	9 40	50 99
योग	7 18	7 81	8 54	10 99	5 05	8 78	51 65

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 4 11 ओर प्लेट 4 ९ मे चयनित घरो के अन्दर मक्खी मच्छर से बचाव के लिए अपनाये गये उपाय को दिखाया गया है। इन उपायो मे पम्पकन दवाओ का छिडकाव, मच्छर अवरोधी अगरबत्ती का प्रयोग, मच्छरदानी व अन्य व्यक्तिगत उपाय व कुछ सरकारी प्रयास भी है। अत्यधिक कम आय वर्ग व कम आय वर्ग के घरो मे इनसे बचाव के लिए सर्वथा कोई भी उपाय नही अपनाये जाते केवल कम आय वर्ग के कुछ घरो के मच्छरदानी के प्रयोग को छोडकर जिसे रात मे बाध कर सोना उनकी मजबूरी होती है क्योकि मच्छर बहुत अधिक सख्या मे पाये जाते है। मक्खी मच्छर से बचने के लिए सरकारी प्रयास सभी आय वर्ग के घरो तक पहुचाने का प्रयास होता है। इनकी तरफ से आमतौर पर डी डी टी का छिडकाव होता है। डी डी टी का छिडकाव बहुत प्रभावशाली होता है क्योकि इससे मक्खी मच्छर तुरन्त मर जाते है व कुछ समय तक पुन नही पनपने पाते है। पम्पकैन और एरोसोल का प्रयोग उच्च आय वर्ग के घरो मे अधिक होता हैं। पम्पकैन मे प्रयुक्त होने वाले रसायन महगे होते है। एरोसोल का प्रयोग भी खर्चीला होता है, अत उच्च आय वर्ग मे ही इसका उपयोग किया जाता है। इनमे

प्रयुक्त रसायनो से घर मे वायु प्रदूषण भी थोडी बहुत मात्रा मे होता ही है लेकिन एरोसोल के प्रयोग से कोई महत्वपूर्ण दुष्प्रभाव लोगो के स्वास्थ्य पर नही पाया जात है जबकि लम्बे समय तक पम्पकैन का प्रयोग किये जाने से उससे सम्बन्धित समस्याये पायी जा सकती है।

सर्वाधिक आमतौर पर मच्छरा से बचने क लिए मच्छरदानी का प्रयोग लोगो द्वारा किया जाता है। मध्यम आय वर्ग के 22 प्रतिशत, उच्च आय वर्ग के 14 प्रतिशत व अति उच्च आय वर्ग के 12 प्रतिशत घरो न बताया कि वे मच्छश्रदानी का प्रयोग अवश्य करते है। बाजार मे मच्छरदानी के बढे हुए अधिक मूल्य के कारण निम्न आय वर्ग के लोग इसे नही खरीदते है। मच्छर अवरोधी अगरबत्ती और टिकिया का प्रयोग भी उच्च आय वर्ग के घरो मे बहुतायत से होता है। इस प्रकार की अगरबत्ती एव टिकिया निश्चित रूप से वायु प्रदूषण को बढाते है एव इससे स्वास सम्बन्धी कठिनाई भी होती देखी गयी है परन्तु लोग इस पर ध्यान नही देते है और इसका प्रयोग बहुत आमतौर पर होता है। उत्तरदाताओ ने इनसे होने वाली किसी प्रकार की कठिनाई के बारे म नही बताया। परन्तु डाक्टरो का कहना है कि इनके प्रयोग लम्बे समय तक होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी महत्वपूर्ण कठिनाइया उपस्थित हो सकती है। अन्य व्यक्तिगत उपाय भी मक्खी मच्छर रा बचने के लिए अपनाये जाते है जैसे प्राइवेट सस्थाओ को पैसे देकर दवाओ का छिडकाव करवाना जिससे कृमि हत्या तुरन्त हो जाती है व कुछ समय तक मच्छर नही पनपते है। उच्च आय वर्ग के भी कुछ घर (17 प्रतिशत) एव अति उच्च आय वर्ग के 51 प्रतिशत घरो मे भी मच्छर से बचने के लिए किसी प्रकार के उपकरण नही प्रयोग मे लाये जाते क्योकि इनके घर मे खिडकिया रोशनदान पर्याप्त मात्रा मे पाये जाते है और ये अपेक्षाकृत स्वच्छ मुहल्ले मे रहते है। जहा मक्खी मच्छर कम मात्रा मे पाये जाते है। उच्च आय वर्ग के कुछ लोग घर मे फिनायल रखते है और मक्खी भगाने के लिए फिनायल से धुलाई जगह विशेष की कर देते है। फिनायल कुछ ही मात्रा मे, पानी मे मिलाकर प्रयुक्त किया जाता है। इस प्रकार हम देख सकते है कि उच्च आय वर्ग के घरो मे मक्खी, मच्छर भगाने के लिए किसी न किसी प्रकार के उपाय अवश्य अपनाये जाते है।

रसोईघर एव कमरों में दवाओं का छिडकाव -

सारणी 4 12 एव प्लेट 4 9 मे चयनित घरो के कमरो एव रसोई घर मे

मशीन से दवाओ के छिडकाव को दिखाया गया है। यह देखा गया कि अत्यधिक कम आय वर्ग के व कम आय वर्ग के घरो मे इस प्रकार का कोई छिडकाव नही होता हैं। इसके दो कारण है पहला, कृमि हत्या करने वाले ये स्प्रे महगे होते है दूसरा ये लोग मक्खी मच्छर से होने वाली समस्याओ से अनभिज्ञ रहते हे। लगभग 64 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरो मे, 47 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घरो मे व 21 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो की रसोई व कमरे मे भी दवाओ को स्प्रे नही किया जाता इसका मुख्य कारण उनका कम शिक्षित होना हो सकता है। जौनपुर नगर मे बेगान स्प्रे का प्रयोग बहुत होता है। 35 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग 53 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के लोग एव 79 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो की रसोईघर व कमरो मे फिनायल से धुलाई होती है या अन्य कृमि हत्या करने वाले स्प्रे का प्रयोग होता हे ये उपकरण घर के पर्यावरण को प्रदूषण भी करते है।

सारणी 4 12 जौनपुर नगर के चयनित घरो के कमरो मे रसोई मे मशीन से छिडकाव (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	छिडकाव होता है	छिडकाव नही होता है	योग
अत्यधिक कम	—	100 00	100 00
कम	—	100 00	100 00
मध्यम	35 44	64 56	100 00
उच्च	52 60	47 4	100 00
अति उच्च	78 21	21 79	100 00
योग	33 25	66 75	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सर्वेक्षण के दौरान विभिन्न आय वर्ग के सभी घरो ने बताया कि घर मे मक्खी मच्छर कीडे मकोडे कम/अधिक मात्रा मे पाये ही जाते है। ये अधिक से अधिक सख्या मे कम आय वर्ग के घरो मे पाये जाते है क्योकि इन घरो मे रोशनदान खिडकिया अनुपस्थित रहते है और ये लोग कीटाणुओ से बचने के लिए कोई उपाय भी नही करते है। नगर पालिका

की तरफ से डी डी टी का छिडकाव अवश्य होता रहता है। किसी प्रकार के स्प्रे या फिनायल का प्रयोग महगा होने के कारण कम आय वर्ग के घर इसे नही प्रयोग करते है।

भोजन का रख रखाव एव प्रदूषण -

लगभग सभी चीजे जो हम लोग खाते है प्रदूषित होती है। क्योकि किसान भी अनाज उगाने मे विभिन्न प्रकार के रसायन का छिडकाव करते है। भोजन के प्रदूषित हो जाने की सम्भावना तब भी अधिक होती है जब इसे साफ वातावरण मे न पकाया जाय। ठीक तरह से रखा न जाय या बाजार से खरीदकर सीधे खाने मे प्रयुक्त होने वाली चीजे हो, इससे भी भोज्य प्रदूषित रहता है। दूसरी तरफ गन्दी जगह मे उगी सब्जियो के प्रयोग से भी भोजन प्रदूषित हो जाता है। बाजार मे बिकने वाली त्वरित खाये जाने वाले भोज्य पदार्थ (फास्ट फूड) स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डालते है। गन्दी जगह मे उगने वाली सब्जिया यदि कच्ची खायी जाती है तो हानिकारक होती है। कई घरो मे इस बात की अनभिज्ञता रहती है कि सब्जी को पकाने से पूर्व उसे अच्छी तरह से धोना (कई बार) आवश्यक होता है। घरो मे आमतौर पर लोग पानी के स्वच्छ होने न होने पर चिन्तित होते है परन्तु सभी चीजे जो हम खाते हे प्रदूषित हो सकती है जैसे रोटी, चावल, दाल, सब्जी, मीट, फल एव यहा तक कि दूध भी जो बच्चो को भी नुकसान कर सकता है। हाल ही मे शोध से यह बात सामने आयी है कि भारतीय जिस प्रकार का भोजन करते है वह लम्बे समय के बाद उनके स्वास्थ्य पर खराब असर के रूप मे सामने आता है जिसमे लोग हृदय रोग, मस्तिष्क ज्वर, आत सम्बन्धी बीमारी लीवर का फेल होना एव कैसर हो जाने की सम्भावना व्यक्त करते है। बच्चे जो गाय भैस का दूध पीते है वह भी शुद्ध है इसका निश्चय नही किया जा सकता क्योकि जानवर गन्दी जगहो पर घूमते है और पोलीथीन कागज आदि खराब चीजे भी खाते है जिससे उनका दूध शुद्ध नही रह जाता। बच्चे बाजार मे बिकने वाले पाउडर वाले दूध को ग्रहण करते है, वह भी उनके लिये ठीक नही रहता। इस प्रकार प्रदूषित भोजन करके हम लोग हल्के जहर का सेवन करते जाते है जिसका असर बाद मे पडता है। भोजन पकाने के बाद उनका ठीक तरह से रख–रखाव एव उचित समय पर ग्रहण करना भी आवश्यक होता है। इस अध्याय मे यह बताया गया है कि चयनित घरो मे भोजन पकने

के कितने समय बाद इसे ग्रहण किया जाता है। पक हुए भोजन का रखन का ढग क्या है। भोजन पकाने क लिए सशोधित तेल का प्रयाग होता हे या असशोधित तल का। त्वरित खाय जान वाले भोज्य पदार्थों (Fast Food) का कितना प्रयाग हाता है। इस प्रकार क सभी आकड व्यक्तिगत क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा एकत्रित किय गय।

सारणी 4 13 सम्पूर्ण चयनित घर मे भोजन का रख–रखाव एव प्रदूषण की स्थिति (1999) (प्रतिशत मे)

		प्रतिशत
1 भोजन करने का समय	1 पकने के तुरन्त बाद	66 49
	2 1–2 घटे बाद	24 67
	3 तीन घटे बाद	8 84
2 भोजन रखने का तरीका	1 खुले स्थान मे	43 44
	2 खाना रखने वाली जाली मे	24 21
	3 फ्रिज मे	32 35
3 भोजन पकाने मे प्रयुक्त तेल	1 सशाधित तल मे	49 80
	2 असशोधित तेल मे	50 20
4 त्वरित खाये जाने वाले भोज्य पदार्थो की खरीददारी	1 गली की दुकान से	37 24
	2 बाजार से	17 95
	3 नही खरीदते है	44 80

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 4 13 एव चित्र 4 12 मे जौनपुर नगर के सम्पूर्ण चयनित घरो मे भोजन के रख–रखाव की स्थिति को दिखाया गया है। सर्वेक्षित सभी घरो मे भोजन प्रतिदिन बनाया जाना बताया गया। अधिकतर घरो मे प्रतिदिन दो या तीन बार भोजन बनता है परन्तु कम आय वर्ग के अधिकतर घरो मे एक ही समय भोजन बनता है। एक ही समय भोजन पकने
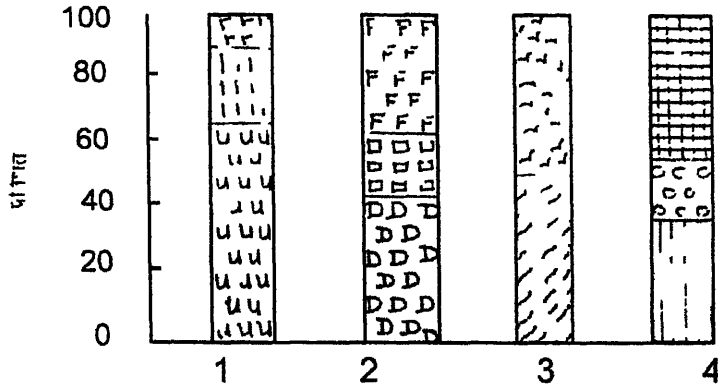
से बाजार से त्वरित खाये जाने वाले भोज्य पदार्थों का प्रयोग बढ जाता है। 66 प्रतिशत घरो ने बताया कि वे लोग खाना पकने के तुरन्त बाद इसे ग्रहण करते है। 43 प्रतिशत लोग खाना बनाने के बाद इसे खुले मे रख देते है जबकि 32 प्रतिशत लोग इसे फ्रिज मे रखते है। लगभग 50 प्रतिशत घरो मे खाना बनाने के लिए असशोधित तेल का प्रयोग होता है। 55 प्रतिशत लोग त्वरित खाये जाने वाले भोज्य पदार्थ (Fast Food) भी खाते है जो पास की गली की दुकान मे बिकता है और खराब गुणवत्ता वाला व सक्रमित होता है। कुछ लोग घर मे ही पके हुए भोजन को पकने के तीन घटे बाद खाते है जिससे इसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है।

भोजन पकने के बाद इसे ग्रहण करने का समय -

सारणी 4 14 एव प्लेट 4 14 मे चयनित घरो मे भोजन पकने के बाद इसे ग्रहण करने के समय को दिखाया गया है। भोजन पकने के बाद इसे ग्रहण करने का समय भोजन की गुणवत्ता को लेकर बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योकि बनाकर रखे गये भोजन यदि अधिक समय तक ग्रहण नही किये गये तो ये अपनी गुणवत्ता समाप्त कर लेते है और गर्मी के दिनो मे तो बीमारी फैलने के कारण भी बन जाते है।

सारणी 4 14 जौनपुर नगर के घरो के सदस्यो का भोजन पकने के बाद भोजन करने का समय (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	भोजन पकने के बाद तुरन्त	एक या दो घटे बाद	तीन घटे बाद	योग
अत्यधिक कम	72 95	13.53	13 52	100 00
कम	71 02	19 78	9 20	100 00
मध्यम	38 83	45 88	15 29	100 00
उच्च	68 49	28 77	2.74	100 00
अति उच्च	81 18	15 35	3 47	100 00
योग	66 49	24 67	8 84	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यह देखा गया है कि सभी आय वर्ग के अधिकतर घरा म भाजन पकन क बाद तुरन्त ग्रहण किया जाता हे क्योकि भोजन पकन क तुरन्त बाद खाया जाय ता बहुत स्वादिष्ट होता है। लेकिन 13 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के 9 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 15 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के घरा ने बताया कि वे खाना बनन क तीन घटे बाद खाना खाते हे इस प्रकार वे भोजन की बहुत कम गुणवत्ता प्राप्त कर पात हे। क्योकि यदि भोजन बनाके घटो तक इसे रख दिया जाय तो इसमे कीट बेक्टीरिया उत्पन्न हान लगते हे जा भोजन को खराब करने लगते हे। उच्च आय वर्ग के भी 2 पतिशत और अति उच्च आय वर्ग के 3 प्रतिशत घरो ने बताया कि वे भोजन पकने के तीन घटे बाद उसे ग्रहण करते हे लेकिन उसकी गुणवत्ता उतनी खराब नही होती क्योकि ये भोजन को थोडा ठण्डा होते ही रफ्रिजरेटर मे रख देते हे जो खाने की गुणवत्ता को बनाये रखता हे।

भोजन रखने का तरीका -

सारणी 4 15 एव प्लेट 4 13 मे चयनित घरो मे भोजन रखने के विभिन्न प्रकार के तरीके को दिखाया गया है। इसमे कच्ची सब्जिया कच्चे मीट ,पके हुए भोज्य पदार्थ एव अन्य खाने के सामान सम्मिलित है। मुख्य रूप से भोजन रखने के तीन प्रकार के तरीके अपनाये जाते है। या तो इन्हे पकाने के बाद जहा पकाते है वही ढककर रख देते हे या भोजन रखने वाली जाली मे इसे पकाने के बाद रखते है अथवा कुछ लोग रेफ्रिजरेटर मे रखते है।

सारणी 4 15 जौनपुर नगर के चयनित घरो के भोजन को रखने के स्थान की दृष्टि से वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	खुले स्थान मे	खाना रखने की जाली मे	रेफ्रिजरेटर मे	योग
अत्यधिक कम	95.91	4 09	—	100 00
कम	76 67	23 33	—	100 00
मध्यम	38 83	40 78	20 39	100 00
उच्च	5 76	47 94	46 30	100 00
अति उच्च	—	4 95	95 05	100 00
योग	43 44	24 21	32 35	100 00

स्रोत— व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सर्वे मे पता चला भोजन रखने का सर्वाधिक प्रचलित तरीका यह हे कि उस भोजन रखने वाली जाली मे रखा जाता हे जबकि अत्यधिक कम आय वर्ग व कम आय वर्ग क घरो मे भोजन खुले स्थान मे ही ढककर के रख देत है क्योकि व आर्थिक रूप स इस स्थिति मे नही होते कि रेफ्रिजरटर या खाना रखने वाली जाली ही खरीद सके। कई प्रकार कीटाणु जो खुली नाली एकत्रित पानी म पनपते हे और मिट्टी मे रहत हे भोजन का प्रदूषित करन क लिए शीघ्र आ जाते हे यदि इन्हे खुले स्थान मे घटा रख दिया जाता हे। इन घरा म मीट दूध स बनी चीजे, अडे मछली एव कच्ची सब्जिया शीघ्र खराब हो जाते हे। मध्यम आय वर्ग के 20 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के 46 प्रतिशत एव अति उच्च आय वर्ग के 95 पतिशत घरो मे उपर्युक्त चीजे रेफ्रिजरेटर मे रखी जाती है जिससे अधिक समय तक खाने की गुणवत्ता बनी रहती है।इस नगर मे रेफ्रिजरेटर रखना उच्च जीवन स्तर के रहन सहन का प्रतीक हे। बडी सख्या मे मध्यम आय वर्ग के (40 प्रतिशत) और 47 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घरो मे रेफ्रिजरेटर के अभाव म भोजन खाना रखने वाली जाली मे रखा जाता हे।

भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त माध्यम -

भोजन पकाने के लिए कौन सा तेल प्रयुक्त होता है यह बात भी भोजन की गुणवत्ता के लिए महत्वपूर्ण है। भोजन की गुणवत्ता कई घण्टो तक बनी रह सकती है यदि उसे अच्छे किस्म के तेल मे ही पकाया जाय। यहा पर दो प्रकार के तेल– असशोधित या सशोधित तेल का प्रयोग भोजन बनाने मे किया जाता है। बहुत सी बडी कम्पनिया सशोधित तेल को बाजार मे बद (सील) पैकेट या डिब्बे मे भेजती है। जबकि असशोधित तेल स्थानीय छोटी–मोटी मिल से आता है और बाजार मे खुला बिकता है जो सशोधित तेल से काफी सस्ता होता है।

जौनपुर नगर
विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरों मे भोजन का रख रखाव 1999
भोजन करने का समय
100%
80%
60%
40%
20%
0%
तीन घट बाद
एक या दो घटे बाद
भोजन पकने के बाद तुरन्त
अत्यधिक कम
कम
मध्यम
उच्च
अति उच्च
आय समूह
भोजन रखने का स्थान
रेफ्रिजरटर मे
खाना रखन की जाली मे
खुले स्थान मे
भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त तेल
सशाधित तल का प्रयाग
तुरन्त खाये जाने वाले भोज्य पदार्थो की खरीदारी
स्रोत– व्यक्तिग सर्वेक्षण पर आधारित
प्लेट 4 13
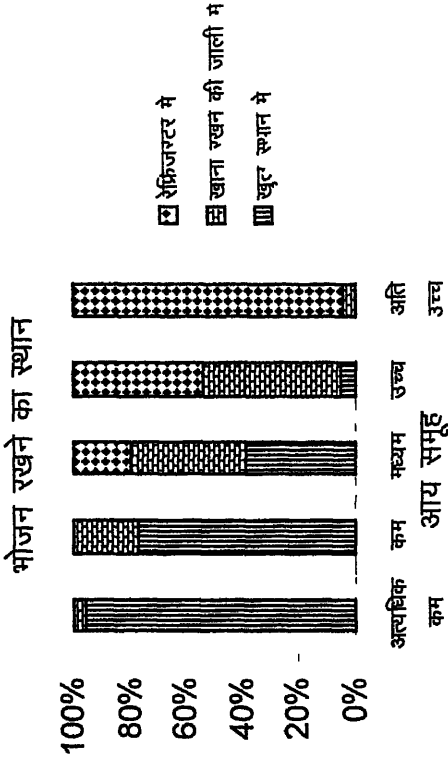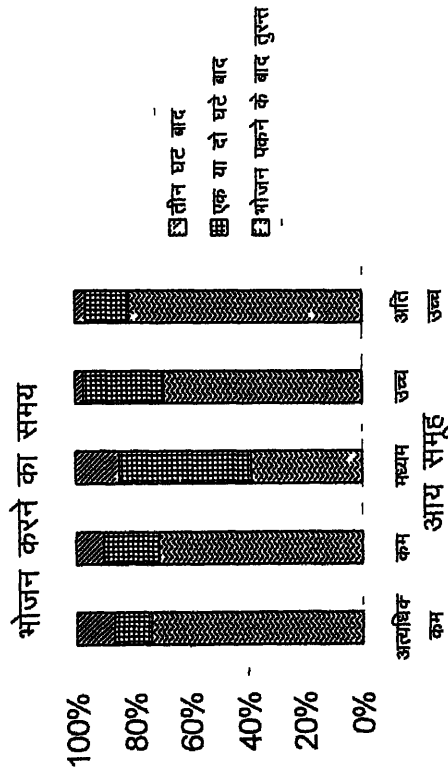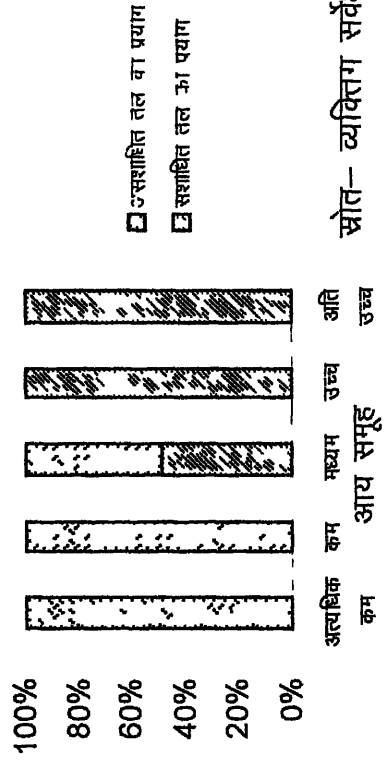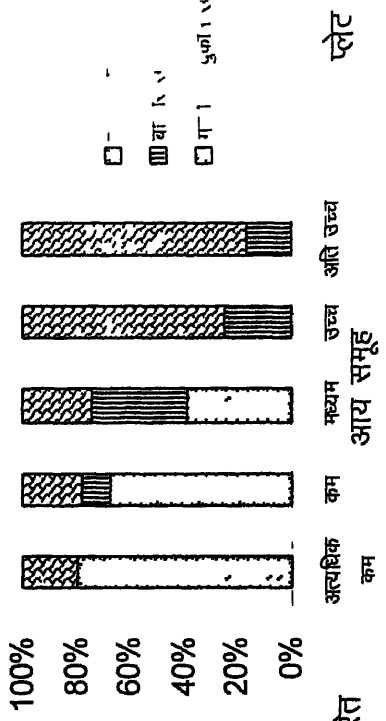
सारणी 4 16 जौनपुर नगर के चयनित घरो का भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त तेल के आधार पर वर्गीकरण (प्रतिशत मे)

आय समूह	सशोधित तेल का प्रयोग	असशोधित तेल का प्रयोग	योग
अत्यधिक कम	—	100 00	100 00
कम	—	100 00	100 00
मध्यम	49 02	50 98	100 00
उच्च	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	100 00
योग	49 80	50 20	100 00

स्रोत-- व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 4 16 ओर प्लेट 4 13 मे वयनित घरो मे प्रयुक्त तेल का विवरण दिया गया है। सभी अत्यधिक कम आय वर्ग व कम आय वर्ग के घरो मे खाना पकाने के लिए असशोधित तेल का ही प्रयोग होता है क्योकि असशोधित तेल बाजार मे सस्ता मिलता है ओर आसानी से उपलब्ध हो जाता है। ये तेल बाजार मे खुले बर्तन मे मिलता है। कम आय वर्ग के लोग प्रतिदिन इसे अपनी आवश्यकतानुसार भोजन पकाने के लिए पोलीथीन मे या अपने घर से बर्तन ले जाकर खरीदते है। इस कच्चे असशोधित तेल मे बना भोजन अस्वादिष्ट भी होता है एव कम आय वर्ग के घरो मे बने इस प्रकार के भोजन की गुणवत्ता भी कम होती है। इन घरो के अधिकतर सदस्य अक्सर पेचिश से परेशान रहते है और कुछ लोगो ने अन्य पेट सम्बन्धी समस्याओ के बारे मे भी बताया, जबकि दूसरी तरफ कोई भी उच्च आय वर्ग का घर असशोधित तेल का प्रयोग नही करता है क्योकि ये लोग महगे सशोधित तेल को खरीदने की स्थिति मे रहते है और ये पर्याप्त शिक्षित होते है और जानते है कि असशोधित तेल के प्रयोग से कुछ समय बाद स्वास्थ्य सम्बन्धी कठिनाई उपस्थित हो सकती है। सशोधित तेल कोलेस्ट्राल को नियन्त्रित करता है और उन लोगो के लिये सर्वाधिक उपयुक्त भोजन पकाने का माध्यम होता है जो किसी न किसी प्रकार के हृदय रोग से पीडित है।

त्वरित खाये जाने वाले भोज्य पदार्थों की खरीदारी -

सारणी 4 17 आर प्लट 4 13 मे चयनित घरो मे तुरन्त खाये जाने वाल भोज्य पदार्थो की खरीदारी को दिखाया गया है (Fast Food) घरो के लोग Fast Food को लगभग दो स्रोतो से खरीदते है। घर के पास की गली की दुकान से या समीप के बाजार से सवेक्षण से पता चला कि 80 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 67 प्रतिशत कम आय वर्ग के व 38 प्रतिशत गध्यम आय वर्ग के घरो मे Fast Food समीप मे स्थित गली की दुकान जो छोटी सी होती है, से खरीदते है। इन घरो मे Fast Food अधिक खरीदे जाते है क्योकि सामान्यत घर गे भोजन कम बनता है (एक ही समय)। सुबह ये लोग घर मे बना हुआ भोजन करते है उसके बाद भूख लगने पर घर के समीप की गली की दुकान से कुछ खरीद कर खाते है। ये गली के दुकान के विक्रेता भोज्य पदार्थों को बहुत ही असुरक्षित रूप से बनाते है। बनाने के स्थान पर मक्खिया घूमती देखी जा सकती है। तैयार खाद्य पदार्थ को पुराने गन्दे अखबार मे बाधकर ग्राहको को देते है या जिस प्लेट मे एक ग्राहक को देते है उसे पानी से धुलकर दूसरे ग्राहक को भी उसी प्लेट मे प्रस्तुत करते हे। कुछ Fast Food दुकान पर खुले हुए ही रखे होते हे। जिससे उन पर धूल और मक्खिया बैठा करती है। ये मक्खिया उन लोगो मे कालरा क साक्रमण को फैलाती है जो इन पदार्थो को अक्सर खाते है। इस प्रकार के खाद्य पूर्णत असुरक्षित वातावरण मे बनते है। दुकान से खरीद कर भी इसे शाम को खाने के लिए रख देते है क्योकि इनके पास पैसे कम होते है ओर उसी मे दोनो समय का भोजन निपटाना होता है। खाना बनाने के लिए लकडी की व्यवस्था करना एव अन्य भोजन सामग्री जुटाना और भी खर्चीला पडता है। इसलिए इन घरो ने Fast Food अधिकता से खरीदे जाते है। कुछ उच्च आय वर्ग के (24 प्रतिशत) एव अति उच्च आय वर्ग के 19 प्रतिशत घरो मे भी Fast Food खरीदे जाते है परन्तु बाजार जाकर अच्छी दुकान से खरीदते है। ये दुकान बेहतर गुणवत्ता वाली चीजे रखते है जो पैकेट मे बद रहती हे और सामान्यत रेफ्रिजरेटर मे रखी हजोती है।। इसी मे केक की दुकान एव जलपान गृह को भी सम्मिलत किया जाता है। लेकिन 75 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 80 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि वे Fast Food नही खरीदते है। इसलिए ये लोग प्रदूषित खाद्य से होने वाले जोखिम को नही

प्लेट 4 14 निम्न आय वर्ग के लोग ठेले पर बिकने वाले त्वरित उपभोग मे आने वाले खाद्य पदार्थ का सेवन करते हुए प्राय देखे जा सकते हैं। (मुहल्ला मखदूमशाह अढहन)

प्लेट 4 15 नगर मे ठेले पर बिकने वाला गन्ने का रस जिस पर मक्खिया बैठी रहती है लोग उसे नजरअन्दाज करके भी सामान्यतया प्रयोग करते हैं।

सारणी 4 17 जौनपुर नगर के चयनित घरो का तुरन्त खाये जाने वाले भोज्य पदार्थों को खरीदने की दृष्टि से वर्गीकरण (प्रतिशत मे)

आय समूह	गली की दुकान से	बाजार से	नही खरीदते	योग
अत्यधिक कम	79 87	—	20 13	100 00
कम	67 50	10 60	21 90	100 00
मध्यम	38 84	35 19	25 97	100 00
उच्च	—	24 65	75 35	100 00
अति उच्च	—	19 31	80 69	100 00
योग	37 24	17 95	44 80	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

यद्यपि खाद्य समस्याये तब भी उपस्थित हो जाती है जब पानी अशुद्ध हो, ईधन सही न हो, कच्ची सब्जिया व खाद्य पदार्थ सही न हो। इन कम आय वर्ग के घरो के सदस्य गली मे बिकने वाले गन्ने के रस का अधिक प्रयोग करते है। सडक के किनारे बिकने वाले गन्ने का रस लोगो मे विभिन्न प्रकार की बीमारी को फैलाता है क्योकि गन्ने का रस एक ग्राहक को जिस गिलास मे प्रस्तुत किया गया थोडी देर बाद पानी से धुलकर दूसरे ग्राहक को भी प्रस्तुत कर दिया जाता है। दुकान के आसपास ढेरो मक्खिया मडराती रहती है।। इस प्रकार कहा जा सकता हे कि कम आय वर्ग के लोग इस प्रकार के खाद्य पदार्थों के सेवन से अक्सर बीमार रहत है। गली, दुकान के Fast Food विक्रेता आयोडीन रहित नमक का उपयोग सस्ता होने के कारण करते है ऐसा भोजन क सेवन से गला घोटू बीमारी होने की आशका रहती है।

विभिन्न आय वर्ग मे भोजन करने का समय अधिकतर घरो मे तभी होता है ज्यो ही इसे पकाया जाता है। लगभग 90 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग मे 75 प्रतिशत कम आय वर्ग एव 35 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के लोग घर मे भोजन पकाने के बाद उसे घटो, खुले स्थान पर ढककर रख देते ओर उसके बाद समय मिलने पर उसे ग्रहण करते है। इनके पास पके हुए भाजन को ठीक प्रकार से रखने की जाली या रेफ्रिजरेटर नही है। जिससे भोजन की

गुणवत्ता आशिक खराब हा जाती है। कम आय वर्ग के सभी लोग असशाधित तेल का ही प्रयाग करते हे क्योकि यह सस्ता हाता है। कम आय वर्ग के घरो के बच्चे Fast Food का सेवन अधिक करते है जिससे वे हल्के जहर का सेवन करते रहते है जबकि उच्च आय वर्ग के घरो मे Fast Food खरीदकर नही आता है।
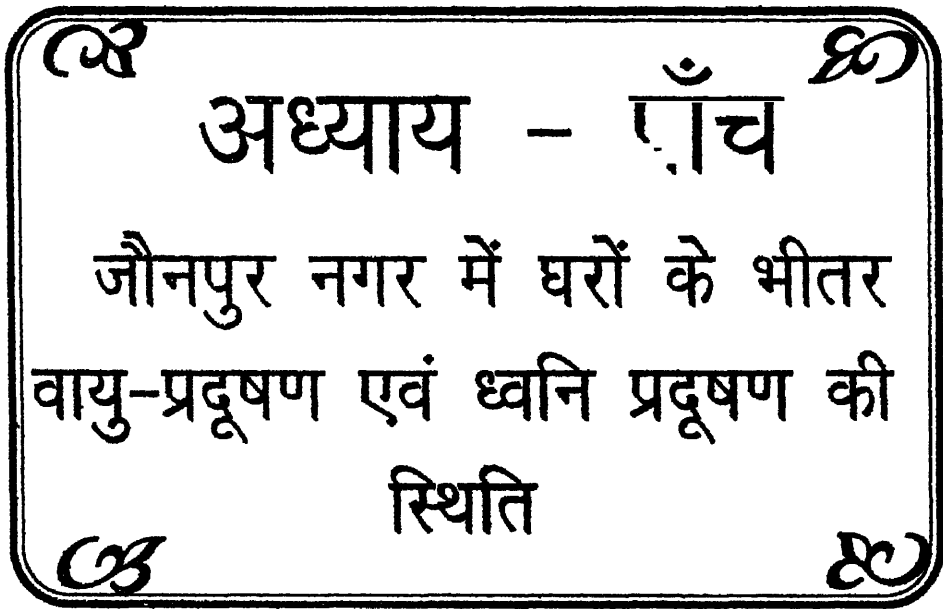
अध्याय - पाँच

जौनपुर नगर में घरों के भीतर वायु-प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण की स्थिति

यह अध्याय पिछल अध्याय से सम्बद्ध है और उसका अगला भाग है। पिछले अध्याय मे घरो के कूडा करकट एव अनुपयोगी ठोस अपशिष्ट का विवरण, घरो म कीडे मकोड मक्खी मच्छर के प्रकोप का विवरण भाजन क रख–रखाव का विवरण दिया गया। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि कुल 1580 चयनित घरो मे से लगभग 40 प्रतिशत घरो मे त्याज्य ठोस अपशिष्ट कूडा खुले बर्तन मे रखा जाता हे दूसरे 40 प्रतिशत घरो मे कूडा बद बर्तनो मे ही रखा जाता हे। बद बर्तनो का प्रयोग उच्च आय वर्ग के घरो मे होता है। लगभग 43 प्रतिशत घरो से कूडा सडक के किनारे फेका जाता हे। 29 प्रतिशत घरो से कूडा, कूडा रखने के स्थान पर ही फेका जाता है। 68 प्रतिशत घरो के लोगो ने बताया कि घर के आसपास कूडा बिखरा रहता है। इनमे विशाल मात्रा मे औद्योगिक, व्यापारिक अपशिष्ट भी सम्मिलित है। यहा पर नगर पालिका द्वारा कूडा करकट उठाये जाने की व्यवस्था नियमित नही है। 22 प्रतिशत घरो के मुहल्ले से कूडा सप्ताह मे एक बार उठाया जाता है। 23 प्रतिशत घरो के मुहल्ले से पता चला है कि कूडा प्रतिदिन उठाया जाता हे। ये साफ सुथरे उच्च आय वर्ग के घरो के मुहल्ले है। चयनित कुल 1580 घरो मे से अधिकाश घरा मे कम अधिक मात्रा मे मक्खी मच्छर कीडे–मकोडे पाये ही जाते है। 33 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके घर मे चूहे चपडे, झीगुर, मक्खी, मच्छर एव कई प्रकार के कीडे मकोडे आदि सभी बीमारी फैलाने वाले कारण विद्यमान है। जबकि 32 प्रतिशत घरो ने बताया कि इनके घर मे उपर्युक्त कोई भी बीमारी फैलाने वाले कारण नही पाये जाते। केवल 34 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके घर मे उपयुक्त रोशनदान एव खिडकी विद्यमान है। मक्खी मच्छर कीट आदि से बचने के लिए अधिकाश घरो मे मच्छरदानी का प्रयोग होता है। कुल चयनित घरो मे लगभग आधे घरो की रसोईघर व कमरो मे कीटाणुओ से बचने के लिए किसी प्रकार की दपाई का छिडकाव नही होता है। कुल चयनित घरो मे से 66 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके घर मे भोजन भोजन पकने के तुरन्त बाद किया जाता है यद्यपि नगर मे अधिकाश घरो मे रेफ्रिजरेटर पाया जाता है और इसे प्रतिष्ठा परिचायक समझा जाता है। सम्पूर्ण चयनित घरो मे से लगभग आधे घरो मे भोजन पकाने के लिए असशोधित तेल का प्रयोग होता है। धन की कमी के कारण, भोजन पकाने की चीजो की कमी के कारण व ईंधन की कमी के कारण कम आय वर्ग के घरो मे Fast Food (तरन्त खाये जाने वाले खाद्य पदार्थ) अधिक

खरीदे जाते है।

इस अध्याय म घर म हान वाल वायु प्रदूषण एव ध्वनि प्रदूषण का वर्णन किया गया हे यह अध्याय दा भागा म विभाजित है। प्रथम भाग मे इस नगर के घरो म होने वाले वायु प्रदूषण का वर्णन किया गया हे एव द्वितीय भाग म इस नगर के घरो मे होने वाले ध्वनि प्रदूषण का वर्णन किया गया है।

घर के अन्दर होने वाला वायु प्रदूषण -

पर्यावरण शास्त्रियो का ध्यान मुख्य रूप से वायुमण्डल के प्रदूषण पर रहता है परन्तु वर्तमान मे कुछ पर्यावरण विदा का ध्यान घर के अन्दर होने वाले वायु प्रदूषण पर गया हे जो मनुष्य के जीवन को सीधे प्रतिदिन प्रभावित करता है क्योकि मनुष्य 24 घण्टो मे से 16 घण्टे से अधिक समय घर मे व्यतीत करता है। प्रदूषक जो घर के बाहर के वातावरण को प्रदूषित करते है वही घर के अन्दर के वातावरण को भी प्रदूषित करते है। कुछ उदाहरणो मे ये प्रदूषण घर के बाहरी स्रोतो से ही अन्दर आते है। इस विषय मे हुए आधुनिक अध्ययन बताते है कि घर क अन्दर होने वाले वायु प्रदृषण बाहर के वायु प्रदूषण के सीमा स्तर को बताते है। नाइट्रोजन डाईऑक्साइड का सचयन घर के अन्दर बाहर के वायुमण्डल से अधिक होता हे। घर के अन्दर उत्पन्न होने वाले प्रदूषण उच्च प्रभावी सीमा स्तर तक पहुच जाते है क्योकि यह थोडी ही जगह पर अधिक देर तक सकेद्रित रह जाते है जैसे कमरो मे या हाल मे जहा से वायु शीघ्र निकल नही पाती। तीन मुख्य तथ्य प्रमुख है जो घर के अन्दर के प्रदूषण के सीमा स्तर को बताते है– प्रदूषण का स्रोत कितना तीव्र है धुआ या अन्य वायु प्रदूषण घर से बाहर निकलने मे कितना समय लेता है तृतीय कोई विशेष प्रदूषक किसी विशेष बीमारी को कितनी तीव्रता से फेलाता है। वर्तमान अध्ययन घर के अन्दर होने वाले वायु प्रदूषण से होने वाली स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओ पर केन्द्रित है। घर मे उत्पन्न होने वाला प्रदूषण खाना बनाने से, धुलाई करने से किसी चीज को जलाने, गर्म करने से एव धूम्रपान करने से होता है। वर्तमान मे किये गये आधुनिक शोधो से पता चलता है कि घर के अन्दर होने वाला प्रदूषण बाहर के प्रदूषण से अधिक खतरनाक होता है। लगभग दस प्रदषक ऐसे है जो मख्यत घर के वातावरण को पटषित

करते है। ये बाहर बहुत कम पाये जाते है। बच्चे घर के बूढे सदस्य गर्भवती महिलाये जो पूरे समय घर मे ही रहती है घर के वातावरण स अधिक प्रभावित हाते है। घर मे होन वाला प्रदूषण कई कारणो पर निर्भर रहता हे। इन कारणो म छोटे–छोटे धातु के कण एव धूल मिटटी क कण भी होते है जो स्वास्थ्य पर बहुत हानिकारक प्रभाव छोडते है। बच्चे विशेष रूप से अधिक प्रभावित होते है। छोटे से घर मे अधिक सदस्यो के रहने से (अत्यधिक भीड से) भी प्रदूषण सम्बन्धी बीमारी फैलती है व अत्यधिक आद्रता से घर के सदस्य बीमार पडते है।

इस अध्याय मे घर के अन्दर होने वाले निर्जीव वायु प्रदूषण पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। सर्वाधिक मुख्य प्रदूषक किसी चीज का जलना है एव सल्फर डाईऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड नाइट्राजन डाईऑक्साइड, फारमलडिहाइड, एवेस्टोस, जिक एव अन्य प्लास्टिक के कण वायु प्रदूषण के कारण है जो घर एव बाहर सभी जगह समान रूप से प्रभावी है। घर के अन्दर का वायु प्रदूषण स्तर मुख्य रूप से भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त ईंधन, घर के वातायन, एव धूम्रपान के स्तर पर निर्भर रहता है।

जौनपुर नगर के चयनित घरो के वायु प्रदूषण के बारे मे जानकारी लेने हेतु जिन विषयो पर ध्यान केन्द्रित किया गया वे हे भोजन पकाने का स्थान कहा है? रसोई घर है बरामदे मे वनता है या उसी कमर मे बनता हे जिसमे वे रहते हे। भोजन पकाने के लिए कौन सा ईंधन प्रयुक्त होता है (लकडी/कोयला/गोबर के कडे से /सूखी पत्तियो से/ केरोसीन तेल से/ बिजली से या गेर (एलपीजी) से), घर मे सिगरेट, बीडी का कितना प्रयोग होता है (24 घण्टे मे प्रयुक्त होने वाली सिगरेट बीडी की सख्या)। बाहर के स्रोतो से घर मे धूआ आता है अथवा नही, यदि आता है तो वह माध्यम क्या है (वाहनो से, उद्योगो से अथवा पडोस से)। घर मे धूआ देर तक बना रहता है या उपुयक्त वातायन से शीघ्र निकल जाता है। उपर्युक्त स्रोतो के अतिरिक्त बहुत से घरो मे मच्छरो को भगाने के लिए मच्छर अवरोधी अगरबत्ती/टिकिया का प्रयोग होता है। इसी प्रकार के प्रदूषको का वर्णन पिछले अध्याय मे किया गया है।

सारणी 5 1 एव प्लेट 5 1 मे इस नगर के सम्पूर्ण चयनित 1580 घरो के अन्दर के वायु प्रदूषण की स्थिति को दिखाया गया है। सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि

मे या उसी कमरे मे बनता है जिसम व रहत है। 44 प्रतिशत घरो मे भाजन पकाने के लिए गेस का प्रयोग होता हे जबकि 37 प्रतिशत घरो म भाजन पकाने क लिए लकडी कोयला सृखी पत्तिया, गोबर के कडे का प्रयोग हाता है। घर मे किसी न किसी सदस्य का धूम्रपान करना आम बात है। 55 प्रतिशत स अधिक घरो मे धूम्रपान होता है। 27 प्रतिशत घरो मे 24 घण्टे मे 11 से 15 सिगरेट/बीडी का प्रयोग होता है। लगभग 56 प्रतिशत घरो ने बताया कि घर मे धूआ बाहर से (वाहनोसे पडोस से उद्योगो से) अधिक आता है। 50 प्रतिशत से अधिक घरो मे उपर्युक्त वातायन (रोशनदान खिडकी) न होने से घर म उत्पन्न होने वाला धूआ अधिक समय तक घर मे ही बना रहता हे शीघ्र बाहर नही निकल पाता।

सारणी 5 1 जौनपुर नगर के कुल चयनित घरो के अन्दर वायु प्रदूषण की स्थिति (प्रतिशत मे)

	घर मे वायु प्रदूषण	प्रतिशत
1 भोजन पकाने का स्थान	1 रसोई घर मे	55 47
	2 बरामदे मे या अन्य किसी कमरे मे	44 53
2 भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त ईंधन	1 लकडी, कोयला गोबर के कडे, सुखी पत्तियो से	37 80
	2 केरोसीन तेल या बिजली द्वारा	17 63
	3 गैस द्वारा	44 57
3 घर मे धुमपान	1 होता है	55 52
	2 नही होता है	44 48
4 24 घटे मे प्रयुक्त होने वाली सिगरेट/बीडी की सख्या	1 5 से कम	30 68
	2 6 से 10	32 45
	3 11 से 15	27 67
	4 15 से अधिक	9 20
5 बाहर से घर मे धूये का प्रवेश	1 होता है	55 50
	2 नही होता है	44 50
6 बाहर से घर मे धूआ आने का स्रोत	1 पडोस से	22 72
	2 वाहनो से	29 08
	3 अन्य सभी कारणो से	48 20
7 घर से धूआ बाहर निकलने की स्थिति	1 खिडकी दरवाजे से बाहर निकल जाता है	54 06

जौनुपर नगर

सम्पूर्ण चयनित घरो मे वायु प्रदूषण की स्थिति

1999

1 भोजन वनानेका स्थान
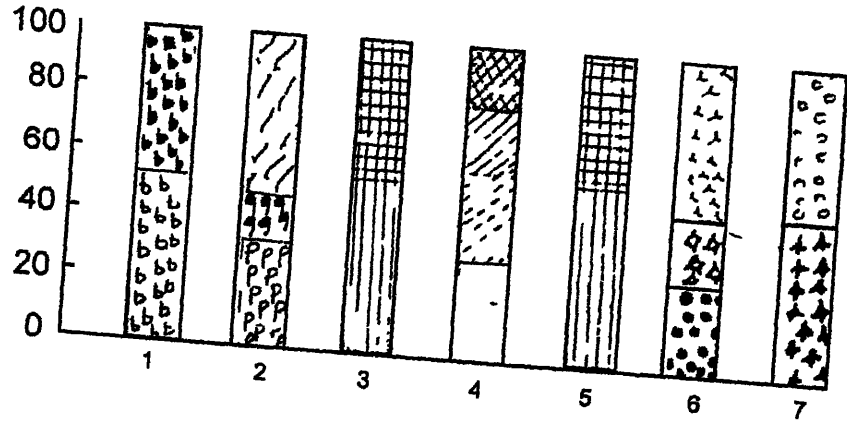
- अलग रसोइघर म
- बरामदेम अन्य किसी कमरे म या खुले म

2 भोजन बनाने केलिए प्रयुक्त ईंधन

- कोयला लकडी सूखी पत्तियाँ गोबर क कंडे
- मिट्टी का तेल / बिजली
- गैस

3 घर मेधुम्रपान

- होता ह
- नहीहोता ह

4 एक दिन मे एक व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त सिगरेट / बीडी की सख्या

- < 5
- 6-10
- 11-15
- >15

5 बाहर से घर मे धूये का प्रवेश

- होता ह
- नहीहोता ह

6 बाहर स धूऑ आनेका स्रोत

- पडोस से
- वाहनो स
- सभी कारणोसे

7 धूआ बाहर निकलने की स्थिति

- खिडकी दरवाज स शीघ्र
- घर म ही बना रहता है

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 51

भोजन पकाने का स्थान -

यह देखा गया है कि खाना बनाने के स्थान का लोगो के स्वास्थ्य से गहरा सम्बन्ध है। सारणी 5 2 एव प्लेट 5 2 म विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे खाना पकाने के स्थान का वर्णन किया गया है। सर्वेक्षण मे यह देखा गया कि जो अत्यधिक कम आय वर्ग के घर है उनमे किसी भी घर मे रसोई घर नही है क्योकि ये लोग एक कमरे के घर मे ही रहते है और सभी गतिविधिया उसी एक कमर म ही सम्पादित करते है। कम आय वर्ग के भी 5 प्रतिशत घरो म ही रसोई का कमरा हैं वह भी कभी–कभी रहने के लिये ही प्रयुक्त होता है। बाकी 94 प्रतिशत कम आय वर्ग के घरो का भोजन बरामदे मे या रहने वाले कमरे मे बनता है। मध्यम आय वर्ग के 71 प्रतिशत घरो मे, उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सभी घरो मे अलग से रसोई का कमरा है। उपर्युक्त विवरण खाना बनाने का स्थान एव घरो की सम्पन्नता मे राम्बन्ध को दिखाता है। कम आय वर्ग क धरो मे खराब आर्थिक स्थिति के कारण अलग से रसोई का कमरा नही होता अत भोजन उसी कमरे मे बनता है जिसमे शयन होता है और स्नान होता है लेकिन झुग्गी झोपडी मे रहने वाले लोग भोजन खुले स्थान मे (घर के बाहर) बनाते है। कम आय वर्ग मे महिलाये बहुत छोटी उम्र से ही भोजन बनाना शुरू कर देती है इसलिए अपने जीवन के अधिक समय तक ये प्रदूषको के अधिक सम्पर्क मे रहती है। भारतीय स्त्रियो की औसत जीवन प्रत्याशा 55 वर्ष है, जो पिछले 40 वर्ष से धूए मे भोजन पकाने के कारण कम है। जबकि अमेरिका जापान मे महिलाओ के सामने ऐसी स्थिति नही रहती है अत यहा महिलाये औसत पुरूषो की आयु से सात–आठ वर्ष अधिक ही जीवित रहती है। भारत मे स्त्रियो की औसत आयु पुरूषो से कम होने का एक मुख्य कारण यह भी है कि वे प्रदूषको के प्रभाव मे अधिक रहती है।

जौनपुर नगर

विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे वायु प्रदूषण की स्थिति
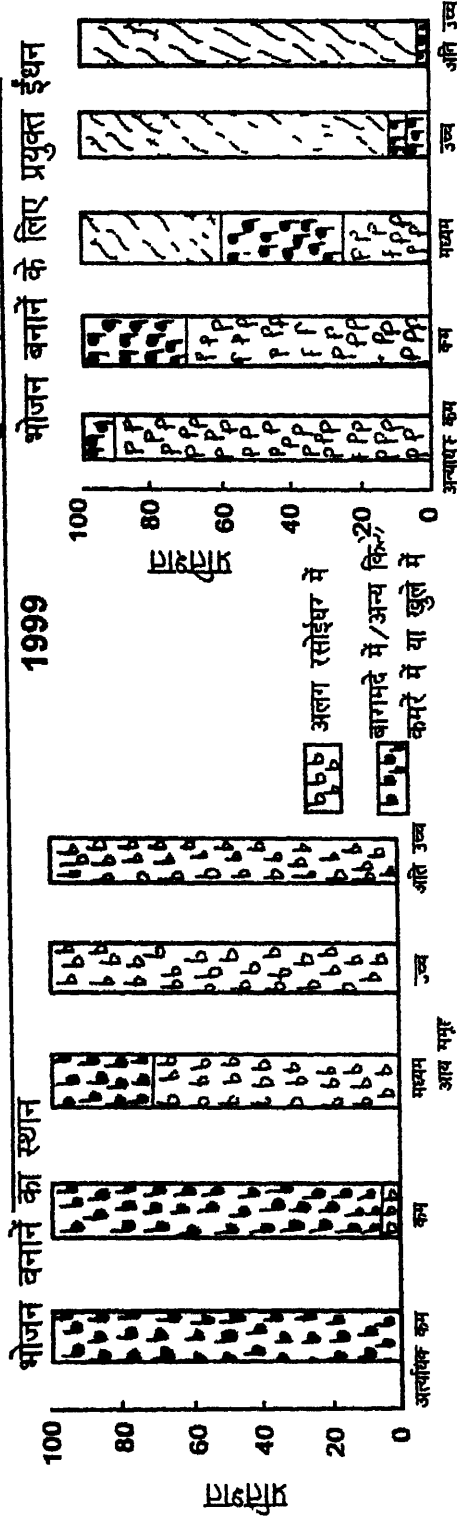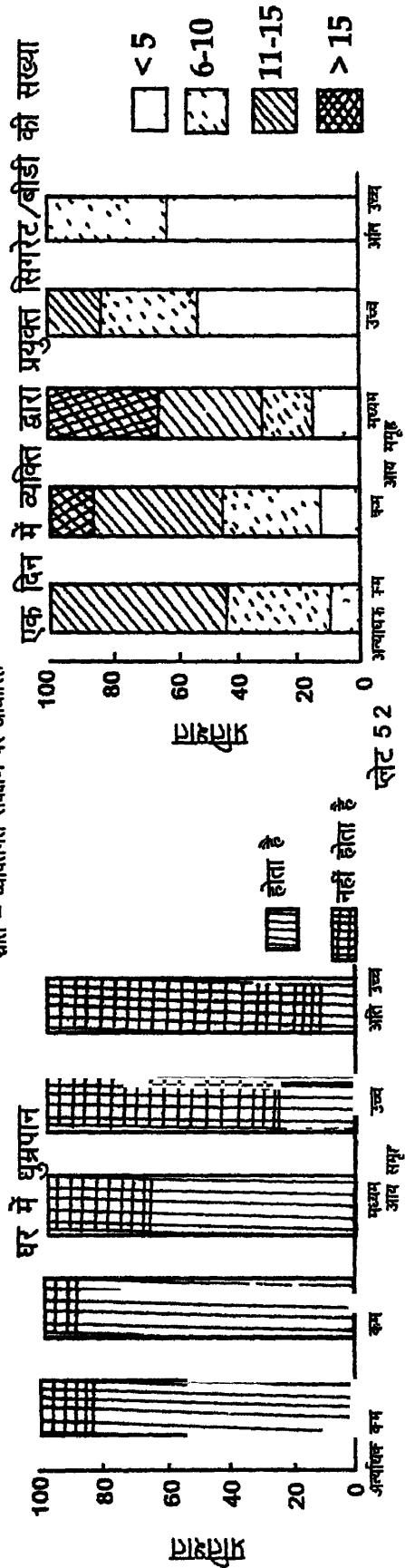
1999

स्रोत व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

प्लेट 63
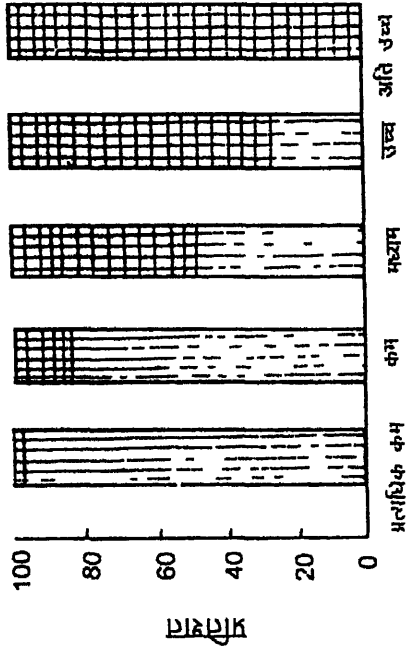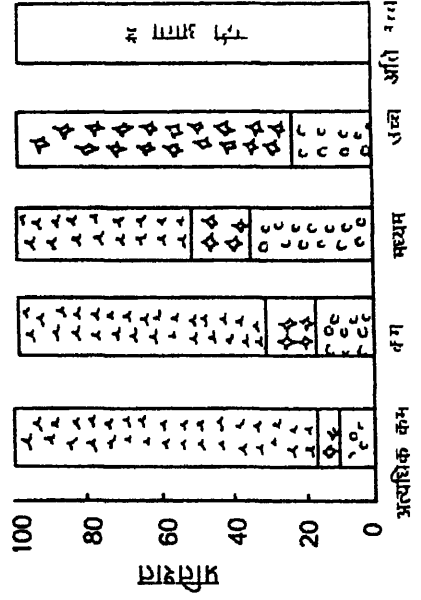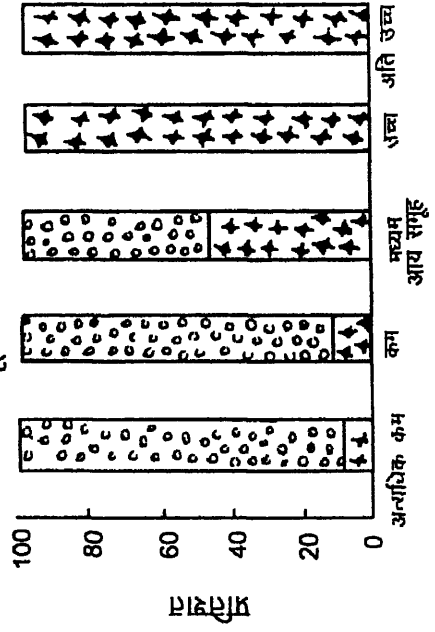
सारणी 5 2 जौनपुर नगर के चयनित घरो का भोजन पकाने के स्थान की दृष्टि से वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	अलग रसोईघर मे	बारामदे या अन्य किसी कमरे मे	योग
अत्यधिक कम	--	100 00	100 00
कम	6 00	94 00	100 00
मध्यम	71 35	28 65	100 00
उच्च	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	100 00
योग	55 47	44 53	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

भोजन पकाने के लिए प्रयुक्त ईंधन -

अत्यधिक कम आय वर्ग से लेकर अत्यधिक उच्च आय वर्ग के घरो मे भोजन पकाने के लिए सर्वथा भिन्न प्रकार के ईंधनो का प्रयोग होता है। इस नगर मे भोजन पकाने के लिए सात मुख्य प्रकार के ईंधनो का प्रयोग विभिन्न घरो मे होता है– लकडी, कोयला, गोबर के कडे, सूखी पत्तिया, मिटटी के तेल से, बिजली अथवा गैस से।

सारणी 5 2 और चित्र 5 2 मे विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे प्रयुक्त ईंधन को बताया गया है। सर्वेक्षण से पता चला है कि अत्यधिक कम आय वर्ग के 88 प्रतिशत घरो मे व कम आय वर्ग के 72 प्रतिशत घरो मे भोजन, गोबर के कडे से, लकडी तथा सूखी पत्तिया इकट्ठा करके बनता है (लकडी, पत्तिया, गोबर, जगह–जगह से उठाकर, बीनकर ले आते है)।

प्लेट 54 निम्न आय वर्ग के झोपडी मे लकडी के ईंधन से खाना पकाने का दृश्य मुहल्ला गुलरचक (उमरपुर)
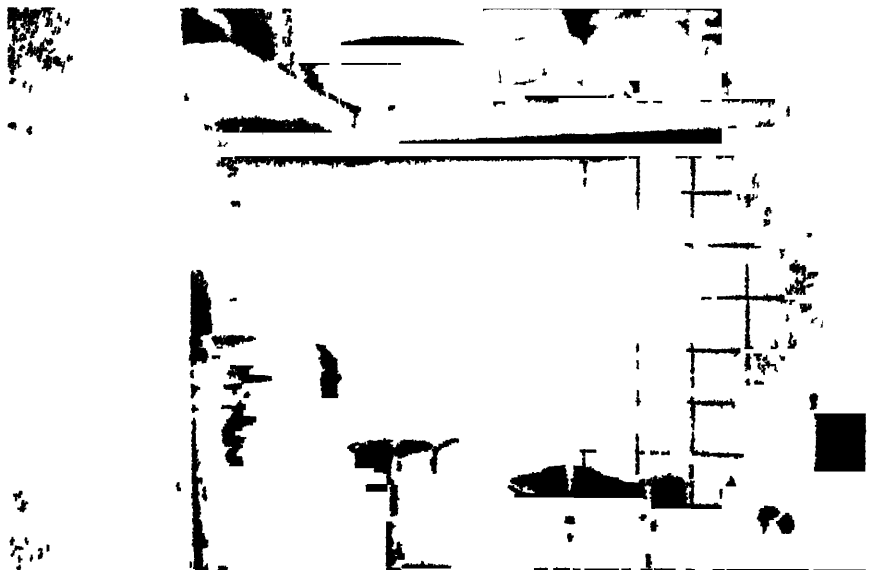
प्लेट 55 उच्च आय वर्ग का रसोईघर उपयुक्त वातायन युक्त है जिसमे गैस पर खाना बनाया जाता है।

प्लेट 56 निम्न आय वर्ग की आवासीय झोपडी जिसमें ईंधन के रूप मे लकडी व गोबर की उपली को प्रयोग मे लाने हेतु रखा मया है। मुहल्ला रामनगर, भडसरा (मतापुर)

मध्यम आय वर्ग के 25 प्रतिशत घरो मे एव उच्च आय वर्ग के 2 प्रतिशत घरो मे भी भोजन लकडी अथवा कोयले पर बनता है जिसे वे बाजार से खरीदते हैं। उन घरो मे जिनमे इस प्रकार के ईंधन का प्रयोग होता है वायु प्रदूषण सर्वाधिक होता है क्योकि ये ईंधन सर्वाधिक तीव्र प्रदूषक होते हैं। मिट्टी के तेल से एव बिजली से भोजन बनाना भी बहुत आम है परन्तु ये माध्यम भी कम आय वर्ग के घरो मे ही प्रचलित है। उच्च आय वर्ग के 11 प्रतिशत घरो मे एव अति उच्च आय वर्ग के 2 प्रतिशत घरो मे भी मिट्टी के तेल का प्रयोग कभी–कभी गैस की कम आपूर्ति होने पर होता है। बहुत से कम आय वर्ग के घरो मे भोजन पकाने के लिए बिजली का प्रयोग बहुत होता है परन्तु इनके पास गैर कानूनी विद्युत आपूर्ति स्रोत अधिकाशतया पाया जाता है। ये लोग कोई बिजली का बिल नही देते है जबकि बिजली का प्रयोग न केवल रोशनी करने के लिए करते हैं अपितु पूरा खाना भी बिजली से बनाते है। बिजली के हीटर का प्रयोग नगर के पुराने बसे घरो मे अधिकाश होता है।

सारणी 5 3 जौनपुर नगर के चयनित घरो का भोजन पकाने के लिए प्रयोग मे आने वाले ईंधन की दृष्टि से वर्गीकरण (प्रतिशत मे)

आय समूह	लकडी, कोयला या गोबर की उपली द्वारा	मिट्टी के तेल या बिजली द्वारा	गैस द्वारा	योग
अत्यधिक कम	88 67	11 33	---	100 00
कम	72 43	27 57	---	100 00
मध्यम	25 73	34 47	39 80	100 00
उच्च	2 20	11 78	86 02	100 00
अति उच्च	---	2 97	97 03	100 00
योग	37 80	17 63	44 57	100 00

स्रोत- व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

अत्यधिक कम आय वर्ग के 11 प्रतिशत घरो मे, कम आय वर्ग के 27 प्रतिशत घरो मे एव मध्यम आय वर्ग के 34 प्रतिशत घरो मे मिट्टी के तेल का प्रयोग हाता है। यह घरो मे तीव्र वायु प्रदूषण का कारण बनता है क्योकि स्टोव से निकलता कार्बन मोनोऑक्साइड तीव्र वायु प्रदूषक है। परन्तु स्टोव पर खाना बनाने से या कार्बन मोनोऑक्साइड से किसी पकार की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या के बारे मे किसी ने नही बताया। लम्बे समय तक इस प्रकार के वायु प्रदूषको के सम्पर्क मे रहने से, विशेषकर महिलाओ के जो प्रतिदिन चार घटे ईंधन के सम्पर्क मे रहती है जीवन प्रत्याशा कम हो जाती है। गरीब घरो मे अधिकतर देखा जाता है कि भोजन पकाते समय बच्चे मा के आसपास ही रहते है जिससे उनमे भी श्वास सम्बन्धी बीमारिया पायी जाती है। उपयुक्त वातायन की सुविधा न होने पर यह समस्या और भी व्यापक तौर पर देखी जा सकती है। गैस सर्वाधिक उपयुक्त ओर स्वच्छ, भोजन पकाने का ईंधन होता है। इस ईंधन का प्रयोग सम्पन्न घरो मे होता है। 86 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 97 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि उनके घर मे भोजन पकाने के लिए गैस

प्लेट 57 मुहल्ला अहमद खॉ मण्डी मे ईंधन के रूप मे प्रयोग करने के लिए बनाई गयी गोबर की उपली का दृश्य।

प्लेट 58 गुलरचक मुहल्ले के निम्न आय वर्ग के लोग ईंधन के रूप मे सुखी लकडी को जगह–जगह से एकत्रित करके लाते हुए।

(एलपीजी) का ही प्रयोग होता है। मध्यम आय वर्ग के भी 44 प्रतिशत घरा मे गैस का प्रयोग होता है क्योकि शिक्षित महिलाय गैस पर ही भोजन बनाना पसद करती है एव उसी की माग करती है।

घर में धूम्रपान -

धूम्रपान से होन वाला प्रदूषण अन्य पर्यावरणीय प्रदूषण से किन्ही अर्थ मे भिन्न होता है क्योकि धूम्रपान के प्रदूषण को मनुष्य अपनी इच्छा से उत्पन्न करता है और ग्रहण करता हे। इस प्रकार के प्रदूषण से सर्वाधिक वह व्यक्ति प्रभावित होता है जो धूम्रपान करता है परन्तु आसपास खडे व्यक्ति भी लगभग उतना ही प्रभावित होते है। धनी घरो एव गरीब घरो मे जो धूम्रपान होता है उससे सामान्य रूप से वे लोग प्रभावित होते है। सिगरेट और बीडी पीने से तात्कालिक स्वास्थ्य पर काई दुष्प्रभाव परिलक्षित नही होता परन्तु लम्बे समय तक इसका प्रयोग करने से मृत्यु का समय नजदीक आ जाता है। प्रत्येक चार धूम्रपान करने वालो मे से एक की मृत्यु शीघ्र अपनी इस बढी हुयी आदत के कारण हो जाती है। इस विषय मे किये गये वर्तमान शोधो से पता चलता है कि धूम्रपान करने वाले लोगो मे युवावस्था व प्रौढावस्था मे होने वाली मृत्यु तीन गुना अधिक होती हे। उन लोगो से जो धूम्रपान नही करते है घर मे धूम्रपान करना घर के वायु प्रदूषण को बढाने का एक और माध्यम है। सारणी 5 4 और प्लेट 5 2 मे चयनित घरा के सदस्यो द्वारा धूम्रपान करने अथवा न करने का वर्णन किया गया है।

सारणी 5 4 जौनपुर नगर के चयनित घरो का धूम्रपान से होने वाले प्रदूषण के आधार पर वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	धुमपान होता है	नही होता है	योग
अत्यधिक कम	81 76	18 24	100 00
कम	88 69	11 31	100 00
मध्यम	62 62	37 38	100 00
उच्च	25 75	74 25	100 00
अति उच्च	18 81	81.19	100 00
योग	55 52	44 48	100 00

यह पाया गया कि अत्यधिक कम आय वर्ग के 81 प्रतिशत घरो मे, कम आय वर्ग के 88 प्रतिशत घरा म व मध्यम आय वर्ग के 62 प्रनिशत घरो मे एक या कई सदस्यो द्वारा धूम्रपान होता ह। इनम स अधिकाश लागो न बताया कि वे बीडी पीते है जो स्थानीय बीडी उद्योग मे बनती हे। य लोग बीडी का प्रयोग इसलिए करते हे कि यह सिगरेट से लगभग दस गुना सस्ती होती हे। बीडी सिगरेट से अधिक दुष्प्रभाव स्वास्थ्य पर डालती है ओर बीडी से सिगरेट की अपेक्षा अधिक धूआ निकलता है। उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के भी कुछ घरो ने बताया कि उनके घर मे एक या दो सदस्य धूम्रपान करते है ये लोग सिगरेट ही पीते है। धूम्रपान करने वाल लागो क अधिक सम्पर्क मे रहने वाले लोग भी धूए से उतना ही प्रभावित हाते है। और उनम भी फफड क कैसर जैसी बीमारी पायी जा सकती हे जो स्वय धूम्रपान नही करत है। सर्वेक्षण क दोरान यह भी पता चला कि धूम्रपान करने वाले अधिकाश लोग 20 से 30 वर्ष की उम्र के है इससे पता चलता हे कि घर मे धूम्रपान द्वारा वायू प्रदूषण करने वाले युवा वर्ग के लोग ही अधिक है।

प्रतिदिन प्रयोग की जाने वाली सिगरेट अथवा बीडी की सख्या -

सारणी 5 5 और प्लट 5 2 मे एक दिन मे प्रयोग की जाने वाली सिगरेट अथवा बीडी की सख्या को बताया गया है। यह पाया गया कि एक दिन मे किसी घर मे जितनी अधिक सिगरेट बीडी की सख्या प्रयुक्त होती है श्वास सम्बन्धी बीमारी से ग्रसित लोगो की सख्या भी उतनी अधिक होती हे।

सारणी 5 5 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे एक दिन मे प्रयोग की जाने वाली सिगरेट अथवा बीडी की सख्या (पतिशत मे)

आय समूह	< 5	6 – 10	11 – 15	> 15	योग
अत्यधिक कम	11 95	39 62	48 43	—	100 00
कम	14 85	32 86	41 69	10 60	100 00
मध्यम	9 46	16 75	38 35	35 44	100 00
उच्च	54 79	35 35	9 86	—	100 00
अति उच्च	62 37	37 63	—	—	100 00
योग	30 68	32 45	27 67	9 20	100 00

इस नगर के घरा क सर्वेक्षण मे पता चला कि अत्यधिक कम आय वर्ग के 48 प्रतिशत घरो मे, कम आय वर्ग के 41 प्रतिशत घरो मे व मध्यम आय वर्ग के 38 प्रतिशत घरो म एक सदस्य द्वारा प्रतिदिन 11 से 15 सिगरट अथवा बीडी का प्रयोग हाता ह। सर्वेक्षण मे यह भी पता चला ह कि ये लाग और सिगरेट/बीडी का प्रयोग करना चाहते है परन्तु पैस की कमी के कारण अपनी इच्छा की पूर्ति नही कर पाते। इन लोगो ने यह भी बताया कि ये भोजन के बिना तो रह सकते है परन्तु एक भी दिन धूम्रपान किये बिना नही रह सकते। इस प्रकार इन लोगो के घर मे सिगरेट/बीडी का धूआ महक बराबर बनी रहती है। उच्च आय वर्ग के अधिकतर लोगो ने बताया कि यदि वे धूम्रपान अधिक करते है तो घर से बाहर करते है या घर मे एक दिन मे 5 से कम सिगरेट का प्रयोग करते है। इससे पता चलता है कि ये लोग शिक्षित है और धूम्रपान से होने वाले दुष्प्रभाव से परिचित है। मध्यम आय वर्ग के 35 प्रतिशत घरो ने व कम आय वर्ग के 10 प्रतिशत घरो ने बताया कि एक दिन मे एक सदस्य द्वारा 15 से अधिक सिगरेट/बीडी का प्रयोग होता है। ये लोग अत्यधिक धूम्रपान से होने वाले दुष्प्रभाव की परवाह नही करते क्योकि इससे तात्कालिक प्रभाव तो पडता नही है इसलिए उन्हे पता नही चलता। बीडी जो गरीब परिवार मे अधिक प्रयुक्त होती है सिगरेट से कई गुना अधिक हानिकारक होती है एव इस पर कोई वेधानिक चेतावनी भी नही लिखी होती जो कि मनुष्य का उससे होने वाले तीव्र दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक करता है।

बाहर से घर में धूआ आने का स्रोत -

घर के अन्दर उत्पन्न होने वाले वायु प्रदूषण का स्रोत केवल खराब ईंधन जेसे लकडी कोयला, सूखी पत्तिया गाबर के कडे आदि ही नही होते या धूम्रपान या कीट, मच्छरो को मारने के लिए प्रयुक्त माध्यम ही नही होते बल्कि बहुत सा धूआ बाहर के स्रोतो से भी घर मे आता है। सारणी 56 एव प्लेट 53 मे इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है।

सारणी 5 6 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे बाहर से धूआ आता है अथवा नही आता है एव इसके स्रोत (प्रतिशत मे)

	धूआ घर मे आता है		धूआ आने के स्रोत		
आय समूह	हा	नही	पडोस से	वाहनो से	सभी कारणो से
अत्यधिक कम	98 11	1 89	12 58	7 54	79 88
कम	85 86	14 14	16 96	11 66	71 38
मध्यम	58 42	41 58	38 60	19 90	41 50
उच्च	35 14	64 86	22 77	77 23	—
अति उच्च	—	100 00	—	—	—
योग	55 50	44 50	22 72	29 08	48 20

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सर्वेक्षण मे विभिन्न आय वर्ग के लगभग सभी घरो ने बताया कि घर मे बाहर से धूआ आता है केवल अति उच्च आय वर्ग के कुछ घरो को छोडकर क्योकि ये लोग साफ सुथरे सम्भ्रान्त मुहल्ले मे रहते हे जहा सभी उच्च आय वर्ग के ही लोग रहते है। ऐसी स्थिति नगर के बाहरी क्षेत्रा मे अधिक पायी जाती है। इन कालोनियो से होकर भारी वाहन नही गुजरते है। लेकिन 97 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 85 प्रतिशत कम आय वर्ग के व 58 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के ओर 35 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घरो मे बताया गया कि बाहर के स्रोतो से घर मे धूआ कभी कम कभी अधिक मात्रा मे आता ही है। ये घर घने बसे क्षेत्रो मे स्थित है जहा विभिन्न आय वर्ग के घर पास–पास सटे हुए बने है या सडक के किनारे बने है। इसलिए यदि घर मे धूआ उत्पन्न करने वाले ईंधन का प्रयोग नही होता है तो भी बाहर से धूआ आकर घुटन भरा वातावरण तेयार कर देता है।

सारणी 5 6 मे इस नगर के चयनित घरो मे बाहर से धूआ आने के स्रोत को दिखाया गया हे। तीन मुख्य प्रकार के स्रोतो को बताया गया। पडोस के घर मे प्रयुक्त

ईंधन से वाहनो से औद्योगिक व्यापारिक गतिविधियो से। कई घरो मे ये तीनो स्रोत प्रभावी बताये गय। अत्यधिक कम आय वर्ग क 79 प्रतिशत घरो ने कम आय वर्ग क 71 प्रतिशत घरो ने व मध्यम आय वर्ग क 41 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके घर मे धूआ उपर्युक्त सभी स्रोतो से आता है। ऐसा इसलिए हे कि ये घर घने बसे क्षेत्रो मे स्थित है और मुख्य सडक के किनारे बने हे जहा वाहनो का आवागमन अधिक बना रहता है। घरो के आसपास व्यापारिक दुकाने अधिक हे जहा शाम से ही विद्युत आपूर्ति बाधा होने पर जनरेटर चलने लगते है जिससे विशाल मात्रा म धूआ महक निकलता है। गर्मी के दिनो मे, दिन मे भी जनरेटर चलते है। मध्यम आय वर्ग के 38 प्रतिशन घरा न बताया कि उनके घर मे केवल पडोस से धूआ आता है एव 77 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घरा न बताया कि घर मे केवल वाहनो से धूआ आता है इनमे स अधिकतर घर बनारस स हाकर लखनऊ जाने वाली सडक पर और जौनपुर से गोरखपुर जाने वाली सडक पर बने हुए है। इसलिए ये घर भारी वाहनो से होने वाले प्रदूषण से नित्य प्रभावित होते है। ये सम्बन्धित मुहल्ले है– नईगज, लाइन बाजार पालिटेक्निक चौराहा जेसीज चौराहा, सिपाह, पचहटिया आदि। इस नगर क अधिकाश घरो मे ईंधन के लिए कोयला, लकडी, गोबर के कडे का प्रयोग सस्ता होने के कारण होता है जिससे उत्पन्न धूआ पडोस के घर मे भी निश्चित रूप से जाता है। इस प्रकार इन तीनो स्रोतो से आने वाला धूआ गभीर स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओ का कारण बनता है।

घरों से धूआ बाहर निकलने की स्थिति -

धूआ जो घर मे खाना बनाने के लिए प्रयुक्त ईंधन से, धूम्रपान से अथवा बाहर के स्रोतो से आता हे वह शीघ्र घर से बाहर निकल जाये तो अधिक हानिकारक नही होता है। रोशनदान, खिडकी व दरवाजा तीन स्थान है जहा से धूआ निकल कर बाहर जाता है।

सारणी 5 7 और चित्र 5 3 मे चयनित घरो से धूआ बाहर निकलने की छमता को दर्शाया गया है। सर्वेक्षण मे अत्यधिक कम आय वर्ग के 90 प्रतिशत घरो ने, कम आय वर्ग के 87 प्रतिशत घरो ने व मध्यम आय वर्ग के 51 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके घर से धूआ शीघ्र निकलता नही है बल्कि लम्बे समय तक बना रहता हे। क्योकि घर मे खिडकी

प्लेट 5 9 कूडा करकट जलाये जाने से भी उत्पन्न धूआ आस–पास के घरो में प्रवेश करता है।

प्लेट 5 10 ओलन्दगज से कचहरी जाने वाली अतिव्यस्त सडक के किनारे खुले आम मछली विक्रेताओ द्वारा मछली विक्रय करने से उस क्षेत्र मे सदैव दुर्गन्ध बनी रहती है।

रोशनदान नही है। जबकि उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के घरो के सदस्य उपयुक्त वातायन की सुविधा का लाभ उठाते है। इन लागा न बताया कि धुआ घर मे बहुत कम होता है। वह भी खिडकी दरवाज से शीघ्र बाहर निकल जाता है। अत्यधिक कम आय वर्ग के 9 प्रतिशत घरो ने व कम आय वर्ग के 12 प्रतिशत घरो ने बताया कि धूआ कमरे मे एक मात्र बने दरवाजे से बाहर जाता है इसलिए यह अधिक सम्य लेता है।

सारणी 5 7 जोनपुर नगर के चयनित घरा का धूआ बाहर निकलने की स्थिति के आधार पर वर्गीकरण (प्रतिशत मे)

आय समूह	धूआ खिडकी रोशनदान दरवाजे से बाहर चला जाता है	घर मे ही बना रहता है	योग
अत्यधिक कम	974	9026	100 00
कम	12 02	87 98	100 00
मध्यम	48 54	51 46	100 00
उच्च	100 00	—	100 00
अति उच्च	100 00	—	100 00
योग	54 06	45 94	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सर्वेक्षण मे उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सभी घरो ने बताया कि घर मे भोजन अलग रसोईघर मे ही बनता है और ईंधन के रूप मे गैस एलपीजी का प्रयोग होता है। जबकि कम आय वर्ग के घरो मे भोजन भी उसी कमरे मे बनता है जिसमे वे रहते सोते व नहाते है और ईंधन के रूप मे लकडी सूखी पत्तिया कोयला व गोबर के कडे का प्रयोग होता है। लगभग 90 प्रतिशत अत्यधिक कम व कम आय वर्ग के घरो मे प्रतिदिन 11 से 15 सिगरेट/बीडी का प्रयोग होता है। जबकि उच्च आय वर्ग के घरो मे (किसी–किसी घर मे ही) एक दिन मे 3–4 सिगरेट का ही प्रयोग होता है वह भी खुले स्थान मे।

अत्यधिक कम आय वर्ग व कम आय वर्ग के सभी घरो मे घर मे धूआ उत्पन्न ता हाता ही है, बाहर स, पडास स वाहना से व दुकानो से भी धूआ आता है। इन घरो मे उपयुक्त वातायन की सुविधा भी नही पायी जाती है। इस प्रकार की समस्या उच्च आय वर्ग के घरो मे नही पायी जाती है।

घर में ध्वनि प्रदूषण -

ध्वनि प्रदूषण नगरीकरण की देन है। आज भी ग्रामीण अचल इससे मुक्त है। ध्वनि प्रदूषण तब उत्पन्न होता हे जब कान की सहन सीमा से अधिक तेज आवाज सुननी पडनी है। जैसे लगातार वाहनो की आवाज कारखानो और ध्वनि विस्तास्क यत्रो की कर्कष आवाज आदि। इस प्रकार कहा जा सकता है कि अवाच्छित तेज आवाज जो मनुष्य की श्रवण शक्ति, स्वास्थ्य और आराम को कष्टदायी बनावे उसे ध्वनि प्रदूषण कहा जायेगा। प्रधानत दो स्रोतो से ध्वनि प्रदूषण होता है।

1– गतिशील वाहन, मोटर गाडी, रेल, हवाई जहाज

2– स्थायी स्रोत– घरेलू आवाज जैसे रेडियो दूरदर्शन, ध्वनि विस्तारक (Loud Speaker) उद्योग के यत्र एव साइरन।

औसतन 5 डेसिबिल मान की आवाजल सहन सीमा के अन्दर मानी जाती है। दो व्यक्तियो की सामान्य बातचीत मे इतनी आवाज निकलती है। 60 डेसीबिल तक की आवाज को बरदाश्त किया जा सकता हे लेकिन इसके उपर बढने पर ध्वनि प्रदूषण माना जाता है। ध्वनि प्रदूषण के तीव्र कारणो मे कारखाने अग्रणी है। घर के पीछे गली मे या सामने कोई कारखाना है तो वहा रहने वाले लोग ऊचा सुनने लगते है और कारखाने मे कार्यरत श्रमिक बहरे होने लगते है क्योकि कल कारखानो मे ध्वनि भार 100 डेसीबिल से अधिक पाया जाता है। ध्वनि विस्तारक यत्रो से भी तीव्र ध्वनि प्रदूषण होता है। प्रचार–चुनाव, पूजापाठ और उत्सव के समय इनका प्रभाव देखने लायक होता है। यदि ध्वनि प्रदूषण अधिक समय तक बना रहे तो यह किसी की श्रवण शक्ति को हमेशा के लिए खराब कर सकता है। ध्वनि प्रदूषण मानव शरीर पर अनेक प्रकार का कप्रभाव प्रकट करता है जैसे दिल का दौरा दिमागी परेशानी अनिद्रा कार्य

क्षमता म ह्रास आदि। कुछ कारणा स नगर मे रहने वाले लोग शोरगुल मे रहने के आदी हे ओर उसी म रहना पसद करते हे। इस नगर (जोनपुर) क घरो मे ध्वनि प्रदूषण के बारे मे जानकारी लेने हेतु जिन विषयो पर ध्यान केन्द्रित किया गया वे है मुहल्ले मे ध्वनि प्रदूषण होता है अथवा नही ध्वनि प्रदूषण का स्रात क्या है (घरेलू सामानो से, वाहनो से, बाजार से ध्वनि विस्तारक यत्रो से, रेलगाडी से, कारखानो स या इन सबस ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता कितनी है कम मध यम या उच्च) उपयुक्त बातो से सम्बन्धित सभी आकडे क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा एकत्र किये गय।

सारणी 5 8 जौनपुर नगर के सम्पूर्ण चयनित घरो मे ध्वनि प्रदूषण की स्थिति (1999) (प्रतिशत मे)

	घर मे ध्वनि प्रदूषण	प्रतिशत
1 मुहल्ले मे ध्वनि प्रदूषण	1 होता है	57 48
	2 नही होता है	42 52
2 ध्वनि प्रदूषण का स्रोत	1 घर मे प्रयोग मे आने वाले सामानो से	19 73
	2 वाहनो से	18 49
	3 ध्वनि विस्तारक यत्रो से	8 37
	4 बाजार से	1 53
	5 इन सभी कारणो से	51 88
3 ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता	1 कम	27 32
	2 मध्यम	18 60
	3 उच्च	23 17
	4 अति उच्च	30 91

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 5 8 और प्लेट 5 11 मे इस नगर के सम्पूर्ण 15 80 चयनित घरो के वायु प्रदूषण को दिखाया गया हे। सर्वेक्षण मे केवल 58 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके मुहल्ले मे ध्वनि प्रदूषण होता है उनम 51 प्रतिशत घरो ने बताया कि ध्वनि प्रदूषण घर मे प्रयोग मे

जौनपुर नगर

सम्पूर्ण चयनित घरो में ध्वनि प्रदूषण की स्थिति

1999
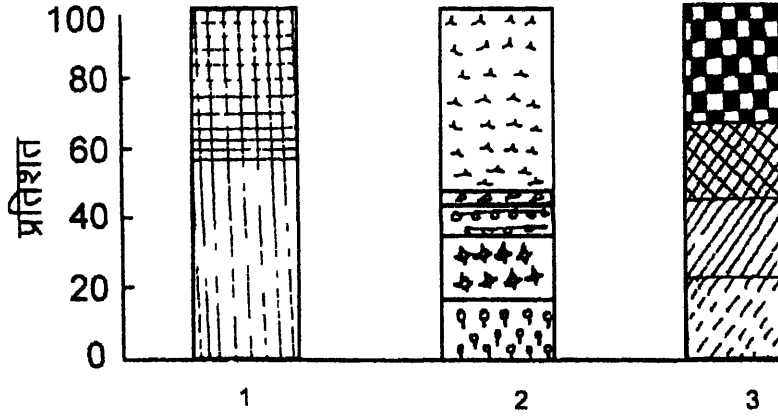
1 मुहल्ले मे ध्वनि प्रदूषण — होता है; नही होता है

2 ध्वनि प्रदूषण के स्रोत — घर मे प्रयोग मे आने वाले सामानो से; वाहनो से; ध्वनि विस्तारक यन्त्रो से; बाजार से; इन सभी स्रोतो से

3 ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता — कम

मध्यम

उच्च

अति उच्च

स्रोत - व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित 1999

प्लेट 5.11

आने वाले सामानो से, वाहनो, बाजार के शोर से ध्वनि विस्तारक आदि सभी स्रोतो से होता है। लगभग 31 प्रतिशत घरो ने उनके मुहल्ले मे अति उच्च तीव्रता वाले ध्वनि प्रदूषण के बारे मे बताया। उपयुक्त तथ्यो से प्रतीत हाता हे कि सर्वेक्षित घरो मे आधे से अधिक घर किसी न किसी स्रोत से ध्वनि प्रदूषण की कम/अधिक मात्रा प्राप्त करते ही है।

मुहल्ले में ध्वनि प्रदूषण -

सारणी 5 9 और प्लेट 5 12 मे विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो के मुहल्ले मे ध्वनि प्रदूषण को दिखाया गया है। जैसा कि हम सभी जानते है कि ध्वनि प्रदूषण अवांछित तीव्र आवाज है जो मनुष्य की कार्य क्षमता को दुष्प्रभावित करती है इसलिए यह पता करना आवश्यक है कि कितने घर ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव मे आते है।

यह देखा गया कि अत्यधिक कम आय वर्ग के 95 प्रतिशत, कम आय वर्ग के 91 प्रतिशत व मध्यम आय वर्ग के 73 प्रतिशत घरो ने बताया कि उनके मुहल्ले मे ध्वनि प्रदूषण तीव्र होता है।

सारणी 5 9 जौनपुर नगर के चयनित घरो का ध्वनि प्रदूषण के आधार पर वर्गीकरण (1999) (प्रतिशत मे)

आय समूह	ध्वनि प्रदूषण होता है	नही होता है	योग
अत्यधिक कम	94 65	5 35	100 00
कम	91 51	8 49	100 00
मध्यम	72 82	27 18	100 00
उच्च	20 54	79 46	100 00
अति उच्च	7 92	92 08	100 00
योग	57 48	42 52	100 00

स्रोत-- व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित
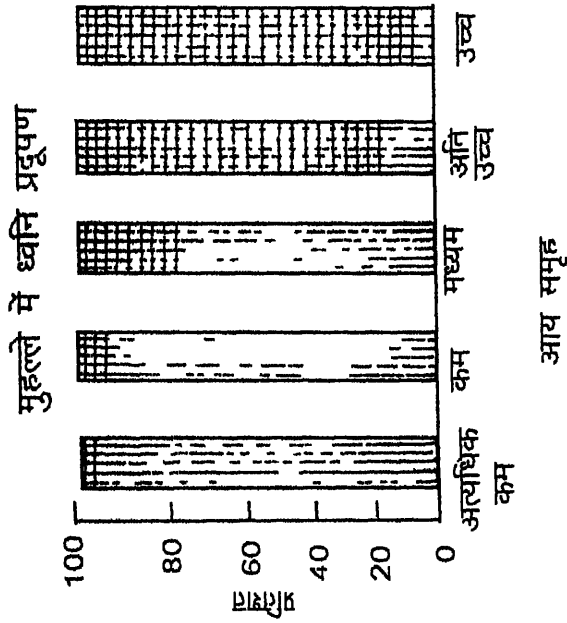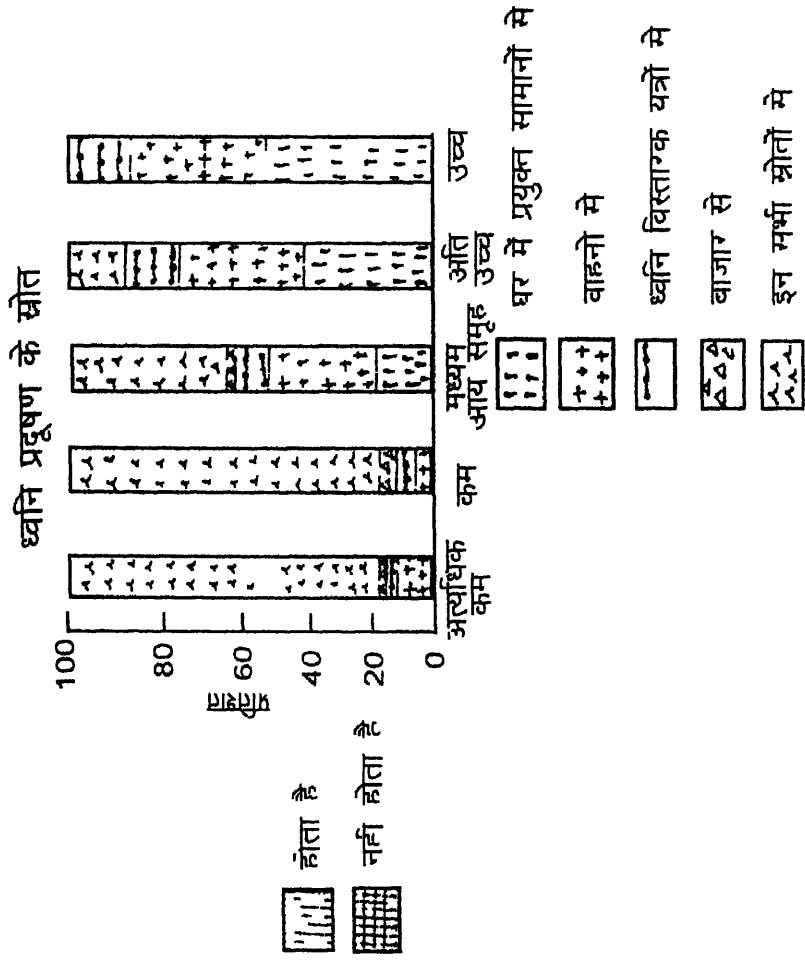
कम आय वर्ग व मध्यम आय वर्ग के अधिकाश घरो मे ध्वनि प्रदूषण इसलिए पाया जाता है क्योकि ये लोग घने बसे क्षेत्रो मे रहते है जहा घर मे व बाहर भीड की स्थिति बनी रहती है। आसपास दुकाने पायी जाती है और यातायात के लिये प्रयुक्त भारी वाहनो से प्रदूषण होता है। बहुत कम उच्च आय वर्ग के घरो न बताया कि उनके मुहल्ले मे ध्वनि प्रदूषण होता है। दूसरी तरफ 80 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के एव 92 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि उनके मुहल्ले या घर मे ध्वनि प्रदूषण जैसी कोई समस्या नही होती है। क्योकि ये लोग अच्छी आवासीय कालोनियो मे रहते है। जहा न बडी दुकाने रहती है और न ही यातायात के लिए भारी वाहन चलते है।

ध्वनि प्रदूषण के स्रोत एव तीव्रता -

सारणी 5 10 और प्लेट 5 12 मे विभिन्न आय वर्ग के चयनित घरो मे होने वाले ध्वनि प्रदूषण के स्रोत को दिखाया गया है। लोगो ने पाच प्रमुख स्रोतो को बताया। घर मे प्रयोग मे आने वाले सामानो से, वाहनो से, ध्वनि विस्तारक यत्रो से , बाजार से या इन सभी कारणो से। 87 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के, 79 प्रतिशत कम आय वर्ग के, 50 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के व 13 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि वे उपर्युक्त सभी स्रोतो से ध्वनि प्रदूषण के शिकार होते है। दूसरी तरफ 33 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के व 45 प्रतिशत अति उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि जो ध्वनि प्रदूषण होता है वह घर के सामानो से ही होता है परन्तु इन लोगो को इसकी परवाह नही होती क्योकि तेज ध्वनि मे सगीत चलाना, टेलीविजन, रेडियो, वीसीआर/वीसीपी चलाना उच्च जीवन स्तर का प्रतीक बन गया है। उच्च आय वर्ग के अधिकतर घरो मे जनरेटर भी पाया जाता है जिससे उत्पन्न ध्वनि प्रदूषण से आसपास के घर भी प्रभावित होते है। अत्यधिक कम आय वर्ग के व कम आय वर्ग के लोग घर मे प्रयुक्त किसी सामान से ध्वनि प्रदूषण के शिकार नही होते है। क्योकि उनके पास ऐसा कोई सामान नही है। लगभग 22 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के व 37 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के लोगो ने बताया कि उनका आवास मुख्य सडक के किनारे होने के कारण वे वाहनो से निकलने वाले

आवास तीव्र ध्वनि प्रदूषण का शिकार होते है एव वहा रहने वाले निवासी आपस मे ऊची आवाज मे ही बात करते है। मदिरो मे जहा शाति की अपेक्षा की जाती है वहा पर भी शायद ही कभी शाति रहती हे, ध्वनि विस्तारक यत्रो से सुबह शाम कीर्तन, फिल्मी गीतो पर आधारित भजन, जागरण प्रतिदिन होता है। इस प्रकार का शोर बढी हुयी मात्रा मे हिन्दू उत्सवो मे जैसे रामलीला, नवरात्रि, दशहरा आदि मे देखा जा सकता है। इससे आसपास रहने वाले लोग मजबूरी मे प्रभावित होते रहते है। शादी विवाह के समय मे विशेषकर हिन्दू शादियो मे ध्वनि विस्तारक यत्र तेज आवाज मे रातभर बजते है जिससे आसपास के घर भी प्रभावित होते है। बाजार के शोर से ध्वनि प्रदूषण के बारे मे बहुत कम लोगो ने बताया।

सारणी 5 10 जौनपुर नगर के चयनित घरो मे ध्वनि प्रदूषण के स्रोत (प्रतिशत मे)

आय समूह	घर मे प्रयोग मे आने वाले सामानो से	वाहनो से	ध्वनि विस्तारक यत्रो से	बाजार के शोर से	इन सभी स्रोतो से	योग
अत्यधिककम	1 57	5 66	2 51	2 83	87 43	100 00
कम	2 82	9 20	6 71	1 41	79 86	100 00
मध्यम	15 53	22 33	8 98	2 43	50 73	100 00
उच्च	33 15	36 98	16 72	—	13 15	100 00
अति उच्च	45 55	18 31	6 93	1 00	28 21	100 00
योग	19 73	18 49	8 37	1 53	51 88	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी 5 11 और प्लेट 5 12 मे चयनित घरो मे ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता को दिखाया गया है। चार प्रकार की तीव्रता– कम, मध्यम, उच्च अति उच्च के बारे मे लोगो ने बताया।

सर्वेक्षण मे अत्यधिक कम आय वर्ग के 66 प्रतिशत, कम आय वर्ग के 57 प्रतिशत एव मध्यम आय वर्ग के 30 प्रतिशत लोगो ने अति उच्च तीव्रता वाले ध्वनि

प्लेट 5 13 गोमती नदी पर स्थित शाही पुल पर अत्यधिक वाहनो के दिन–रात आवागमन से उत्पन्न ध्वनि प्रदूषण की स्थिति।
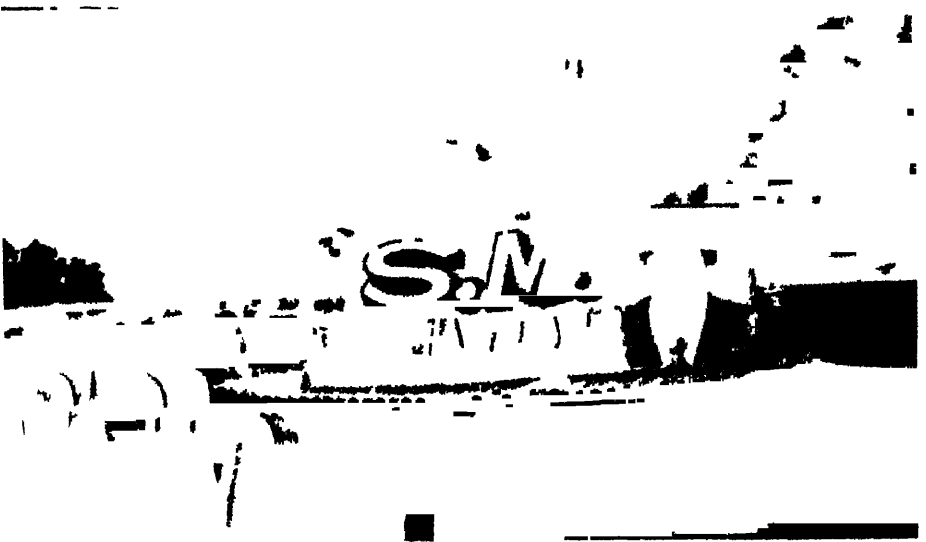
प्लेट 5 14 नगर मे ध्वनि प्रदूषण के स्रोत, मस्जिद पर लगे ध्वनि विस्तारक यत्र जो नगर के सभी मस्जिदो पर लगे हैं।

प्लेट 5 15 नगर के मध्य क्षेत्र मे बाहर से आने वाले वाहनो की भीड जो ध्वनि एव वायु प्रदूषण के कारक हैं।(बदलापुर पडाव)

प्रदृषण क बार मे बताया क्याकि य लाग सडक क किनार बने आवासा मरहते है जहा से भारी वाहन लकर गुजरत है एव आसपास बाजार भी है।

सारणी 5 11 जौनपुर नगर के चयनित धरो का ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता के आधार पर वर्गीकरण (प्रतिशत मे)

आय समूह	कम	मध्यम	उच्च	अतिउच्च	योग
अत्यधिक कम	---	7 54	26 10	66 36	100 00
कम	---	12 72	29 68	57 60	100 00
मध्यम	8 49	18 20	42 48	30 83	100 00
उच्च	55 34	27 12	17 54	--	100 00
अति उच्च	72 77	27 23	---	---	100 00
योग	27 32	18 6	23 17	30 91	100 00

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित

उपर्युक्त सारणी से पता चलता है जितने कम आय वर्ग के घर है उनम ध्वनि प्रदूषण तीव्र है। जबकि उच्च आय वर्ग के घरो मे अपेक्षाकृत कम ध्वनि प्रदूषण है। ध्वनि प्रदूषण लोगो की कार्य क्षमता को दुष्प्रभावित करता हे। इस बारे मे वे लोग बताते है जिनके दफ्तर शोरगुल वाले स्थान पर है और छात्र जो अधिक ध्वनि प्रदूषण तीव्रता के कारण लिखने पढने मे असुविधा महसूस करते है। ध्वनि प्रदृषित क्षेत्र मे रहने वाले बच्चे बहुत धीरे–धीरे काम करते है और जल्दी थक भी जाते है। उच्च ध्वनि प्रदूषण लोगो की आयु को भी कम कर देता है। इसके निवारण के लिए राजनैतिक और सामाजिक उपाय अनिवार्य है। सरकार कानून बनाकर अधिक आवाज करने वाले वाहनो पर प्रतिबन्ध लगा सकती है। समाज म जागरूकता पैदाकर वाहन चालको मे सद्गुण पैदा किया जा सकता हे। इसी तरह नगर के मध्य यातायात प्रबन्ध स भीडभाड कम करके ऐसी स्थिति उत्पन्न की जा सकती है। जिससे ध्वनि प्रदूषण कम हो। साथ ही कुछ विशेष प्रकार के वाहनो के प्रवेश पर नियत्रण किया जा सकता है। ध्वनि

भाग -तीन

जौनपुर नगर में आवासीय पर्यावरण व स्वास्थ्य एवं निष्कर्ष
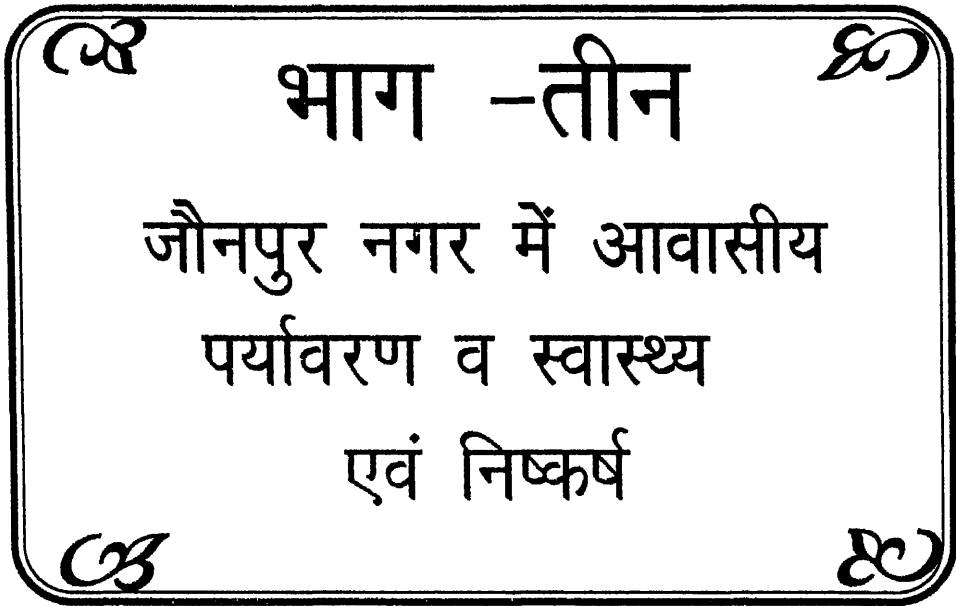
जौनपुर नगर के आवासीय सर्वेक्षण से यह पता चला कि नगर के आवासीय पर्यावरण को आर्थिक पहलू ही अधिक प्रभावित करता है। क्योकि धनाभाव के कारण व्यक्ति न तो अच्छे आवास की व्यवस्था कर पाता हे न ही अच्छे पर्यावरणीय वातावरण को सृजित करने की स्थिति मे रहता है। अध्ययन से यह पता चला कि गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोग विवश होकर खाना पकाने के लिए गैस का प्रयोग करने के स्थान पर लकडी व गोबर के कडे को जलाते है जिससे सुबह शाम उनके घरो मे तो धूआ होता ही है व आसपास के लोग भी इससे प्रभावित होते है। इस प्रकार व्यक्ति के आय एव स्वास्थ्य का सम्बन्ध पर्यावरणीय दृष्टिकोण से अधिक रहता है। आवासीय पर्यावरण को घरो मे, स्नानगृह एव शौचालय की स्थिति, घरो मे पेय जलापूर्ति की स्थिति, पानी की निकासी की स्थिति, घरो के कूडा करकट एव ठोस अपशिष्ट के विसर्जन की स्थिति मक्खी मच्छर एव कीटाणुओ से बचाव की स्थिति, भोज्य पदार्थों के रख–रखाव की स्थिति, घरो के अन्दर वायु एव ध्वनि प्रदूषण की स्थिति ही विशेष रूप से प्रभावित करती है और उपरोक्त यही परिस्थितिया घरो मे रहने वाले व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करती है। यदि व्यक्ति की आय कम होगी तो स्वाभाविक रूप से अच्छे वातावरण मे न रह पायेगा और न ही खानपान की समुचित व्यवस्था कर पायेगा और कीटाणु के प्रकोप से ग्रसित होने की स्थिति मे लोग डायरिया, पेचिश, मलेरिया, पीलिया, चेचक, निमोनिया, टीबी टायफाइड अनेक तरह के चर्मरोग, खासी जुखाम व अनेक तरह की पेट की बीमारियो से ग्रसित हो जाते है।

उच्च आय वर्ग के आवासीय पर्यावरण के अध्ययन से यह पता चला कि उनमे उपरोक्त बीमारिया कम होती है। ऐसे लोगो मे उच्च रक्तचाप एव हृदय रोग तथा मानसिक तनाव जैसी बीमारिया होती है। विश्लेषण से यह पता चला कि गरीबी अथवा आर्थिक अभाव मे जीने वाले व्यक्ति का स्वज्ञस्थ्य पर्यावरणीय कारणो से प्रभावित होता है क्योकि पर्यावरण एव गरीबी का स्वास्थ्य पर प्रभाव पडता ही है। वास्तव मे अर्थाभाव के कारण ही व्यक्ति को उपयुक्त पर्यावरणीय वातावरण एव आवारा सुलभ नही हो पाता। ज्यो–ज्यो व्यक्ति को आर्थिक स्थिति मे सुधार आता है वह अपने रहन–सहन के तौर तरीके बदलता है। फलस्वरूप उसके परिवार मे होने वाली बीमारी कम होन लगती है क्योकि उस स्थिति मे वह खाने–पीने

की चीजो के रख–रखाव तथा साफ–सफाई एव पेयजल आदि पर विशेष ध्यान रख पाता है। वस्तुत बीमारी का कारण बीमारी से बचने वाले उपयो पर ध्यान न देने के कारण होता है।

इस शोध कार्य मे प्रश्नोत्तरी के माध्यम से 1580 घरो का सर्वेक्षण किया गया इसमे विभिन्न आय वर्ग के (अत्यधिक कम आय वर्ग के 20 13 प्रतिशत कम आय वर्ग के 17 91 प्रतिशत, मध्यम आय वर्ग के 26 07 प्रतिशत, उच्च आय वर्ग के 23 10 प्रतिशत व अति उच्च आय वर्ग के 12 79 प्रतिशत) घरो का व्यक्तिगत सर्वेक्षण वर्ष 1999–2000 एव 2001 मे किया गया। पिछले अध्याय मे वर्णित सर्वेक्षण के माध्यम से सकलित आकडो के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया कि आर्थिक पहलू ही आवासीय पर्यावरण को अधिक प्रभावित करता है। पर्यावरण दृष्टिकोण से महानगरो पर बहुत से शोध कार्य किये जा चुके है एव किये जा रहे है परन्तु छोटे–छोटे नगरो पर इस दृष्टिकोण से कम ध्यान दिया गया है। जौनपुर नगर का चयन इसी उद्देश्य को ध्यान मे रखकर किया गया। भारत के नगरो मे रहने वाले 75 प्रतिशत लोग छोटे नगरो मे ही निवास करते है। छोटे नगरो मे बडी–बडी समस्याये है इन समस्याओ का अध्ययन गहनता से किया जाना आवश्यक है। इसलिए जौनपुर नगर के आवासीय पर्यावरण का अध्ययन करना उचित समझा गया।

सामान्यतया इस अध्ययन मे निम्नलिखित बाते उद्घाटित होती है।

जौनपुर नगर मे जनसख्या की वृद्धि अधिक है। सडको की चौडाई कम होने के कारण नगर मे प्राय यातायात अवरूद्ध होता रहता है। वार्ड न 14 ओलन्दगज, 15 नखास, 18 मण्डी नसीब खा, 20 मुफ्ती मुहल्ला, 21 ताडतला, 22 अबीरगढ टोला, 23 उर्दू, 24 ख्वाजगी टोला, 25 ढालगर टोला, 26 मीरमस्त वार्ड अत्यधिक जनसख्या घनत्व वाले क्षेत्र है। ये क्षेत्र नगर के मध्य भाग मे स्थित पुराने बसे हुए क्षेत्र है। ज्यो–ज्यो शहर के मध्य भाग से हम दूर हो जाते है जनसख्या का घनत्व कम पाया जाता है।

जौनपुर नगर के सर्वेक्षण मे यह पता चला कि औसत रूप से एक मकान मे एक से अधिक परिवार रहता है। सर्वेक्षण से प्राप्त आकडे से पता चलता है कि एक मकान मे 1 1 से 1 87 परिवार निवास करता है। मुस्लिम बाहुल्य आबादी क्षेत्र वार्ड न 20 (मुफ्ती

मोहल्ला) मे एक मकान मे ओसत 3 से 4 परिवार रहता है। इस तरह के परिवार मे मकान मालिक व किरायेदार दोनो रहते है। इस वार्ड मे प्रतिदिन मजदूरी करन वाल और छोटा व्यापार करने वाले लोग रहते है। नगर के वार्ड न 8, 20 21 मे एक मकान मे ओसत रूप से सर्वाधिक लाग निवास करते है। वार्ड न 8 हुसनाबाद मे किरायेदार के रूप मे नोकरीपेशा कर्मचारी व मजदूर परिवार रहते है। इस वार्ड मे हिन्दुओ की सख्या ही अधिक है। वार्ड न 20, 21 मुफ्ती मुहल्ला व ताडतला मे अधिकाश मुसलमान रहते है। इस क्षेत्र के मकानो मे किरायेदार के रूप मे छोटे व्यापारी दुकानदार, बीडी मजदूर, सिलाई का काम करने वाले, जूता व कपडे का कारोबार करने वाले लोग निवास करते है। गोमती नदी नगर को दो भागो म बाटती है जिसम हुसेनाबाद मुहल्ला नदी के पूर्वी भाग मे पडता है और ताडतला व मुफ्ती मुहल्ला नदी के पश्चिमी भाग मे पडता है।

साक्षरता की दृष्टि से वार्ड न 3, 6 8, 14, 15 मे 75 प्रतिशत से अधिक शिक्षित लोग निवास करते है। वार्ड न 6 और 8 मे (वाजिदपुर, हुसेनाबाद) अधिकाश शिक्षक व शिक्षण सस्थाओ से जुडे हुए लोग रहते है। इसी वार्ड मे (हुसेनाबाद) नगर का लब्ध प्रतिष्ठित तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, तिलकधारी इण्टर कालेज, महिला महाविद्यालय, मुक्तेश्वर प्रसाद महाविद्यालय, बीआरपी इण्टर कालेज, मुक्तेश्वर प्रसाद बालिका इण्टर कालेज, जनक कुमारी माध्यमिक विद्यालय, नेहरू बालोद्यान, सन्त प्रसाद प्राइमरी पाठशाला सहित कई अन्य नर्सरी स्कूल स्थित है।

सर्वेक्षण मे विभिन्न घरो की आय मे अधिक अन्तर पाया गया।38 प्रतिशत धरो मे 1500 से कम या 1500 से 3000 रूपये प्रतिमाह की दर से आय वर्ग वाले व्यक्ति पाये गये। 26 प्रतिशत मकानो मे रहने वाले व्यक्तियो की आय 3000–5000 रू0 तक है जबकि 36 प्रतिशत मकानो मे रहने वाले व्यक्तियो की आय 5000 से अधिक है। इस प्रकार नगर मे 64 प्रतिशत मकानो मे रहने वाले लोग कम आय वर्ग या मध्यम आय वर्ग के है।

पूर्व में दिये गये विश्लेषण से निम्नलिखित सामान्य निष्कर्ष निकाले गये -

सर्वाधिक तीव्र पर्यावरणीय समस्याओ को गरीब घरो के लोग झेलते है जिसका उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पडता है। इन लोगो के पास पर्याप्त आकार का बडा घर नही है एव उसमे वातायन की व्यवस्था भी नही पायी जाती। इन घरो मे एक कमरे मे ही अधिक सख्या मे लोग रहते है। घर म शौचालय नही है और घर के अनुपयोगी पानी को निकालने के लिए नाली भी नही बनी हुई है। पानी एकत्रित होने से एव गन्दगी होने से मक्खी मच्छर का प्रकोप बना रहता है। कम आय वर्ग वाले घरो मे मुख्य रूप से यह देखा जाता है कि उपलब्ध किसी ससाधन का अधिक से अधिक लोग उपयोग करते है जैसे कमरे का, शौचालय का, रसोई का आदि जबकि उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के घरो मे प्रत्येक सदस्य का अपना अलग कमरा होता है। प्रत्येक घर का पानी का कनेक्शन अलग होता है। एक घर मे एक से अधिक निजी शौचालय होता है, पानी व कूडा करकट फैला नही होता है।

कई प्रकार की पर्यावरणीय समस्याये आपस मे सम्बन्धित है। इन्हे अलग–अलग नही बाटा जा सकता। कभी–कभी किसी एक पर्यावरणीय समस्या से बचाव के लिए जो उपाय अपनाये जाते है वह दूसरी पर्यावरणीय समस्या के कारण होते है। जैसे मक्खी, मच्छर से बचाव के लिए डीडीटी का छिडकाव किया जाता है। एव मच्छर अवरोधी अगरबत्ती या टिकिया को जलाया जाता है जो श्वास सम्बन्धी बीमारी का कारण बन सकता है। कम आय वर्ग वाले लोग कम पैसे खर्च करके तुरन्त खाये जाने वाले भोज्य पदार्थ (Fast Food) खरीदते है जो कि डायरिया, पेचिश का कारण बनता है और कभी–कभी शरीर पर जहरीला प्रभाव छोडता है। निम्न आय वर्ग के लोग भोजन पकाने के लिए लकडी, गोबर के कडे व सूखी पत्तियो का प्रयोग ईंधन के रूप मे करते है जिससे उनके घरो मे अधिक धूआ तो होता ही है साथ ही आसपास स्थित घरो मे भी इसका प्रभाव बहुत खराब पडता है।

धनी घरो मे उन सुविधाओ का अभाव नही होता जिनकी कमी से घर मे पर्यावरणीय समस्या उत्पन्न हो सकती है परन्तु ये घर भी खराब पर्यावरण से प्रभावित हो सकते है। यदि इनके घर के आसपास के घरो का पर्यावरण ठीक न हो। इस नगर के मुहल्लो मे उच्च आय वर्ग एव कम आय वर्ग के घर अलग–अलग (दूरी पर) नही बसे हुए है। अधिकाश मुहल्लो

मे विभिन्न आय वर्ग के घर सटे हुए पाये जात है। गरीब घरो के लोग जिनका पर्यावरण को प्रदूषित करने मे हाथ बडा होता है। अपने घरो के कूडा करकट को घर के सामने फेक देते है। इनके घरो का अनुपयोगी पानी घर के सामने या पीछे इकटठा होता है। इन सब कारणो से मुहल्ले के सभी घरो मे मक्खी–मच्छर का प्रकोप बढ जाता है। सडक पर फैले कूडे से घृणित गध आती है जिससे सभी लाग कुप्रभावित होते है।

घरो के पर्यावरण से महिलाये बच्चे व बूढे पुरूष सबसे अधिक प्रभावित होते है क्योकि ये अपना अधिक समय घर मे ही बिताते है। जबकि 65 प्रतिशत पुरूष वर्ग अपना 8 से 10 घण्टा घर से बाहर बिताते है। कम आय वर्ग के घरो की महिलाये विशेष रूप से खाना बनाने से उत्पन्न धूए से कुप्रभावित होती है।

घरो की आय घरो का पर्यावरण एव घर के लोगो का स्वास्थ्य मे गहरा सम्बन्ध है। निम्न आय वर्ग के घरो मे पर्यावरणीय स्थिति अच्छी नही होती फलस्वरूप ऐसे घरो के लोग अतिसार पेचिश, मलेरिया चेचक विभिन्न प्रकार के चर्मरोग तपेदिक, पीलिया, टाइफाइड व अन्य कई तरह की बीमारियो से ग्रसित रहते है। जबकि उच्च आय वर्ग के लोगो के घरो की पर्यावरणीय स्थिति उत्तम होने से ये लोग उपरोक्त बीमारी से ग्रसित नही होते इन घरो के सदस्य उच्च रक्तचाप हृदयरोग व मानसिक तनाव जैसी बीमारी से ग्रसित होते है।

घरो मे पेयजलापूर्ति एव साफ सफाई का अन्योन्याश्र सम्बन्ध डायरिया एव पेचिश व अतिसार जैसे रोगो से है। इसके अतिरिक्त घरो मे शुद्ध हवा के न होने व पानी के निकासी का समुचित प्रबन्ध न होने तथा घरो के कूडा करकट एव ठोस अपशिष्ट तथा जूठन के विसर्जन की समुचित व्यवस्था न होने तथा कीटाणु नाशक उपाय के न होने के कारण भी लोग मलेरिया, पीलिया व श्वास सम्बन्धी बीमारी से ग्रसित होते पाये गये। उच्च आय वर्ग के घरो मे पर्यावरणीय स्थिति अच्छी होने के कारण उपरोक्त बीमारिया नही के बराबर पायी जाती है। सरकार को ऐसे मुहल्लो मे जहा पर्यावरणीय स्थिति पानी की समुचित निकासी न होने सडक व गली कच्ची होने, पक्की नाली न होने, धूम्रयुक्त रसोई घर एव शौचालय की समुचित व्यवस्था न होने व कूडे के रख–रखाव द उनके हटाये जाने की व्यवस्था न होने के कारण अत्यन्त खराब है उनमे सुधार लाने की आवश्यकता है और लोगो मे पर्यावरण के प्रति जागरूक

हाने के लिये समय–समय पर बीमारियो से बचने का सुझाव देने की आवश्यकता है। शासन से मिलने वाली सुविधा जैसे धूम्र रहित चूल्हा का उपयोग करने, शौचालय निर्माण के लिए मिलने वाली सहायता का उपयोग करन, शुद्ध जल पीने के लिए सुझाव देने तथा रोग निरोधक टीके लगवाने के लिए सरकारी कर्मचारिया द्वारा ऐसे मुहल्लो मे जाकर व्यापक स्तर पर प्रचार–प्रसार करने की आवश्यकता है। गरीब एव आर्थिक दृष्टि से कमजोर व्यक्तियो मे जागरूकता का अभाव रहता है और वे शासन स्तर से मिलने वाली उपरोक्त सुविधाओ से वचित रह जाते है। साथ ही साथ अपेक्षाकृत अधिक आय वाले व्यक्तियो को भी अपने आसपास के गरीब लोगो को उनके पर्यावरणीय स्थिति मे सुधार लाने हेतु सुझाव देने एव यथाशक्ति सहयोग देने की आवश्यकता है।

नगर में विभिन्न स्तर के आवास -

जौनपुर नगर के निम्न आय वर्ग के लोगो के आवास की समस्या जटिल है। उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के लोगो के मकान के सामने वृक्षारोपण तथा मकान के पीछे फलदार वृक्षो के बाग लगे हुए पाये गये। ऐसे मकानो मे रहने वाले सदस्यो के अपने निजी उपयोग मे लाने वाले शयनकक्ष व शौचालय अलग–अलग है। मकानो के फर्श पर मुजैक लगा हुआ है तथा शौचालयो मे सगमरमर या टाइल्स बिछी हुयी रहती है। पेयजल को छानकर पीने के लिए नल मे यत्र लगा हुआ मिला। पूरा मकान ईंट व कक्रीट से बना हुआ व अच्छी तरह से प्लास्टर किया हुआ एव अत्यन्त आकर्षक ढग से सुसज्जित व हवादार मिला। केवल 42 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के 48 प्रतिशत कम आय वर्ग के एव 41 प्रतिशत अत्यधिक कम आय वर्ग के लोग ही अपने निजी मकान मे रहते है। मध्यम आय वर्ग के घर छोटे है जिनमे कुछ कमरे है एव कुछ घरो मे निजी शौचालय भी नही है। अत्यन्त न्यून आय वर्ग के लोगो के आवास अनाधिकृत रूप से सडको के किनारे खाली जमीन पर बने हुए पाये गये कुछ रेल की पटरियो के आसपास भी बने हुए देखे गये। ऐसे आवासो के बनने से झुग्गी झोपडी बहुल मुहल्लो का निर्माण हो जाता है। इन झुग्गी झोपडी मे केवल एक कमरा होता है और उसमे रहने वाले लोगो की सख्या अधिक होती है। कमरा हवादार नही होता है एव घर मे शौचालय होता ही नही है।

कमरे का उपयोग खाना बनाने सोने एव स्नान करने के लिए होता है। परिणाम स्वरूप स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याये ऐसे आवासो मे रहने वाले व्यक्तियो के समक्ष आये दिन उत्पन्न होती है। सरकार को नगर क्षेत्र मे रहने वाले ऐसे गरीब तबको के व्यक्तियो की आवास समस्या को हल करने के लिए उपाय करना चाहिए। शोधकर्ता ने नगर के ऐसे गरीब तबको के आवास समस्या को हल करने के लिए निम्न सुझाव दिया है।

1– सरकार की तरफ से अन्य नगरो की भाति जौनपुर मे भी अत्यन्त गरीब तबको के लिए जो झुग्गी झोपडियो मे रह रहे है।, सरकारी खर्चे पर आवास बनाकर दिया जाय और ऐसे आवासो के आसपास पानी निकासी का साधन, स्वच्छपेय जलापूर्ति की व्यवस्था तथा रोशनी की व्यवस्था करायी जाय। निश्चित रूप से ऐसे गरीब तबको द्वारा स्वय प्रयास करके पर्यावरणीय दृष्टि से उपयुक्त आवास बना पाना सभव नही है।

2– परिवार नियोजन सम्बन्धी बातो का प्रचार–प्रसार शासन स्तर से निश्चित ही प्रभावकारी ढग से किया गया और इसका प्रभाव उच्च वर्ग व मध्यम आय वर्ग के लोगो मे शत–प्रतिशत हुआ है यह कहना अतिश्योक्ति न होगा किन्तु गरीब तबके के परिवारो को देखने से यह पता चला कि परिवार नियोजन सम्बन्धी बातो का प्रभाव इन परिवारो मे नही है। इस सम्बन्ध मे कठोर कानून न बनने से भी जनसख्या वृद्धि पर रोक नही लग पा रही है। अशिक्षित मुसलमान परिवारो मे इस दिशा मे उदासीनता ज्यादा पायी गयी है। इस सम्बन्ध मे बातचीत से यह भी ज्ञात हुआ कि मुस्लिम परिवार सरकार द्वारा चलायी गयी परिवार नियोजन की योजना को मजहब के खिलाफ मानते है। मुस्लिम धर्मावलम्बी मौलवी व मुल्लाओ को इस दिशा मे अपने स्वजातीय को जागरूक करने के लिए आगे आने की जरूरत है।

3– देश के बडे पूजीपतियो व उद्योगपतियो को झुग्गी झोपडियो मे रहने वाले गरीब तबके के लोगो के लिए पर्यावरणीय दृष्टि से उपयुक्त आवास बनाकर देने के लिए आगे आने की आवश्यकता है क्योकि सरकार ही अकेले इन समस्याओ का समाधान नही निकाल सकती।

4– शासन की तरफ से आवास के लिए उपयुक्त भूमि को अधिग्रहण कर आवास निर्माण की समस्या का निराकरण करना चाहिए।

5– जौनपुर नगर मे सीवर लाइन का बनाया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इसके अभाव मे सडक

के किनारे खुली गन्दी नाली का पानी बहता रहता है।

6– सिटी बोर्ड को यह अधिकार शासन द्वारा मिलना चाहिए कि वह नगर क्षेत्र मे आवश्यकतानुसार जमीन का अधिग्रहण कर सुलभ शौचालय का निर्माण कर सके जिससे उन लोगो को जिनके घर शौचालय नही है शौचालय की सुविधा मिल सके।

जौनपुर नगर में शौचालय एव सफाई की स्थिति -

जौनपुर नगर के मध्य भाग के अलावा बहुत से वार्ड ऐसे है जिनकी स्थिति पर्यावरणीय दृष्टि से काफी दयनीय है। आज भी इन वार्डों मे रहने वाले लोग खुले मैदान मे शौच करने जाते है और सूर्योदय के पहले व रात्रि मे सडक के किनारे शौच करने के कारण इतनी गन्दगी हो जाती है कि उधर से गुजरना मुश्किल हो जाता है। ये वार्ड है– मतापुर (रामनगर भडसरा मुहल्ला), कटघरा उमरपुर वार्ड के नईगज मुहल्ले का कुछ क्षेत्र चाचकपुर के कुछ क्षेत्र, उर्दू के कुछ क्षेत्र हरखपुर वार्ड के चितरसारी व बेसहूपुर मुहल्ले मे, ईसापुर वार्ड के सुल्तानपुर हाथ व आराजीगुर्जी खानी व सुक्खीपुर मुहल्ले मे, भण्डारी वार्ड के कुछ क्षेत्रो मे, पानदरीबा वार्ड के प्रेमराजपुर मुहल्ले मे, मुफ्ती मुहल्ला वार्ड के कुछ क्षेत्रो मे। उच्च आय वर्ग के लोगो के मकानो मे बने हुए स्वच्छ शौचालय सेप्टिक टैक से जुडे हुए है। मध्यम आय वर्ग 51 प्रतिशत लोगो ने बताया कि उनके घर मे निजी शौचालय की व्यवस्था नही है। कम आय वर्ग के लगभग सभी घरो मे शौचालय की सुविधा नही है ऐसी स्थिति मे ये लोग या तो सुलभ शौचालय का प्रयोग करते है या खाली पडे मैदान मे जाते है। छोटे–छोटे बच्चे सडक के किनारे शौच करते हुए पाये गये। सरकार को एव अन्य समाज सेवी सस्थाओ को शौचालय की समस्या के समाधान के लिए अधिक सख्या मे सुलभ शौचालय बनाना चाहिए। सार्वजनिक शौचालय की सफाई के लिए सिटी बोर्ड को ध्यान देना चाहिए।

जौनपुर नगर मे सुलभ शौचालय की स्थिति -

इस नगर मे कुल सोलह सुलभ शौचालय है जो भिन्न–भिन्न वार्डों मे है। इस प्रकार नगर के 26 वार्डों मे औसत प्रति वार्ड एक सुलभ शौचालय भी नही है। सर्वेक्षण मे

सिपाह (चाचकपुर वार्ड मे) मुहल्ले मे एक, हुसेनाबाद वार्ड के कलेक्ट्री चौराहे पर एक, कलेक्ट्री कचहरी मे एक, पुलिस लाइन के गेट पर एक दीवानी कचहरी मे एक, पालिटेक्निक चौराहा (उमरपुर वार्ड) पर एक, रोडवेज चौराहे पर एक भण्डारी स्टेशन पर एक, मरदानपुर मुहल्ला मे एक, कोतवाली चौराहे पर एक खासनपुर म (अहियापुर वार्ड मे) एक, केरारकोट मुहल्ला मे एक, मुफ्ती मुहल्ला वार्ड मे एक, ईशापुर वार्ड मे एक, रौजा अर्जन मे एक व सब्जीमडी मे एक सुलभ शौचालय स्थित है। इनमे से 50 प्रतिशत शौचालयो मे उचित ढग से साफ–सफाई की व्यवस्था नही है।

जौनपुर नगर में नाली की स्थिति एव अनुपयोगी पानी का अपवाह :-

इस नगर क उच्च आय वर्ग के मकानो मे अनुपयोगी पानी कि निकास के लिये सिमेन्ट से बनी नालिया है जो सीधे सडक के किनारे बनी खुली नाली से मिलती है। यह स्थिति प्राय नगर के मध्य भाग मे स्थित सभी वार्डो मे है। नगर के बाहरी छोर पर स्थित वार्ड मे पानी की निकासी नाली मे न होकर खेतो मे हो जाती है या तालाबनुमा गड्ढो मे भी पानी जमा होता है जिससे एकत्रित गड्ढे मे जमा पानी से मच्छर व कीटाणु तथा दुर्गन्ध उस क्षेत्र के पर्यावरण को प्रभावित करते है। यह स्थिति नगर के कई वार्डो मे देखी गयी जैसे उमरपुर मे बाईपास के किनारे नाला, मतापुर मे मुहल्ला हिन्दी पट्टी मे गड्ढा, जगदीशपट्टी मे गड्ढा, हरखुपर वार्ड के चितरसारी मुहल्ले मे, तालाबनुमा गडढा, ईसापुर वार्ड मे मुहल्ला बोदकरपुर, आराजीगुर्जी खानी व सुल्तानपुर हाय मे गन्दा पानी, एकत्रित पाया गया। चाचकपुर वार्ड के सिपाह मुहल्ले, ओलन्दगज के कालीकुत्ती मुहल्ले मे व जोगियापुर मे, रासमण्डल वार्ड के बलुआघाट मुहल्ले मे, पान दरीबा वार्ड के प्रेमराजपुर मुहल्ले मे व बाजार भुवा मे गड्ढेनुमा स्थान पर गन्दा पानी एकत्रित मिला। उच्च आय वर्ग के आवास के सामने या आसपारा जल जमाव की स्थिति नही पायी गयी। न्यून आय वर्ग के आवासीय क्षेत्र मे कूडे करकट का विसर्जन उपयुक्त स्थान पर न किये जाने के कारण नालियो मे कूडा करकट जमा हो जाता है और गन्दा पानी सडक पर आने लगता है।

जौनपुर नगर मे सीवर लाइन न होने के कारण गन्दे पानी के अपवाह के

लिए नालियो की सफाई व आवश्यकतानुसार पक्की नाली के निर्माण की आवश्यकता है। नगर के आवासीय पर्यावरण मे सुधार लाने के लिए विकास कार्यों मे प्रथम वरीयता उपयुक्त नाली निर्माण को ही दिया जाना चाहिए। इस नगर के पानी निकासी के लिए बनी नाली की व्यवस्था त्रुटिपूर्ण है जिससे बरसात क दिनो मे जहा का नीचा उच्चावच्च है पानी भर जाता है। यह स्थिति नगर के अधिकाश भागो का हो जाती है। इस स्थिति से निजात पाने के लिए इस नगर मे सीवर लाइन के निर्माण पर विशेष रूप से ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है।

घरों के कूड़ा करकट के विसर्जन की स्थिति -

कूडा करकट एकत्रित किये जाने वाले स्थान से भी उस क्षेत्र के आसपास रहने वाल लोगो को परेशानी का सामना करना पडता है, क्योकि कूडा सिटी बोर्ड की तरफ से प्रतिदिन नही उठाया जाता है। अति उच्च व उच्च आय वर्ग के घरो को छोडकर प्राय सभी घरो मे बताया गया कि कूडा खुले बर्तन मे रखा जाता है एव उसे सडक के किनारे विसर्जित किया जाता है। इसके कारण ऐसे क्षेत्रो मे स्थित घरो मे मक्खी मच्छर अधिक सख्या मे पाये जाते है ऐसा बताया गया। दूसरी तरफ उच्च एव अति उच्च आय वर्ग वाले घरो मे कूडा बद बरतन मे रखा जाता है एव उसका विसर्जन कूडा रखने के स्थान पर होता है न कि सडक के किनारे कही भी। कम आय वर्ग वाले घगे के सामने विशाल मात्रा मे कूडा करकट बिखरा हुआ पाया गया। पूछने पर पता चला कि नगर पालिका के स्वच्छकारो द्वारा यहा से कूडा महीने मे एक बार उठाया जाता है एव यहा रहने वाले लोग निजी स्वच्छकारो द्वारा (अलग से पैसा देकर) क्षेत्र की सफाई नही करवाते है। उच्च आय वर्ग के घरो ने बताया कि उनके घर से व मुहल्ले से कूडा लगभग प्रतिदिन निजी स्वच्छकारो द्वारा हटवा दिया जाता है। नगर के सर्वेक्षण से यह पता चला कि नगर पालिका द्वारा सप्ताह मे एक दिन ही जगह–जगह से एकत्रित कूडत्रा को ट्रैक्टर द्वारा उठाये जाने के कारण एकत्रित कूडा कई दिनो तक पडे रहने के कारण जानवर उसे और फैला देते है। व हवा से कूडा यत्र तत्र बिखर जाता है। बरसात के दिनो मे इसका और विकृत रूप हो जाता है। अत पर्यावरण सही रखने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि कूडा रखने वाले स्थान गड्ढानुमा हो और उस स्थान को ईंट की दीवार से घिरा होना चाहिए

अथवा इस नगर मे जगह–जगह कन्टनर रखने की व्यवस्था होनी चाहिए जो इस नगर मे बिल्कुल नही है।

घरों मे कीटाणु व मक्खी मच्छर का प्रभाव -

कीट पतग मक्खी मच्छर की उपस्थिति से घर के आवासीय पर्यावरण की व्याख्या स्वय हो जाती है। क्योकि ये विभिन्न प्रकार की बीमारियो के कारण (जनक) होते है। इस नगर मे उपयुक्त नाली की व्यवस्था न होने के कारण व जगह–जगह कूडा एकत्रित रहने के कारण कीटाणु व मक्खी मच्छर के उत्पन्न होने व पनपने की आदर्श दशाये पायी जाती हे। अधिकाश घरो मे चूहे, चपडे मलेरिया फैलाने वाले एनाफिलीज मच्छर, मक्खिया, छोटे–छोटे कीटाणु, सभी कम/अधिक मात्रा मे पाये जाते है। मक्खिया विशेषकर उन घरो मे पायी जाती है जहा आस–पास कूडे के साथ मल भी पडा रहता है। कम आय वर्ग वाले घरो मे कीट व मक्खी मच्छर से बचाव के लिये कोई उपाय नही अपनाये जाते है एव इनके घर मे रोशनदान व खिडकी का भी अभाव पाया जाता है। इस कारण इन घरो मे मक्खी मच्छर कीट आदि अधिक पाये जाते है। मध्यम व उच्च आय वर्ग के घरो मे कीटाणु व मक्खी मच्छर से बचाव के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय अपनाये जाते है। सिटी बोर्ड की तरफ से कम आय वर्ग वाले घरो के आसपास मक्खी मच्छररोधी दवाओ का छिडकाव समय–समय पर करवाना प्रभावकारी हो सकता है साथ ही साथ अधिक से अधिक लोगो को मच्छर से बचाव के लिए मच्दरदानी का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे मलेरिया जो कि यहा बहुत फैलता है से निजात पाया जा सकता है। सुलभ शौचालय प्रत्येक वार्ड मे पर्याप्त सख्या मे बनवाये जाने चाहिए जिससे वे लोग जिनके घर शौचालय नही है सडक के किनारे या खेत मे मल त्याग के लिये न बैठे।

जौनपुर नगर के घरो में वायु प्रदूषण एव उसका स्वास्थ्य पर प्रभाव -

घर मे शुद्ध वायु का होना स्वस्थ्य जीवन के लिए बहुत आवश्यक है क्योकि औसत रूप से व्यक्ति सोलह घटे घर मे ही व्यतीत करता है। घर की वायु की गुणवत्ता इस

बात पर निर्भर करती है कि भोजन पकाने के लिए किस प्रकार के ईधन का प्रयोग किया जाता है एव भोजन कहा पकाया जाता है घर म धूम्रपान होता है अथवा नही होता, बाहर के स्रोतो से घर मे धूआ आता है अथवा नही कमरे हवादार है? रोशनदान खिडकी है अथवा नही।

जौनपुर नगर मे उच्च एव अति उच्च आय वर्ग के सभी घरो मे भोजन पकाने के लिए अलग से रसोई के कमरे का उपयोग किया जाता है। भोजन पकाने के लिए गैस का ही उपयोग किया जाता है। घर मे धूम्रपान बहुत कम घरो मे सीमित मात्रा मे ही किया जाता है। घर के कमरे हवादार है जिससे बाहर के स्रोतो से आया धूआ शीघ्र ही निकल जाता है। मध्यम आय वर्ग के भी 71 प्रतिशत घरो मे रसोई का कमरा है, परन्तु इस आय वर्ग के 40 प्रतिशत घरो मे ही भोजन पकाने के लिए गैस का प्रयोग होता है बाकी लोग मिटटी के तेल का प्रयोग ईंधन के रूप मे करते हे। निम्न आय वर्ग के सभी घरो मे रसोई का कमरा बना नही पाया गया ये लोग जिस कमरे मे रहते सोते है उसी मे खाना भी बनाते है एव सस्ते ईंधन का प्रयोग जैसे कोयला, लकडी, गोबर के कडे का प्रयोग किया जाता है। घर मे धूम्रपान अधिक होता है। घर मे उचित वातायन की सुविधा नही है अत धूआ घर मे देर तक बना रहता है। परिणाम स्वरूप इन घरो के बच्चो व स्त्रियो मे श्वास सम्बन्धी बीमारी होने की सभावना अधिक रहती है। सरकार को ऐसे गरीब व्यक्तियो के लिए कम दाम मे खाना पकाने वाली गैस मुहैया करानी चाहिए। इस समय मिटटी का तेल भी प्रत्येक परिवार मे आवश्यकतानुसार उपलब्ध नही हो पा रहा है क्योकि सरकारी दुकानो की अपेक्षा खुले बाजार मे मिट्टी का तेल इतने अधिक दाम मे मिलता है कि गरीब व्यक्ति उसे खरीदने की स्थिति मे नही रहता है। इसलिए सरकार को कम मूल्य मे छोटे गैस के सिलेण्डर की व्यवस्था करनी चाहिए एव सरकारी दुकानो से मिट्टी का तेल पर्याप्त मात्रा मे मिलना चाहिए। गरीब को कम मूल्य मे धूम्र रहित चूल्हा सरकार की तरफ से वितरित किये जाने की आवश्यकता है।

उत्तरदाताओं द्वारा घरों की पर्यावरणीय स्थिति में सुधार लाने के लिए दिये गये सुझाव :-

नगर के सभी आय वर्ग के लोगो ने यह सुझाव दिया कि अनुपयोगी जल

की निकासी खुली नाली से न होकर क बडे नगरो की भाति जमीन के अन्दर सीवर लाइन का निर्माण करके होनी चाहिए तथा प्रत्यक धरो के शौचालय से निकला गन्दा पानी सीवर लाइन से जोडा जाना चाहिए। अत्यन्त कम आय वर्ग व कम आय वर्ग के 95 प्रतिशत लोगो ने जिनके घर शौचालय नही है सरकारी सुलभ शोचालय व प्रसाधन केन्द्र बनाये जाने की आवश्यकता को प्रथम वरीयता पर रखा है। मध्यम आय वर्ग के लोगो ने सिटी बोर्ड के सफाई कर्मियो द्वारा नालियो, सडको व गलियो की सफाई नियमित व ठीक ढग से न किये जाने की शिकायत की। कई मुहल्लो मे महीनो तक एकत्रित कूडा को सिटी बोर्ड द्वारा न उठवाये जाने की शिकायत की गयी। निम्न आय वर्ग के 90 प्रतिशत लोगो ने सिटी बोर्ड द्वारा पेयजल की आपूर्ति पर्याप्त मात्रा मे न किये जाने की शिकायत की और यह बताया कि पर्याप्त पानी न मिलने से ये लोग विवश होकर येन–केन–प्रकारेण दूषित जल का प्रयोग करते है। अत्यधिक उच्च आय वर्ग के कुछ घरो मे रहने वाले लोगो ने आवासीय पर्यावरण के खराब रहने जैसी कोई समस्या को नही बताया परन्तु सभी ने ध्वनि प्रदूषण को एक समस्या के रूप मे अवश्य बताया।

शोधकर्त्री के सूझाव_नगर मे कूडा करकट एव ठोस अपशिष्ट विसर्जन के लिए सिटी बोर्ड द्वारा जगह–जगह कन्टेनर रखा जाना चाहिए जिसे लोग सडक पर यत्र–तत्र कूडे का विसर्जन न करे। इस सम्बन्ध मे लोगो को जागरूकता पैदा किये जाने की आवश्यकता है। निम्न आय वर्ग के जिन व्यक्तियो के लोग ईंधन के रूप मे लकडी, गोबर के कडे, सुखी पत्तियो का उपयोग करते है उनके लिए सस्ते मुल्य पर सरकार की तरफ से गैस मुहैया कराया जाना चाहिए यदि यह सम्भव न हो तो धुम्ररहित चूल्हे का उपयोग करने की व्यवस्था की जानी चाहिए। निम्न आय वर्ग के लोगो को केरोसीन उनकी आवश्यकतानुसार कम मूल्य पर दिये जाने की आवश्यकता है। बीस सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत गरीब व निम्न आय वर्ग के लोगो के लिए मूलभूत सुविधाए जैसे शुद्ध पेयजल, पक्की नाली, विद्युत, पक्की गली, पक्के आवास की सुविधा प्रदान किये जाने की आवश्यकता है। नगर मे सर्वत्र सीवर लाइन का जाल बिछाकर घरो के गन्दे पानी व नालियो के पानी को सीवर लाइन के माध्यम से निष्कासित किये जाने की आवश्यकता है। स्वच्छकारो की सख्या बढाकर सफाई कार्यों मे गुणात्मक सुधार लाने की

आवश्यकता है। नगरवासियो मे सफाई से रहने आसपास गन्दगी न होने आदि बातो की समझ विकसित कराई जाने की आवश्यकता है।

नगर मे सभी वार्डों मे आवश्यकतानुसार शुलभ शौचालय बनाये जाने की आवश्यकता है क्योकि इस नगर मे प्रति वार्ड औसत एक सुलभ शौचालय की व्यवस्था नही है। नगर मे पेयजल की समस्या के समाधान के लिए सरकार की तरफ से इण्डिया मार्क टू चापाकल आवश्यकतानुसार मोहल्लो मे लगाये जाने की आवश्यकता है। आर्थिक दृष्टि से स्वालम्बी बनाये एव रहन–सहन का स्तर ऊँचा उठाने के लिए उद्योग लगाये जाने की लिए आवश्यकता है जो इस शहर मे नही के बराबर है।

जौनपुर नगर के 26 वार्डों मे स्थित निम्न आय वर्ग के व्यक्तियो के आवासो का सर्वेक्षण करने से पता चला कि इन व्यक्तियो के पास पर्यावरण से सम्बन्धित मूलभूत सुविधाये जैसे पक्की नाली, शौचालय, शुद्ध पेयजल की व्यवस्था और विद्युत की सुविधा उपलब्ध नही है जिसको (ऐसे परिवार वाले व्यक्तियो) को मुहैया कराया जाना आवश्यक है। ऐसे प्रत्येक मुहल्लो मे रहने वाले अति निम्न आय वर्ग की श्रेणी मे आने वाले सदस्यो की सख्या निम्नलिखित है।

क्र स	अति निम्न आय वर्ग के मुहल्ले व मलिन बस्ती का नाम	निवास करने वाले व्यक्तियो की सख्या
1	तूतीपुर	150
2	मकदूमशाह अढन	200
3	ताडतला	300
4	कोठियावीर	275
5	दतासर	50
6	प्रेमराजपुर	245
7	सराय मुहामिद	225
8	अर्जन	175
9	गदर अरजानी	165

10	चितरसारी	235
11	जियनीपुर	100
12	कायमपटटी (हरखपुर)	50
13	पान दरीबा	250
14	जगदीशपुर	45
15	समोधपुर	65
16	मैनीपुर	65
17	बसेहूपुर	45
18	मिश्रपुर	135
19	आलमगज	180
20	मीरमस्त	300
21	हमाम दरवाजा	260
22	मुहालगाजी	75
23	खालिजपुर	90
24	मुफ्ती मोहल्ला	195
25	शेख मुहामिद	180
26	सुक्खीपुर	125
27	मुल्ला टोला	150
28	मकदूमशाह बडे	45
29	रासमण्डल	225
30	चाचकपुर	125
31	सिपाह	165
32	बलुआघाट	225
33	केरारकोट	65
34	मछरहट्टा	55

35	ख्वाजादोस्त	150
36	खासनपुर	225
37	वाजिदपुर (उत्तरी)	75
38	ढालगर टोला	150
39	ख्वाजगी टाला	125
40	अहियापुर (बासकोट बस्ती दक्षिण)	75
41	शहाबुद्दीनपुर	45
42	धरनीधरपुर	45
43	बल्लोच टोला	85
44	रिजवी खा	65
45	अलफस्टीनगज	165
46	शेखपुर (सूरजघाट)	25
47	तारापुर	30
48	भौराजीपुर	45
49	उर्दूबाजार	275
50	फिरोजशाहपुर	225
51	मण्डी नसीब खा	90
52	आरजी गुरजी खाना	125
53	रसूलाबाद	175
54	खुरचनपुर	100
55	ख्वाजगी टोला	125
56	आदमपुर	45
57	भण्डारी	140
58	जोगियापुर	
59	जीतापट्टी	40

60	बोधकरपुर	50
61	शकरमण्डी सुल्तानपुर	140
62	आदम अकबरपुर	15
63	मरदानपुर	80
64	नक्खास	200
65	जहागीराबाद	85
66	मालीपुर	60
67	वाजिदपुर धोबियान	175
68	मतापुर	275
69	उमरपुर	150
70	परमानतपुर	300
71	नईगज	300
72	मियापुर	250
73	शेषपुर	60
74	कटघरा	175
75	तारापुर कालोनी	150
76	तारापुर तकिया	70
77	हुसेनाबाद	225
78	अहमद खा मण्डी	50
79	हरिबन्धनपुर	50
80	किशुन	125
81	कालीकुत्ती	150
82	कन्हईपुर	60
83	सराय	50
84	ताडतला हरि0 बस्ती	50

इस सम्बन्ध मे मेरे द्वारा निम्न आय के मुहल्ले व मलिन बस्ती मे निवास करने वाले व्यक्तियो के आवास के पर्यावरण को सुधारने के लिए किये गये प्रयास के बारे मे प्रोजेक्ट आफिसर 'जिला नगरीय विकास अभिकरण' (DUDA) जौनपुर से जानकारी प्राप्त की गयी तो उन्होने बताया कि जिन व्यक्तियो के पास उपयुक्त आवास नही है ऐसे व्यक्तियो की सूची विभागीय स्तर से बनवायी जा रही है व भविष्य मे वाल्मिकी अम्बेडकर योजना के तहत नगर क्षेत्र के अन्तर्गत जमीन खरीदकर 40 हजार रूपये प्रति आवस की दर से व्यय करके आवास निर्माण किये जाने की योजना है। इस योजना मे 20 हजार रूपये अनुदान के रूप मे दिये जाने की योजना है। लेकिन इस नगर मे निवास करने वाले निम्न आय वर्ग के लोगो की सूची से यह प्रतीत होता है कि निकट भविष्य मे ऐसे व्यक्तियो के आवासीय पर्यावरण मे सुधार होने की सभावना कम है क्योकि अब तक ऐसे मुहल्लो मे निवास करने वाले व्यक्तियो को मूलभूत सुविधाये प्रदान करने क लिये सरकार की तरफ से जो धन आवटित किये गये वह आवश्यकतानुसार बहुत कम हे। पिछले कुछ वर्षो मे उपरोक्त कार्य के लिए जौनपुर नगर मे सरकार की तरफ से जिला नगरीय विकास अभिकरण को दिया गया धन इस प्रकार है–

वर्ष 1999–2000– 20,46000

वर्ष 2000–2001– 47,39000

वर्ष 2001–2002– 36,57000

यह विभाग उपरोक्त धन से नाली का निर्माण, खडन्जा का निर्माण, सार्वजनिक चापाकल लगाने का काम व सडक निर्माण का काम बीस सूत्रीय कार्यकम के अन्तर्गत मलिन बस्तियो मे कराता है। यह विभाग 1984 से कार्यरत है परन्तु मलिन बस्तियो मे आज तक अपेक्षित सुधार नही हो सका है। व्यक्तिगत सर्वेक्षण के दौरान मलिन बस्तियो मे निवास करने वाले आम लोगो की शोधकत्री से शिकायत थी कि उन्हे सरकार द्वारा उनकी आवश्यकतानुसार मिट्टी के तेल की मात्रा तक नही मिलती है और जो पक्की नालिया बनायी गयी वह जगह–जगह टूट गयी है उनकी मरम्मत का काम भी नही किया गया जिससे नाली का पानी घर के आसपास बिखरा रहता है।

इस सम्बन्ध मे विशेष रूप से उल्लेखनीय तथ्य यह है कि यदि सरकार द्वारा आवटित धन का ही सदुपयोग होता रहे तो धीरे–धीरे मलिन बस्तियो की सख्या घट जायेगी और उनके आवासीय पर्यावरण मे सुधार हो सकता है।

सन्दर्भ सूची

(BIBLIOGRAPHY)

Altaf, A Jamal, H , Whittington, D , 1992 'Willingness to Pay for water in Rural Punjab, Pakistan', water and Sanitation, Report 4 UNP- World Bank, Washington, D C

Ahmad, A M 1989, ' Housing Submarkets for the Urban Poor the case of greater Khartoum, the Sudan,' Enviroment and Urbanization, Vol 1, No 2, Nottinghum London, pp 50-59

Atkinson, S J , 1993 'Urban Health in the Third World A guide to the literature', Environment and Urbanization, Vol 5, No 2, Nottinghum, London, pp 146-151

APHA 1985, ' Standard Methods for the Examination of water and waste water' American public Health Association, Washington, D C

Aina, T A 1989, 'Many Routes Enter the Market place, Housing submarkets for the urban poor in metropolition, Logos, Nigeria, Environment and Urbanization, Vol 1, No 2, Nottinghum, London, pp. 38-49

Audinarayan, N , October 1987, 'Environmental Santitation A Study in a Village of Andhara Pradesh, Swasth Hindi, Vol. XXXI, No 10, New Delhi, pp 248-249

Ahmad M S Khan, T A 1993, Water Quality of Shallow Aquifers in Karwan-Sangar Sub Basin, District Aligarh, 'Chemical and Environmental Research, Aligarh, pp. 251-259.

Atiqur Rahman's research work, 1995 Topic Household environmental in Aligarh city

Bhattacharya, et al 1978, Environmental Aspect of Human Settlements in Asia, Jaipur

Bagchi, S N , Dec 1977, 'Environmental Healthe and pollution', 'Environmental pollution and Urban Administration, New Delhi, pp 33-41

Bourne, L S , 1981 The Geography of Housing, London

Bhattacharya, M , Dec 1977, 'Role of Municipal Government in Pollution Control,' Environmental Pollution and Urban Administration, New Delhi, 62-65

Brain Heenan, L D , 1982 'Cigaratte Smoking among Newzelanders evidence from the Census', Geogrphical Aspect of Health, London

Biswas, D , Dutta, S A , 1994 Combating the Smog and Noise in Cities, The Hindu Survey of the Environment, Madaras

Bradley, D , et al 1991 'A Review of Environmental health Impacts in Development Country Cities' Discussion Paper Urban Management Programme, World Bank UNDAUNCHS

Brady, J E , 1986 'Impact of Clean Air Legislation on Dublin Households', Irish Geography, Belfast, Vol 19, pp 41-52

Basu, R October, 1992 ' Poisoned Waters', Nation and the world, New Delhi, pp 5-10

Benneh, G , et. al 1993, Environmental Problems and the Urban Households in the Greater Accra Metropolitan Area (GAMA) Ghana, Stockholm Environment Institute, Stockholm

Bhargava, G ,1981 Urban Problems and Perspectives, New Delhi

Bawsin, J A Doornkamp, J C , 1973 Evaluting human Environment, Great Britain

Chand, D , June 1987, 'Planning for a Sound Housing', Swasth Hind, Vol XXXI, No 6, N Delhi, pp 152-156

Chandra, D , Shukla, M , June 1987 'Adverse Health Effects of Environmental Pollutants', Swasth Hind Vol XXXI, No 6, New Delhi, pp 136-140

Chohan, S K , 1988, Impact of Urban Traffic on Urban Environment', Institute of Town planners India Journal, Vol 6, No 3, New Delhi, pp 11-13

Chengappa, R Rajghatta, C June 15, 1989 ' Poison in Your Food', India Today, New Delhi, pp 74-83

Cairneros, S et al (eds) 1990 The Poor Die Young, Housing and Health in the Third World, Earthsean, London

CSE , 1989 ' The Environmental Problems Associated with India's Major Cities' Environmental and Urbanization, Vol 1, No 1, Nottinghum, London, pp 7-15

Casteneda, F C , 1988, The Risk of Environmental Degradation in Bagota, Columbia, Environment and Urbanziation, Vol 1, No 1, Nottinghum, London, pp 16-21

Chapman, C P , 1977, Human and Environmental system, London

Cunniff, P F , 1977 The Environmental Noise Pollution, New York

Cervemy R.S , 1989, ' Shadowing of Non-Polluted locations by urban polulation', Annals of Association of American Geographers, Vol 79, No 2 Washington pp 242-253

Chen, B H et al 1990 'Indoor Air Pollution in Developing Countries' WHO Statistics Quarteily, 43, pp 127-138

Chaturvedi, A C , Dec 1977 ' Environmental Health Problems in Urban Areas', Environmental Pollution and Urban Administration, Seminor Proceedings, New Delhi, pp 28-32

Detwyler, T R , 1971 Man's Impact on Environment, McGraw Hill, NewYork

Davis, A , 1971 'Let us Eat Right to Keep Fit, London

England, R , Ahnwick, D , 1982, ' What Low Income Families Afford for Housing' HABITAT International, Vol 6, No 4, Oxford, pp 441-457

Ellegard, A , Egneus, H 1992, Health Effects of Charcoal and Wood Fuel Use in Low Income Households in Lusaka, Stockholm Environment Institute, Stockholm

Essey, S A Feachem, R G , 1985 Interventions for the control of Diarrhoeal Diseases Amomg Yong Children Improving water supplies and excreta disposal facilities bulletin of the World Health Organization, pp 757-772

Emery, J , 1982 'Environmental Education through Geography' Phillipine Geographical Journal, Vol XXVI, No 4, Manila, pp 53-57

Franke, R G , Franke, D N , 1975 Man and Changing Enironment, NewYork

Fazal, S , 1993, 'Influence of Changing Prices on cropping pattern in the District of Upper Ganga Yamuna Doab, U P ' Unpublished Thesis, A M U , Aligarh

Ghos, S , Oct 1987, 'Acute Respirtory infection', Swasth Hind, Vol XXXI, No 6 New Delhi, pp 241-242

Grove, N , 1988, 'An Aır of Uncetaınty', Span, New Delhı, pp 42-48

Ghazalı, F A 1992, 'Poısoned Water', Nature and the World, New Delhı, pp 28-29

Hoque, B et al , 1994' Sanıtatıon ın a Poor settlement ın Bangladesh A Challenge for the 1990s' Envıronment and Urbanısatıon, Vol 6, No 2, Nottınghum, London, pp 79-85

Hasan, A Alı, A A , 1992 'Envıronmental Problems ın Pakıstan theır orıgıns and development and the threats that they pose to sustaınable development', Envıronment and Urbanızatıon, Vol 4, No 1, Nottınghum, London, pp 8-21

Hamza, A , 1989, 'An Apprasal of Envıronmental Consequences of Urban Development ın Alexandrıa, Egypt' Envıronment and Urbanızatıon, Vol 1, No 1, Nottınghum, London, pp 22-30

Hyma, B , et al 1989 ' A Revıew of Urban Malarıa Control Sıtuatıon and Related Envıronmental Issues ın Tamıl Nadu, Indıa In G Salam, and E Jeanec (eds) urbanızatıon of Sante dans letıers monde Transıtıon epıdemıdogıque changement socıal ıt soıns de sante prımarıes, pp 159-177

Hınkle, Jr L E., Lorıng, W C , 1979 'The Effects of the Man Made Envıronment on Health Behavıour, London.

Harrıs, A., et al. 1975 Man's Envıronment, Italy

Hussey, A , 1994 'Urban Aır Pollutıon ın Mega Cıtıes of the World Joınt Report by (WHO) and (UNEP) Geographıcal Revıew, Vol 84, No 1, Kansas , pp 177-119

Izeogu, C V , 1989 'Urban Development and the Envıronment ın Port Hardcourt' Envıronment and Urbanızatıon Vol 1, No 1, Nottınghum, London, pp 59-68

Jacobı, P R , 1994 "Households and Envıronment ın the cıty of Sao Paulo, Problems Perceptıons and Solutıon ' Envıronment and Urbanızaıon Vol 6, No 2, Nottınghum, London, pp 87-110

Jaın, M P , Lakshmıpathı, N , Oct 1987 ' Envıronmental Radıo Actıvıty and Health', Swasth Hınd, Vol XXXI, No 10, New Delhı, pp 237-240

Jımenez, R D , Velasquer S A , 1989 'Metropolıtıon Manıla A frame work for ıts Sustaıned Development, Envıronment and Urbanızatıon, Vol 1, No 1, Nottınghum, London, pp 51-58

Jalees K , 1986 'Pollutıon beıngs at home', Tımes of Indıa, 13th Nov

Jones, K , Moon, G , 1987 'Health Dısease and Socıety', A Crıtıcal Medıcal Geography, London

Jacobı, P R , 1995, Envıronmental Problems Facıng Urban Households ın the Cıty of Sao Paulo Brazıl, Stockholm Envıronment Instıtute, Stockholm, 10

Kamal, S A 1975, Raıny Season Dısease and theır Preventıon,' Bombay Cıvıc Journal of Indıa, Vol 22, No 4 Bombay

Koopman, J S , et al 1981 'Food Sanıtatıon and the socıo-economıc determınents of chıld growth ın Columbıa' Amerıcan Jouınal of Publıc Health, Vol 71, No 1, pp 31-37

Kowata K 1963 Envıronmental Sanıtatıon ın Indıa, Ludhıana

Kapur M L , June 1987 'Water Supply for Vıllages', Swasth Hınd, Vol XXXI, No 6, New Delhı, pp 146-147

Kumar, R , 1987 Envıronmental Pollutıon and Health Hazards ın India, New Delhı

Kotpal, R L , Balı, N P 1988 Concept of Ecology, Jalandhar

Kumar V , June 1989,' Indoor Aır Pollutıon', Scıence Reporter, New Delhı

Kundu, A , 1993, 'In the Name of Urban Poor-Access to Basıc Amenties, New Delhı

Landıs, P H , 1954, Man ın Envıronment-An Inroductıon to Socıology, New York

Larsely, S , 1979, Housıng and Publıc Polıcy, London

Lyapunor, B , 1966, Man and Hıts Envıronment, Moscow

Laconte, P , 1979, The Envıronement of Human Settlements, (Human Well Beıng ın Cıtıes), Vol 2, Oxford

Larkın, R P et al , 1980, People, Envıronment and place An Introductıon to Human Geography, Ohıo, U S A

Lee, D O , 1985, 'Brıtaıns Imported Aır Pollutıon', Journal of Geographıcal Assocıatıon Vol 70, No 308, London, pp 257-263

Loung, T V , June 1987, 'Women, Water and Sanıtatıon', Swasth Hınd, Vol XXXI, No 6, New Delhı, pp 142-145

Mehta, J C , 1977, Habıtat Human Settlements and Envıronmental Health, New Asıan Publısher

Meltıng, J (ed.), 1980 Housıng, Socıal Polıcy and the State, London

Molbak K et al 1981 'Bacterıal of Stored wateı and Stored Food · A potentıal Source of dıarroes dısease ın West Afrıca', Edıdemologıcal ınpematıo, Vol 102, pp 309-316

Maurya, S D 1989, Urbanızatıon and Envıronmental Problems, Allahabad

Mc Granahan, G 1991, Envıronmental Problems and the Urban Households ın Thırd World Countrıes, Stockholm Envıronment Instıtute, Stockholm

Mehta, D , 1995, Urban Waste Managements Future Portents

Mueıler C C , 1995, ' Envıronmental Problems ınherent to a development Style Degradatıon and poverty ın Brazıl, Envıronmental and Urbanısatıon, Nottınghum, London, Vol 1, No 2, pp 67-84

Mann, E A 1992, 'Boundarıes and Identıtıes - Muslıms, Work and Status ın Alıgarh' New Delhı

Mathur, A , 'Assessement of Aır Pollutıon ın Kota Cıty', Natıonal Geographer, Vol XXV, No. 1, Allahabad, pp 63-67

Park C C 1980, Ecology and Envıronmental Management, London

Pandey, M R et al , 1987 'Domestıc smoke pollutıon and Acute Respıratory ınfectıon ın Nepal' In Shıefet B , (eds) Fourth Internatıonal Conference on Indoor Aır Qualıty and clımate, Vol 4, Berlın Instıtute of Water, Soıl and Aır Hygıene, pp 25-29

Phıllıps, D R , 1992 Health and Health Care ın the Thırd World

Pırkko, et al 1989,' Resıdentıal Heatıng · Choıce of fınısh households', Economıc Geography, Vol 65, No 2, Warester, pp 130-142

Peorbo, H , 1991 'Urban Solıd Waste Management ın Bandung towaı ds and ıntegrated resource recovery system,' Envıronment and Urbanızatıon, Vol 3, No 1, Nottınghum, London, pp 60-69

Rajan, S , Azarıah, J , 1989 'A Survey on the Qualıty of Drınkıng Water of Madras Cıty and Publıc Health Implıcatıons',

The Indıan Geographıcal Journal, Vol 64, No 1, Madras

Reddy, U B , 1989, 'Impact of Urbanızatıon on Cıtıes' Envıronment ın Indıa, Maurya, S D (ed), Urbanızatıon and Envıronmental Problems, Allahabad

Raval, J P , Dec 1977, 'Industrıes Involvement ın Envıronmental Problems' Envıronmental Problems and Urban Admınıstratıon, New Delhı, pp 23-27

Raı S , 1992, Housıng and Health ın Varanası Urban Agglomeratıon', Populatıon Geography, Vol 14, No 1 & 2, Chandıgarh

Reddy, A K.N , 1995, Envıronmental Actıons . 'Fırst Act locally then globally', The Hındu Survey of the Envıronment, Madras

Strahler, A H , Strahler, A N , 1977, Geography of Man's Envıronment, New York

Seth, G K 1988, Know your Envıronment, New Delhı

Sıngh, R B , 1988 Studıes ın Envıronment and Development, New Delhı

Sıngh, J Sıngh D N , 1988, An Introductıon to Our Earth and Envıronment, Varanası

Sıngh, I.P , Tewarı, S C , 1980 Man and hıs Envıronment, New Delhı.

Sharma, R D , June 1987 'The man made Envıronment and Health Behavıour, Swasth Hınd, Vol XXXI, No 6, New Delhı, pp 141

Sıngh, A.L , Fazal, S , Azam, F , Rahman A , 1996 Income, Envıronment and Health A Household Level Study of Alıgarh Cıty-Indıa HABITAT Internatıonal, Vol 20, No 1,

Swamınathan, M 1995, Slums ın Bombay Deprıvatıon and the Environment', The Hındu Survey of the Envıronment, Madras

Swamınathan, M , 1995 'Aspect of Urban Poverty ın Bombay', Envıronment and Urbanızatıon, Vol 7, No 1, Nottınghum, London, pp 133-144

Sengupta, J , Aprıl 1994, A Doubtful Destınatıon, Sunday, New Delhı, pp 40-41

Sharma, J , 1995, 'Ill Effects of Noıse', Woman's Era, Gazıabad, pp 32-33

Suryȷadı, C , 1993, ' Respıratory dıseases of mother and chıldren and envıronmental factors among households ın Jakarta', Envıronment and Urbanızatıon, Vol 5, No 2, Nottınghum, London, pp 78-86

Songsere, J , McGranahan, G , 1993,'Envıronment, Wealth and Health towards an analysıs of ıntra-urban dıfferentıals wıthın the Greater Accra Metroplıtıon Area Ghana, Envıronmental and Urbanızatıon, Vol 5, No 2, Nottınghum, London

Satterthwaıte, D , 1993 'The ımpact on Health of Urban Envıronments ' Envıronment and Urbanızatıon, Vol 5, No 2, Nottınghum, London, pp. 87-111

Sıngh, S 1991 Envıronmental Geography, Allahabad

Sehteıngart, M , 1989, 'The Envıronmental Problems Assocıated wıth Urban Development ın Mexıco Cıty', Envıronment and Uıbanızatıon, Vol 1, No 1, Nottınghum, London, pp. 40-50.

Turk, J , Turk, A , 1983, Envıronmental Scıence , (Thırd Edıtıon), NewYork

UNFSCO, 1975, Water for the affluent Cholera for the Poor, Parıs

Vıjayan, M , March 1988 'Mıcro-algae ın Waste Water pollutıon Control', Scıence Reporter, New Delhı, pp 176-178

WHO, 1984, Guıdelınes for Drınkıng Water Qualıty, World Health Oraganızatıon, Geneva

Whılelogy, J , 1992, Transport and the Envıronment Geography, Sheffield, Vol 77, Part 1, pp 91-93

Wılson, B R , 1968 Envıı onmental Problems, U S A

WHO, 1988a 'Urban Vector Pest Control', Technıcal Report, Serıes No 767, WHO, Geneva

परिशिष्ट-1

प्रश्नावली

जौनपुर नगर मे आवासीय पर्यावरणीय समस्याये

1– वार्ड न   तारीख

2– मुहल्ला/कालोनी   समय

1– उत्तर देने वाले की सामान्य विशेषताये

1 लिग (क) स्त्री (ख) पुरूष

2 आयु (वर्ष मे)

3 धर्म– (क) हिन्दू (ख) मुसलमान (ग) सिख (घ) क्रिश्चियन

प्रतिमाह कुल आय (रूपयो मे)

(क) <1 500 (ख) 1500–2 999 (ग) 3 000–4999 (घ) 5 000–9 000

(ड) < 9 000

2– सामान्य पारिवारिक विशेषताये

1– परिवार का मुखिया कौन है?

(क) पिता (ख) माता (ग) अर्थाजनकर्ता पुरूष सदस्य (घ) अन्य

2– एक मकान मे निवास करने वाले परिवारो की सख्या

(क) एक (ख) दो (ग) तीन (घ) तीन

3– एक मकान मे रहने वाले सदस्यो की सख्या

(क)<5 या 5 (ख) 6–10 (ग) 11–15 (घ) 15

4– साक्षात्कृत परिवार के सदस्यो की सख्या

(क)<3 या 3 (ख) 4–6 (ग) 7–9 (घ) <9

3– पारिवारिक स्वामित्व

1– उपकरणोके स्वामी

(क) पखा (ख) आयरन (प्रेस) (ग) खाना पकाने की गैस (घ) रेफ्रीजरेटर

(ड) श्याम श्वेत टीवी (व) कूलर (छ) रगीन टीवी (ज) टेलीफोन

(झ) वीसीआर/वीसीपी (ञ) जनरेटर (ट) धुलाई की मशीन (ठ) गीजर

(ड) एअर कडीशनर (ण) कोई नही

2– वाहन का स्वामित्व

(क) साइकिल (ख) मोपेड (ग) मोटर साइकिल (घ) कार/जीप

4– शैक्षिक व्यावसायिक एव स्थानान्तरणीय स्तर

1– शैक्षिक स्तर

(क) शिक्षित (ख) अशिक्षित

2– यदि शिक्षित तो शिक्षा का स्तर

(क) प्राथमिक/मीडिल (ख) अशिक्षित (ग) स्नातक (घ) स्नातकोत्तर

(ड) डाक्टरेट(शोध उपाधियुक्त) (च) अन्य

3– व्यवसाय

(क) मैकेनिक/श्रमिक (ख) व्यापारी (ग) छात्र (घ) विश्वविद्यालय के अध्यापक

4– स्थानान्तरणीय स्तर

(क) स्थानान्तरण (ख) स्थानान्तरण नही

5– स्थानान्तरण का कारण

(क) उत्तम आवास (ख) उत्तम पर्यावरण (ग) रोजगार (घ) धर्म (ड) अन्य

5– आवासीय दशा

1– मकान का स्तर

(क) अपना मकान (ख) किराये का मकान (ग) सरकारी मकान

2– मकान का उपयोग

(क) केवल आवास (ख) आवास एव उद्योग (घ) आवास एव व्यवसाय

3– मकान का प्रकार

(क) ईंट एव कक्रीट (ख) मिट्टी एव फूस (घ) लकडी/झुग्गी झोपडी

4– मकान का तलीय क्षेत्र (वर्गफीट)

(क) <300 (ख) 300–1000 (ग) 1 001–2000 (घ) 2000

5– मकान के कुल कमरो की सख्या

(क) 1 (ख) 2–3 (ग) 4–5 (घ) <5

6– कमरो का औसत क्षेत्रफल (वर्गफीट मे)

(क) <100 (ख) 100–200 (ग) 201–300 (घ) <300

7– शयनकक्षो मे प्रति व्यक्ति तलीय क्षेत्र (वर्गफीट)

(क) <10 (ख) 10–20 (ग) 21–30 (घ) <30

8– क्या मकान मे उपयुक्त सवातन है?

उपयुक्त अनुपयुक्त

8– स्नानगृह एव स्वच्छता दशाये

1– मकान मे स्नानगृह एव प्रसाधन सुविधा—

(क) है (ख) अनुपयुक्त

2– शौचालय का प्रकार

(क) व्यक्तिगत (ख) सार्वजनिक (ग) सडक के किनारे (घ) खेत मे

3– फ्लश शौचालय का प्रकार

(क) सेप्टिक टैंक/नगर पालिका सीवर (ख) खुली नाली

5– हस्त चालित शौचालय मे मल उठाने की व्यवस्था

(क) व्यक्तिगत सेवा (ख) नगर पालिका द्वारा

6– हस्त चालित शौचालय मे मल विसर्जन का साधन

(क) कूडे के साथ (ख) खुली नाली (ग) खेत मे (घ) ज्ञात नही

7– एक शौचालय का उपयोग करने वालो की सख्या

(क) एक (ख) 1–5 (ग) 6–10 (घ) <10

7– आवासीय जलापूर्ति

1– जलापूर्ति का स्रोत

(क) वैयक्तिगत अपना हैंण्डपम्प पाइप द्वारा अपना ट्यूबवेल

(ख) सार्वजनिक सडक के किनारे स्थित हैण्डपम्प सडक के किनारे स्थित पाइप नल

खुला कूप

2– जलापूर्ति का स्तर–

(क) नियमित (ख) अनियमित

3– जलापूर्ति की गुणवत्ता

(क) सतोषजनक (ख) असतोषजनक

4– जलापूर्ति की मात्रा

(क) पर्याप्त (ख) अपर्याप्त

5– जल सग्रह का प्रकार खुले डिब्बो मे, बद डिब्बो मे (बर्तन मे)

8– मलिन जल का अपवाह

1– मकान के मलिन जल का विसर्जन

(क) नाली मे (ख) मकान के चतुर्दिक (ग) मकान मे ही

2– मकान के चतुर्दिक नाली

(क) है(ख) नही है

3– यदि है तो नाली का प्रकार

(क) खुली (ख) बद

4– मकान के चतुर्दिक जल लगता है

(क) हा (ख) नही

5– जल एकत्तीकरण का प्रकार

(क) वर्षा का जल (ख) मलिन जल केवल (ग) दोनो ही

9– मकान का कूडा एव ठोस अपशिष्ट

1– मकान के अन्दर अपशिष्ट का स्वरूप

(क) खुले डिब्बो मे (ख) बद डिब्बो मे (ग) सग्रह नही करते हैं

2– मकान के कूडे के निस्तारण का स्वरूप

(क) सरकारी कूडे का ढेर (ख) सडक के किनारे (ग) जलाना

3– मुहल्ले मे कूडे की स्थिति

(क) चारो तरफ फैला हुआ (ख) नही दिखता

4– यदि सर्वत्र फैला है

(क) अधिक मात्राये (ख) लघु मात्रा मे (ग) नगण्य

5– मुहल्ले मे औद्योगिक अपशिष्ट

(क) हा (ख) नही

6– नगर पालिका द्वारा कूडे का निस्तारण

(क) निस्तारण होता है (ख) नही होता है

7– कूडा निस्तारण की बारम्बारता

(क) दैनिक (ख) सप्ताह मे दो बार (ग) साप्ताहिक (ग) मासिक

10– मकान मे रोगाणु एव जीवाणु

1– मकान मे कीटाणु एव जीव

(क) मक्खी (ख) मच्छर (ग) चूहा (घ) काक्रोच

(ड) सभी (च) कोई नही

2– जीवाणु रोधक दरवाजो एव खिडकियो का उपयोग

(क) हा (ख) नही

3– मकान के अन्दर जीवाणु एव जीवो के प्रतिरोध के उपाय

(क) पपकैन (ख) मच्छररोधी अगरबत्ती (ग) मच्छरदानी (घ) प्राइवेट सेवा

(ड) सरकारी सेवा (च) कोई नही

4– क्या आप कमरे मे छिडकाव करते है

(क) छिडकाव करते है (ख) नही करते हैं

11– खाद्य प्रदूषण

1– खाना पकाने के उपरान्त खाने का समय

(क) तुरत (ख) 1–2 घण्टे के बाद (ग) 3 घण्टे के बाद

2– खाना रखने का स्वरूप

(क) खुले मे (ख) कप बोर्ड मे/जाली मे (ग) रेफ्रीजरेटर

3– खाना पकाने का माध्यम

(क) सशोधित तेल मे (ख) बिना सशोधित तेल मे

12– मकान के अन्दर वायु प्रदूषण

1– खाना पकाने का स्थान

(क) अलग भोजनालय मे (ख) बरामदा मे (ग) बहुउद्देशीय कमरो मे

2– खाना पकाने मे प्रयुक्त ईंधन

(क) लकडी/कोयला (ख) मिट्टी के तेल से (ग) खाना पकाने की गैस

3– क्या आप मकान के अन्दर बीडी या सिगरेट पीते है?

(क) हा (ख) नही

4– यदि हा तो प्रतिदिन कितनी

(क) < 5 (ख) 6–10 (ग) 11–15 (घ) <15

5– क्या मकान मे बाहर से धूआ आता है?

(क) हा (ख) नही

6– यदि हा तो वाह्य घूम का स्रोत

(क) पडोसी (ख) वाहन (ग) उद्योग (घ) सभी तीन

7– आतरिक धूए की विसर्जन क्षमता

(क) वातन द्वारा तुरत बाहर जाना है

(ख) मकान के अन्दर ही बना रहता है

13– मकान के अन्दर ध्वनि प्रदूषण

1– मकान मे ध्वनि प्रदूषण

(क) हा (ख) नही

2– यदि हा तो ध्वनि प्रदूषण का स्रोन

(क) घरेलू सामानो से (ख) वाहनो एव उद्योगो से (ग) लाउडस्पीकर से

(घ) बाजार/रेलवे (ड) सभी

परिशिष्ट — ८

नगर के विभिन्न वार्डो मे आय के अनुसार चयनित घरो का वर्गीकरण 1999

वार्ड न0	आय के अनुसार वर्गीकरण					वार्ड मे चयनित कुल मकानो की सख्या	वार्ड न0	आय के अनुसार वर्गीकरण					वार्ड मे चयनित कुल मकानो की सख्या
	अत्यधिक कम	कम	मध्यम	उच्च	अतिउच्च			अत्यधिक कम	कम	मध्यम	उच्च	अतिउच्च	
1	5	8	8	7	8	36	14	7	8	2	11	7	35
2	14	10	37	15	9	85	15	8	5	13	20	20	66
3	12	23	3	23	16	77	16	20	9	9	21	13	64
4	14	18	8	14	12	66	17	10	8	25	20	6	69
5	5	6	7	10	6	34	18	7	12	3	16	4	42
6	36	17	48	6	6	113	19	8	5	11	22	5	51
7	17	15	14	10	6	62	20	6	10	12	6	9	43
8	18	15	22	18	15	88	21	15	18	28	6	4	71
9	10	8	20	24	8	70	22	7	8	22	9	4	50
10	13	7	26	31	5	82	23	20	9	26	8	3	66
11	14	10	8	13	7	52	24	12	8	6	23	4	53
12	18	12	10	13	7	60	25	6	18	20	9	6	59
13	13	10	21	9	7	60	26	11	6	3	1	5	26

योग – अत्यधिक कम आय वर्ग के 318 कम आय वर्ग के 283 मध्यम आय वर्ग के 412 उच्च आय वर्ग के 365 अति उच्च आय वर्ग के 202 मकान
कुल 1580 मकान।

परिशिष्ट—3

जौनपुर नगर के वार्ड एव उसमे स्थित मुहल्लो के नाम

वार्ड न	वार्ड का नाम	सम्मिलित मुहल्लो के नाम
1—	मतापुर	जगदीश पट्टी
		गगा पट्टी
		हिन्दी पटटी
		रामनगर भडसरा
		किसुनपुर
		मतापुर
2—	हरखपुर	समोपुर
		जगदीशपुर
		बेसहूपुर
		हरखपुर
		बाजार शाहगज
		चितरसारी
		अबीपुर
		धन्नोपुर
		चकनाथूपुर
		जियनीपुर
		बेगमगज
3—	उमरपुर	रूहट्टा
		अहमद खा मण्डी
		गूलरचक
4—	जहागीराबाद	उमरपुर द्वितीय
5—	अहियापुर	अहियापुर
		धरनीधरपुर

		खासनपुर
		भौराजीपुर
		वाजिदपुर उत्तर
6—	वाजिदपुर	वाजिदपुर
		कन्हईपुर
7—	ईसापुर	बोदकरपुर
		आराजी गुर्जी खानी
		सुल्तानपुर हाय
		सुक्खीपुर
8—	हुसैनाबाद	तहसील सदर
		शेखपुर
9—	मियापुर	
10—	भण्डारी	भण्डारी
		बगीचा शाह मुहम्मदपुर
		जोतापट्टी
		कुरचनपुर
		अकबर आदमपुर
		रसूलाबाद
11—	कटघरा	कटघरस
		तारापुर
		नईगज
		नईबाजार
12—	चाचकपुर	चाचकपुर
		सिपाह
		जमीन सिपाह
		वाग हसन
13—	रौजा अर्जन	रौजा अर्जन
		गुरजीखानी

		गदन अरजानी
		गोपालपुर
		अर्जन
		मैनपुर
		शेख वहाउद्दीनपुर
		मकदूमशाह बडे
14—	ओलन्दगज	ओलन्दगज
		अबीरगढ टोला
		जोगियापुर
		कालीकुत्ती
15—	नक्खास	नक्खास
		दिलाजाकपुर
		मालीपुर
16—	रासमण्डल	रासमण्डल
		केरारकोट
		कसेरी बाजार
		बलुआघाट
17—	मछरहट्टा	मछरहट्टा
		ख्वाजादोस्त
		बल्लोचटोला
18—	मण्डी नसीब खा	मण्डी नसीब खा
		मरदानपुर
		शहाबुद्दीनपुर
19—	पानदरीबा	प्रेमराजपुर, पानदरीबा
		सराय मुजाहिद
		मोहाल गाजी
		बाजार तोल्हा
		मिसिरपर

		शाहइस्माइल
		खालिसपुर
		बाजारभुआ
	मुफ्ती मुहल्ला	मुल्ला टोला
		मोहाल गाजी
		हमाम दरवाजा
		मुफ्ती मुहल्ला
		कोठियावीर
		छत्तात्तर
–	ताडतला	मखदूम शाह अढन
–	अबीरगढ टोला	अजमेरी
		बाग हाशिम
		अबीरगढ टोला
3–	उर्दू	फिरोशेपुर
		बगीचा उमर खा
		उर्दू
4–	ख्वाजगी टोला	आलमगज
		अलफस्टीनगज
		ख्वाजगी टोला प्रथम
25–	ढालगर टोला	रिजवी खा
		आलम खा
		ढालगर टोला
26–	मीरमस्त	मीरमस्त
		शेख मुहामिद।